ओडिसी

पेलिस
और
मिलिसेंट

□□□□□

□□□□□□□□□: **800** □□□ □□□□□□ □□□□□□□□: □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□
□□□□□□: □□□□ □□□□□□□□

□□ □□□□□□□ www.aliceandbooks.com □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□
□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

[redacted]

[redacted]

देवी-देवताओं को हमारी भाषा के आरंभ से ही दिए गए हैं। चौसर, स्पेंसर, शेक्सपियर, मिल्टन और प्रॉक्टर और कीट्स तक—जिनकी कालानुक्रमिक सूची छह सौ वर्षों तक फैली हुई है—ने इस प्रथा का पालन किया है, और हम इसे इन दोनों के लेखन से सदियों पहले तक भी खोज सकते हैं। हमारे गद्य लेखकों ने भी यही किया है; लैटिन मूल के नामों को नए नियम के सबसे पहले और सबसे बाद के अनुवादकों ने अपनाया है। इन नामों से ज्ञात प्रत्येक देवी-देवता के साथ अंग्रेजी पाठक के मन में कुछ विशेष गुण जुड़े होते हैं—और यह अनुवाद मैंने अंग्रेजी पाठक के लिए ही किया है। जूनो और डायना का नाम लीजिए, तो सामान्य अंग्रेजी पाठक तुरंत समझ जाता है; लेकिन जब वह हेरे और आर्टेमिस के नाम पढ़ता है, तो वह अपने शास्त्रीय शब्दकोश को देखता है। लैटिन मूल के नाम स्वाभाविक लगते हैं; अन्य नाम अजनबी और अपरिचित लगते हैं। 'और' शब्द, जो हमारे सैक्सन पूर्वजों से अपरिवर्तित रूप से हम तक पहुँचा है, प्राचीन ग्रीस के देवताओं को दिए गए नामों की तुलना में हमारी भाषा में अधिक दृढ़ और निर्विवाद रूप से अपना स्थान नहीं रखता है। यह प्रयोग हमें लैटिन लेखकों—वर्जिल, होरेस, ओविड और प्राचीन रोम के गद्य लेखकों—से प्राप्त हुआ है। कला और कविता दोनों ही इन देवताओं को एक ही नाम से जानते हैं। हम वीनस डी मेडिसिस, वीनस ऑफ मिलो, जुपिटर ऑफ फिडियास की बात करते हैं, और मंगल की मूर्ति को एरेस की मूर्ति कहने के बारे में कभी नहीं सोचते।
मैं अंग्रेजी भाषा से संतुष्ट हूँ, जैसा कि यह हमें विरासत में मिली है। यदि मेरे अनुवाद की पंक्तियों में ज़्यूस और हेरे, पोसीडॉन और एरेस, और आर्टेमिस और डेमेटर जैसे नामों की भरमार होती, तो मुझे लगता कि मैंने अंग्रेजी भाषा के प्राचीन नियमों का उल्लंघन किया है, जहाँ अर्थ स्पष्ट होना चाहिए था वहाँ अस्पष्टता पैदा की है, और मैंने उन पाठकों को शिकायत का उचित कारण दिया है जिनके लिए मैंने लिखा है।
डब्ल्यू. सी. ब्रायंट
अगस्त, 1871।

[illegible] I

[illegible] of [illegible] of [illegible]

[illegible] of [illegible]—[illegible] of [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]—[illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible]—[illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible]—[illegible], [illegible], of [illegible] [illegible] of [illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible]

of [illegible], [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] of [illegible] of [illegible]-[illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इथियोपियाई लोगों में एक देवता था जो बहुत दूर रहता था—सबसे दूर रहने वाले इथियोपियाई लोग। दो जनजातियाँ हैं; एक उगते सूरज के नीचे रहती है, दूसरी डूबते सूरज के नीचे। वह बैलों और मेमनों के एक बड़े भोज में शामिल होने गया और भोज में आनंदित होकर बैठा रहा; जबकि ओलंपियन बृहस्पति के महल में अन्य देवता एकत्रित हुए और उनसे अमर और मनुष्यों के पिता बात कर रहे थे। उनके मन में उस एगिस्थस का विचार आया जिसे अगमेमन के प्रसिद्ध पुत्र, राजकुमार ओरेस्टेस ने मार डाला था।
उसने उसके विषय में विचार किया और इस प्रकार देवताओं से प्रार्थना की:— “यह कितना विचित्र है कि मनुष्य देवताओं को दोष देते हैं और कहते हैं कि हम ही उन्हें कष्ट देते हैं, जबकि वे अपनी मूर्खता से और भाग्य की इच्छा के विरुद्ध जाकर स्वयं पर दुख लाते हैं! जैसे कि हाल ही में एगिस्थस ने भाग्य के बंधन में बंधे बिना, एट्रेस के पुत्र की रानी से विवाह किया और युद्ध से लौटे पति की हत्या कर दी। फिर भी वह इस कठोर दंड को भली-भांति जानता था, क्योंकि हमने उसे चेतावनी दी थी। हमने दूत अर्गिसाइड को भेजा और उसे आदेश दिया कि वह न तो मुखिया की हत्या करे और न ही उसकी रानी से प्रेम करे, क्योंकि ओरेस्टेस जब वयस्क और शक्तिशाली हो जाएगा, तो वह अपना अधिकार जताएगा।” विरासत, एट्रीड्स की हत्या का उचित बदला लेगी। हर्मेस ने ऐसा कहा; उसके विवेकपूर्ण शब्दों ने एगिस्थस के इरादे को प्रभावित नहीं किया, जो अब अपने कई अपराधों का दंड एक साथ भुगत रहा है।
नीली आँखों वाली देवी पल्लास ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे पिता, शनि के पुत्र, राजाओं के राजा! वह अपनी मृत्यु का पात्र था। इसलिए उसके जैसे कर्मों के सभी दोषी नष्ट हो जाएँ! परन्तु मैं दुखी हूँ ऋषि यूलिसिस के लिए, वह सबसे दुखी मनुष्य, इतने लंबे समय तक रुका रहा, पश्चाताप करता रहा, और अपने प्रियजनों से दूर, एक दूर द्वीप पर, जो गहरे समुद्र के जल से घिरा है— एक वन द्वीप, जहाँ एक देवी निवास करती है, बुद्धिमान एटलस की पुत्री, जो सागर की गहराई को जानती है, और ऊँचे स्तंभों को सीधा रखती है।” जो पृथ्वी को स्वर्ग से अलग करते हैं। वहाँ उसकी पुत्री दुखी सरदार को रोक लेती है और मीठी बातों से उसे इथाका को भुलाने के लिए मना लेती है। इस बीच, अपने देश के चूल्हों से उठते धुएँ को देखने के लिए बेचैन होकर वह तड़पता है और मरने को तैयार हो जाता है। क्या हे ओलंपिक्स, तुम्हारा हृदय इससे आहत नहीं हुआ? और क्या उसने ट्रॉय के विशाल राज्य में आर्गिव बेड़े के पास तुम्हें

कृतज्ञतापूर्वक बलिदान नहीं दिया? तो फिर, हे बृहस्पति, तुम उस पर इतने क्रोधित क्यों हो?
तब बादलों को वश में करने वाले बृहस्पति ने उत्तर दिया: “मेरे बच्चे, तुम्हारे होठों से क्या शब्द निकले हैं? क्या मैं ईश्वरीय यूलिसिस को भूल सकता हूँ, जो बुद्धि में सभी मनुष्यों से श्रेष्ठ है, और जिसने स्वर्ग में निवास करने वाले देवताओं को बड़ी भेंट चढ़ाई है? फिर भी, पृथ्वी को अपनी बाहों में थामे हुए नेपच्यून, पॉलीफेम, एक साइक्लॉप्स, जो अपनी विशालकाय जाति के सभी लोगों से अधिक शक्तिशाली है, के कारण यूलिसिस से निरंतर घृणा करता है, जिसकी आँख यूलिसिस ने निकाल दी थी। अप्सरा थूसा ने उसे जन्म दिया
- वह फोरकिस की पुत्री थी, जो स्वर्ग में शासन करता था। बंजर गहरा सागर— और लटकती चट्टानों की आड़ में
उसकी मुलाकात नेपच्यून से हुई। इसी कारण वह देवता
जो तटों को हिलाता है, यद्यपि वह उसे मारता नहीं,
यूलिसिस को उसके अपने देश से बहुत दूर भटकने के लिए भेज देता है। अब हम सब मिलकर परामर्श करें और उसकी वापसी की व्यवस्था करें,
और नेपच्यून अपना क्रोध त्याग देगा, क्योंकि उसके जैसे किसी एक व्यक्ति के लिए अकेले ही सभी अमर देवताओं की शक्ति के विरुद्ध संघर्ष करना व्यर्थ होगा।
और फिर नीली आँखों वाली पल्लास ने फिर कहा:— “हे पिता! शनि के पुत्र, राजाओं के राजा! यदि धन्य देवताओं की यही इच्छा है कि बुद्धिमान यूलिसिस अब अपने देश लौट आए, तो आइए हम तुरंत अपने दूत, आर्गीसाइडर, हर्मेस को भेजें, और ओगिगिया में, सुनहरे बालों वाली अप्सरा के पास, पीड़ित यूलिसिस को वापस लाने के अपने दृढ़ संकल्प को प्रकट करें। और मैं इथाका के लिए शीघ्र जाऊँगी, और उसके पुत्र को दृढ़ हृदय से पुकारने के लिए प्रेरित करूँगी। यूनानियों ने मिलकर उस व्यक्ति के अत्याचारों पर रोक लगा दी है, जो अपने भेड़-बकरियों और टेढ़े सींग वाले धीमी गति से चलने वाले बैलों को मार डालता है। मैं उसे स्पार्टा और पाइलोस की रेत भेजूँगा, ताकि उसके प्रिय पिता के लौटने का पता लगाया जा सके। इस प्रकार, लोगों की नज़रों में उसकी प्रसिद्धि बढ़ेगी।
वह बोली, और अपने पैरों के नीचे सुनहरे, अमृतमय सैंडल बाँधे, जो उसे हवा की तरह सागर और विशाल भूमि पर ले जाते थे। उसने हाथ में पीतल की नोक से जड़ा

हुआ शक्तिशाली भाला लिया, जो भारी, विशाल और मजबूत था, जिससे वह वीरों की पूरी टुकड़ियों को धरती पर गिरा देती थी, जब वह, एक शक्तिशाली पिता की पुत्री, क्रोधित होती थी। ओलंपियन ऊँचाइयों से वह कूदी, और इथाका के लोगों के बीच खड़ी हो गई, उनके सरदार यूलिसिस के बरामदे और दहलीज पर। उसके हाथ में भाला था, और वह अजनबी मेंटेस जैसी लग रही थी, जिसने टैफियनों का नेतृत्व किया था। द्वार के सामने उसे अभिमानी दावेदार मिले। कुछ लोग बैलों की खाल पर बैठकर समय बिता रहे थे, जिन्हें उन्होंने मारा था। उनके साथ दूत और व्यस्त नौकर थे: कुछ कटोरे में पानी मिलाकर शराब मिला रहे थे, कुछ हल्के स्पंज से मेज साफ कर रहे थे, और भोज सजाकर सबके लिए मांस काट रहे थे।
देवता के समान टेलीमाकस देवी को देखने वाला पहला व्यक्ति था, जब वह उदास मन से, विवाह के इच्छुक लोगों की भीड़ के बीच बैठा था और अपने महान पिता के बारे में सोच रहा था, जो शायद आकर अपने महल में भरे लोगों को तितर-बितर कर दें, नया सम्मान प्राप्त करें और अपने राज्य पर पुनः शासन स्थापित करें। इस प्रकार विवाह के इच्छुक लोगों के बीच बैठे-बैठे जब वह सोच रहा था, तभी उसने पल्लास को खड़ा देखा और तुरंत आगे बढ़ा; वह किसी अजनबी को अपने दरवाजे पर इंतजार नहीं करवा सकता था। वह आया और उसका दाहिना हाथ पकड़कर पीतल का भाला ग्रहण किया और ये प्रभावशाली शब्द कहे:—
“हे अजनबी! तुम्हारा यहाँ हार्दिक स्वागत है,
पहले आओ और हमारे भोज में शामिल हो जाओ और तरोताज़ा हो जाओ,
फिर बताओ कि तुम्हें हमसे क्या चाहिए।”
वह बोला और आगे बढ़ा, और उसके कदमों पर पल्लास एथेनी चली। फिर ऊंचे हॉल में प्रवेश करके, उसने एक ऊंचे स्तंभ के पास, पॉलिश की हुई दीवारों वाले शस्त्रागार में भाला सीधा खड़ा किया, जहां उदार आत्मा वाले यूलिसिस के कई भाले रखे थे। फिर उसने अपनी अतिथि को एक सिंहासन पर बिठाया, जिस पर उसने एक बहुरंगी और सुंदर आवरण फैलाया, और उसके पैरों के लिए एक पायदान रखा। उसके पास ही उसने अपना बहुरंगी आसन खींचा, जो अन्य दावेदारों से दूर था; ताकि उनका अतिथि उन अभिमानी उत्सवियों के बीच शोरगुल से ऊब न जाए और अपने भोजन का आनंद कम न ले, और स्वयं अपने अनुपस्थित पिता का समाचार पूछ सके। सोने के एक सुंदर सुशोभित कलश से चांदी के कटोरे में एक दासी ने हाथों के लिए पानी डाला और उनके पास एक पॉलिश की हुई मेज रखी। फिर एक आदरणीय महिला रोटी और

मेज से एकत्रित व्यंजन लेकर आई; और जिसने उनके सामने भोज परोसा, उसने विभिन्न प्रकार के मांस से सजे थालियाँ और सोने के प्याले रखे; जब एक दूत मेज के चारों ओर घूम रहा था, और मेहमानों के लिए शराब परोस रहा था। अभिमानी प्रेमी अब अंदर आए और सिंहासनों और पलंगों पर बैठ गए; दूतों ने उनके हाथों पर पानी डाला; युवतियों ने कलशों में रोटी भर दी, और सभी ने मेज पर रखे भोज में हिस्सा लेने के लिए हाथ बढ़ाए, जबकि लड़कों ने प्यालों को लबालब भर दिया। जब प्यास और भूख शांत हो गई, तो प्रेमियों ने दावत के लिए उपयुक्त अन्य चीजों के बारे में सोचा—गीत और नृत्य। फिर एक दूत एक सुंदर वीणा लेकर आया और उसे फेमियस के हाथों में दे दिया, जिसने मजबूरी में ही प्रेम प्रस्तावकों के लिए गीत गाया था। उसने वीणा के तारों पर अपने गीत की प्रस्तावना बजाई, और जब वह बजा रहा था, टेलीमाकस, ताकि दूसरे न सुन सकें, आगे झुककर नीली आँखों वाली पल्लास से बोला:—
“मेरे मित्र और अतिथि, क्या तुम मेरी बातों से नाराज़ नहीं होगे? ये मौज-मस्ती करने वाले लोग वीणा और गीत का आनंद लेते हैं, क्योंकि बिना किसी कीमत के वे दूसरे आदमी की संपत्ति को बर्बाद कर देते हैं, जिसकी सफेद हड्डियाँ अब किसी मुख्य भूमि पर बारिश में सड़ रही हैं, या समुद्र की लहरों में इधर-उधर फेंकी जा रही हैं। अगर वे उसे एक बार इथाका में देख लें, तो उनकी प्रार्थनाएँ सोने और वस्त्रों के धन से कहीं अधिक तेज़ कदमों के लिए होंगी। लेकिन उसका भाग्य बुरा है, और वह मर चुका है। अगर हमें पृथ्वी पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति से यह खबर मिले, तब भी हम यही सोचेंगे। हम आशा नहीं कर सकते थे कि वह निकट है। उसके लिए कोई वापसी नहीं है। लेकिन अब, मैं प्रार्थना करता हूँ, मुझे स्पष्ट रूप से बताओ कि तुम कौन हो, किस जाति के हो, तुम्हारा घर कहाँ है, तुम्हारे माता-पिता कौन हैं; नाविक तुम्हें इथाका कैसे लाए, और वे क्या दावा करते हैं, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि तुम पैदल यहाँ नहीं आ सकते थे। यह सब, मैं प्रार्थना करता हूँ, सच-सच बताओ, ताकि मैं पूरी बात जान सकूँ। क्या तुम पहली बार यहाँ आए हो, या मेरे पिता के अतिथि हो? कई अजनबी एक बार हमारे महल में आए थे, और वे जानते थे कि लोगों का स्नेह कैसे जीता जाता है।
नीली आँखों वाली देवी पल्लास ने इस प्रकार उत्तर दिया:—
“मैं सब कुछ सच-सच बताऊँगी। मेरा नाम
मेंटेस है; मेरे पिता युद्ध में महान थे

एंचियालस। मैं कुशल लोगों पर शासन करती हूँ
जो चप्पू चलाने में माहिर हैं, टैफियन, और मैं जहाज और दल के साथ गहरे नीले सागर को पार करके
टेमेसे आई हूँ, और एक ऐसी जाति के पास जिसकी भाषा
मेरी भाषा से भिन्न है, पीतल की खोज में,
और अपने साथ चमकीला इस्पात लाई हूँ। मैंने
शहर के पीछे मैदान में अपनी नाव खड़ी कर दी है,
रीथ्रस की खाड़ी में, और
नीयस के जंगलों के नीचे। हम दावा करते हैं कि हम वंश से अतिथि हैं, और अपने पूर्वजों के समय से, जैसा कि तुम जान जाओगे यदि तुम लेर्टेस, उस पुराने वीर से मिलो और पूछो। कहा जाता है कि वह अब शहर की दीवारों के भीतर नहीं आता, बल्कि खेतों में उदास अकेला रहता है, जहाँ एक बूढ़ी दासी उसके लिए भोजन और पेय परोसती है जब थकान उसके अंगों को कमजोर कर देती है, उपजाऊ मिट्टी पर रेंगते हुए, उसके समृद्ध अंगूर के बाग की। मैं इसलिए आया हूँ क्योंकि मैंने सुना है कि तुम्हारे पिता अंततः लौट आए हैं, और अब मुझे यकीन है कि देवता उनकी यात्रा में देरी कर रहे हैं। इधर आओ; क्योंकि वह महान व्यक्ति मर नहीं सकता, बल्कि अकेला ही रुका हुआ है। कहीं समुद्र के किनारे, किसी जगह पर, जल से घिरा हुआ। वहाँ क्रूर और बर्बर लोग उसे रखे हुए हैं, जाने के लिए तड़पते हुए। अब मैं देवताओं के संदेश के बारे में बात करता हूँ, और जो मुझे लगता है कि निश्चित रूप से होगा, हालाँकि मैं कोई भविष्यवक्ता नहीं हूँ और पक्षियों से शकुन जानने का कोई कौशल नहीं रखता। जल्द ही वह मुखिया अपनी प्यारी भूमि से निर्वासित हो जाएगा, हालाँकि लोहे की जंजीरों से बंधा हुआ है। क्योंकि वह बहुत सूझबूझ वाला है और योजनाएँ बनाएगा। उसके भागने का एक रास्ता। अब मुझे यह बताओ,
और सचमुच; तुम कद में इतने लंबे हो,
क्या तुम वास्तव में यूलिसिस के पुत्र हो? चेहरे से
और शानदार आँखों से तुम उससे बहुत मिलते-जुलते हो
क्योंकि वह और मैं पहले अक्सर साथी हुआ करते थे, इससे पहले कि वह इलियम के लिए रवाना हुआ, जहाँ अर्गिव्स के सर्वश्रेष्ठ लोग भी अपने विशाल जहाजों में गए थे,
और उस दिन के बाद से हमने एक-दूसरे को नहीं देखा है।”

बुद्धिमान टेलीमाकस ने कहा, “हे अतिथि, तुम्हें सही उत्तर मिलेगा। मेरी माँ कहती है कि मैं उसका पुत्र हूँ; मुझे नहीं पता; कोई भी मनुष्य अपने पिता को नहीं जानता। काश मैं उस व्यक्ति का पुत्र होता जिसे अपने ही राज्य में वृद्धावस्था का सामना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। अब मनुष्यों के पुत्रों में सबसे दुखी वह है जिसके कारण वे कहते हैं कि मेरा जन्म हुआ है। इस प्रकार तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दिया गया है।” फिर नीली आँखों वाली पल्लास बोली: “सचमुच, देवताओं ने यह नहीं चाहा कि आने वाले वर्षों में तुम्हारा वंश कलंकित हो, क्योंकि पेनेलोप ने तुम्हें इस रूप में जन्म दिया है जैसा मैं तुम्हें अब देख रही हूँ। लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से उत्तर दो— यहाँ कौन सा भोज है, और यह सभा क्या है? यह अवसर क्या हो सकता है? क्या कोई दावत दी जा रही है? क्या यह शादी है? मुझे नहीं लगता कि यह कोई भोज हो सकता है, जहाँ मेहमान मांस लाते हैं। महल में इतनी धूमधाम से जश्न चल रहा है। एक समझदार व्यक्ति, यदि वह उनके बीच आ जाए, तो उनके द्वारा किए गए शर्मनाक कृत्यों पर क्रोधित होकर वह विचलित हो जाएगा।
फिर बुद्धिमान टेलीमाकस बोला:— “हे अजनबी, क्योंकि तू मुझसे पूछ रहा है, तो जान ले कि एक समय यह घर धनी और प्रतिष्ठित कहलाता था, जब मुखिया यहाँ था। परन्तु अब देवता निर्दयी हो गए हैं और उनकी इच्छा कुछ और ही है। उन्होंने उसके भाग्य को अन्य मनुष्यों के भाग्य से भी अधिक रहस्यमय बना दिया है। यदि वह ट्रॉय के युद्धक्षेत्र में अपने साथियों के साथ शहीद हो गया होता, या युद्ध समाप्त होने पर अपने सगे-संबंधियों के बीच, तो मुझे उसके जाने का इतना गहरा दुःख न होता। तब सभी यूनानियों ने उसका स्मारक बनवाया होता और अपने पुत्र के लिए विरासत छोड़ी होती। यश से वंचित। अब वह हार्पीज़ का शिकार बन गया है, अपमानजनक ढंग से नष्ट हो रहा है, अदृश्य, उसके भाग्य के बारे में किसी को पता नहीं, और मेरे लिए शोक और दुख छोड़ गया है। मैं केवल उसके लिए ही दुखी नहीं हूँ; देवताओं ने मुझ पर और भी कठिनाइयाँ डाल दी हैं। डुलिचियम, सामोस और ज़ैकिंथस को छाया देने वाले उपवनों पर शासन करने वाले सभी सरदार, और बीहड़ इथाका में प्रभुत्व रखने वाले सभी सरदार मेरी माँ को रिझाने आए हैं, और दिन-प्रतिदिन मेरी संपत्ति का उपभोग कर रहे हैं। वह इसे अस्वीकार नहीं करती। उनके घृणित प्रस्ताव को वह पूरी तरह से अस्वीकार करती है, फिर भी वह विवाह द्वारा इसे समाप्त करने

को सहन नहीं कर सकती। इस प्रकार वे मेरी विरासत को बर्बाद कर रहे हैं, और जल्द ही मेरी जान लेने की कोशिश करेंगे।
दुःख और क्रोध में फिर पल्लास बोली:— “हाँ, तुम्हें अनुपस्थित सरदार यूलिसिस की बहुत आवश्यकता है, ताकि वह इन निर्लज्ज दावेदारों पर अपना हाथ डाल सके। यदि वह अब आकर महल के द्वार के सामने हेलमेट, ढाल और दो भाले लेकर खड़ा हो जाए, जैसा कि मैंने उसे पहली बार अपने घर में शराब पीते और दावत करते देखा था, जब वह अभी-अभी एफ़िरे से लौटा था, जहाँ मर्मेरस का पुत्र इलस रहता था— क्योंकि यूलिसिस वहाँ एक नाव में गया था, एक घातक औषधि की तलाश में जिससे वह अपने पीतल के कवच को दूषित कर सके। तीर; इलस ने इसे नहीं दिया;

वह अमर देवताओं से डरता था; मेरे पिता ने
ज़हर दिया, क्योंकि वह अपने अतिथि से बहुत प्यार करते थे—क्या अब यूलिसिस, ऐसे वेश में,
एक बार भी उन दावेदारों से मिल सकता है, उनकी ज़िंदगी छोटी होगी
और शादी का भोज कड़वा होगा।
फिर भी, चाहे वह वापस लौटे या न लौटे, अपने महल में इस हमलावर दल से
बदला लेने के लिए, यह केवल देवताओं पर निर्भर करता है।
अब मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम समय रहते सोच लो
कि तुम उन्हें अपने महल के द्वारों से कैसे भगाओगे।
मुझे देखो, और जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दो कहो: कल तुम अचेयन सरदारों को एक सभा में बुलाओगे; उन सबके सामने बोलो, और देवताओं को साक्षी बनाओ। सभी दूल्हों को उनके घर लौटने का आदेश दो; और यदि तुम्हारी माता विवाह करने की इच्छुक हो, तो उसे अपने पिता के पास लौटने दो, जो एक शक्तिशाली राजकुमार हैं, और वहाँ वे भव्य विवाह और भरपूर दहेज का प्रबंध करेंगे, जो एक प्रिय संतान के लिए उचित हो। और अब, यदि तुम मेरी बात मानोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे भले के लिए एक सलाह दूंगा। अपने सबसे अच्छे जहाज को तैयार करो। बीस नाविकों के साथ निकल पड़ो और अपने अनुपस्थित पिता का समाचार खोजने जाओ। तुम्हें शायद उनके बारे में किसी मनुष्य के पुत्र से पता चलेगा, या फिर बृहस्पति द्वारा भेजी गई किसी अफवाह से, जो मनुष्य जाति को जानने योग्य बातें प्रकट करेगी। सबसे पहले पाइलोस की ओर प्रस्थान करो और महान नेस्टर से पूछताछ करो; फिर स्पार्टा में सुनहरे बालों वाले मेनेलास से

पूछो, क्योंकि वह कवचधारी अचेयनों में से अंतिम था जो अपने घर लौटा था। और यदि तुम्हें पता चले कि तुम्हारा पिता अभी जीवित है और लौट आएगा, तो एक वर्ष और धैर्य रखो। चाहे यह कितना भी कठिन लगे। लेकिन यदि तुम्हें पता चले कि वह अब इस दुनिया में नहीं है, तो तुरंत अपने वतन लौट जाओ, और उसका स्मारक ऊँचा बनवाओ, और अंतिम संस्कार भव्यता से करो, जैसा कि मृतक के लिए उचित हो, और अपनी माँ का पुनर्विवाह करो। और जब यह सब हो जाए, तो अपने मन और हृदय से परामर्श करो कि तुम्हारे महल के आसपास मंडराने वाले प्रेम-प्रसंगियों के समूह को कैसे नष्ट किया जाए, चाहे गुप्त जाल से या खुले बल से। अब तुम्हें ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसे तुम एक लड़के हो; तुम अब बचकाने खेल-कूद की उम्र से बाहर निकल चुके हो। क्या तुमने नहीं सुना कि दिव्य ओरेस्टेस ने सभी मनुष्यों के बीच कितना सम्मान प्राप्त किया, जब उसने हत्यारे, धूर्त एगिस्थस को मार डाला, जिसके हाथों ओरेस्टेस के महान पिता की मृत्यु हुई थी? और फिर, मेरे मित्र—क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम एक मर्दाना और राजसी कद-काठी के हो— साहसी बनो, ताकि भविष्य में जन्म लेने वाले लोग तुम्हारी प्रशंसा करें। और अब मुझे अपने अच्छे जहाज और अपने उन मित्रों के पास जाना होगा जो शायद बहुत बेसब्री से मेरे लौटने का इंतजार कर रहे हैं। अब समझदारी से काम लें और मेरी बातों को ध्यान में रखें।
बुद्धिमान युवक टेलीमाकस ने उत्तर दिया:— “तुमने बहुत अच्छा कहा है, और दयालु इरादे से, हे अजनबी! जैसे पिता अपने पुत्र से कहता है; और मैं तुम्हारी कही हुई बातें कभी नहीं भूलूंगा। फिर भी, मैं तुमसे विनती करता हूँ, चाहे तुम जल्दी में हो, रुक जाओ और स्नान कर लो, तरोताज़ा हो जाओ, और अपने अच्छे जहाज पर चले जाओ, अपने साथ कोई उपहार ले जाओ, जो तुम्हें अच्छा लगे, कीमती और दुर्लभ, जिसे तुम हमेशा मेरे स्मरण में रख सको—ऐसा उपहार जैसा मित्रवत मेज़बान अपने मेहमानों को देते हैं।”
तब नीली आँखों वाली पल्लास बोलीं: “मुझे मत रोको, क्योंकि अब मैं प्रस्थान करना चाहती हूँ। जो भी उपहार तुम्हारा मन दे, उसे मेरे लौटने तक सुरक्षित रखना, ताकि मैं उसे घर ले जा सकूँ, और बदले में तुम कोई कीमती वस्तु ले लेना।”
नीली आँखों वाली पल्लास ने ऐसा कहा और चली गई, एक पक्षी की तरह ऊपर उठ गई। उसने उसके हृदय को शक्ति और साहस से भर दिया, उसके पिता की स्मृति को जीवंत कर दिया। फिर वह कुलीन युवक अन्य दावेदारों के बीच चला गया। सभी चुपचाप

बैठे उस प्रख्यात कवि को सुन रहे थे, जिसने पल्लास के आदेश पर ट्रॉय से यूनानी सेना की विपत्तिपूर्ण वापसी का वर्णन किया था। हॉल के ऊपर स्थित अपने कक्ष से, इकारियस की पुत्री, बुद्धिमान रानी पेनेलोप ने उस मधुर गीत को सुना और उसका विषय जान लिया। ऊँची सीढ़ियों से नीचे उतरकर वह आई, पर अकेली नहीं; उसके पीछे दो युवतियाँ भी थीं। जब वह तेजस्वी महिला मजबूत बने हुए हॉल की दहलीज पर पहुँची, जहाँ उसके प्रेमी बैठे थे, और उसके चेहरे के सामने एक नाजुक घूंघट थामे हुए थे, तब रानी ने पवित्र गायक से इस प्रकार कहा:
“फेमियस! तुम अनेक मनभावन विषय जानते हो— देवताओं और वीरों के कारनामे, जिनका गुणगान कवि किया करते हैं। तो तुम अपना स्थान ग्रहण करो और इनमें से किसी एक का गीत गाओ, और अतिथि चुपचाप मदिरा पिएं; परन्तु यह गीत बंद करो; यह बहुत दुखद है; यह मेरे हृदय को क्षत-विक्षत कर देता है, और असीम दुःख उत्पन्न करता है—ऐसा दुःख जो मैं अपने स्वामी के लिए सहता हूँ, जिनके बारे में मैं निरंतर सोचता रहता हूँ; जिनकी महिमा हेलास और आर्गोस में हर जगह फैली हुई है।”
और फिर बुद्धिमान टेलीमाकस ने कहा:—
“हे मेरी माँ! क्या तुम सहन नहीं कर सकतीं कि इस प्रकार सुशोभित कवि अपने श्रोताओं को उस विषय से प्रसन्न करे जिससे उसका मन अंतर्मन से प्रेरित हो? कवियों को दोष नहीं दिया जा सकता; इसका कारण बृहस्पति है, क्योंकि वह अपनी इच्छा से उस गीत को प्रेरित करता है जिसे प्रत्येक को गाना चाहिए। इसलिए, उस गायक की निंदा मत करो जो यूनानी योद्धाओं के दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य का वर्णन करता है। सभी लोग उस गीत की सबसे अधिक सराहना करते हैं जिसका विषय नवीनतम होता है; और तुम—
इसे सुनने के लिए अपने हृदय को मजबूत करो। ध्यान रखो
केवल यूलिसिस ही अपने लौटने से वंचित नहीं रह गया, बल्कि उसके साथ ट्रॉय में कई अन्य लोग भी मारे गए हैं। अब अपने कमरे में जाओ; अपने घरेलू काम करो, करघा और तकली चलाओ; अपनी दासियों को अपना काम जल्दी करने का आदेश दो। दावत के लिए उचित शब्द कहना मनुष्य का अधिकार है, और विशेष रूप से मेरा; क्योंकि इन दीवारों के भीतर अधिकार मेरा है।
उसके शब्दों पर आश्चर्यचकित होकर, गृहिणी अपने कमरे में चली गई, परन्तु अपने मन में अपने पुत्र के ज्ञानवर्धक वचन संजो कर रखे। जब वह अपनी

दासियों के साथ ऊपरी कमरों में पहुँची, तो उसने अपने प्रिय पति यूलिसिस के लिए शोक मनाया और तब तक रोती रही जब तक नीली आँखों वाली पल्लास ने अपनी पलकें कोमल नींद में बंद नहीं कर लीं। इसी बीच, छायादार कक्षों में प्रेम-प्रसंग शोर मचा रहे थे; और इस प्रकार बुद्धिमान टेलीमाकस ने कहा:—
“हे मेरी माता के चाहने वालों, उद्दंड और अभिमानी; हमारा भोज आनंदमय हो, उपद्रवी नहीं। ऐसे कवि का गीत सुनना हमारे लिए अच्छा होगा, जिसकी आवाज़ देवताओं के समान है। मैं तुम सबको कल सुबह पूरी सभा में मिलने का आदेश देता हूँ, ताकि मैं तुम्हें चेतावनी दे सकूँ कि मेरे महल से चले जाओ और अपने भोज कहीं और अपने खर्च पर मनाओ—हो सकता है कि तुम एक-दूसरे के घरों में रोज़ाना भोज करो। लेकिन अगर तुम्हें किसी का माल लूटना बेहतर लगे, तो लूटते रहो।” मेरी संपत्ति; मैं अमर देवताओं को बुलाऊंगा
मेरी सहायता के लिए, और यदि बृहस्पति अनुमति दे तो
तुम्हारे कर्मों का उचित दंड, तुम मर जाओगे,
इसी महल में, बिना बदला लिए।"
उसने बोलना शुरू किया; सभी दावेदारों ने अपने होंठ भींच लिए, युवक के साहसी शब्दों से चकित होकर। और इस प्रकार यूपेइथेस के पुत्र एंटिनोस ने उत्तर दिया: “हे टेलीमाकस, देवताओं ने तुम्हें भव्य वाक्य गढ़ना और वीरतापूर्वक भाषण देना सिखाया है। शनि का पुत्र तुम्हें कभी भी समुद्र से घिरे इथाका का राजा न बनाए, जिसका द्वीप जन्मसिद्ध अधिकार से तुम्हारा उत्तराधिकार है।”
बुद्धिमान टेलीमाकस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “क्या तुम मेरे शब्दों पर क्रोधित होगे, एंटिनोअस? मैं सहर्ष राजा का पद स्वीकार करूँगा यदि बृहस्पति मुझे यह पद प्रदान करे। क्या तुम वास्तव में इसे मानव जाति की सभी स्थितियों में सबसे बुरी स्थिति मानते हो? ऐसा नहीं है, क्योंकि जो शासन करता है, उसका घर समृद्ध होता जाता है, और उसका सम्मान भी बढ़ता जाता है। समुद्र से घिरे इथाका की सीमाओं के भीतर अनेक राजा हैं, युवा और वृद्ध दोनों। कोई भी शासन करे, क्योंकि महान यूलिसिस अब नहीं रहे; परन्तु मैं ही स्वामी रहूँगा। मेरे अपने घर का,
और मेरे उन सेवकों पर जिन्हें देवतुल्य मुखिया,
यूलिसिस, युद्ध से लेकर आया था, उसका लूट का हिस्सा।"

पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने बारी-बारी से युवक को संबोधित करते हुए कहा: “निःसंदेह, अचेयन वंश का कौन सा पुरुष भविष्य में समुद्र से घिरे इथाका पर शासन करेगा, यह देवताओं के हाथ में है। परन्तु तुम अपनी संपत्ति की रक्षा करना, और जब तक इथाका में मनुष्य निवास करते हैं, तब तक कोई भी हिंसक पुत्र आकर तुम्हारी संपत्ति को लूट न ले। और अब, मेरे मित्र, मैं पूछता हूँ कि तुम्हारा अतिथि कौन था; वह कहाँ से आया, वह किस भूमि का निवासी होने का दावा करता है, उसके रिश्तेदार कहाँ रहते हैं, और उसकी पैतृक भूमि कहाँ स्थित है?” अपने पिता के शीघ्र लौटने की खबर लेकर क्या वह आए थे, या कोई ऋण लेने? उनका प्रस्थान कितनी शीघ्रता से हुआ, उन्होंने हमें जानने के लिए प्रतीक्षा भी नहीं की! फिर भी, उनके रूप और हावभाव से वे किसी साधारण व्यक्ति प्रतीत नहीं होते थे।
बुद्धिमान टेलीमाकस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे यूरिमाकस, मेरे पिता के आने की अब कोई आशा नहीं है; और न ही मैं किसी भी दिशा से आने वाली खबरों पर भरोसा कर सकता हूँ, और न ही भविष्यवाणियों पर ध्यान दे सकता हूँ, यद्यपि मेरी माँ ने महल में एक ज्योतिषी को बुलवाया है और उससे पूछताछ की है। परन्तु यह व्यक्ति मेरे पिता का अतिथि था; वह टैफोस से आया है; उसका नाम मेंटेस है, वह वीर सरदार एंचियालस का पुत्र है; वह टैफियनों पर शासन करता है, जो समुद्र से प्रेम करते हैं।”
उसने बात की, लेकिन अपने अंतर्मन में वह अमर देवी को जानता था। फिर सभी प्रेमी मुड़े। प्रसन्न होकर नाच-गाना करने लगे और शाम की प्रतीक्षा करने लगे। उनके खेल-कूद के बीच शाम अपने घने अंधेरे के साथ छा गई; फिर हर कोई अपने घर सोने चला गया, जबकि टेलीमाकस अपने ऊंचे कमरे में, सबके सामने, उस भव्य महल में बने ऊंचे कमरे में गया और अपने पलंग पर लेट गया, अनेक विचारों में डूबा हुआ। पवित्र और बुद्धिमान युरिक्लेया उनके साथ जलती हुई मशालें लेकर ऊपर गईं—वह पिसनोर के पुत्र ओप्स की संतान थीं। लेर्टेस ने उन्हें, उनकी युवावस्था में, सौ बैल देकर खरीदा था, और अपने महल में उन्हें अपनी पवित्र पत्नी के समान सम्मान दिया था; फिर भी उन्होंने कभी उनके साथ संबंध नहीं बनाया। वह अपनी रानी के साथ अन्याय नहीं करना चाहते थे। वही थीं जिन्होंने टेलीमाकस के साथ मशालें उठाई थीं। वह अपने युवा स्वामी से अन्य सभी दासियों से अधिक प्रेम करती थीं, और उन्होंने उनके बचपन में उनका पालन-पोषण किया था। अब उसने कमरे का दरवाजा खोला और सोफे पर बैठ गया, अपना नरम

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] II

[illegible] of [illegible] of [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible]—[illegible] of of [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible]—[illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] of [illegible] of of [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रस्ताव रखेगा और उस पर जोर देगा जो जनहित से संबंधित हो? मुझे लगता है कि उसका मन न्यायप्रिय और उदार है, और मुझे आशा है कि बृहस्पति वह अपने लक्ष्य की पूर्ति करेगा।
जब उसने ऐसा कहा, तो यूलिसिस का पुत्र उसके शुभ शब्दों से प्रसन्न हुआ, और वह अपने स्थान पर अधिक देर तक नहीं बैठा रहा, बल्कि एक आंतरिक शक्ति के वश में होकर, उन सबके बीच बोलने के लिए खड़ा हो गया, जबकि उसके हाथ में बुद्धिमान सलाहकार और दूत पिसनोर ने राजदंड रखा हुआ था। फिर वह बूढ़े एजिप्टियस की ओर मुड़ा और इस प्रकार बोला:—
“हे वृद्ध पुरुष, तुम्हारे पास ही वह है जिसने इस सभा को बुलाया है, जैसा कि तुम शीघ्र ही जान जाओगे। मेरी मुख्य समस्या यही है; मैं किसी आने वाले शत्रु की कोई खबर नहीं लाया हूँ, जिसे मैंने सबसे पहले सुना होता और सबको बताता, और न ही मैं अन्य मामलों पर जोर देता हूँ जो जनहित से संबंधित हैं; मेरी अपनी आवश्यकता— मेरे घर पर आई विपत्ति— मुझे विवश करती है; इसके दो कारण हैं। पहला यह कि मैंने एक उत्कृष्ट पिता को खो दिया है, जो तुम लोगों के बीच राजा थे और तुम पर एक पिता के समान कोमल शासन करते थे। इससे भी बड़ी बात यह है कि अगला संकट यही है, और जल्द ही मेरे घर को उजाड़ देगा और मेरी सारी संपत्ति को पूरी तरह से नष्ट कर देगा। हमारे द्वीप में सर्वोच्च पद पर आसीन लोगों के पुत्र, जो शादी के लिए बेताब हैं, मेरी अनिच्छुक माँ को बार-बार घेर लेते हैं। वे इकारियस से यह पूछने से कतराते हैं कि उसके पिता राजा उसे धन दें और अपनी बेटी का विवाह उस व्यक्ति से कराएँ जो राजा की कृपा सबसे अच्छी तरह से प्राप्त कर सके। लेकिन वे हर दिन हमारे महल में आते हैं, यहाँ बैल, भेड़ और बकरियों की बलि चढ़ाते हैं, और भव्य उत्सव मनाते हैं और शराब पीते हैं। बैंगनी शराब
बिना किसी रोक-टोक के, असीमित बर्बादी के साथ; क्योंकि यहाँ
यूलिसिस जैसा कोई आदमी नहीं है जो मेरे घर से बुराई को दूर कर सके। हम उसके जैसे नहीं हैं, जो अन्याय का विरोध कर सकें। हम
कमजोर, अपरिपक्व वीरता वाले समझे जाते हैं, फिर भी
अगर मुझमें शक्ति होती, तो निश्चित रूप से
मैं विरोध करता, क्योंकि इन लोगों ने
असहनीय काम किए हैं, और मेरा घर
सम्मान के साथ नष्ट नहीं होता। तुम्हें स्वयं इन कामों पर

शर्म महसूस करनी चाहिए; तुम्हें अपने आस-पास रहने वालों से निंदा का डर होना चाहिए, और तुम्हें डरना चाहिए
हे मेरे मित्रों, मैं आप सभी से विनती करता हूँ, ओलंपियन बृहस्पति और उस देवी के नाम पर, जिनके द्वारा मनुष्यों की सभाएँ बुलाई और भंग की जाती हैं — देवी थेमिस—कि आप सभी शांत रहें और मुझे मेरे दुःख में अकेला छोड़ दें, जब तक कि मेरे महान पिता यूलिसिस ने अपने क्रोध में वीर यूनानियों के साथ कोई अन्याय न किया हो, जिसका बदला आप लोगों को ऐसे कृत्यों के लिए उकसाकर मुझसे लेना चाहते हैं। इससे कहीं बेहतर होगा कि आप स्वयं हमारी संपत्ति नष्ट कर दें और मार डालें। हमारे पशुओं को, क्योंकि अगर ऐसा होता, तो शायद समय आने पर कुछ प्रतिफल मिल जाता। हम गली-गली घूम-घूम कर लगातार मुआवजे की गुहार लगाते, जब तक कि सब कुछ बहाल न हो जाता। लेकिन अब तुम मुझ पर ऐसे अन्याय थोप रहे हो जिनका कोई निवारण नहीं है।
इस प्रकार क्रोधित होकर उसने कहा और आँसू बहाते हुए राजदंड को धरती पर पटक दिया। लोगों को दया आ गई; सब एक क्षण के लिए चुप हो गए, और कोई भी टेलीमाकस को अपशब्दों से उत्तर देने का साहस नहीं कर सका, सिवाय एक के, एंटिनोअस, जो उठा और उसने इस प्रकार उत्तर दिया:—
“तेलेमाकस, हे शेखी बघारने वाले और गाली देने में अगाध युवक, तूने हमारे अपमान के लिए क्या कहा है? तू हम पर कलंक का धब्बा लगाना चाहता है। दोष हमारा नहीं है, अचेई दूल्हों का; यह तेरी माँ का दोष है, जो धूर्त चालों में माहिर है। अब तीसरा वर्ष बीत चुका है, और जल्द ही चौथा वर्ष भी हो जाएगा, जब से उसने हमें धोखा देना शुरू किया है। वह हम सबको आशा दिलाती है, और संदेश द्वारा हर किसी को मीठी बातें भेजती है, फिर भी उसके मन में कुछ और ही इरादे हैं। यह उसकी धूर्त चाल है। उसने योजना बनाई; उसने करघे पर एक जाल बिछाया, जो नाज़ुक, चौड़ा और लंबाई में विशाल था, और हम सभी से कहा: ‘युवा राजकुमारों, जो मुझसे प्रेम करने आए हैं, क्योंकि यूलिसिस अब नहीं रहे— मेरे महान पति— कृपया मुझे विवाह के लिए विवश न करें, जब तक कि मैं करघे पर बुनाई पूरी न कर लूँ— ताकि मेरे धागे व्यर्थ न बुने जाएँ— वीर सरदार लेर्टेस के लिए अंतिम संस्कार का वस्त्र, जब उनका घातक समय आएगा— मृत्यु की लंबी नींद के साथ। अन्यथा कोई अचेयन महिला मुझे दोष दे सकती है, यदि मैं बिना कफ़न के चली जाऊँ।
जिसने जीवन में इतना प्रचुर धन प्राप्त किया!’

ये उसके शब्द थे, और उन्होंने आसानी से हमारे उदार मन पर प्रभाव डाला। इस प्रकार वह आगे बढ़ती रही,
उस विशाल जाल को बुनती रही, और हर रात
मशाल की रोशनी में उसे खोलती रही। पूरे तीन साल
उसने इस प्रकार अभ्यास किया, और इस छल से
यूनानी युवकों को धोखा दिया; लेकिन जब समय बीतने पर
चौथा वर्ष आया, तो एक सर्वज्ञानी स्त्री ने रहस्य उजागर किया, और हमने स्वयं
उसे उस विशाल जाल को खोलते हुए देखा।
तब से, विवश होकर, और अनिच्छुक हाथों से, उसने इसे समाप्त कर दिया। अब दूल्हों को तुम्हारे शब्दों का उत्तर देने दो, ताकि तुम हमारा उद्देश्य पूरी तरह जान सको, और सभी अचेयन भी इसे जान सकें। अपनी माँ को यहाँ से भेज दो, और उससे यह अपेक्षा करो कि वह उस दूल्हों से विवाह करे जिसे उसके पिता चुनते हैं और जिसे वह स्वयं पसंद करती है। परन्तु यदि वह यूनान के पुत्रों के साथ ऐसा ही तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करती रही, और उन उपहारों पर बहुत अधिक विश्वास करती रही जो पल्लास ने उसे इतनी प्रचुर मात्रा में दिए हैं, महान कलाएँ, और बुद्धि, और चालाक चालें, उन सभी से परे जिनके बारे में हमने कभी सुना है, तो वह यूनान के पुत्रों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करती रही। पुराने समय में, अचियन वंश की सुनहरे बालों वाली महिलाएं, टायरो, अल्केमेना और माइसेने, अपने चमकदार बालों के लिए प्रसिद्ध थीं, लेकिन उनमें से कोई भी पेनेलोप जैसी नहीं थी, भले ही यह आखिरी चाल गलत तरीके से सोची गई हो - हम लंबे समय तक तुम्हारी संपत्ति और जायदाद को तब तक खर्च करते रहेंगे जब तक वह अपने वर्तमान मनोभाव को, उस उद्देश्य को जिसे देवताओं ने उसके हृदय में बोया है, बनाए रखेगी। वह स्वयं तो बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करती है, लेकिन निश्चित रूप से तुम्हें बहुत सारी संपत्ति का नुकसान पहुंचाएगी। और अब हम यहाँ से नहीं जाएंगे, न अपने कामों के लिए और न ही कहीं और, जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती।
यूनानियों में से जो भी उसे सबसे अधिक प्रसन्न करे।"
फिर विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:— “एंटिनोस, यह बहुत बड़ा अन्याय होगा कि मैं अपनी माँ को, जिसने मुझे जन्म दिया और पाला-पोसा, इस महल से अनिच्छापूर्वक विदा कर दूँ। चाहे वह जीवित हो या मृत, मेरे पिता दूर देशों

में हैं; और यदि मैं अपनी इच्छा से अपनी माँ को विदा कर दूँ, तो मुझे इकारियस को भारी क्षतिपूर्ति करनी होगी, और यह कठिन होगा। और वह मुझे नुकसान पहुँचाएगा, और देवता मुझ पर और भी विपत्तियाँ भेजेंगे। क्योंकि तब मेरी माँ बाहर जाकर क्रूर देवियों और सर्वव्यापी अभिशाप को पुकारेगी। सभी पुरुषों में से तुम मुझ पर ही आओगे। यह मत सोचो कि मैं कभी वह शब्द बोलूंगा। लेकिन यदि तुम बीते हुए समय के लिए किसी भी प्रकार की हानि का बोध रखते हो, तो इन महलों से चले जाओ; अन्य भोजों का आयोजन करो, अपना सब कुछ खा जाओ, और बारी-बारी से एक-दूसरे के घरों में जाओ। लेकिन यदि तुम्हें किसी एक व्यक्ति की संपत्ति लूटना ही समझदारी और बेहतर तरीका लगता है, तो मेरी संपत्ति को बर्बाद करते रहो। मैं शाश्वत देवताओं से सहायता मांगूंगा, और यदि बृहस्पति तुम्हारे अपराधों के लिए उचित दंड दे, तो तुम इसी महल में बिना बदला लिए मर जाओगे।
टेलीमाकस ने कहा। गर्जन के देवता, बृहस्पति ने एक ऊँचे पर्वत की चोटी से दो चीलों को उड़ाया। पहले वे हवा में एक-दूसरे के करीब, पंख फैलाए हुए उड़े; परन्तु जैसे ही वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ उनके ठीक नीचे बड़बड़ाती भीड़ इकट्ठी थी, वे मुड़े और अपने भारी पंख फड़फड़ाए, नीचे देखते हुए, नीचे खड़े लोगों के सिरों पर घातक अपशकुन की दृष्टि से, और अपने पंजों से एक-दूसरे के गाल और गर्दन नोंच डाले, और फिर दाईं ओर उड़ गए, इथाका की छतों के बीच से दूर। चीलों को देखने वाले सभी लोग चकित रह गए, और सोचने लगे कि कौन सी घटना निकट है। उनमें से एक वृद्ध वीर बोला, जिसका नाम हेलिथर्स था, जो मास्टर का पुत्र था। वह अपने हमउम्र लोगों से कहीं अधिक सटीक रूप से जानता था कि पक्षियों की उड़ान से भविष्य का अनुमान कैसे लगाया जाए, और भाग्य की इच्छा को कैसे पढ़ा जाए—और उसने बुद्धिमानी से इस प्रकार कहा:
“इथाका के लोगो, सुनो मैं क्या कहूँ। मैं उस विषय पर बात कर रहा हूँ जो सीधे तौर पर उन लोगों से संबंधित है जो शादी के प्रस्ताव लेकर आए हैं, जिन पर पहले से ही बड़ा खतरा मंडरा रहा है, क्योंकि यूलिसिस अपने घर और दोस्तों से ज्यादा देर दूर नहीं रह सकता। अभी भी वह ज्यादा दूर नहीं है, और वह सभी प्रस्तावकों के नरसंहार और मृत्यु की योजना बना रहा है; और धूप से भरे इथाका में रहने वाले हममें से कई लोगों का भी यही हाल होगा। अब हमें सोचना चाहिए कि इन लोगों को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं—या उन्हें अपनी मर्जी से ही ऐसा करने से रोका जाए—जितनी जल्दी हो सके, उतना अच्छा

होगा।” मैं किसी अनपढ़ की तरह भविष्यवाणियाँ नहीं करता, बल्कि जो जानता हूँ वही कहता हूँ। मैंने अपने सरदार से जो भी भविष्यवाणी की थी, जैसे कि आर्गिव सेना का ट्रॉय के लिए प्रस्थान करने का समय और उनके साथ ऋषि यूलिसिस का होना, वह सब पूरी हो गई है; मैंने कहा था कि अनेक कठिनाइयों को सहने के बाद, और अपने सभी साथियों को खोने के बाद, बीसवाँ वर्ष उसे हम सबके लिए अजनबी बनाकर वापस लाएगा— और जो कुछ मैंने कहा था वह सब सच हो गया। पॉलीबस के पुत्र यूरीमाकस ने भविष्यवक्ता को उत्तर दिया: “हे बूढ़े, अपने घर जाओ और अपने बेटों के पास जाकर उन्हें भविष्यवाणी सुनाओ, कहीं उन पर कोई विपत्ति न आ पड़े। मैं ऐसे मामलों में भविष्यवक्ता की भूमिका तुमसे बेहतर निभा सकता हूँ। यह सच है कि बहुत से पक्षी धूप में उड़ते हैं, लेकिन सभी अशुभ नहीं होते। यूलिसिस दूर मर गया; अच्छा होता अगर तुम भी उसके साथ मर गए होते; तब तुम भविष्य की बातों पर व्यर्थ ही बकवास नहीं करते, और न ही हिलते- डुलते।” मैंने टेलेमाकस को क्रोधित किया, इस आशा में कि वह तुम्हारे घर कोई उपहार लेकर आएगा। अब मैं कहता हूँ, और विश्वास रखो कि मेरी बातें पूरी होंगी: तुम अनुभवी हो, यदि तुम कपटपूर्ण बातों से अपने से छोटे किसी व्यक्ति को हिंसक कृत्यों के लिए उकसाओगे, तो कठोर दंड पहले उसे मिलेगा, परन्तु हम तुम पर दंड लगाएंगे, हे बूढ़े, जिसे सहना तुम्हारे लिए कठिन होगा, और तुम पछताओगे। और अब मैं टेलेमाकस को मना लेता हूँ कि वह भेजे उसकी माँ उसके पिता से। वे वहाँ उसका विवाह करवाएँगे और उसे उदारतापूर्वक दहेज देंगे, जो विवाह के दिन एक प्रिय पुत्री के लिए उपयुक्त होगा। अन्यथा, मुझे लगता है, यूनान के पुत्र इस कठिन प्रस्ताव को कभी नहीं छोड़ेंगे। हम टेलीमाकस से नहीं डरते, चाहे वह कितना भी वाक्पटु क्यों न हो। न ही हमें उस खोखले उपदेश की परवाह है जो तू, बूढ़े, बोलता है, जिससे तू और भी घृणित हो जाता है। उसकी संपत्ति तब तक बर्बाद होती रहेगी, और व्यवस्था कभी नहीं लौटेगी, जब तक वह किसी राजकुमार से अपना विवाह टालती रहेगी। हम अचियों में से उस श्रेष्ठ स्त्री के लिए अपनी विनती करेंगे, प्रतिद्वंद्वी बनकर, और न ही हम दूसरों का हाथ मांगने के लिए पीछे हटेंगे, जिनसे हम उचित विवाह कर सकते हैं।
इस पर विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:— “यूरिमाकस, और तुम, प्रतिष्ठित दूल्हों के समूह, मुझे अब और कुछ नहीं पूछना है— अब और कुछ नहीं कहना— क्योंकि अब देवता और सभी अचेयन सत्य जानते हैं। लेकिन मुझे एक शानदार नाव

होगी, चाहे वह कितनी भी इच्छा रखती हो। वह हम जैसे असंख्य लोगों से संघर्ष में निश्चित रूप से मृत्यु को आमंत्रित करेगा।” तुमने बुरा कहा है। अब यहाँ एकत्रित हुए लोग अपने-अपने कामों पर चले जाएँ। हम मेंटर और हैलिथर्स को, जो दोनों उसके पिता के शुरुआती साथी थे, युवक की यात्रा के लिए व्यवस्था करने के लिए छोड़ रहे हैं। मुझे लगता है कि वह यहाँ काफी समय तक रहेगा, इथाका में समाचार पूछने के लिए, और कभी भी रवाना नहीं होगा।
ऐसा कहकर उसने तुरंत लोगों को विदा कर दिया; वे अपने घरों को चले गए; और राजकुमारों ने राजकुमार के महल की तलाश की।
फिर, सबसे अलग, समुद्र तट पर, टेलीमाकस गया और उसने अपने हाथ भूरे रंग की लहरों में धोए और पल्लास से इस प्रकार प्रार्थना की:—
“हे देवता, मेरी बात सुनो, जिसने कल हमारे महल में आकर मुझे आदेश दिया था कि मैं गहरे काले सागर को पार करके अपने अनुपस्थित पिता का समाचार और उनके लौटने की संभावना जानूँ! यूनानी स्वयं मेरे इस उद्देश्य का विरोध करते हैं; और सबसे अधिक तो अभिमानी दावेदार।”
यही उनकी प्रार्थना थी, और तुरंत पल्लास, मेंटर के समान रूप और स्वर में, उनके बगल में खड़ी हो गईं, और इस प्रकार पंखों वाले शब्दों से उन्हें संबोधित किया:
“टेलेमाकस, अब से तुझमें वीरता और बुद्धि की कमी नहीं होगी। यदि तुझमें तेरे पिता का वीर स्वभाव बना रहे, जैसा कि वे कर्म और वचन में थे, तो तू यह यात्रा व्यर्थ नहीं करेगा। परन्तु यदि तू वास्तव में अपने पिता और पेनेलोप का पुत्र नहीं है, तो मैं तुझसे वह करने की अपेक्षा नहीं करता जो तूने सोचा है। बहुत कम पुत्र अपने पिता के समान होते हैं: अधिकतर उनसे भी बदतर होते हैं, और बहुत कम ही अपने माता-पिता से श्रेष्ठ होते हैं। क्योंकि आने वाले समय में तुझमें वीरता और बुद्धि की कमी नहीं होगी, क्या तुम्हारे पिता की चतुराई तुझमें बिल्कुल भी कम है? तुझमें बड़ी आशा है कि यह योजना सौभाग्य से पूरी होगी। इसलिए, उनके प्रेम-प्रसंगों, उनके इरादों और षड्यंत्रों पर ध्यान मत दो। वे नासमझ हैं, उतने ही नासमझ जितने न्यायप्रिय, और उन्हें मृत्यु के उस काले भाग्य का कोई आभास नहीं है जो अब एक ही दिन में उन्हें विनाश की ओर ले जाने के लिए निकट आ रहा है। परन्तु तुम्हारा यह कार्य विलंबित नहीं होना चाहिए। मैं तुम्हारे पिता का और तुम्हारा इतना बड़ा मित्र हूँ कि मैं समुद्र में चलने के लिए एक तेज नौका

तैयार करवाऊँगा, और स्वयं तुम्हारे साथ रहूँगा। अब यहाँ से जाओ। दावेदारों में से, वहाँ
आवश्यक सामान तैयार करो, और उन सभी को
बर्तनों में रखो—शराब जारों में, और आटा, मनुष्य की शक्ति
मोटी खालों में—जबकि मैं,
यहाँ के लोगों में से, एक इच्छुक दल नियुक्त करता हूँ।
हमारे समुद्री तट इथाका में कई जहाज हैं, नए और पुराने, और मैं इनमें से सबसे अच्छा चुनूँगा, और उसे अच्छी तरह से सुसज्जित करूँगा।
फिर हम उसे विशाल समुद्र में ले जाएँगे।
इस प्रकार बृहस्पति की संतान पल्लास बोली। टेलीमाकस ने दिव्य वाणी का पालन किया, और रुका नहीं; वह जल्दी से घर चला गया, जहाँ उसने देखा कि हॉल में अहंकारी दूल्हों को उदास भाव से बकरियों की खाल उतारते और सूअरों को भूनते हुए देखा जा सकता है। एंटिनोअस हंसते हुए युवक से मिलने आया, और उसका हाथ थामकर बोला:—
“तेलेमाकस, हे उच्च वाणी वाले और अभिमान में अति उत्साही युवक, न तो कोई शब्द और न ही कोई कर्म जो तुझे अप्रसन्न करे, तेरे हृदय को व्याकुल करे, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक खाओ-पियो, जैसा तू करता था। अचेयन उदारतापूर्वक तुझे जो कुछ भी चाहिए, पोत और मनुष्य— सभी चुने हुए नाविक— प्रदान करेंगे, ताकि तू पवित्र पाइलोस शीघ्र पहुँच सके, और वहाँ अपने प्रख्यात पिता के भाग्य का समाचार प्राप्त कर सके।”
तब विवेकशील टेलीमाकस ने बारी-बारी से कहा:— “एंटिनोस, मैं तुम्हारे साथ कभी चुपचाप नहीं बैठ सकता, हे अहंकारी लोगो! न ही शांति से दावत का आनंद ले सकता हूँ। क्या यह काफी नहीं है, हे प्रेमियों, कि जब मैं बच्चा था, तब तुमने मेरी सारी संपत्ति और धन अपनी मौज-मस्ती में लुटा दिया? अब जब मैं बड़ा हो गया हूँ, और जब मैं दूसरे पुरुषों के शब्द सुनता हूँ, तो उनका अर्थ समझता हूँ, अब जब हर दिन मेरी आत्मा को शक्ति मिलती है, तो मैं तुम्हारे सिर पर बुरा भाग्य लाने का प्रयास करूँगा, चाहे मैं पाइलोस जाऊँ या यहीं रहूँ। इन लोगों के बीच, मैं निश्चित रूप से यह यात्रा करूँगा, और यह व्यर्थ नहीं जाएगी। यद्यपि मैं किसी और के जहाज पर यात्री के रूप में जा रहा हूँ— क्योंकि न तो मेरे पास कोई जहाज है और न ही कोई नाविक—आपने यही उचित समझा है।

उसने बात की और तुरंत ही दूल्हे के हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया। महल में भोज की तैयारी कर रहे अन्य लोगों ने उसका उपहास उड़ाया और उस पर कड़वे ताने बरसाए, और उन उद्दंड युवकों में से एक ने उसे इस प्रकार कोसा:
“टेलेमाकस ने निश्चित रूप से हमारा नरसंहार करने का निश्चय कर लिया है। वह रेतीले पाइलोस या स्पार्टन तट से सहयोगी लाने जा रहा है, वह नरसंहार करने पर इतना तुला हुआ है। या शायद वह एफिरे की समृद्ध भूमि पर घातक जहर की तलाश में गया है, जिसे वह एक प्याले में डालकर हम सबको एक ही बार में खत्म कर देगा।”
तब अभिमानी युवकों में से एक ने कहा:— “कौन जानता है कि कहीं वह भी अपने खोखले जहाज में भटकते हुए, अपने सभी मित्रों से दूर, उसी प्रकार न मर जाए, जैसे यूलिसिस मरा था? इससे श्रम में वृद्धि होगी; और हमें उसकी संपत्ति बाँटने और उसका महल उसकी माँ को, और उस स्त्री को, जिसने उसे अपनी विवाहित पत्नी बनाया है, देने का कष्ट उठाना पड़ेगा।”
उन्होंने ऐसा कहा, लेकिन टेलीमाकस नीचे उस ऊंचे गुंबद वाले कमरे में गया, जो उसके पिता का था, जहाँ सोने और पीतल के ढेर लगे थे, और संदूकों में वस्त्रों का भंडार था, और सुगंधित तेल थे। और वहाँ उत्तम पुरानी और शुद्ध शराब के पीपे रखे थे, जो देवताओं के लिए दीवार के सहारे कतारों में रखे थे, ताकि वे प्रतीक्षा कर सकें कि अनेक कठिनाइयों को सहने के बाद कभी यूलिसिस वापस लौटे। उस कमरे पर कसकर बंद होने वाले दोहरे दरवाजे लगे थे, और वहाँ एक स्त्री थी जो दिन-रात पहरा देती थी, ओप्स की पुत्री यूरिक्लेया, जो पेइसेनोर की पुत्री थी। टेलीमाकस अंदर गया और उसे अपने पास बुलाया, और उससे इस प्रकार कहा:—
“हे नर्स, मेरे घड़ों में मीठी शराब भर दो, जो तुम्हारे पास रखी शराब के बाद सबसे उत्तम हो। मैं अपने अभागे स्वामी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, यदि कुलीन कुल में जन्मे यूलिसिस मृत्यु के भाग्य से बचकर हमारे पास वापस आ सकें। बारह घड़े भर दो, ढक्कन कसकर बंद कर दो, और अच्छी तरह सिले हुए चमड़े के बर्तनों में आटा डाल दो, और कुल मिलाकर बीस माप गेहूँ का आटा हो। यह बात केवल तुम्हें ही पता होनी चाहिए। ये सभी चीजें एक साथ मिला दी जाएँ; फिर, जैसे ही रात होती है, जब मेरी माँ आराम करने के लिए अपने ऊपरी कमरे में जाती है, मैं आकर उसे ले जाता हूँ। हे प्रभु, तू मेरे लिए जो भी व्यवस्था करता है, मैं स्पार्टा और पाइलोस के रेगिस्तानी इलाकों के लिए रवाना होता

हूँ, अपने प्रिय पिता की वापसी के बारे में समाचार एकत्र करने के लिए, यदि संभव हो तो।
युवक ने ऐसा कहा, और उसकी प्रिय नर्स सिसकियाँ भरते हुए, ज़ोर-ज़ोर से रोई और ये मधुर शब्द कहे:—
“हे प्रिय बालक, तेरे हृदय में ऐसा विचार क्यों आए? तू अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र होते हुए भी, दूर-दराज के क्षेत्रों में क्यों भटक रहा है? कुलीन कुल में जन्मा यूलिसिस, अपने जन्मस्थान से दूर, एक पराये समुदाय में मर गया। तेरे जाने के बाद, ये लोग तेरी जान लेने की साजिश रचेंगे और तेरी संपत्ति आपस में बाँट लेंगे। तू यहीं अपने लोगों के बीच रहे; तुझे बंजर गहरे सागर में भटकते हुए कष्ट सहने की कोई आवश्यकता नहीं है।”
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा:—
“हे नर्स, हिम्मत रखो, क्योंकि मेरा इरादा किसी देवता की स्वीकृति के बिना नहीं है; लेकिन शपथ लो कि मेरी माँ को मेरे इरादे के बारे में तब तक नहीं बताओगी जब तक ग्यारहवाँ दिन या बारहवाँ दिन न बीत जाए, या जब तक मेरी कमी महसूस करते हुए उसे मेरे जाने का पता न चल जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह रोए और अपने चेहरे की सुंदरता को आँसुओं से दागदार कर दे।”
उसने बोलना शुरू किया; उस बूढ़ी औरत ने पूरी श्रद्धा से देवताओं की कसम खाई और जब रस्म पूरी हो गई तो उसने घड़ों में शराब भरी और अच्छी तरह सिले हुए चमड़े के थैलों में आटा डाला। टेलीमाकस हॉल में दाखिल हुआ और अन्य प्रेमियों के समूह में शामिल हो गया।
फिर नीली आँखों वाली देवी ने अपना ध्यान अन्य योजनाओं की ओर मोड़ा और टेलीमाकस का रूप धारण करके शहर में घूमीं, बारी-बारी से प्रत्येक व्यक्ति से बात की और सूर्यास्त के समय उन्हें उस उत्तम पोत पर जाने का आदेश दिया। उन्होंने उस वीर पोत के लिए फ्रोनियस के पुत्र, प्रसिद्ध नोएमोन से विनती की, जिसने प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा का पालन किया।
सूरज डूब गया, शहर की सड़कें पूरी तरह से छाया में थीं। फिर उसने अच्छे जहाज को समुद्र में उतारा और एक अच्छी तरह से बने जहाज के लिए आवश्यक सभी साजो-सामान लाकर रख दिए, और उसे बंदरगाह के तल पर लंगर डाल दिया, जहाँ पल्लास के आदेश का पालन करते हुए, उसके वीर दल के सदस्य उसके चारों ओर जमा हो गए।

एक नई युक्ति के साथ नीली आँखों वाली दासी
देवतुल्य मुखिया
यूलिसिस के महल में गई, जहाँ उसने सभी प्रेमियों पर मधुर नींद का जादू कर दिया। जैसे ही उन्होंने पेय पिया, उसने
उनकी इंद्रियों को विचलित कर दिया, और उनके हाथों से
प्याले छूट गए। अब वे मेज पर नहीं बैठे थे, बल्कि बाहर निकल गए, और शहर से होते हुए
अपनी नींद में चले गए, क्योंकि नींद का प्रभाव
उनकी पलकों पर भारी पड़ गया था।
फिर उन भव्य महलों से नीली आँखों वाली पल्लास ने
टेलीमाकस को बुलाया। उसने गुरु का रूप और स्वर धारण किया और उनसे इस प्रकार कहा:—
“टेलेमाचस, अपनी नौकाओं पर सवार हो जाओ
अपने सुसज्जित साथियों को बिठाओ और तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करो
; चलो बिना देरी किए चलें।”
इस प्रकार बोलने के बाद, पल्लास आगे-आगे चलने लगी। वह तेज़ी से कदमों से आगे बढ़ती रही और उसके पीछे-पीछे चलने लगी; जब तक कि वे नाव और समुद्र तक नहीं पहुँच गए, तब तक उन्हें अपने लंबे बालों वाले साथी किनारे पर मिले। और फिर वीर राजकुमार टेलीमाकस ने उनसे कहा: “साथियों, इधर आओ, हम समुद्र से लाए गए भंडार को उस घर से लाएँ जहाँ वे पड़े हैं; मेरी माँ को इसके बारे में पता नहीं है, न ही उसकी दासियों को; यह रहस्य केवल एक को बताया गया है।”
वह बोला और उनके आगे चल पड़ा। वे उसके कदमों पर चले। वे उस भव्य नाव में सामान लाए और राजा यूलिसिस के प्रिय पुत्र के आदेशानुसार उसे नाव के भीतर रख दिया। टेलीमाकस नाव के किनारे चढ़ गया, लेकिन पल्लास पहले सवार हुई और पिछले हिस्से में बैठ गई, जबकि टेलीमाकस उसके बगल में बैठा था। फिर चालक दल ने रस्सियाँ खोल दीं और सब जहाज पर सवार हो गए, और नाविकों की सीटों पर बैठ गए, जबकि नीली आँखों वाली पल्लास ने अनुकूल हवा भेजी, पश्चिम से एक ताज़ी हवा, जो गुनगुनाते हुए गहरे नीले समुद्र को बहा ले गई। टेलीमाकस ने रस्सियाँ चलाने का आदेश दिया; उन्होंने आज्ञा मानी, और देवदार के पेड़ का मस्तूल उठाया, और उसे उसके सॉकेट में फिट करके, रस्सियों से कसकर बाँध दिया, और कसकर मुड़ी हुई रस्सियों से चमकदार पाल फैला दिए। स्थिर हवा ने

बीच में पाल को फुला दिया; जहाज आगे बढ़ता रहा, अंधेरा समुद्र उसके कील के चारों ओर गर्जना कर रहा था, और वह लहरों को चीरता हुआ तेजी से आगे बढ़ रहा था। और जब उस तेज काले जहाज का रस्सा मजबूती से अपनी जगह पर लग गया, तो उन्होंने अपने प्याले शराब से भर लिए, और शाश्वत देवताओं को अर्घ्य अर्पित किया, विशेष रूप से एक को, बृहस्पति की नीली आंखों वाली पुत्री को। इस प्रकार उस पूरी रात और अगली सुबह तक वे आगे बढ़ते रहे।

पुस्तक III
टेलेमाकस का नेस्टर के साथ साक्षात्कार
पाइलोस में मेंटर के रूप में पलास के साथ टेलेमाकस का आगमन—नेस्टर के साथ उनका साक्षात्कार—ट्रॉय से अपनी वापसी का नेस्टर का वृत्तांत—एगमेम्नन की मृत्यु और ओरेस्टेस के प्रतिशोध का इतिहास—पलास का स्वर्गारोहण— नेस्टर द्वारा टेलेमाकस को उसके पुत्र पेइसिस्ट्राटस के साथ स्पार्टा में मेनेलास के पास भेजा जाना।
अब सागर की सुंदर और विशाल गोद से सूर्य आकाश के निर्मल गुंबद में उदय हुआ, अमर लोगों और मनुष्यों के लिए उपजाऊ पृथ्वी पर चमकता हुआ। यात्री भव्य रूप से निर्मित शहर पाइलोस पहुंचे, जो नेलियस का नगर था। वहां, समुद्र तट पर, उन्होंने लोगों को काले बालों वाले नेपच्यून को कोयले जैसे काले बैल चढ़ाते हुए पाया। वे नौ सीटों पर बैठे थे, प्रत्येक सीट पर पांच सौ; प्रत्येक पांच सौ के लिए नौ बैल मारे गए। जब वे अनुष्ठान कर रहे थे, और पहले आंतों का स्वाद चखकर, समुद्र के देवता को जांघें जला रहे थे, तब इथाकावासी ज़मीन पर उतरे, और अच्छे जहाज़ का पाल उठाकर, उसे समेटकर कील को बांध दिया, और फिर किनारे पर कदम रखा। गैली से टेलीमाकस बाहर आया, देवी उसका मार्गदर्शन कर रही थी, और नीली आँखों वाली पल्लास ने उससे कहा:— “टेलेमाकस, अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है,
शर्मिंदगी और संकोच का जरा सा भी नहीं।
तुम गहरे समुद्र को पार करके यहाँ आए हो अपने पिता के समाचार पूछने के लिए — कि किस दूर देश में वे छिपे हैं, उनका क्या हश्र हुआ है।
तो तुरंत नेस्टर के पास जाओ, जो घुड़सवारी में प्रसिद्ध है, और हम देखेंगे कि उन्होंने तुम्हारे लिए क्या योजना बनाई है। वहाँ उनसे विनती करो कि वे खुलकर बता दें। वे झूठ का एक शब्द भी नहीं बोलेंगे; वे वास्तव में बुद्धिमान हैं।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:— “हे गुरु, मैं मुखिया के पास कैसे जाऊँ, और किस अभिवादन से? मुझे दरबारी भाषा का बहुत कम ज्ञान है, और एक युवक के लिए एक वृद्ध व्यक्ति से प्रश्न पूछना शर्म की बात है।” नीली आंखों वाली देवी पल्लास ने फिर कहा:—
“कुछ हद तक तुम्हारा मन तुम्हारी वाणी को प्रेरित करेगा; कुछ हद तक

एक देवता तुम्हारे मुख में शब्द डालेगा—
क्योंकि मैं यह अच्छी तरह समझती हूँ कि तुम्हारा जन्म
और प्रशिक्षण देवताओं की कृपा के बिना नहीं हुआ था।”
ऐसा कहकर, नीली आँखों वाली पल्लास तेज़ी से आगे बढ़ी, और नेस्टर उसके कदमों पर उसके पीछे-पीछे तब तक चलता रहा जब तक कि वे वहाँ एकत्रित पाइलियनों के आसनों तक नहीं पहुँच गए। वहाँ नेस्टर अपने बेटों के साथ बैठा था, जबकि उसके साथी उसके चारों ओर खड़े होकर दावत की तैयारी कर रहे थे, और कुछ लोग आग पर मांस भून रहे थे, और कुछ लोग मांस के टुकड़ों को सीखों पर तपा रहे थे। अजनबियों के आने पर वे आगे बढ़े, और उनके हाथ पकड़कर उन्हें बैठने को कहा। नेस्टर के पुत्र पेइसिस्ट्राटस सबसे पहले आए, और उन्होंने प्रत्येक का एक-एक हाथ लिया, और उन्हें भोज में समुद्र की रेत पर बिछी कोमल खालों पर अपने भाई थ्रेसिमेड और अपने पिता के बगल में रखा; उनके भोजन के लिए उन्होंने आंत के कुछ हिस्से लाए, उनके लिए एक सुनहरे प्याले में शराब डाली, उसे अपने दाहिने हाथ में आगे बढ़ाया, और इन शब्दों के साथ ढाल धारण करने वाले बृहस्पति की संतान पल्लास से कहा:—
“हे अजनबी, राजा नेपच्यून से प्रार्थना करो। हमारे तट पर आकर तुम संयोगवश उनके पर्व में शामिल हो गए हो। और अपनी भेंट चढ़ाने और देवता से प्रार्थना करने के बाद, अपने मित्र को उत्तम मदिरा का प्याला दे दो ताकि वह भी भेंट चढ़ा सके; मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह देवताओं से प्रार्थना करता है; हम सभी को उनकी आवश्यकता है। वह तुमसे छोटा है और उम्र में मेरे बराबर प्रतीत होता है; इसलिए मैं सोने का प्याला सबसे पहले तुम्हें देता हूँ।” उसने कहा, और पैलास के हाथों में उत्तम मदिरा का प्याला रख दिया। वह इतने न्यायप्रिय और विवेकशील व्यक्ति से अत्यंत प्रसन्न हुई—इतनी प्रसन्न हुई कि उसने सबसे पहले उसे सोने का प्याला दिया, और इस प्रकार उसने नेपच्यून से श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की:
“हे नेपच्यून, हे पृथ्वी को आलिंगन देने वाले, सुनो, और अपनी कृपा से अपने भक्तों पर ये आशीर्वाद बरसाने में संकोच न करो। सबसे पहले नेस्टर और उनके पुत्रों को यश में वृद्धि प्रदान करो; फिर पाइलियन लोगों को, इस अत्यंत भव्य बलिदान के लिए, बड़ा प्रतिफल प्रदान करो; और अंत में, हमें— टेलेमाकस और मुझे— हमारे अपने देश में सुरक्षित वापसी प्रदान करो, उस उद्देश्य की प्राप्ति के साथ जो हमें हमारी वीर नौका में यहाँ लाया था।”

इस प्रकार उसने प्रार्थना की, और प्रार्थना पूरी की;
फिर उसने टेलीमाकस को
सुंदर गोल प्याला दिया, और उसी के शब्दों में यूलिसिस के प्रिय पुत्र ने प्रार्थना की। इस बीच, पाइलियनों ने मांस को अच्छी तरह भूनकर
उसे सीखों से उतारकर, प्रत्येक को उसका हिस्सा बाँटकर, भव्य उत्सव मनाया। और जब भूख और प्यास की पुकारें
शांत हो गईं, तो गेरेनियन योद्धा नेस्टर ने
बातचीत शुरू की, और अपने मेहमानों से इस प्रकार कहा:—
“अब समय आ गया है कि हम अपने मेहमानों से पूछें कि वे कौन हैं, क्योंकि अब उनका भोज समाप्त हो चुका है। हे अजनबियों, बताओ कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो? क्या यहाँ तुम्हारा कोई काम है, या तुम समुद्री लुटेरों की तरह मौत को चुनौती देते हुए, खुले समुद्रों में भटकते हो और दूसरे राज्यों में तबाही मचाते हो?”
और तब विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया
साहसपूर्वक—क्योंकि उस घड़ी में पल्लास ने अपने हृदय को इतना मजबूत कर लिया था कि वह आत्मविश्वास से अपने अनुपस्थित पिता का समाचार पूछ सके, और इस प्रकार मनुष्यों के बीच एक योग्य प्रसिद्धि प्राप्त कर सके:—
“हे नेस्टर, नीलियस के पुत्र, यूनान का गौरव! तुमने हमसे पूछा है कि हम कहाँ से आए हैं, और मैं ईमानदारी से इसका उत्तर दूंगा। हम इथाका से आए हैं, नेरिटस नदी के किनारे से, और जिस कारण के बारे में मुझे बोलना है, वह निजी है, सार्वजनिक नहीं। मैं अपने महान पिता, उदार हृदय वाले और कुलीन यूलिसिस के बारे में पूछने आया हूँ, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने मित्र, तुम्हारे साथ मिलकर इलियम नगर को उजाड़ दिया था। हमने सुना है कि जहाँ ट्रोजन के विरुद्ध युद्ध करने वाले सभी लोग मारे गए थे।” और दुखद मृत्यु को प्राप्त हुआ; शनि के पुत्र ने ही उसके भाग्य को प्रकट नहीं किया — चाहे वह शत्रुओं के हाथों धरती पर गिरा हो, या समुद्र में एम्फिट्रिटे की लहरों में डूब गया हो। इसलिए मैं तुम्हारे सामने घुटने टेककर तुमसे विनती करता हूँ— यदि तुम चाहो तो— उसकी दुखद मृत्यु का वर्णन करो, जैसा तुमने अपनी आँखों से देखा हो, या जैसा तुमने अन्य यात्रियों से सुना हो; क्योंकि जिसने उसे जन्म दिया, उसने उसे दुखी ही जन्म दिया। ऐसा मत सोचो मेरे प्रति कोमलता से कुछ भी नरम करने के लिए,

अपने वर्णन में, लेकिन सच्चे शब्दों में
मुझे पूरी बात बताओ, जो कुछ भी तुमने देखा है।
और मैं तुमसे विनती करता हूँ, कि यदि अपने जीवनकाल में,
मेरे पिता, महान यूलिसिस ने कभी तुम्हारे लिए वचन या कर्म का वादा किया हो, और ट्रॉय के राज्य में, जहाँ तुम
अचेयनों ने इतनी कठिनाइयाँ सहन कीं, अपना वादा निभाया हो, तो अब तुम इसे याद रखो और बिना किसी लाग-लपेट के बोलो।
और गेरेनियन योद्धा नेस्टर ने उत्तर दिया:—
“मेरे मित्र, क्योंकि तुम मुझे याद दिलाते हो
कि हम यूनानियों ने कितने कष्ट सहे,
यद्यपि उस भूमि में हमारा शौर्य अद्वितीय था,
जब हम जहाजों में अंधकारमय समुद्र में घूमते थे
लूट के लिए जहाँ कहीं भी अकिलीज़ नेतृत्व करता था,
और जब राजा प्रियम के घनी आबादी वाले शहर के चारों ओर
हमने युद्ध किया, जहाँ हमारे सबसे बहादुर गिरे, तो जान लो
कि वहाँ वीर एजैक्स लेटा है, और वहाँ
अकिलीज़; वहाँ पैट्रोक्लस, देवताओं की तरह
परिषद में; वहाँ मेरा प्रिय पुत्र
निर्दोष और बहादुर, तेजतर्रार और योद्धा एंटिलोकस—हमने अनेक विपत्तियाँ सहन कीं, और कौन नश्वर जन्म से उनका इतिहास बता सकता है? नहीं, भले ही तुम पाँच या छह वर्ष तक रहो और बहादुर यूनानियों द्वारा सहन किए गए सभी दुखों के बारे में पूछो, तुम पूरी कहानी सुनने से पहले ही थककर अपने घर लौट जाओगे। हमने नौ वर्ष शत्रु को परेशान करने, उन्हें घेरने और अनगिनत चालें चलने में बिताए। अंत में शनि के पुत्र ने बड़ी मुश्किल से युद्ध समाप्त किया। तब वहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो ज्ञान में यूलिसिस से प्रतिस्पर्धा करने का साहस कर सके; वह महान व्यक्ति हर प्रकार की रणनीति में निपुण था— तेरा पिता—यदि वास्तव में तू उसका पुत्र है। मैं तुझे देखकर चकित हूँ; तेरा सारा भाषण बिलकुल उसके जैसा है, और कोई विश्वास नहीं करेगा कि एक युवा व्यक्ति उसके जैसा इतना बोल सकता है। जब हम वहाँ थे, यूलिसिस और मैं परिषद या सभा में कभी अलग-अलग पक्षों में नहीं बोले, बल्कि एक ही इरादे से हमने विचारपूर्वक परामर्श किया कि अचेयनों का मार्गदर्शन कैसे किया जाए, उस

मार्ग पर जिसे हम सर्वोत्तम मानते थे; लेकिन जब हमने राजा प्रियम के भव्य नगर को पराजित और लूट लिया, और घर के लिए रवाना हुए, और किसी दिव्य शक्ति से यूनानी तितर-बितर हो गए, तो बृहस्पति ने उनके लिए एक दुखद वापसी का विधान किया। क्योंकि सभी न तो बुद्धिमान थे और न ही न्यायप्रिय, और कई ने अपने ऊपर एक बुरी नियति बुला ली—नीली आँखों वाली कन्या का घातक क्रोध, जो बृहस्पति से जन्म का दावा करती है। उसी ने एट्रीयस के पुत्रों के बीच कलह को भड़काया था। उन्होंने सूर्यास्त के समय सभी अचेयनों को एक सभा में बुलाया था, उचित ध्यान रखे बिना। और वहाँ योद्धा शराब से मदहोश होकर आ पहुँचे। भाई राजाओं ने उस सभा का कारण बताया। मेनेलास ने सबसे पहले सभी यूनानियों को गहरे समुद्र के पार लौटने की तैयारी करने का आदेश दिया। यह सलाह राजा एगामेम्नन को पसंद नहीं आई, जो लोगों को वहाँ अधिक समय तक रखना चाहता था, ताकि वह पवित्र बलि चढ़ाकर पल्लास के भयंकर क्रोध को शांत कर सके। मूर्ख! कौन यह नहीं देख सका कि ऐसा समझाना कितना व्यर्थ था, क्योंकि शाश्वत देवता अपने इरादे बदलने के लिए जल्दी राजी नहीं होते। वे इस प्रकार बहस करते रहे। कटु शब्दों के साथ,
जब तक कि विभिन्न पक्षों में शोरगुल करते हुए, सुसज्जित यूनानी उठ खड़े हुए। अगली रात
हमने विश्राम किया, लेकिन हमने अपने हृदयों में
आपसी घृणा पाल रखी थी; यही हमारे दंड के रूप में
बृहस्पति ने निर्धारित किया था। सुबह होते ही हमने
अपने जहाजों को गहरे समुद्र में उतारा, और अपना सामान
और अपनी सुडौल स्त्रियों को जहाज पर चढ़ाया।
फिर भी आधी सेना नहीं गई, बल्कि किनारे पर
एट्रेस के पुत्र, एगामेम्नन,
और लोगों के चरवाहे के साथ रह गई। शेष सभी
जहाज पर सवार हुए, लंगर उठाया और तेजी से रवाना हो गए। वहाँ से;
एक देवता ने विशाल समुद्र को शांत कर दिया,
और जब हम टेनेडोस पहुँचे तो हमने
देवताओं को अपनी भेंट चढ़ाई और घर लौटने की लालसा की—
व्यर्थ ही; अरुचिकर बृहस्पति को हमारी वापसी पसंद नहीं आई, और एक बार फिर उसने हमारे बीच कलह भेज दी। हममें से कुछ

बुद्धिमान राजकुमार यूलिसिस के नेतृत्व में,
एट्रीडेस को प्रसन्न करने के लिए एगामेम्नन ने
अपने सुगठित जहाजों को वापस मोड़ दिया। लेकिन मैं, अपने पीछे आने वाले सभी जहाजों के साथ,
अपने रास्ते भाग गया, यह जानते हुए कि कोई देवता
बुराई की योजना बना रहा था। हमारे साथ भागा,
अपने आदमियों को प्रोत्साहित करते हुए, टाइडियस का योद्धा पुत्र
। सुनहरे बालों वाला मेनेलास
बाद में लेस्बोस में हमारे पास आया, जहाँ हमने एक लंबी यात्रा की योजना बनाई, कि क्या हमें ऊबड़-खाबड़ चियोस के चारों ओर से होते हुए, सीरिया के द्वीप की ओर जाना चाहिए, उसे बाईं ओर रखते हुए,
या चियोस के नीचे से होते हुए हवादार मीमास की खड़ी ढलानों के किनारे से गुजरना चाहिए। हमने देवता से प्रार्थना की कि वह एक संकेत दिखाएँ, और उन्होंने हमारी प्रार्थना मान ली,
और हमें यूबोइया जाने के लिए दाहिनी ओर गहरे सागर को पार करने का आदेश दिया। बीच में, जितनी जल्दी हो सके सभी खतरों से बच निकलें। फिर हवा तेज और तीखी चली, और हमारा बेड़ा तेजी से मछली से भरी खाड़ियों के ऊपर से उड़ता हुआ रात में गेराएस्टस पहुँच गया। वहाँ, विशाल गहरे समुद्र को पार करने के बाद, हमने नेपच्यून को बैलों की कई जांघों का चढ़ावा चढ़ाया। चौथा दिन शुरू हुआ, और अब डायोमेड के आदमी, शक्तिशाली घुड़सवार, टाइडियस के पुत्र, अपने बेड़े के साथ आर्गोस में रुक गए, जबकि मैं हवा के साथ पाइलोस चला गया, जो उस क्षण से कभी नहीं, जब देवता ने इसे पहली बार भेजा था पानी के ऊपर, हवा चलना बंद हो गई।
“तो, मेरे प्यारे बच्चे, मैं अपने घर पहुँच गया, और न तो मुझे पता था कि यूनानियों में से कौन बच गया या रास्ते में कौन मर गया। फिर भी, जो कुछ मैंने यहाँ बैठे-बैठे सुना है, वह तुम मेरे महल में ठीक से जान लेना। और यह ऐसी बात नहीं है जिसे मुझे तुमसे छिपाना चाहिए।”
“कहा जाता है कि महान अकिलीज़ के प्रसिद्ध पुत्र के नेतृत्व में मायर्मिडोनियन भालाधारी सैनिक खुशी-खुशी घर लौट आए; ठीक वैसे ही खुशी-खुशी पेआस का पुत्र, प्रसिद्ध फिलोक्टेट्स भी लौटा। इडोमेनियस भी युद्ध में बचे अपने सभी साथियों को क्रीट वापस ले आया; उनमें से किसी को भी समुद्र ने

नहीं बहाया। लेकिन तुमने सुना है, हालांकि बहुत दूर, एट्रेस के पुत्र का भाग्य— वह कैसे घर लौटा, और कैसे एगिस्थस ने उसे मारने की साजिश रची, फिर भी अपने ही सिर पर भारी दंड पाया— कितना सौभाग्यशाली है वह जब हत्या करके मरने वाला व्यक्ति एक पुत्र; क्योंकि यह सम्राट का पुत्र ही था जिसने धूर्त हत्यारे एगिस्थस से बदला लिया, जिसके हाथों एट्रीड्स की मृत्यु हुई थी। हे मेरे मित्र, तू भी, क्योंकि तू विशाल शरीर वाला है, और एक महान व्यक्तित्व का धनी है, तू साहसी बन, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ तेरी प्रशंसा करें।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा:— “हे नेस्टर, नीलियस के पुत्र, यूनान का गौरव, उसका बदला भरपूर था, और दूर-दूर तक यूनानी उसकी प्रसिद्धि को भविष्य के गीतों में फैलाएंगे। हे भगवान, मुझे भी उतनी ही शक्ति प्रदान करें कि मैं उन हठी, अभिमानी और दंभी लोगों से बदला ले सकूँ, जिन्होंने मेरा अपमान किया और मेरे विरुद्ध बुराई की योजना बनाई! परन्तु देवता मेरे पिता और मुझे ऐसा सौभाग्य नहीं देंगे, और अब मुझे बस यही सहना है।” गेरेनियन योद्धा नेस्टर ने फिर कहा:—
“हे मेरे मित्र, तुमने जो बातें कही हैं, उनसे मुझे वो याद आ गया है जो मैंने सुना है—अफवाह है कि तुम्हारे महल में बहुत से चाहने वाले तुम्हारी माँ की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और तुम्हारे बावजूद घोर अन्याय कर रहे हैं। अब मुझे बताओ; क्या तुम स्वेच्छा से हार मान रहे हो, या इसलिए कि भविष्यवाणियों से प्रभावित होकर लोग तुम्हें अपना शत्रु मानते हैं? हो सकता है तुम्हारा पिता फिर आ जाए—कौन जानता है?—अकेले, या अन्य यूनानियों के साथ, इन हिंसक कृत्यों का बदला लेने के लिए। यदि नीली आँखों वाली पल्लास तुम पर कृपा करे, जैसा कि उसने एक बार ट्रॉय के राज्य में गौरवशाली सरदार यूलिसिस की रक्षा की थी, जहाँ हम, अचेयन, ने इतनी कठिनाइयाँ सहन कीं—क्योंकि मैंने कभी देवताओं को इतनी खुलेआम किसी व्यक्ति से मित्रता करते नहीं देखा, जैसा कि पल्लास ने वहाँ किया था—यदि वह इस प्रकार तुम पर कृपा करे और तुम्हारी रक्षा करे, तो शायद इनमें से कुछ लोग फिर कभी विवाह अनुष्ठानों के बारे में नहीं सोचेंगे।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा:— “हे वृद्ध पुरुष! मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम्हारे शब्द पूरे होंगे! क्योंकि उनका अर्थ बहुत गहरा है और वे

मुझे चकित कर देते हैं। जो तुम कहते हो, मैं चाहता हूँ कि वह सच हो जाए, पर जानता हूँ कि ऐसा नहीं हो सकता, चाहे देवता ही क्यों न चाहें।”
तब नीली आँखों वाली देवी, पल्लास, ने कहा:— “टेलेमाकस, तुम्हारे होंठों से क्या शब्द निकले हैं? एक देवता जब चाहे आसानी से किसी मनुष्य को दूर-दराज के क्षेत्रों में सुरक्षित रख सकता है; और मैं अनेक कठिनाइयों को सहने के बाद सुरक्षित रूप से अपने घर पहुँचना पसंद करूँगी, बजाय इसके कि लौटते समय अचानक मर जाऊँ, जैसे अगमेम्नन नीच एगिस्थस और रानी के छल से मारा गया था। फिर भी, देवताओं के पास भी इतनी शक्ति नहीं है कि वे जिन्हें सबसे प्रिय मानते हैं, उन्हें सामान्य विनाश से बचा सकें, जब क्रूर भाग्य उन्हें अंतिम लंबी नींद में ले आता है।”
विवेकशील टेलीमाकस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे गुरु, अब इस विषय पर और चर्चा न करें, यद्यपि हम बहुत दुखी हैं; वह कभी वापस नहीं लौटेगा, क्योंकि महान देवताओं द्वारा उसके लिए मृत्यु का काला भाग्य निर्धारित है। अब मुझे नेस्टर के बारे में और पूछने की अनुमति दें, क्योंकि उन्हें सभी मनुष्यों से परे, न्याय और विवेक के नियम ज्ञात हैं। लोग कहते हैं कि उन्होंने तीन पीढ़ियों पर शासन किया है, और मुझे वे शाश्वत देवताओं के समान प्रतीत होते हैं। हे नेस्टर, नीलियस के पुत्र, सच-सच बताइए कि शक्तिशाली राज्यों के सम्राट की मृत्यु कैसे हुई?” एट्रीड्स एगामेम्नन? तब उसका भाई मेनेलास कहाँ था? किस छल से धूर्त एगिस्थस ने उसकी हत्या की योजना बनाई, और अपने से भी अधिक वीर योद्धा को मार डाला? क्या उसका भाई अचेयन नगर आर्गोस में नहीं था? या वह अन्य देशों में भटकता रहा, जिसने हत्यारे को इतना साहसी बना दिया?
शूरवीर, गेरेनियन नेस्टर ने इस प्रकार उत्तर दिया:—
“मैं सब कुछ सच-सच बताऊँगा। तुमने सही अनुमान लगाया है और जैसा हुआ वैसा ही हुआ। यदि एट्रीयस का पुत्र, सुनहरे बालों वाला मेनेलास, ट्रॉय से आया होता और महल में एगिस्थस को जीवित पाया होता, तो उसने उसके शव पर मिट्टी नहीं डाली होती, बल्कि शहर से दूर खेतों में पड़े उसके शव को कुत्तों और पक्षियों ने नोंच डाला होता, और किसी भी यूनानी स्त्री ने उसके लिए विलाप नहीं किया होता। उसने जो अपराध रचा था वह बहुत बड़ा था। हम अभी भी दूर थे, सहन कर रहे थे। युद्ध की कठिन कठिनाइयों के बीच,
जबकि वह, अपने सुरक्षित आश्रय में

अर्पित कर सकें, और फिर विश्राम के बारे में सोचें; क्योंकि अब समय आ गया है; प्रकाश चला गया है, और देवताओं के सम्मान में आयोजित भोज में हमें देर तक नहीं बैठना चाहिए, बल्कि उचित समय पर चले जाना चाहिए।”
बृहस्पति की पुत्री बोली; उन्होंने उसकी बात ध्यान से सुनी; दूत उनके पास आए और अपने हाथों पर पानी डाला; लड़कों ने कटोरे भर दिए और उन्हें किनारे तक भर दिया, और एक-एक करके बाएँ से दाएँ जल पिलाया। फिर उन्होंने बलि के शिकारों की जीभें आग में झोंक दीं और उठकर देवताओं को मदिरा अर्पित की; और जब यह अनुष्ठान पूरा हो गया, और जब उनकी प्यास बुझ गई, तो पल्लास कुलीन टेलीमाकस के साथ अपने अच्छे जहाज पर जाने के लिए उठी, लेकिन नेस्टर ने उन दोनों को रोक लिया और उन्हें डांटते हुए कहा:—
“अब बृहस्पति और अन्य सभी देवता मना करते हैं कि तुम मुझसे विदा होकर अपने अच्छे जहाज पर जाओ, जैसे किसी अधपके, निर्धन व्यक्ति से, जिसके पास इतने कम कपड़े हों कि वह अपने कोमल, गर्म तहों में अपने और अपने मेहमानों को सुलाने के लिए चादर और कंबल भी न हों; परन्तु मेरे पास दोनों हैं— सुंदर ढंग से बुने हुए चादर और कंबल, और जब तक मैं जीवित हूँ, उस महान पुरुष यूलिसिस का पुत्र कभी भी किसी जहाज के डेक पर नहीं लेटेगा। मुझे आशा है कि मेरे बाद मेरे पुत्र, जो मेरे महल में निवास करते हैं, यहाँ आने वाले सभी का विधिवत स्वागत करेंगे।”
और इस प्रकार नीली आँखों वाली पल्लास ने फिर कहा:— “मेरे वृद्ध मित्र, तुमने ठीक कहा है, और टेलीमाकस को तुम्हारी बात मानना उचित है, क्योंकि यही सर्वोत्तम है। उसे तुम्हारे साथ रहने दो और तुम्हारे निवास में सोने दो, जबकि मैं अपने काले जहाज पर जाऊँगी, चालक दल का उत्साहवर्धन करूँगी और उन्हें उनके उचित कार्य सौंपूँगी, क्योंकि मैं उन सब में सबसे बड़ी हूँ; बाकी सब अभी युवा हैं, और मित्रता से प्रेरित होकर हमारे इस कार्य में शामिल हुए हैं; वे विशाल हृदय वाले टेलीमाकस के समतुल्य हैं। आज रात मैं जहाज के भीतर सोऊँगी।” हमारा काला जहाज,
और सुबह-सुबह उस भूमि के लिए रवाना हो जाओ
जहाँ विशाल आत्मा वाले कोकोनियन रहते हैं, जिनसे
मेरा एक ऋण है, न नया न छोटा।
इस बीच अपने महल से एक रथ में भेजो,

और अपने बेटे, इस युवक को भी साथ भेजो, और अपने अस्तबल के सबसे तेज और सबसे मजबूत घोड़ों को लाओ।
नीली आँखों वाली पल्लास ने ऐसा कहकर चील की तरह दृष्टि से ओझल हो गई, और सभी उसे देखकर गहरे विस्मय में पड़ गए। वृद्ध सम्राट ने यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित होकर टेलीमाकस का हाथ पकड़ा और कहा:—
हे मित्र, तू कायर स्वभाव का और युद्ध के लिए अनुपयुक्त नहीं हो सकता, क्योंकि इस प्रकार देवता तेरी युवावस्था में तेरा मार्गदर्शन करते हैं। और स्वर्ग में निवास करने वाले सभी देवताओं में से, यह कोई और नहीं बल्कि लूटपाट करने वाली रानी पल्लास हो सकती है, जो बृहस्पति की संतान है और जिसने यूनानियों के बीच तेरे पिता का भी इतना सम्मान किया। हे रानी, हम पर कृपा करो! मुझे और मेरे पुत्रों को, और मेरी पूजनीय पत्नी को विशेष गौरव का पुरस्कार प्रदान करो। मैं तेरे लिए एक बलिदान, एक चौड़े सींग वाला जानवर लाऊंगा। एक साल का बछड़ा,
जिसे न तो किसी मनुष्य ने वश में किया है और न ही जुए के नीचे ले गया है। मैं उसे सोने के सींगों के साथ लाऊंगा,
और तेरी वेदी की अग्नि पर भेंट चढ़ाऊंगा।
ये उसके शब्द थे, और पल्लास ने प्रार्थना सुनी,
और फिर गेरेनियन नेस्टर आगे-आगे चले,
और अपने बेटों और दामादों के साथ
अपने शानदार महल की ओर बढ़े। जब वे अंदर आए,
राजा के भव्य हॉल में, प्रत्येक ने अपना स्थान लिया,
सोफे और सिंहासनों पर क्रम से।
बूढ़े व्यक्ति ने उनके आने पर उनके लिए एक कटोरा तैयार किया, जिसमें ग्यारह साल पुरानी, नाजुक शराब थी,
जिसे युवती ने निकाला था, जिसने जार से उसका ढक्कन हटाया। वृद्ध सरदार ने इसे कटोरे में मिलाया, और पल्लास को एक भाग अर्पित करते हुए, उससे हार्दिक प्रार्थना की, जो कवच धारण करने वाले बृहस्पति से प्रकट हुई थी।
जब विधिवत अर्पण हो चुका था, और सभी
अपनी इच्छा पूरी होने तक पीते रहे, तो अधिकांश लोग चले गए,
प्रत्येक अपने घर सोने के लिए; लेकिन नेस्टर ने महान सरदार यूलिसिस के पुत्र टेलीमाकस को गूंजते हुए हॉल के भीतर एक शानदार पलंग पर आराम करने के

लिए कहा, और उसके पास भाला चलाने में कुशल स्क्वाड्रन प्रमुख पेइसिस्ट्राटस को, जो उसके पुत्रों में से एकमात्र अविवाहित था;
उस ऊंचे महल के भीतरी कमरे में
सम्राट राजसी पलंग पर सो रहे थे,
जिसे उनकी रानी के परिश्रम से उनके लिए सजाया गया था।
जैसे ही भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, नेस्टर अपना बिस्तर छोड़कर बाहर चला गया और अपने ऊंचे दरवाजों के सामने चिकने सफेद पत्थरों पर बैठ गया, जो तेल की तरह चमक रहे थे, और जिनके सामने देवताओं के समान बुद्धिमान नेलियस बैठा था। लेकिन वह भाग्य की इच्छा के आगे झुक गया और पाताल लोक में चला गया। अब गेरेनियन नेस्टर अपने पिता के स्थान पर बैठा था, यूनानियों का संरक्षक। उसके आसन के चारों ओर, उसके पुत्र एचेफ्रॉन, स्ट्रैटियस और एरेटस अपने विश्राम कक्षों से निकले, फिर पर्सियस और थ्रेसिमेडेस; इनके बाद, छठे और अंतिम वीर पेइसिस्ट्राटस आए। उन्होंने देवतुल्य युवक टेलीमाकस को अपने साथ लाया और उसे अपने पास बिठाया। गेरेनियन योद्धा नेस्टर ने अपने पुत्रों से कहा:—
“हे मेरे प्रिय पुत्रों, जो मैं कहता हूँ, उसे शीघ्र करो और सभी देवताओं में सर्वप्रथम पल्लास को प्रसन्न करने में सहायता करो—पल्लास, जिसने कृपापूर्वक आकर एक भव्य भोज में स्वयं को मेरे समक्ष प्रकट किया है। तुममें से एक खेतों में जाकर चरवाहे के नेतृत्व में एक बछिया ले आओ। मैं अपने किसी अन्य पुत्र को उदार हृदय वाले टेलीमाकस के काले रंग के जहाज पर जाने और दो को छोड़कर बाकी सभी को लाने का आदेश देता हूँ; और एक अन्य पुत्र को सोने के काम में कुशल लाएर्सियस को यहाँ बुलाने को कहो, ताकि वह उस पर सोने की परत चढ़ा सके। बछिया के सींगों को सोने से सजाओ।
बाकी सभी दासियों को विदा करने के लिए वहीं रहें।
भीतर एक भव्य भोज तैयार करो, और
कुर्सियाँ, लकड़ी और झरने से निर्मल जल लाओ।
उसने बोलना शुरू किया और सब काम में जुट गए। खेत से बैल आया; तेज़ गति से चलने वाली नाव से वीर युवक टेलीमाकस के साथी आए; अपने सभी औजारों के साथ— हथौड़ा, निहाई और अच्छी तरह से जुड़े हुए चिमटे— जिनसे वह काम करता था, सुनार भी आया, और पवित्र अनुष्ठानों में उपस्थित होने के लिए पल्लास भी आई। वृद्ध योद्धा नेस्टर सोना लेकर आया; कारीगर ने धातु तैयार की, और बैल

के सींगों पर उसे लपेटा, ताकि पल्लास उस सजे-धजे जानवर को देखकर प्रसन्न हो सके। फिर स्ट्रैटियस ने सींग पकड़े और एचेफ्रॉन की सहायता से बैल को ले गया। एरेटस अपने कमरे से एक हाथ में पानी से भरा हुआ पात्र और दूसरे हाथ में केक से भरा हुआ डिब्बा लेकर आया, जबकि युद्ध में महान थ्रेसिमेडेस एक तेज कुल्हाड़ी लेकर पास खड़ा था, शिकार पर वार करने ही वाला था। पर्सियस ने रक्त को पकड़ने के लिए एक फूलदान पकड़ा हुआ था, जबकि वृद्ध घुड़सवार नेस्टर ने पानी और केक लिए और पहले एक भाग अर्पित किया, और कटे हुए बालों को आग में फेंककर देवी पल्लास से पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की।
और अब, जब उन्होंने प्रार्थना कर ली और रोटीयाँ फेंक दीं, तब विशाल हृदय वाले नेस्टर के पुत्र थ्रेसिमेड्स ने जहाँ खड़े थे वहीं प्रहार किया; बैल की शक्ति टूट गई। तुरंत ही राजा की पुत्रियाँ, उनके पुत्रों की पत्नियाँ और रानी यूरीडिस—नेस्टर की पवित्र पत्नी और क्लीमेनस की सबसे बड़ी पुत्री—चीख-चीख कर रोने लगीं। तब पुत्रों ने धरती से बैल का सिर उठाया। सेनापतियों के मुखिया पेइसिस्ट्राटस ने उसे मार डाला। जब रक्त बहना बंद हो गया और शरीर से जीवन निकल गया, तब उन्होंने जल्दी से जोड़-जोड़ अलग कर दिए; उन्होंने जांघों को काटकर अलग कर दिया और उन्हें दोहरी तह से ढक दिया, जिस पर उन्होंने मांस की कच्ची पट्टियाँ रख दीं। बूढ़े राजा ने इन्हें फटी हुई लकड़ी पर जलाया और उन पर गाढ़ी शराब डाली, जबकि उनके बगल में युवक पाँच नोक वाली सीखें लेकर खड़े थे; और जब जांघें जल गईं और आंतें चख ली गईं, तो उन्होंने बाकी बचे हुए हिस्से को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर सीखों में पिरो दिया और उन्हें हाथ में नुकीली सीखें पकड़े हुए भूनने लगे। इसी बीच, नेस्टर की सबसे छोटी पुत्री, सुंदर पॉलीकास्टे ने टेलीमाकस को स्नान कराया; और स्नान करने के बाद उसने उस पर एक समृद्ध तेल डाला, और एक उत्तम वस्त्र और एक कुर्ता पहनाकर राजकुमार को, जो मानो किसी देवता की उपस्थिति में स्नान से निकला, वहाँ बैठ गया जहाँ नेस्टर, लोगों का चरवाहा, बैठा था। जब युवकों ने मांस को अच्छी तरह भूनकर सीखों से उतार लिया, तो वे भोज में अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। तब चुने हुए पुरुष उठे और उन्होंने स्वर्ण के प्यालों में मदिरा उंडेली; और जब अंततः प्यास और भूख दोनों शांत हो गईं, तब योद्धा, गेरेनियन नेस्टर ने इस प्रकार बोलना शुरू किया:—
“अब उठो, मेरे पुत्रों; मेरे रथ में सवार सुनहरे बालों वाले घोड़ों से जुड़ जाओ, और टेलीमाकस को जाने दो।”

उसने कहा; उन्होंने ध्यान से सुना और आज्ञा का पालन किया, और तुरंत ही तेज घोड़ों को रथ में जोत दिया। फिर घर की मुखिया आई और रथ में रोटी, शराब और ऐसे लज़ीज़ व्यंजन रखे जो किसी राजकुमार के भोजन के लिए उपयुक्त हों। तब टेलीमाकस आलीशान आसन पर चढ़ गया। नेस्टर का पुत्र और सशस्त्र टोलियों का सरदार, पेइसिस्ट्राटस भी चढ़ा, उसके बगल में बैठा, लगाम पकड़ी और चाबुक से घोड़ों को आगे बढ़ाया। अनिच्छा से नहीं, वे मैदान की ओर दौड़े और ऊंचे पाइलोस को पीछे छोड़ गए। सारा दिन वे दोनों अपनी गर्दनों पर बोझ ढोते रहे। सूरज डूब गया; जब वे फेरे और डायोक्लेस के निवास स्थान पर पहुँचे, तो राजमार्ग अंधेरे में डूबे हुए थे। डायोक्लेस, ओरसिलोचस का पुत्र था, जो स्वयं को अल्फेयस का वंशज बताता था। वहाँ उनका और डायोक्लेस का स्वागत हुआ और वे रात वहीं सोए।
और जब गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई,
उन्होंने घोड़ों को जोता, चमकते रथ पर चढ़े,
और महल के द्वार से बाहर निकले,
गूंजते हुए बरामदे के नीचे। पेइसिस्ट्राटस ने घोड़ों को आगे बढ़ाने के लिए चाबुक चलाया,
और वे अनिच्छा से नहीं दौड़े और
फसलों की भूमि पर पहुँच गए। यहाँ यात्रियों को
अपनी यात्रा का अंत मिला, क्योंकि वे तेज घोड़े उन्हें इतनी तेजी से आगे ले गए थे। और अब सूरज डूब गया,
और सभी रास्तों पर अंधेरा छा गया।

पुस्तक IV
टेलेमाकस और मेनेलाउस का सम्मेलन
टेलेमाकस और उसके साथी का स्पार्टा आगमन—एक विवाह; मेनेलास की पुत्री का विवाह—हेलेन का स्पार्टा में आगमन—मेहमानों का स्वागत—हेलेन द्वारा अपने पति के पास लौटने का वृत्तांत—ट्रोजन घोड़ा—समुद्र देवता प्रोटियस से परामर्श करने के लिए मेनेलास की मिस्र यात्रा का वृत्तांत— प्रोटियस द्वारा मेनेलास को यह सूचना मिलना कि कैलिप्सो ने यूलिसिस को अपने द्वीप में बंदी बना रखा है—टेलेमाकस की यात्रा पर घात लगाकर उसे नष्ट करने की साजिश—पल्लास द्वारा सपने में पेनेलोप से मिलना और उसे सांत्वना देना।
वे लैकेडेमोन की घाटी में पहुँचे, जो खाइयों से भरी हुई थी, और उसके राजा, तेजस्वी मेनेलास के महल में पहुँचे, जहाँ उन्होंने उसे अंदर पाया, और उसकी निर्दोष पुत्री और पुत्र, तथा अनेक अतिथियों के लिए आयोजित विवाह भोज में। उसे उसे विदा करना पड़ा, जो उस अजेय सरदार, अकिलीज़ के पुत्र की दुल्हन थी। उसने ट्रॉय में ही उससे सगाई की थी, और अपना शाही वचन दिया था, और अब देवताओं ने विवाह द्वारा उसे पूरा किया। अब वह उसे घोड़ों और रथों के साथ भेज रहा था, ताकि वह मायर्मिडोंस के महान नगर तक पहुँच सके, जहाँ उसका पति शासन करता था। स्पार्टन तट से वह अपने पुत्र के लिए एलेक्टर की पुत्री, वीर मेगापेंथेस को लाया, जिसे उसकी वृद्धावस्था में एक दासी ने जन्म दिया था। क्योंकि देवताओं ने हेलेन को कोई और संतान नहीं दी थी, जब उसने एक सुंदर पुत्री, हर्मियोनी को जन्म दिया था, जो चेहरे और रूप दोनों में सुनहरी वीनस के समान थी।
इस प्रकार, गौरवशाली मेनेलाउस के पड़ोसी और मित्र भोज में उन विशाल हॉलों की ऊँची छत के नीचे बैठे थे, भोज का आनंद ले रहे थे। उनके बीच एक पवित्र कवि ने वीणा बजाई और उनके लिए गीत गाया। गीत शुरू होते ही दो नर्तक बीच में कूद पड़े और ताल पर नाचने लगे।
लेकिन वे—वीर युवक टेलेमाकस और नेस्टर का प्रख्यात पुत्र—द्वार पर अपने घोड़ों के साथ खड़े थे। योग्य एटियोनियस, जो एट्रेस के गौरवशाली पुत्र का विश्वसनीय सेवक था, ने आकर देखा और लोगों के चरवाहे को बताने के लिए जल्दी से हॉल से होते हुए उसके पास आया और ये प्रभावशाली शब्द कहे:

“हे मेनेलाउस, बृहस्पति के पालक पुत्र, दो अजनबी आए हैं, दो ऐसे पुरुष जो सर्वशक्तिमान बृहस्पति के वंशज प्रतीत होते हैं। क्या हम उनके घोड़ों की लगाम खोल दें, या उन्हें कहीं और मित्रवत मेज़बान खोजने के लिए कहें?” सुनहरे बालों वाले राजा ने क्रोधित होकर उत्तर दिया: “नहीं, एटियोनियस, तुम ऐसे मूर्खतापूर्ण व्यवहार करने के आदी नहीं हो। हे बोएथस के पुत्र, तुम बच्चे की तरह व्यर्थ की बातें कर रहे हो। हम स्वयं अतिथि के रूप में अन्य लोगों द्वारा आयोजित भव्य भोजों में शामिल हुए हैं, जब हम यहाँ आ रहे थे, इस आशा में कि बृहस्पति हमें यहाँ विपत्तियों से कुछ समय के लिए विश्राम प्रदान करेगा। इसलिए, जल्दी करो और घोड़ों को खोलो और अजनबियों को भोज में लाओ।”
उसने बात की; सेवक जल्दी से आगे बढ़ा और अन्य भरोसेमंद सेवकों को अपने पीछे आने का आदेश दिया। उन्होंने पसीने से लथपथ घोड़ों को जुए से खोल दिया, और उन्हें अस्तबलों से बांध दिया, और उन्हें जई खिलाई, जिसमें उन्होंने सफेद जौ के दाने मिलाए, और चमकती दीवार के पास रथ खड़ा किया, और फिर मेहमानों को भव्य महल के भीतर ले गए। अंदर प्रवेश करते ही, उन्होंने बृहस्पति के दत्तक पुत्र के महल की प्रशंसा की, क्योंकि सूर्य और चंद्रमा की चमक के समान ही उसकी महिमा थी। वे प्रसन्न आँखों से निहारते रहे, और पॉलिश किए हुए स्नानागारों में उतरकर स्नान करने लगे। स्नानागार में सेवा कर रही दासियों ने तेल से उनका अभिषेक किया और अजनबी मेहमानों को ऊनी लबादे और वस्त्र पहनाए। प्रत्येक अतिथि एट्रीड्स के पास एक सिंहासन पर बैठ गया। अब एक दासी सोने का एक सुंदर कलश और चाँदी का बना एक पात्र लेकर आई और उनके हाथों के लिए पानी डाला, और उनकी सीट के पास एक पॉलिश की हुई मेज बिछाई; घर की आदरणीय संरक्षिका रोटी लेकर आई और उनके सामने दावत से एकत्रित अनेक व्यंजन परोसे। फिर मांस काटने वाला ऊँची थालियाँ लेकर आया और उनमें हर स्वाद का मांस भरकर लाया और उनके सामने सोने के पात्र रखे। सुनहरे बालों वाले राजा ने प्रत्येक से हाथ मिलाया और फिर उनसे इस प्रकार कहा:—
“अब हमारे भोज का स्वाद चखो और आनंद मनाओ, और जब तुम भोजन से तृप्त हो जाओगे, तो हम तुमसे पूछेंगे कि तुम कौन हो; क्योंकि तुम उन लोगों में से नहीं हो जिनकी वंश परंपरा पतित हो जाती है, तुम निश्चय ही राजदंडधारी राजाओं के पुत्र हो, बृहस्पति के प्रिय हो। नीच पुरुषों के तुम्हारे जैसे पुत्र कभी नहीं हुए।”

इस प्रकार कहकर, और अपने हाथों में एक मोटे बैल की जांघ लेकर, जिसे नौकर भूनकर लाए थे और राजा के सम्मान के प्रतीक के रूप में राजा के बगल में रखा था, उसने इसे अपने मेहमानों के सामने रख दिया। और उन्होंने अपने हाथ आगे बढ़ाए और भोज में शामिल हुए; और जब भूख और प्यास की पुकारें अंततः शांत हो गईं, तो टेलीमाकस ने नेस्टर के पुत्र की ओर अपना सिर झुकाया, ताकि कोई और उसकी बात न सुन सके, और उसने इस प्रकार कहा:—
“देखो, नेस्टर के पुत्र, मेरे प्रिय मित्र, इन सभी गूंजते कमरों में पीतल की चमक, सोने, अंबर और हाथीदांत की चमक; यही है ओलंपियन जूपिटर का महल, जिसकी दीवारें भीतर हैं। यहाँ कितनी अनमोल वस्तुएँ हैं! मैं देखते-देखते आश्चर्यचकित हो जाता हूँ।”
सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने उसे बोलते हुए सुना, और इस प्रकार उसने दोनों को जोशीले शब्दों से संबोधित किया:—
“प्रिय पुत्रों, कोई भी मनुष्य बृहस्पति से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, जिसका महल और संपत्ति कभी नष्ट नहीं होती, परन्तु अन्य मनुष्य धन-दौलत में मुझसे प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं या नहीं भी कर सकते हैं। लंबे समय तक कष्ट सहने और भटकने के बाद, मैं अपने बेड़े में अपनी संपत्ति लेकर आठवें वर्ष में इस तट पर उतरा। क्योंकि मैं दूर-दूर तक साइप्रस और फोनीशिया तक भटका था, जहाँ मिस्रवासी, इथियोपिया के पुत्र, सिदोनवासी और एरेम्बियाई जाति निवास करते हैं, और लीबिया के तट तक, जहाँ मेमनों का दूध निकाला जाता है। सींग निकल रहे हैं। वहाँ भेड़ें साल के चक्र में तीन बार अपने बच्चे पैदा करती हैं। वहाँ झुंड के स्वामी और चरवाहे को पनीर, मांस या मीठे दूध की कमी नहीं होती; क्योंकि वहाँ झुंड साल भर दूध देते हैं। जब मैं इस तरह घूम रहा था और धन इकट्ठा कर रहा था, तभी किसी और ने मेरे भाई को बिना किसी पूर्व सूचना के और अपनी ही दोषी साथी के धोखे से मार डाला। इसलिए इन संपत्तियों पर शासन करने में मुझे बहुत कम संतोष मिलता है। तुमने यह बात अपने माता- पिता से सुनी ही होगी, चाहे वे कोई भी हों। मैंने बहुत कुछ सहा है, और मैंने खोया है एक महल, एक बहुत ही आलीशान निवास स्थान, जो दुर्लभ और कीमती चीजों से भरा था। अब भी मैं चाहता हूँ कि मेरे इस महल में इनमें से केवल एक तिहाई ही हों; और काश वे लोग जीवित होते जो ट्रॉय के मैदान में, आर्गोस और उसके घोड़ों से दूर, मारे गए! फिर भी, जब मैं उन सभी के लिए शोक मनाता हूँ, यहाँ अपने महल में बैठा हुआ, मैं बारी-बारी से रोता हूँ, और बारी-बारी से रुकता

हूँ, क्योंकि निरंतर दुख के साथ एक थकान भी आती है। आत्मा। फिर भी, सच में, उन सभी योद्धाओं में से किसी के लिए भी, हालाँकि उनका भाग्य मुझे बहुत पीड़ा देता है, मुझे उतना शोक नहीं होता जितना एक नायक के लिए। जब मैं उसके बारे में सोचता हूँ, तो दावत और पल दोनों ही आनंदहीन हो जाते हैं, क्योंकि सभी अचेयन सरदारों में से, किसी ने भी उतना कुछ नहीं किया जितना यूलिसिस ने किया, चाहे उसने अपने कर्मों में किया हो या अपने कष्टों में। उसके जीवन में बड़ी विपत्तियाँ आईं, और मुझे उसके लिए ऐसा शोक है जिसे सांत्वना नहीं दी जा सकती। वह अपने मित्रों से बहुत समय से बिछड़ा हुआ है, और चाहे वह अब जीवित हो या मृत। हमें नहीं पता। बूढ़े लेर्टेस, बुद्धिमान रानी पेनेलोप और युवा टेलीमाकस, जिन्हें वह युद्ध पर जाते समय नवजात शिशु के रूप में घर पर छोड़ गए थे, कहीं उनके लिए शोक मना रहे हैं।
उसने बोलना शुरू किया और युवक के मन में अपने खोए हुए पिता के लिए फिर से शोक जागृत हो गया। अपने पिता का नाम सुनते ही उसकी पलकों से आँसू बहने लगे, और उसने दोनों हाथों से अपनी आँखों के सामने बैंगनी रंग का लबादा थाम लिया। मेनेलास ने उसके आँसू देखे और सोचने लगा कि कौन सा बेहतर है— अजनबी को अपनी मर्जी से अपने पिता के बारे में बोलने देना, या पहले उससे सवाल करना और फिर उसे सब कुछ बता देना जो वह जानता है।
जब वह इस प्रकार विचार कर रहा था, हेलेन, जो रूप में सोने के तकिये वाली डायना के समान थी, अपने ऊँची छत वाले कक्ष से निकली, जहाँ हवा सुगंधों से मीठी थी, और पास आई। अद्रास्ता ने उसके लिए कीमती कारीगरी का एक आसन रखा; अल्सीपे मुलायम ऊन की चटाई लाया, और फाइलो चांदी की टोकरी लेकर आया, जो पॉलीबस की पत्नी अल्कांद्रा ने दी थी, जो मिस्र के थेब्स में रहती थी, और जिसका घर कीमती चीजों से समृद्ध था। उसने मेनेलाउस को चांदी के दो स्नान पात्र, दो तिपाई और दस सोने के सिक्के दिए। उसकी पत्नी ने हेलेन को सुंदर उपहार दिए—एक सोने का, एक चरखा; और एक चांदी की टोकरी जिसके किनारे सोने से सजे थे और जो गोल आकार की थी। फाइलो इसे सूत से भरकर रानी के सामने लाया; उस पर चरखा रखा था, जो बैंगनी रंग के ऊन में लिपटा हुआ था। हेलेन वहाँ बैठ गई, उसके पैरों के पास एक चौकी थी, और उसने तुरंत अपने पति से गंभीर शब्दों में इस प्रकार पूछा:—
“सुनो, मेनेलास, बृहस्पति के दत्तक पुत्र, क्या अभी तक यह ज्ञात है कि ये आगंतुक किस वंश के हैं? और अब मैं जो कहूँगा, क्या वह असत्य होगा या सत्य?

फिर भी मुझे बोलना ही होगा। मुझे लगता है कि मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो किसी दूसरे के इतना समान हो, जैसा कि यह युवक, जिसे मैं गहरी हैरानी से देख रहा हूँ, टेलेमाकस के समान है, वह पुत्र जिसे हमारे महान सरदार यूलिसिस ने घर पर एक नन्हे बच्चे के रूप में छोड़ दिया था, जब तुम अचेयनों ने मेरे अपराध के कारण ट्रॉय के साथ रक्तपात करने के लिए प्रस्थान किया था।”
और सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने उसे उत्तर दिया:— “हाँ, पत्नी, मुझे भी ऐसा ही लगता है जैसा तुम्हें लगता है। उसके पैर, उसके हाथ, उसकी आँखों का भाव, उसका सिर, उसके माथे के बाल, सब कुछ ऐसा ही है। अभी-अभी, यूलिसिस के बारे में बात करते हुए, जैसा कि मैंने बताया कि उसने मेरे लिए कितना परिश्रम और कष्ट सहा, अजनबी ने बैंगनी लबादा अपनी आँखों के सामने रखा, और उसकी पलकों से कड़वे आँसू बहने लगे।”
नेस्टर के पुत्र पेइसिस्ट्राटस ने उत्तर में कहा: “मेनेलास, बृहस्पति का दत्तक पुत्र और एट्रेस का पुत्र! संप्रभु राजा! जैसा कि तुमने कहा है, वह उस वीर का पुत्र है; परन्तु वह विनम्र है, और वह इसे अनुचित समझता है। यहाँ पहुँचने पर, यह उसके लिए उचित होगा, यदि वह तुम्हारे उपस्थित रहते हुए, तुम्हारी वाणी में हमें आनंद आता है, मानो वह किसी देवता का वचन हो। गेरेनियन योद्धा नेस्टर ने मुझे उसे यहाँ लाने के लिए भेजा था—क्योंकि वह अत्यंत चाहता था...” तुम्हें देखने के लिए, ताकि तुम उसे सलाह दे सको कि उसे आगे क्या कहना या करना चाहिए। क्योंकि एक पुत्र, जिसे घर पर कोई मित्र नहीं मिलता, उसे पिता की अनुपस्थिति का गहरा विलाप करना पड़ता है। युवा टेलीमाकस के साथ भी ऐसा ही है; क्योंकि उसका पिता बहुत दूर है, और इस देश में कोई भी ऐसा नहीं है जो उसे अन्याय से बचा सके।
सुनहरे बालों वाले मेनेलाउस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “अरे आश्चर्य! फिर मेरे प्रियतम का पुत्र, जिसने मेरे लिए युद्धक्षेत्र के संघर्षों का सामना किया है, मेरे घर आया है। मैंने सोचा था कि मैं उसके पिता का यहाँ आर्गिव जाति के किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक गर्मजोशी से स्वागत करूँ, जब ओलंपियन गर्जन देवता बृहस्पति हमारे अच्छे जहाजों में हमें गहरे समुद्र के पार सुरक्षित वापस लौटने का वरदान दें। मैं उसके लिए आर्गोस में एक शहर बसाता, घर बनाता और इथाका से सामान लाता। उसे और उसके बेटे को, उसकी सारी संपत्ति और उसके सभी लोगों को। इस उद्देश्य से मैं किसी

पड़ोसी जिले को, जहाँ मेरा अधिकार है, उजाड़ देना चाहता था। यहाँ रहते हुए हम अक्सर एक-दूसरे से मिलते, और कोई कारण हमें अलग नहीं कर पाता, दो सच्चे दोस्त एक-दूसरे में आनंदित होते, जब तक कि अंत में मृत्यु का काला बादल हमें अपनी छाया में न लपेट ले। निस्संदेह, किसी देवता ने इसमें हमारे लिए कुछ अच्छा देखा होगा, और इस प्रकार केवल उसी को, बेचारा!
उसने बात की; उसके शब्दों ने हर हृदय में अनुपस्थित नायक के लिए शोक जगा दिया। तब बृहस्पति की पुत्री, अर्गिव हेलेन रोई; तब टेलीमाकस रोया; और नेस्टर के पुत्र की आँखें भी आँसू से भरी थीं, क्योंकि उसके मन में अच्छे एंटिलोकस की स्मृति आ गई, जिसे तेजस्वी अरोरा के प्रख्यात पुत्र ने मार डाला था; उसने उसके बारे में सोचा और ये मधुर शब्द कहे:—
“हे एट्रियस के पुत्र! वृद्ध नेस्टर कहते हैं, जब हम उसके महल में तेरे विषय में चर्चा करते हैं और एक-दूसरे से विचार पूछते हैं, तो हम कहते हैं कि तू सभी मनुष्यों से कहीं अधिक बुद्धिमान है। अब, यदि तू अनुमति दे, तो मुझे क्षमा कर दे, क्योंकि मैं अनिच्छा से इस प्रकार संध्या भोज में रो रहा हूँ, और शीघ्र ही भोर की संतान, मॉर्निंग प्रकट होगी। मैं इस दुःख के लिए किसी को दोष नहीं देता जो अपने भाग्य से मिलता है और मर जाता है; उन अभागे मनुष्यों को हम केवल यही सम्मान दे सकते हैं कि हम अपने बाल नोच लें और अपने गालों को आँसुओं से भिगो दें। मैंने एक भाई को खोया है, न कि...” सबसे कम योग्य
आर्गीवों में, जिन्हें तुमने अवश्य देखा होगा।
मैं उसे नहीं जानता था: मैंने उसका चेहरा कभी नहीं देखा;
फिर भी कहा जाता है कि एंटिलोकस दूसरों से श्रेष्ठ था; वह तेज दौड़ने वाला और युद्ध में बहादुर था।
सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने उसे उत्तर दिया:— “चूंकि मेरे मित्र, तुमने इस प्रकार कहा है, मानो तुम वचन और कर्म में विवेकशील हो, और तुमसे अधिक परिपक्व हो—क्योंकि तुम ऐसे पिता के पुत्र हो, और तुम्हारे वचन बुद्धिमान हैं—और यह पहचानना आसान है कि वह पुत्र शनिदेव का है, जिस पर शनिदेव ने जन्म के समय और वैवाहिक जीवन में अपना आशीर्वाद दिया है; जैसे वह अब नेस्टर को सुखद वृद्धावस्था प्रदान करता है, अपने महल में प्रतिदिन, और पुत्रों को। बुद्धिमान, भाले चलाने में कुशल—
तो आइए हम इस अचानक आए दुःख को त्याग दें

वेश में वह किसी और ही व्यक्ति जैसा लग रहा था— एक भिखारी, हालांकि अचेयन बेड़े में उसका रूप कितना अलग था। इस रूपांतरित होकर वह इलियम में प्रवेश किया, और कोई नहीं जानता था कि कौन गुजर रहा है, लेकिन मैंने देखा, और उससे प्रश्न किया; उसने चालाकी भरे उत्तरों से मेरे प्रश्न को टाल दिया। स्नान कराने के बाद, मैंने उसे अभिषेक किया और वस्त्र पहनाए। मैंने उससे शपथ ली थी कि मैं इलियम के लोगों को उसके आगमन के बारे में तब तक नहीं बताऊँगी जब तक वह तंबुओं और जहाजों तक वापस नहीं पहुँच जाता। फिर उसने मुझे अचेयनों की सारी योजनाएँ बता दीं। मुझे छोड़कर, लौटते समय उसने अपने लंबे भाले से कई ट्रोजन को मार डाला और सुरक्षित रूप से आर्गिव शिविर में सेना के लिए खुशखबरी लेकर पहुँच गया। तब ट्रोजन स्त्रियाँ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं, लेकिन मैं मन ही मन खुश थी, क्योंकि मुझे अपने पुराने घर की बहुत याद आ रही थी और मैं वीनस द्वारा मुझ पर लाए गए बुरे भाग्य पर बहुत दुखी थी। जो मुझे मेरी प्यारी भूमि से वहाँ ले गया, और मेरी बेटी और मेरे विवाह-गृह से, और मेरे वैध जीवनसाथी से, जिसमें मुझे व्यक्तित्व या मन के किसी भी महान उपहार की कमी नहीं थी।
तब सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने उससे कहा:— “हे स्त्री, तूने जो कुछ कहा है, वह बिलकुल सत्य है। मैंने अनेक वीर योद्धाओं को जाना है, उनके परामर्श और उद्देश्यों को समझा है, और अनेक देशों में भ्रमण किया है, परन्तु कभी भी अपनी आँखों से यूलिसिस जैसा कोई दूसरा पुरुष नहीं देखा, जिसका हृदय इतना साहसी और सहनशील था। साक्षी हो उसने क्या किया, उस वीर पुरुष ने, जब हम बैठे थे, अर्गिव्स के सबसे बहादुर योद्धा को लकड़ी के घोड़े में बंद करके रखा, जो ट्रॉय में नरसंहार और मृत्यु लाने वाला था। तू जो गंभीर है... वह स्थान, ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी दैवीय शक्ति द्वारा प्रेरित हो, जिसने ट्रॉय को उस दिन की महिमा प्रदान करने का विचार किया हो। देवतुल्य सरदार, डेफोबस, तुम्हारे साथ था। उस खोखले ढांचे के चारों ओर, जिसमें घात लगी थी, तुमने तीन बार चक्कर लगाया और उसकी भुजाओं को छुआ, और अचेयन सरदारों को नाम से पुकारा, और सभी आर्गिव्स की पत्नियों की आवाज़ों की नकल की। डायोमेड और मैं महान यूलिसिस के साथ बीच में बैठे थे, और उनके साथ तुम्हारी पुकार सुनी, और तुरंत उठ खड़े हुए, या तो बाहर निकलने के लिए या भीतर से उत्तर देने के लिए; लेकिन उसने मना किया, क्योंकि हम अधीर थे, और इस प्रकार हमें रोक लिया। सभी अचेयन सरदार चुप रहे, सिवाय एंटिक्लस के, जिसने

अकेले बोलना शुरू किया, तभी यूलिसिस ने अपने शक्तिशाली हाथों से खुलते हुए होठों को तुरंत बंद कर दिया और हम सबको बचा लिया, और इस प्रकार उन्हें तब तक रोके रखा जब तक कि पल्लास तुम्हें उस स्थान से बहला-फुसलाकर नहीं ले गई। तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा:— “ज्योतिष मेनेलास, जिसे बृहस्पति ने पाला-पोसा, जनजातियों का शासक! उसका भाग्य कितना कठिन था, क्योंकि इस प्रकार भी वह मृत्यु के प्रहार से नहीं बच सका, चाहे उसका हृदय कितना भी कठोर क्यों न हो। परन्तु अब हमें अपने-अपने बिस्तरों पर जाने दो, ताकि वहाँ कोमल आलिंगन में हम सुखमय नींद का आनंद ले सकें।”
उसने कहा, और अर्गिव हेलेन ने अपनी दासियों को बुलाया
बरामदे में पलंग लगाने के लिए,
और उन पर सुंदर बैंगनी कंबल डालने के लिए,
और ऊपर टेपेस्ट्री लगाने के लिए, और सभी को
ऊनी लबादों से ढकने के लिए। महल के हॉल से
वे मशालें लेकर निकले, और जल्दी ही
पलंग तैयार कर दिए; वहाँ दूत मेहमानों को ले गए।
वहाँ प्रवेश कक्ष में टेलीमाकस,
वीर, और उसके साथ नेस्टर का प्रख्यात पुत्र
विश्राम करने लगे। इस बीच, एट्रेस का पुत्र उस भव्य इमारत के भीतरी कमरे में लेटा हुआ था, और उसके पास ही लंबे वस्त्र धारण किए हुए सुंदर हेलेन सो रही थी। लेकिन जब अंततः भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह, अपना प्रकाश लेकर आई, तब युद्ध में महान मेनेलास उठा, अपने वस्त्र पहने, अपनी तीक्ष्ण तलवार उठाई, और उसे अपने कंधे पर टांगकर, अपने चमकते पैरों में सुंदर सैंडल बांधे, और अपने कक्ष से एक देवता की तरह प्रकट हुआ। वह टेलेमाकस के पास बैठ गया और उसका नाम लेकर बोला:—
“हे मेरे वीर टेलीमाकस, तुम्हें किस अत्यावश्यक कारण से विशाल सागर के उस पार पवित्र लैकेडेमोन आना पड़ा है? स्पष्ट रूप से बताओ, क्या यह निजी आवश्यकता है या सार्वजनिक?”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:— “एट्रीड्स मेनेलाउस, बृहस्पति द्वारा पाले-पोसे गए, राष्ट्रों के शासक! मैं अपने पिता के बारे में पूछने आया हूँ, यदि आप कुछ जानते हों। मेरी विरासत नष्ट हो रही है; मेरे उपजाऊ खेत उजाड़ हो गए हैं। शत्रु मेरे महल में मंडरा रहे हैं, और

दिन-प्रतिदिन मेरे भेड़ों और धीमी गति से चलने वाले सींग वाले पशुओं का वध कर रहे हैं; वे मेरी माँ के प्रेमी हैं, और उनकी उद्दंडता असीम है। इसलिए मैं आपके घुटने टेकने आया हूँ, और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे मेरे जीवन के बारे में बताएँ। पिता की दुखद मृत्यु
जैसा कि तुमने अपनी आँखों से देखा है, या किसी भटकते हुए व्यक्ति से इसकी कहानी सुनी है—निश्चित रूप से
उसकी माँ ने उसे इस दयनीय स्थिति में जन्म दिया
जो आम लोगों के भाग्य से परे थी। मैं तुमसे यह नहीं पूछता
कि तुम इस दुखद इतिहास में कुछ भी नरम करो
मेरे प्रति कोमलता या दयालुता से,
बल्कि मुझे स्पष्ट रूप से वह सब बताओ जो तुम जानते हो;
और मैं तुमसे विनती करता हूँ, यदि कभी भी
मेरे पिता, भले यूलिसिस ने, तुम्हारे लिए वचन में जो कुछ भी वादा किया था उसे पूरा किया हो
या जब तुम ट्रॉय के राज्य में थे तब कोई कार्य किया हो, जहां यूनानियों को भारी कष्ट सहना पड़ा, उसे अब ध्यान में रखो, और मुझे सच्चाई बताओ।
तब सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने गहरी आह भरी और उत्तर में कहा: “हे भगवान! ये डरपोक और कमजोर लोग किसी बहादुर आदमी के बिस्तर पर चढ़ना चाहते हैं। लेकिन जैसे कोई हिरणी अपने नवजात बच्चों को किसी भयंकर शेर की मांद में छिपाकर पहाड़ों पर चरने और घास के मैदानों में भोजन करने चली जाती है, तो शेर वापस आकर उन्हें अचानक मौत के घाट उतार देता है, वैसे ही यूलिसिस भी इस दल पर खूनी अंत लाएगा। हे पिता बृहस्पति, और पल्लास, और अपोलो! काश
अब, उसी पराक्रम के साथ जो कभी उसके पास था
जब उसने पुराने समय में, लेस्बोस में भव्य रूप से निर्मित,
फिलोमेला के पुत्र से लड़ने के लिए उठकर,
कुश्ती में उसे बुरी तरह पटक दिया, और सभी
यूनानियों ने खुशी मनाई, यूलिसिस
उन दावेदारों से भिड़ जाता। तब उनका जीवनकाल छोटा होता,
और विवाह भोज कड़वा होता।
अब उन प्रश्नों के लिए जो तुमने पूछे हैं, और मुझसे एक सच्चा उत्तर मांगा है, मैं

उन्हें अन्य बातों से टालने की कोशिश नहीं करूंगा,
और न ही तुम्हें धोखा दूंगा, बल्कि जो कुछ भी एक बार मुझे गहरे सागर के प्राचीन देवता ने बताया था, जिनके शब्द सत्य हैं, मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगा।
“मैं अभी भी मिस्र में हूँ, हालाँकि घर लौटने की तीव्र इच्छा है, देवताओं ने मुझे रोक रखा है; क्योंकि मैंने चुनी हुई बलि नहीं चढ़ाई थी, और देवता हमसे हमेशा अपने नियमों का स्मरण करने की अपेक्षा रखते हैं। एक द्वीप है, जो मिस्र के तट तक पहुँचने से पहले लहरों वाले समुद्र के भीतर स्थित है— उसका नाम फ़ारोस है—इतनी दूरी पर जहाँ से एक जहाज़ तेज़ हवा के साथ पूरे दिन में गुज़र सकता है। उस द्वीप के भीतर एक सुरक्षित बंदरगाह है, जहाँ से अच्छे जहाज़ ताज़ा पानी लेकर निकलते हैं। वहाँ देवताओं ने मुझे रुकने के लिए विवश कर दिया।” बीस दिनों तक, और उस दौरान कभी भी ऐसी अनुकूल हवाएँ नहीं चलीं, जो नाव को गहरे समुद्र के ऊपर ले जा सकें। अब तक हमारा सारा भोजन समाप्त हो चुका होता, अब तक मेरे आदमियों का साहस मर चुका होता, यदि एक देवी ने मुझ पर दया न की होती और मेरी सहायता के लिए न आई होती, जिसका नाम इदोथिया था, जो गहरे समुद्र के प्राचीन महान प्रोटियस की पुत्री थी। क्योंकि वह मेरी पीड़ा से द्रवित हुई और मेरे पास आई, जब मैं अकेला भटक रहा था, बाकियों से अलग। वे द्वीप में इधर-उधर भटकते रहे, और भूख से बेहाल होकर मैंने मछली पकड़ने के लिए कांटा फेंका। वह आई, और पास खड़ी होकर मुझसे बोली:—
“ ‘अजनबी, तू मूर्ख है, या कम से कम लापरवाह स्वभाव का है, या फिर जानबूझकर उपेक्षा कर रहा है, और कष्ट सहने में आनंदित है, कि तू इस द्वीप पर इतने लंबे समय तक रुका हुआ है और इसे छोड़ने का कोई साधन नहीं पा रहा है, जबकि तेरे साथियों के दिल देरी से कमजोर पड़ रहे हैं।’
“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘हे देवी, तुम जो भी हो, मुझे यह कहने दो कि मैं यहाँ स्वेच्छा से नहीं रुका हूँ। मैंने अवश्य ही उच्च स्वर्ग के अमर निवासियों के विरुद्ध पाप किया होगा; परन्तु मुझे बताओ—क्योंकि देवता सब कुछ जानते हैं—कि सभी अमरों में से कौन मुझे यहाँ हवा में रोके हुए है, मेरी यात्रा में बाधा डाल रहा है; और मुझे यह भी बताओ कि मैं इस मछलमयी गहराई को पार करके अपने घर कैसे पहुँचूँ।’

मैंने अपनी बात समाप्त की, और महिमामयी देवी ने उत्तर में कहा: ‘अजनबी, मैं सच बोलूँगी; गहरे सागर का अमर प्राचीन, जिसके वचन सदा सत्य हैं, मिस्र का प्रोटियस, अक्सर यहाँ आता है। उसे पूर्णतः ज्ञात है—क्योंकि वह नेपच्यून का विषय है—महान सागर की समस्त गहराइयाँ। कहा जाता है कि मेरा जन्म उसी की देन है। यदि तू उसे फँसा ले और पकड़ ले, तो वह तुझे तेरा मार्ग और उसकी समस्त दूरियाँ बताएगा, और तुझे बताएगा कि कैसे मछलीमय गहरे सागर को पार करके अपने घर पहुँचना है; और आगे भी बताएगा, यदि वह ऐसा कर सके। हे बृहस्पति के पालक पुत्र, अपने महल में जो भी अच्छा या बुरा घटित हुआ हो, उसे चुन लो, जब तुम लंबे और थका देने वाले सफर पर भटक रहे थे।
“देवी ने ऐसा कहा, और मैंने फिर कहा:— ‘बताओ कि किस युक्ति से वृद्ध देवता को फँसाकर रखा जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह पहले से ही जान ले या हमारे इरादे पर संदेह करके भाग जाए।’ मनुष्य के लिए किसी देवता को वश में करना कठिन होगा।”
“मैंने अपना प्रवचन समाप्त किया, और महिमामयी देवी ने इस प्रकार उत्तर दिया: ‘जब उदय होता सूर्य मध्य आकाश में पहुँच जाता है, तब गहरे सागर के प्राचीन, जो कभी धोखा नहीं देते, लहरों से निकलते हैं, और समुद्र के काले मैल से ढके हुए, बाहर आते हैं, और एक गुफा में लेट जाते हैं। वहाँ सुंदर हलोसिडना की संतानें, प्राचीन सागर से निकले समुद्री बछड़े, भीड़ लगाते हैं, खारे पानी की कड़वी गंध से भरे हुए, और उनके पास ही सो जाते हैं। भोर होते ही मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँगी और तुम्हारा स्थान निर्धारित करूँगी, लेकिन तुम अपने साथ अपने अच्छे जहाजों में से तीन सबसे बहादुर आदमियों को चुनोगे। अब मैं तुम्हें उस पुराने पैगंबर की रणनीति बताता हूँ। वह पहले समुद्री बछड़ों को पाँच-पाँच करके गिनेगा; और जब वह सभी को देख और गिन लेगा, तो उन सबके बीच लेट जाएगा, जैसे कोई चरवाहा अपने झुंड के बीच लेटता है। और फिर, जैसे ही तुम उसे लेटा हुआ देखो, उसे वहीं रोके रखने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दो, चाहे वह तुम्हारे हाथों से बचने के लिए कितना भी संघर्ष करे; क्योंकि वह हर तरह की चाल चलेगा। और पृथ्वी पर प्रत्येक सरीसृप का रूप धारण करो, और जल और प्रचंड ज्वाला में परिवर्तित हो जाओ— फिर भी उसे मजबूती से थामे रहो, और बंधनों को और भी कसकर बांध लो। जब वह फिर से वही रूप धारण कर ले जिसमें तुमने उसे सोते हुए देखा था, बल का प्रयोग बंद कर दो, और उन बंधनों को ढीला कर दो जिन्होंने प्राचीन नबी को जकड़ रखा था। उससे पूछो

कपटों के बावजूद थक नहीं गया। अंत में उसने मुझसे बोलकर प्रश्न किया और कहा:—
“ ‘हे अत्रेस के पुत्र! समस्त देवताओं में से किसने तुझे सिखाया है कि मुझे इस जाल में कैसे फँसाया जाए, जबकि मैं अनिच्छुक हूँ? तू क्या चाहता है?’ “उन्होंने कहा; मैंने उत्तर दिया: ‘हे वृद्ध नबी, आप भली-भांति जानते हैं। छलपूर्वक क्यों पूछ रहे हैं? बात यह है कि मैं इस द्वीप में लंबे समय से कैदी बना हुआ हूँ, और व्यर्थ ही अपने पलायन के उपाय खोज रहा हूँ, और दुःख मेरे हृदय को तृप्त कर रहा है। अब—चूँकि देवता सर्वज्ञ हैं—मुझे यह बताइए, वह कौन सा देवता है, जो इस प्रकार मेरी यात्रा में बाधा डालकर मुझे यहाँ रोके हुए है, और मुझे बताइए कि मैं इस मछलमयी गहराई को पार करके अपने घर कैसे पहुँचूँ।’
“मैंने ये शब्द कहे, और उसने उत्तर में कहा: ‘परन्तु तुम्हें पहले बृहस्पति और अन्य देवताओं को स्वीकार्य बलिदान अर्पित करना चाहिए था, और फिर नीले सागर के पार शीघ्रता से अपने जन्मस्थान की ओर प्रस्थान करना चाहिए था। अब तुम्हारा भाग्य नसीब में है कि तुम अपने मित्रों, अपने भव्य महल और उस भूमि को फिर से देख सको जहाँ तुम्हारा जन्म हुआ था, जब तक कि तुम मिस्र से बहने वाली नदी के किनारे बृहस्पति से फिर से खड़े होकर असीम स्वर्ग में निवास करने वाले शाश्वत देवताओं को पवित्र बलि न अर्पित करो, और वे तुम्हें शीघ्र ही आगे बढ़ा देंगे।
उस यात्रा पर जिसे तुम करने के लिए तरस रहे हो।’
“उसने कहा। मेरा हृदय टूट गया जब मैंने उसकी आज्ञा सुनी कि मैं उस अंधकारमय सागर को पार करके मिस्र वापस जाऊं, क्योंकि मार्ग कठिन और लंबा था; फिर भी मैंने उसे उत्तर दिया और कहा:—
“हे वृद्ध द्रष्टा, मैं आपके आदेश का विधिवत पालन करूँगा। परन्तु कृपया मुझे बताइए, और सत्य-सत्य बताइए, क्या वे सभी यूनानियों के पुत्र जिन्हें नेस्टर और मैंने, रवाना होते समय, ट्रोजन तट पर छोड़ दिया था, तब से अपनी नौकाओं के साथ सुरक्षित लौट आए हैं, या युद्ध समाप्त होने के बाद से उनमें से कोई अपने जहाजों में या अपने साथियों की बाहों में असमय मर गया है?” मैंने कहा; उसने फिर उत्तर दिया और बोला:— ‘एट्रीड्स, तुम क्यों पूछते हो, क्योंकि मेरे मन के रहस्यों को जानना तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, और न ही उन्हें जानना उचित है? जब तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा, तो तुम निश्चित रूप

चरनी पर बैल को मारते हैं। एगामेम्नन के साथ वहाँ गए सभी लोगों में से कोई भी जीवित नहीं बचा, और एजिसथस के अनुयायियों में से कोई भी नहीं बचा, लेकिन उन सभी को भोज-कक्ष में मार डाला गया।
“उसने कहा; मेरा हृदय टूट रहा था, और मैं रो रही थी, रेत पर बैठी हुई, न तो मेरे मन में जीने की परवाह थी, न ही सूर्य के मधुर प्रकाश को देखने की। लेकिन जब आंसुओं और जमीन पर तड़पने से राहत मिली, तब गहरे सागर के उस प्राचीन ने, जो कभी धोखा नहीं देता, फिर कहा: ‘अत्राइड्स, आंसुओं में समय बर्बाद मत करो; उनसे कुछ लाभ नहीं होता। बल्कि वह उपाय खोजो जिससे तुम जल्द से जल्द अपनी जन्मभूमि पहुँच सको। वहाँ शायद तुम्हें एगिस्थस जीवित मिले, या शायद पहले मिले। ओरेस्टेस ने शायद उसे मार डाला हो, और तुम स्वयं अंतिम संस्कार देखने के लिए आ जाओ।
“उसने बात की, और यद्यपि मैं अब भी दुखी था, फिर भी मेरे हृदय को कुछ सांत्वना मिली; मेरी आत्मा को शांति मिली, और मैंने उसे उत्साहपूर्ण शब्दों में उत्तर दिया:—
“‘मैं इन लोगों को जानता हूँ; अब तीसरे का नाम बताओ, जो अभी भी
विशाल सागर के भीतर दूर
अपनी वापसी से रोका हुआ है—शायद जीवित या मृत;
क्योंकि, यद्यपि मुझे सुनने से डर लगता है, मैं जानने के लिए तरसता हूँ।’ “मैंने कहा, और प्रोटियस ने मुझे फिर उत्तर दिया:— ‘यह लेर्टेस का पुत्र है, जिसका निवास स्थान इथाका में है। मैंने उसे एक द्वीप में देखा, और अप्सरा कैलिप्सो के गुफा-महल में, वह फूट-फूट कर रो रहा था, क्योंकि कैलिप्सो ने उसे वहाँ रहने के लिए विवश किया था। वह अपने देश के लिए द्वीप नहीं छोड़ सकता; उसके पास चप्पूओं से सुसज्जित जहाज तो है, लेकिन कोई नाविक नहीं है जो उसे विशाल सागर के पार ले जा सके। लेकिन हे महान मेनेलास, यह तय नहीं है कि तुम अपने भाग्य से मिलोगे और मरोगे, जहाँ आर्गोस के घोड़े उसके चरागाहों में चरते हैं। देवता तुम्हें एलिसियन मैदान में भेजेंगे, और पृथ्वी के छोर पर, सुनहरे बालों वाले रादामंथस के निवास स्थान पर। वहाँ मनुष्य सबसे सरल जीवन व्यतीत करते हैं। वहाँ न बर्फ है, न कड़ाके की ठंड, न मूसलाधार बारिश; पश्चिम से आती हल्की हवाओं से सागर की गहराई में रहने वालों को ताज़गी मिलती है। तुम्हें वहाँ जाना होगा; क्योंकि तुम हेलेन के पति और बृहस्पति के दामाद हो।

“उसने कहा और लहरों से भरे गहरे समुद्र में गोता लगा लिया। मैं अपने बहादुर साथियों के साथ बेड़े में लौट आया, और जाते समय मेरे मन में हजारों योजनाएँ चल रही थीं। मैं समुद्र के किनारे अपनी नाव पर पहुँचा और हमने अपना शाम का भोजन तैयार किया। रात छा गई और हम समुद्र तट पर सो गए। लेकिन जब गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, भोर की पुत्री, तो हमने अपने जहाजों को गहरे समुद्र में खींच लिया और मस्तूल उठाकर पाल फैला दिए; सभी चालक दल अंदर आकर क्रम से लगी बेंचों पर बैठ गए। कारणवश,
और उन्होंने अपने चप्पूओं से झागदार पानी को चीर दिया।
मैं फिर से मिस्र के तट पर बेड़ा लेकर आया,
और उस नदी पर जो बृहस्पति से उतरती है,
और वहाँ मैंने चुने हुए बलि चढ़ाए;
और इस प्रकार देवताओं को प्रसन्न करके, मैंने
एगामेम्नन के लिए एक मकबरा बनवाया, ताकि उसकी प्रसिद्धि
कभी न मिटे। जब यह हो गया तो मैं घर के लिए रवाना हुआ; देवताओं ने अनुकूल हवा दी।
लेकिन अब तुम ग्यारहवें दिन तक,
या बारहवें दिन तक, मेरी छत के नीचे रहो, और फिर
मैं तुम्हें उदार उपहारों के साथ विदा करूँगा— तीन घोड़े, एक चमकीला रथ, और एक कीमती प्याला, जिससे प्रतिदिन मेरी स्मृति में देवताओं को मदिरा अर्पित की जा सके।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा:— “एट्राइड्स, मुझे अधिक देर तक मत रोको, हालाँकि मैं तुम्हारे साथ एक वर्ष तक संतुष्ट होकर बैठ सकता हूँ, अपने घर की याद न करते हुए, न ही अपने माता-पिता की, फिर भी तुम्हारे वचन सुनने में मुझे इतना आनंद आता है; परन्तु अभी भी, पवित्र पाइलोस में, मेरे साथी थक रहे हैं, जबकि तुम मेरी वापसी में देरी कर रहे हो। जो भी उपहार तुम देना चाहो, वे ऐसे होने चाहिए जिन्हें मैं संजो कर रख सकूँ। मैं इथाका जाने वाले घोड़ों को नहीं ले जा सकता, मैं उन्हें सजाने के लिए यहीं छोड़ देता हूँ। तेरा दल; क्योंकि तू मैदानों के एक राज्य का शासक है, जहाँ कमल के फूल और मीठी घास उगती है, गेहूँ और राई, और सफेद जौ के लच्छेदार डंठल उगते हैं। परन्तु इथाका में घोड़ों के दौड़ने के लिए कोई चौड़े मैदान नहीं हैं, न ही कोई घास के मैदान हैं। इसके खेतों में बकरियाँ चरती हैं, यह उन जगहों से

कहीं अधिक सुंदर भूमि है जहाँ घोड़े चरते हैं। गहरे सागर में स्थित किसी भी द्वीप में घोड़ों के लिए सड़कें या घास के मैदान नहीं हैं, और इथाका में तो बिल्कुल भी नहीं।
उसने बात की; वीर मेनेलाउस मुस्कुराया,
और कृपापूर्वक अपने हाथ से उसे स्पर्श किया और कहा:—
“प्रिय पुत्र, तू उदार वंश का है; तेरे वचन ही इसकी गवाही देते हैं। मैं अपने उपहार बदल दूँगा, जैसा कि मैं कर सकता हूँ। मेरे घर में जो कुछ भी संजोकर रखा है, उसमें से सबसे उत्तम और सबसे कीमती मैं तुझे दूँगा। मैं तुझे एक प्याला दूँगा जो सोने के किनारे को छोड़कर पूरी तरह से चाँदी का बना है। यह वल्कन की रचना है। सिदोन के राजा, वीर फ़ेदिमस ने इसे मुझे तब दिया था जब मैं घर लौट रहा था और उसकी छत के नीचे आश्रय था। अब यह तेरा होगा।”
वे आपस में बातें कर रहे थे। इसी बीच भोज की तैयारी करने वाले महान सम्राट के महल में पहुँचे। वे भेड़ें और शराब लेकर आए। उनकी पत्नियाँ, जिन्होंने अपने माथे पर आकर्षक पट्टियाँ पहन रखी थीं, रोटी लेकर आईं, और इस प्रकार मेनेलाउस के घर में शाम के भोजन की तैयारी में चहल-पहल मच गई।
लेकिन यूलिसिस के महल के सामने बने सुव्यवस्थित प्रांगण में, जहाँ हाल ही में उनकी धृष्टता प्रदर्शित हुई थी, प्रेम प्रस्तावक दल भाले और टोटके फेंककर अपना मनोरंजन कर रहे थे, जबकि एंटिनोस और देवतुल्य रूप वाला युवक यूरीमाकस, जो दोनों अन्य लोगों से श्रेष्ठ थे, अलग बैठे थे। उनके पास फ्रोनियस का पुत्र नोएमोन गया, पास आकर एंटिनोस से बोला और पूछा:—
“क्या यह बात हम लोगों को पता है या नहीं, हे एंटिनोअस, जब टेलीमाकस रेतीले पाइलोस से लौटेगा? वह वहीं चला गया है। और मेरी नाव में, जिसे मुझे पार करके विशाल एलिस जाना है। वहाँ मेरे पास बारह घोड़ियाँ हैं, और उनके साथ अभी तक अशिक्षित, मजबूत खच्चर के बच्चे भी हैं। उनमें से कुछ को मुझे जुए में बांधने के लिए वश में करना होगा।”
उसने बात की, और वे दोनों चकित रह गए; क्योंकि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह नेलेयन पाइलोस से मिलने आएगा, यह मानते हुए कि वह युवक कहीं उसके खेतों में, भेड़ों के बीच, या शायद सूअरों के रखवाले के साथ होगा।
तब यूपेइथेस के पुत्र एंटिनोस ने उत्तर दिया: “मुझे सच-सच बताओ कि वह कब रवाना हुआ, और उसने इथाका के किन युवकों को अपने साथ जाने के लिए चुना?

क्या वे उसके दास थे, या उसके अनुयायी बनने के लिए किराए पर लिए गए थे? मुझे बताओ, क्योंकि मैं पूरी बात जानना चाहता हूँ। क्या उसने तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारा जहाज़ ले लिया? या तुमने उसके पहले अनुरोध पर ही जहाज़ सौंप दिया?”
फोर्नियस के पुत्र नोएमोन ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “मैंने इसे अत्यंत सहर्ष दे दिया, क्योंकि जब ऐसे व्यक्ति को इसकी आवश्यकता हो तो कोई और क्या करता? इसे मना करना कठिन होता। क्योंकि जो युवकों का दल उसके पीछे आया था, वे यहाँ हमारे सभी लोगों में सबसे बहादुर हैं; और मैंने देखा कि उनके सेनापति, मेंटर, या मेंटर जैसे किसी देवता को जहाज पर सवार होते देखा। एक बात मुझे आश्चर्यचकित करती है। कल ही, भोर में, मेरी मुलाकात यहाँ मेंटर से हुई, जिसे मैंने पहले पाइलियन तट के लिए जहाज पर सवार होते देखा था।” नोएमोन बोला और अपने पिता के घर चला गया। दोनों उसकी बातों से व्याकुल हो गए, और सभी दावेदार तुरंत अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए और अपने खेल-कूद बंद कर दिए। तब यूपेइथेस का पुत्र एंटिनोस बहुत क्रोधित होकर बोला; उसका हृदय घोर क्रोध से भर गया था; उसकी आँखों से आग निकल रही थी।
“ये तो अजीबोगरीब कारनामे हैं! एक महान और गौरवपूर्ण पराक्रम
अंजाम दिया गया—टेलीमाकस की यह यात्रा,
जिसे हमने असंभव कहा था! लड़के ने,
हमारी अवहेलना करते हुए, अपनी इच्छा पूरी की और चला गया,
और एक जहाज चुरा लिया, और अपने दल के लिए
यहाँ के सबसे बहादुर लोगों को चुना।
वह अभी भी एक मुसीबत साबित होगा। बृहस्पति
उसे कुचल दे इससे पहले कि वह हमें और नुकसान पहुँचा सके!
अब मुझे एक तेज नाव और बीस आदमी दो
ताकि मैं घात लगाकर बैठ सकूँ और इस द्वीप और ऊबड़-खाबड़ सामोस के बीच जलडमरूमध्य में उसकी वापसी पर नज़र रख सकूँ; तब, मुझे लगता है,
उसे अपने पिता को ढूंढने में अपना खर्च उठाना पड़ेगा।
उसने बात की; उन्होंने उसके शब्दों की प्रशंसा की और उसे कार्य करने का आदेश दिया,
और उठकर अपने स्थानों से चले गए,
यूलिसिस के महल में प्रवेश किया। बहुत कम समय

बीता जब तक कि पेनेलोप को चेतावनी नहीं मिली
कि सूटरों ने क्या कपटपूर्ण योजना बनाई थी।
दूत मेडोन ने उसे सब कुछ बताया। उसने
बाहरी प्रांगण में उनकी सलाह सुनी जबकि
वे भीतर षड्यंत्र रच रहे थे, और वह जल्दी से घर के अंदर से होते हुए पेनेलोप को यह खबर देने के लिए गया।
पेनेलोप ने उसे दहलीज पार करते हुए देखा,
और उससे इस प्रकार कहा:—
“हे दूत, क्या राजकुमारों ने तुझे यहाँ भेजा है? क्या तू महान यूलिसिस की दासियों को उनके काम छोड़कर भोज तैयार करने के लिए कहने आया है? क्या यहाँ और अन्यत्र उनका प्रेम निवेदन यहीं समाप्त हो जाएगा, और यह भोज पृथ्वी पर उनका अंतिम भोज होगा! तू जो इतनी भीड़ में यहाँ आकर वीर टेलीमाकस की संपत्ति को व्यर्थ ही खर्च कर रहा है, क्या तूने अपने माता-पिता से, जब तू बच्चा था, यह नहीं सुना कि कैसे यूलिसिस उनके बीच रहता था, और पूरे राज्य में किसी को भी किसी भी बात से ठेस नहीं पहुँचाता था।” क्या तुमने ऐसा किया या कहा—
जैसा कि शक्तिशाली राजकुमार अक्सर करते हैं, कुछ के प्रति घृणा और दूसरों के प्रति प्रेम के कारण? किसी भी मनुष्य ने उसके हाथों अन्याय सहन नहीं किया, सिवाय तुम्हारे—
तुम्हारे घृणित इरादे और कृत्य सर्वविदित हैं; तुम एक अच्छे आदमी के कर्मों की कोई कृतज्ञ स्मृति नहीं रखते।
फिर, बारी-बारी से, अनुभवी मेदोन ने कहा:— “हे रानी, काश यह बुराई सबसे बुरी होती!
ये दावेदार इससे भी बड़ी,
और कहीं अधिक जघन्य अपराध की योजना बना रहे हैं। बृहस्पति
इस अपराध को कभी न होने दें! उनका उद्देश्य
टेलीमाकस से, उसकी वापसी पर,
मिलना और उसे तलवार से मार डालना है; क्योंकि तुम्हें पता होना चाहिए कि वह पाइलियन तट की यात्रा पर
और महान लैकेडेमोन के पास गया है,
अपने पिता के भाग्य का समाचार प्राप्त करने के लिए।”

उसके बोलते ही उसके घुटने कांपने लगे और उसका दिल बैठ गया। बहुत देर तक वह कुछ बोल नहीं सकी; उसकी आँखें आँसुओं से भर गई थीं और उसकी साफ आवाज रुंध गई थी; फिर भी, आखिरकार शब्द मिलते ही उसने कहा:—
“हे दूत! मेरा पुत्र क्यों गया था? उसे क्या आवश्यकता थी कि वह अपने आप को उन तीव्र जहाजों, समुद्र के घोड़ों, के भरोसे छोड़ दे, जिनके द्वारा मनुष्य इसके असीम विस्तार को पार करते हैं? क्या वह इसलिए गया था कि वह पृथ्वी पर अपना नाम न छोड़े?”
और फिर अनुभवी मेदोन ने फिर कहा:—
“मुझे नहीं पता कि किसी देवता की प्रेरणा से
या अपने दिल की प्रेरणा से तुम्हारा बेटा पाइलोस के लिए रवाना हुआ है, इस उम्मीद में कि वहाँ उसे अपने लौटते पिता या अपने भाग्य के बारे में कोई खबर मिलेगी।
इस प्रकार कहकर, दूत यूलिसिस के महल से होते हुए अपने मार्ग पर चल पड़ा, जबकि रानी पर तीव्र पीड़ा छा गई थी, और वह अपने स्थान पर—और वहाँ अनेक स्थान थे—अब और अधिक देर तक नहीं बैठ सकती थी, बल्कि अपने भव्य कमरों की दहलीज पर दयनीय रूप से विलाप कर रही थी। उसके चारों ओर उसकी दासियाँ विलाप करती हुई आ गईं—सभी, बूढ़ी और जवान, जो उसके घर की सदस्य थीं। पेनेलोप, अपने गहरे शोक में सिसकते हुए, इस प्रकार बोली:
“सुनो, मेरे मित्रों, मुझ पर ऐसे दुःख बरसाए गए हैं जो मेरे साथ पैदा हुए और पले-बढ़े किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक भारी हैं—मुझ पर, जिसने मृत्यु के कारण अपने एक अत्यंत दयालु पति को खो दिया, जो सिंह हृदय वाला था और प्रत्येक सद्गुण से परिपूर्ण था, यूनानियों में अत्यंत प्रख्यात और हेलास और पूरे आर्गोस में ख्यातिप्राप्त था। अब मेरा पुत्र, जिसे मैंने प्रेम किया, तूफ़ानों के आगे घर से विमुख होकर भाग गया है, और मुझे उसके जाने की सूचना भी नहीं दी गई। तुम भी, निकम्मे लोगों! तुममें से किसी ने भी उसे पुकारने की जहमत नहीं उठाई। मुझे नींद से जगाया, हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते ही होंगे कि वह अपने काले जहाज में कब सवार हुआ था। और अगर मुझे बताया गया होता कि उसने इस यात्रा की योजना बनाई है, तो वह इतना बेचैन होकर भी, निश्चित रूप से यहीं रुक जाता, या फिर मुझे इन कमरों में एक लाश के रूप में छोड़ देता। अब मेरे सेवकों में से एक को बूढ़े डोलियस को बुलाओ, जिसे मेरे इस निवास पर आने पर मेरे पिता ने मुझे अपना सेवक बनाकर दिया था, और जो

मेरे बागों की देखभाल करता है। उसे जल्दी से आकर लेर्टेस के पास अपना स्थान ग्रहण करना चाहिए। उसे जो कुछ भी हुआ है, वह सब बता दे, ताकि वह कोई उचित उपाय निकाल सके, या लोगों के बीच जाकर उन लोगों के नापाक मंसूबों की निंदा कर सके जो अब महान यूलिसिस के उत्तराधिकारी और खुद को नष्ट करने की साजिश रच रहे हैं।
तब प्रिय नर्स यूरीक्लिया ने उत्तर दिया: “प्रिय महिला, मुझे तलवार से मार डालो, या मुझे यहीं जीवित छोड़ दो; मैं कुछ भी नहीं छिपाऊँगी जो किया या कहा गया है। मैंने उसे वह सब कुछ दिया जो उसने माँगा था, रोटी और उत्तम शराब, और एक गंभीर शपथ ली, जो उसने माँगी थी, कि मैं तुम्हें इस बारे में बारह दिन बीतने तक कुछ नहीं बताऊँगी, या जब तक तुम स्वयं पूछताछ करके उसके जाने के बारे में न सुन लो, ताकि तुम्हारे प्यारे गाल आँसुओं से न भीग जाएँ। अब स्नान करो और नए वस्त्र पहनो, और अपनी दासियों के साथ ऊपरी कमरों में जाओ।” प्रार्थना
पल्लास को, उस देवता की पुत्री जो कवच धारण करता है। वह तुम्हारे पुत्र की रक्षा करेगी,
मृत्यु से भी। उस वृद्ध व्यक्ति का शोक मत करो, जो पहले से ही बहुत पीड़ित है। मुझे यकीन है कि आर्सेसियस के वंश ने देवताओं की कृपा नहीं खोई है, लेकिन कोई न कोई जीवित व्यक्ति इसके ऊंचे महलों और दूर-दूर तक फैले इसके समृद्ध खेतों का स्वामी होगा।
वह बोली; रानी ने अपने दुःख को दबाया और अपनी आँखों से आँसू रोके रखे। उसने स्नान किया और नए वस्त्र पहने, और अपनी दासियों के साथ ऊपरी कमरों में गई, एक पात्र में ढेर सारे केक रखे और पल्लास से इस प्रकार प्रार्थना की: “बृहस्पति की अजेय पुत्री, कवच धारण करने वाली, मेरी बात सुनो। यदि तुम्हारे दरबार में बुद्धिमान यूलिसिस ने कभी बैलों या भेड़ों की मोटी जांघें जलाई हों, तो इसे याद रखना, और मेरे प्यारे पुत्र को बचाना, और अभिमानी प्रेमियों के दुष्ट षड्यंत्रों को विफल करना।”
वह बोली और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। देवी ने उसकी प्रार्थना सुन ली। इसी बीच, दरबारियों ने अंधेरे महल के कक्षों को शोरगुल से भर दिया, और अभिमानी युवकों की उस भीड़ में से कुछ ने कहा:—

“सचमुच, जिस रानी को हम इतने लंबे समय से रिझा रहे हैं, वह शादी की तैयारी कर रही है; उसे जरा भी अंदाजा नहीं है कि हम उसके बेटे के लिए किस खूनी मौत का निश्चय कर रहे हैं।”
वे इस प्रकार बोले, उन्हें इस बात का कोई ज्ञान नहीं था कि अन्यत्र क्या हो रहा था। तब एंटिनोअस आगे आया और बोला:—
“प्रिय मित्रों, मैं आप सभी को चेतावनी देता हूँ कि आप इस प्रकार के घमंड से बचें, कहीं ऐसा न हो कि कोई आपकी बातें दूसरों को बता दे। अब आइए हम सब चुपचाप उठ खड़े हों और उस सलाह को अमल में लाने की साजिश रचें जिसका हम सभी ने दिल से समर्थन किया है।”
उसने बात की और बीस बहादुर आदमियों का दल चुना। वे समुद्र तट और जहाज़ की ओर गए और गहरे पानी में जहाज़ को खींच लाए, मस्तूल और पाल जहाज़ पर रखे, और चप्पूओं को चमड़े के छल्लों में ठीक से फिट किया, और सफेद पाल को ऊपर फैला दिया। उनके कुशल नौकर उनके लिए हथियार लाए, और उन्होंने गैली को वहाँ बांध दिया, उस पर सवार हो गए, और भोजन किया और शाम के तारे का इंतज़ार किया।
अब ऊपरी कक्ष में पवित्र रानी, पेनेलोप, उपवास कर रही थी; उसने न तो भोजन किया था और न ही शराब, और उसके विचार अभी भी उसके निर्दोष पुत्र पर टिके हुए थे। क्या वह मृत्यु के खतरे से बच पाएगा, या उन अभिमानी प्रेमियों के हाथों मारा जाएगा? एक शेर के विचारों की तरह, जब वह पुरुषों की भीड़ के बीच भय से शत्रुतापूर्ण घेरे को धीरे-धीरे अपने चारों ओर कसते हुए देखता है, तो उसके विचार भी वैसे ही थे, जब अंततः सुखदायक नींद उस पर छा गई, और वह अपने पलंग पर आराम से लेटी हुई थी, उसके अंग शिथिल थे।
अब पलास ने एक नई युक्ति रची; उसने एक प्रेत को बुलाया, जो दिखने में इफ़्थिमा जैसी थी, जिससे यूमेलस ने फेरे में विवाह किया था, जो उच्च आत्मा वाले सरदार इकारियस की पुत्री थी। उसने उसे महान यूलिसिस के महलों में भेजा, ताकि वह दुखी पेनेलोप को आँसुओं और विलाप से दूर कर सके। बोल्ट को पकड़े हुए डोरी से वह शाही कुटिया में सरक गई और उसके सिर के पास खड़ी होकर रानी ने कहा:—
“पेनेलोप, हे पीड़ित! क्या तुम सो रही हो? सदा धन्य देवता तुम्हें शोक और विलाप करने की अनुमति नहीं देते; तुम्हारा पुत्र, जिसने उनके विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है, लौट आएगा।”

और फिर विवेकशील पेनेलोप ने उत्तर दिया,
स्वप्न द्वार पर अभी भी मधुरता से सो रही हो:—
“हे बहन, तुम यहाँ क्यों हो, जो पहले कभी मेरे पास नहीं आई? तुम्हारा घर बहुत दूर है। तुम मुझे शोक करना छोड़ने और अपने मन में उमड़ रहे पीड़ादायक विचारों को त्यागने के लिए प्रेरित कर रही हो, जो मुझे पीड़ा दे रहे हैं, जबकि मैं पहले ही एक नेक, वीर पति को खो चुकी हूँ, जो अचैया के पुत्रों में सर्वगुणों से परिपूर्ण था और जिसकी प्रसिद्धि हेलास और आर्गोस में फैली हुई थी। अब मेरा पुत्र, मेरा प्रियतम, समुद्र में जा रहा है—एक लड़का, जो कठिनाइयों का आदी नहीं है और उनसे निपटना नहीं जानता। अजनबियों के साथ। मुझे उसके लिए उसके पिता से भी अधिक दुख है। मैं भय से भर गया हूँ, और कांप रहा हूँ कि कहीं उसे उन लोगों से कोई नुकसान न हो जिनके बीच वह गया है, या गहरे समुद्र में, जहाँ उसके शत्रु घात लगाए बैठे हैं, ताकि घर पहुँचने से पहले ही उसे मार डालें।
और फिर धुंधली छवि ने दोबारा कहा:—
“हिम्मत रखो; डर को अपने मन पर हावी न होने दो, क्योंकि उसके साथ एक मार्गदर्शक है, जैसा कि सभी लोग पाना चाहते हैं, जो सदा उनके साथ रहे, उसकी शक्ति पर भरोसा करते हुए—
पल्लास एथेन, और वह तुम्हें दया से देखती है। उसकी उपस्थिति से मुझे भेजा गया है,
उसका दूत बनकर, तुम्हें यह बताने के लिए।”
फिर विवेकशील पेनेलोप ने उत्तर दिया:—
“यदि तुम एक देवी हो और तुमने किसी देवी को ये शब्द कहते हुए सुना है, तो कृपया बताओ,
उस दुर्भाग्यशाली के बारे में, यदि वह अभी भी जीवित है
और सूर्य को देख रहा है, या फिर मर गया है
और पृथ्वी के नीचे के लोकों में चला गया है।”
एक बार फिर धुंधली छवि बोली: “उसके बारे में मैं कुछ नहीं कहूँगा, चाहे वह जीवित हो या मृत; यह व्यर्थ के शब्दों का समय नहीं है।”
उसने कहा, और कक्ष से बाहर निकलकर दरवाज़े के पास हवा में घुलमिल गई। फिर इकारियस की बेटी नींद के पलंग से जल्दी से उठी, क्योंकि उसका हृदय प्रसन्न

था, क्योंकि सपने ने रात के सन्नाटे में अपना संदेश स्पष्ट रूप से दे दिया था।
इसी बीच, समुद्र के रास्ते पर चल रहे दावेदार अपनी नौकाओं में सवार होकर टेलीमाकस को जान से मारने की क्रूर योजना बना रहे थे। मध्य समुद्र में, इथाका के तट और ऊबड़-खाबड़ सामोस के बीच, एक पथरीला द्वीप स्थित है, जिसका नाम एस्टेरिस है; संकरी सीमाओं वाला यह द्वीप, एक सुरक्षित बंदरगाह है, जिसमें दो जलडमरूमध्य प्रवेश द्वार प्रदान करते हैं। वहाँ अचेयन घात लगाकर बैठे थे।

पुस्तक V
कैलिप्सो से यूलिसिस का प्रस्थान
बृहस्पति द्वारा बुध को कैलिप्सो के पास यह संदेश लेकर भेजा गया कि वह यूलिसिस को दूर भेज दे—यूलिसिस द्वारा निर्मित एक बेड़ा—उस बेड़े पर उसका प्रस्थान—नेपच्यून द्वारा उत्पन्न तूफान और बेड़ा का नष्ट होना— तूफान से यूलिसिस का बच निकलना और फ़ेएशियन लोगों द्वारा बसे हुए शेरिया द्वीप पर उसका उतरना।
अरोरा, प्रसिद्ध टिथोनस के बगल में अपने पलंग से उठकर, मनुष्यों और अमर प्राणियों के लिए दिन का प्रकाश लेकर आई। फिर देवता अपनी सभा में अपनी- अपनी सीटों पर आ बैठे। उनके साथ गर्जना करने वाला बृहस्पति भी आया, जो उन सबमें सबसे शक्तिशाली था। पल्लास, अतीत को याद करते हुए, यूलिसिस और उसके अनेक दुखों के बारे में बोली, इस बात से दुखी थी कि वह अभी भी द्वीप की अप्सरा के साथ था:— “हे पिता बृहस्पति, और हे समस्त धन्यजनों, जो सदा जीवित रहते हैं! राजदंडधारी राजा अब से दयालु, सौम्य और करुणामय न हो; बल्कि प्रार्थना के प्रति बहरा हो और कुकर्मों की ओर प्रवृत्त हो, क्योंकि अब कोई भी उस दिव्य यूलिसिस को इतना याद नहीं करता जितना कि उन लोगों को जिन पर उसने शासन किया, एक पिता के समान दयालुता से। वह अब भी अनेक दुखों से बोझिल पड़ा है।” द्वीप
और कैलिप्सो का निवास, जिसने उसे इतने लंबे समय तक
रोके रखा है। वह अपनी प्यारी जन्मभूमि
से विदा नहीं हो सकता; चप्पूओं से सुसज्जित जहाज
और नाविक उसके पास नहीं हैं, जो उसे
विशाल सागर के पार ले जा सकें। बल्कि, अभी भी,
उसके प्रिय पुत्र के विरुद्ध एक षड्यंत्र
रचा जा रहा है, ताकि उसे घर लौटते समय मार डाला जाए
पाइलोस के दिव्य द्वीप से, और प्रसिद्ध स्पार्टा की दीवारों से, जहां वह अपने पिता के भाग्य का समाचार लेने गया था।
तब तूफानों के शासक ने उसे उत्तर दिया:—
“मेरी बच्ची, ये कैसे शब्द तेरे होठों से निकल रहे हैं?
क्या तेरा लंबे समय से निर्धारित परामर्श यह नहीं था—

कि उचित समय पर यूलिसिस वापस लौटे,
बदला लेने के लिए? तो, टेलीमाकस,
बुद्धिमानी से मार्गदर्शन करो—क्योंकि तुम ऐसा कर सकते हो—ताकि, बिना किसी क्षति के,
वह अपनी जन्मभूमि पहुँच जाए, और, अपनी नावों में,
प्रेमियों का दल अपने घर की ओर लौट जाए।”
उसने कहा और अपने प्रिय पुत्र हर्मेस की ओर मुड़ा:—
“हर्मेस—क्योंकि तू इस संदेशवाहक के रूप में, और सभी बातों में—उज्ज्वल बालों वाली अप्सरा को मेरा अटल उद्देश्य बता दे—दुख भोग रहे यूलिसिस की वापसी। न देवता
और न ही मनुष्य उसकी यात्रा का मार्गदर्शन करेंगे। एक बेड़ा पर, जो बंधनों से मज़बूत बनाया गया है, वह प्रस्थान करेगा और पहुँचेगा,
लंबे कष्टों के बाद, बीसवें दिन,
शेरिया के उपजाऊ तट पर, जिसके द्वीप पर
देवताओं के रिश्तेदार, फेएशियन निवास करते हैं।
वे एक देवता के समान उसका सम्मान करेंगे, और वहाँ से
उसे जहाज में उसके प्रिय देश भेज दो, पीतल और सोने के प्रचुर उपहारों के साथ, और वस्त्रों का भंडार—ऐसा धन जो उसने कभी नहीं लाया होता, यदि वह अपने घर सुरक्षित पहुँच जाता, लूट के अपने पूरे हिस्से के साथ, विजित इलियन से। इसलिए यह पूर्वनिर्धारित है कि वह अपने मित्रों को फिर से देखेगा, और एक बार फिर अपने जन्मभूमि पर स्थित अपने ऊँचे महल में खड़ा होगा।
उसने कहा; दूत अर्गीसाइड ने आज्ञा मानी, और उसने जल्दी से अपने पैरों के नीचे सुंदर, अमृतमय सुनहरे सैंडल बाँध लिए, जो उसे हवा की तरह सागर पार और असीम भूमि पर ले जाने के लिए पहने जाते थे। उसने अपनी छड़ी ली, जिससे वह मनुष्यों की आँखों को धीरे से बंद कर देता है, और इच्छा अनुसार उन्हें नींद से जगा देता है। इसे हाथ में लिए, शक्तिशाली आर्गस-क्वेलर उड़ गया, और पिएरिया पर उतरकर, आकाश से गहरे समुद्र में गोता लगाया, और उसकी सतह को छूता हुआ उस विशाल समुद्री मछली की तरह आगे बढ़ा, जो बंजर सागर की चौड़ी खाड़ियों में अपना शिकार ढूंढती है, और अक्सर अपने पंखों को खारे पानी में डुबोती है; इसी तरह हर्मीस लहरों के विशाल विस्तार में उड़ता रहा।

लेकिन जब वह उस दूर द्वीप पर पहुँचा, तो गहरे नीले समुद्र की लहरों से निकलकर वह समुद्र तट पर पहुँचा और तब तक चलता रहा जब तक कि वह उस विशाल गुफा तक नहीं पहुँच गया जहाँ सुनहरे बालों वाली अप्सरा रहती थी। उसने अप्सरा को अंदर पाया; चूल्हे पर आग तेज़ी से धधक रही थी, और दूर-दूर तक द्वीप पर जलती हुई देवदार की लकड़ी और सरू की लकड़ी का सुगंधित धुआँ फैल रहा था। इसी बीच, अपने एकांत में, वह मधुर गीत गा रही थी और व्यस्तता से अपने बुने हुए जाले में सुनहरी शटल चला रही थी। गुफा के चारों ओर एल्डर के पेड़ उगते थे, चिनार के पेड़ और मीठी सुगंध वाले सरू के पेड़। हरे-भरे जंगल में, जिसकी ऊँची शाखाओं के बीच चौड़े पंखों वाले पक्षी, जंगली उल्लू और बाज़ अपने घोंसले बनाते थे, और कौवे दूर तक अपनी आवाज़ें गूँजते हुए समुद्र तट पर भोजन की तलाश में भटकते थे। एक लता, जिसके मुलायम पत्ते और गुच्छेदार अंगूर थे, गुफा की सारी चट्टान पर रेंगती थी। चार झरने कतार में अपना चमकीला पानी बहाते थे, और इधर-उधर अगल-बगल बहते थे। चारों ओर कोमल हरी घास के मैदान थे, जो वायलेट और अजमोद से भरे हुए थे। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ कोई अमर भी कुछ पल ठहर सकता था और आश्चर्य और आनंद से निहार सकता था। दूत आर्गस-क्वेलर खड़ा हुआ और उसने देखा, और चकित हुआ; लेकिन जैसे ही उसने उस स्थान के चमत्कारों को देखा, वह मुड़ा और चौड़ी छत वाली गुफा में प्रवेश किया। वहाँ, महिमावान देवी कैलिप्सो ने उसे आते हुए देखा और पहचान लिया। क्योंकि शाश्वत देवता एक दूसरे को जानते हैं, भले ही कोई एक बाकियों से दूर रहता हो। विशाल हृदय वाला यूलिसिस वहाँ नहीं था। किनारे पर, वह अकेला बैठा शोक मना रहा था, जहाँ वह अक्सर आँसुओं, आहों और व्यर्थ विलापों में घंटों बिताता था, नम आँखों से बंजर गहरे सागर को निहारता रहता था। अब, हर्मेस को एक चमकदार सिंहासन पर बिठाते हुए, गौरवशाली देवी कैलिप्सो ने कहा:
हे स्वर्ण छड़ी वाले, पूजनीय और प्रिय, हे हर्मेस, तुम यहाँ क्यों आए हो? तुम्हारे दर्शन बहुत कम हुए हैं। अपनी इच्छा प्रकट करो। मेरा हृदय आज्ञा मानता है, यदि तुम्हारी आज्ञा का पालन करना मेरे वश में हो; परन्तु पहले अतिथि के रूप में दी जाने वाली भेंट स्वीकार करो।
देवी ने इस प्रकार बोलते हुए उसके सामने एक मेज रखी, जिस पर अमृत का ढेर लगा था, और लाल अमृत मिलाया। दूत आर्गस-क्वेलर ने खाया और पिया, और तरोताज़ा होकर अप्सरा को उत्तर दिया, और अपना संदेश सुनाया:—

“क्या तुम देवी हो, और मुझसे पूछती हो, हे देवता, मैं यहाँ क्यों आया? फिर भी, क्योंकि तुम पूछ रही हो, मैं सच-सच कारण बताऊँगा। मैं अनिच्छा से, बृहस्पति के आदेश पर आया; क्योंकि भला कौन अपनी इच्छा से खारे सागर के उस विशाल रेगिस्तान को पार करेगा, जहाँ आसपास कोई शहर नहीं है, जहाँ मनुष्य देवताओं की पूजा गंभीर अनुष्ठानों और बलि चढ़ाकर करते हैं। किसी भी देवता के पास शक्ति नहीं है कि वह ढाल धारण करने वाले बृहस्पति के उद्देश्यों से बच सके या उनका विरोध कर सके। वह मुझसे कहता है, तुम्हारे साथ रहता है, सबसे दुखी मनुष्य, उन सभी में जो तुम्हारे चारों ओर हैं...” प्रियम के शहर ने नौ वर्षों तक युद्ध लड़ा, और दसवें वर्ष में, उसे उजाड़कर, अपने घरों के लिए प्रस्थान किया। लेकिन अपनी यात्रा में उन्होंने पल्लास के क्रोध को भड़काया, जिसने उनके विरुद्ध भयंकर हवाओं और उग्र लहरों को बुलाया। उसके साथ ही उसके सभी वीर साथी गहरे पानी में डूब गए। हवाओं और लहरों ने उसे यहाँ तक पहुँचा दिया। बृहस्पति उसे शीघ्र ही यहाँ भेजने का आदेश देता है; क्योंकि यहाँ उसे अपने प्रियजनों से दूर नष्ट नहीं होना चाहिए। इसलिए यह पूर्वनिर्धारित है कि वह अपने मित्रों को फिर से देखेगा, और एक बार फिर उनके बीच खड़ा होगा। उनकी जन्मभूमि पर बना उनका आलीशान महल।
उसने कहा; महिमावान देवी कैलिप्सो ने सुना, और कांप उठी, और पंखदार शब्दों में उत्तर दिया:—
हे देवताओं, तुम अन्यायी हो, और अन्य सभी प्राणियों से कहीं अधिक ईर्ष्यालु होकर यह सहन नहीं कर सकते कि कोई देवी खुलेआम किसी नश्वर पुरुष को अपना साथी बनाए। ऐसा ही हुआ जब एक बार गुलाबी उंगलियों वाली अरोरा ने ओरियन को अपना पति बनाया; तुम अपने सुखमय जीवन के बीच ईर्ष्या और घृणा से आहत हुए, जब तक कि स्वर्ण सिंहासन वाली पवित्र डायना ने अपने धनुष से मौन बाणों से उसे मारा और ओर्टिगिया में उसकी हत्या कर दी। फिर, जब अपने हृदय से प्रेरित होकर सुनहरे बालों वाली सेरेस ने उन खेतों में, जहाँ फसलें उगती थीं, तीन वार्षिक फसलें, इयासियन से एक प्रेमी के रूप में मिले, यह ज्ञात था कि बृहस्पति से संबंधित, जिसने ऊपर से एक ज्वलंत वज्र फेंका और उसे मार डाला। और अब तुम मुझसे ईर्ष्या करते हो, कि मेरे साथ एक नश्वर मनुष्य रहता है। मैंने उसे बचाया जब वह अपनी तैरती हुई नाव पर अकेला था; क्योंकि बृहस्पति ने आकाश से आग के एक वज्र से उसकी नाव को काले सागर के बीच में चीर डाला था, और उसके सभी वीर साथी वहीं मारे गए। मैंने उसका सहर्ष

स्वागत किया; मैंने उसे प्यार से पाला, और उसे एक ऐसे जीवन का वादा किया जिसे वह कभी न जाने। क्षय या मृत्यु। परन्तु चूंकि किसी देवता के पास शक्ति नहीं है कि वह कवचधारी बृहस्पति के उद्देश्यों से बच सके या उनका सामना कर सके, इसलिए उसे जाने दो— यदि प्रभु उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित करे और आदेश दे— बंजर गहरे सागर के पार, तो मैं उसे नहीं भेजूंगा; क्योंकि न तो मेरे पास चप्पू से सुसज्जित कोई जहाज है, न ही नाविक, लहरों के असीम विस्तार के पार, उसे यहाँ से ले जाने के लिए। मैं अपनी सलाह दूंगा, और मैं उससे कुछ भी नहीं छिपाऊंगा जो उसे पता चले, ताकि उसे सुरक्षित रूप से उसके जन्मस्थान पर पहुँचाया जा सके।
दूत आर्गस-क्वेलर ने उसे उत्तर दिया:—
“उसे इस प्रकार विदा करो, और बृहस्पति के क्रोध को ध्यान में रखो, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे विरुद्ध भड़क उठे।”
इस प्रकार कहकर, शक्तिशाली अर्गीसाइड (अर्गीसाइड) चला गया; और अप्सरा, जिसने अब बृहस्पति का फैसला सुन लिया था, ने महान हृदय वाले यूलिसिस को खोजा। उसे वह गहरे समुद्र के किनारे, अकेले बैठा हुआ मिला, जिसकी आँखों से आँसू कभी नहीं सूखते थे; क्योंकि अब अप्सरा उसे प्रसन्न नहीं करती थी; उसने अपना प्यारा जीवन अपने घर की लालसा में बर्बाद कर दिया। रात-रात भर वह खोखली गुफा में विवश होकर सोता रहा, अनिच्छा से प्रेम के कारण। और दिन-ब-दिन
वह तट के किनारे की चट्टानों पर बैठा रहता,
और निरंतर रोते और आहें भरते हुए
व्यर्थ के विलाप में समय बिताता,
आँसुओं से भरी बंजर गहराई को निहारता रहता।
महिमामयी देवी उसके पास खड़ी हुई और बोली:—
“दुखी! अब यहाँ शोक मत करो,
और इस प्रकार जीवन व्यर्थ मत करो। देखो! मैं तुम्हें सहर्ष
विदा करता हूँ। उठो, पेड़ काटो, और उनके तनों को पीतल के कुंडों से बांधकर एक बेड़ा बनाओ,
और ऊपर तख्ते लगाओ, एक ऊँचा फर्श,
ताकि यह तुम्हें गहरे नीले सागर के पार ले जा सके।
मैं रोटी, पानी और शराब रखूँगा—

लाल शराब, जो दिल को खुश करती है—और तुम्हें अच्छे से वस्त्रों में लपेटूँगा, और तुम्हारे पीछे हवा भेजूँगा,
ताकि तुम सुरक्षित रूप से अपने देश के तट पर पहुँच सको,
यदि ऐसा तुम्हारी इच्छा हो, जो तुम्हें रहने देते हैं। ऊपर विशाल आकाश में, और मुझसे कहीं बेहतर जानते हैं, और कहीं अधिक बुद्धिमानी से निर्णय करते हैं।
महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस, जब उसने बोलना शुरू किया तो कांप उठे, और उन्होंने तीखे शब्दों में उत्तर दिया:
“हे देवी, मुझे घर भेजने के अलावा तेरे हृदय में कोई और उद्देश्य है, जो मुझे इस भयानक सागर को एक बेड़ा पर पार करने का आदेश दे रहा है— यह खतरनाक सागर, जहाँ कभी भी जहाज अपनी तीव्र गति से नहीं गुजर पाते, चाहे बृहस्पति नाविकों को प्रसन्न करने वाली हवा ही क्यों न दे। नहीं, मैं तेरी इच्छा के विरुद्ध किसी भी बेड़े पर नहीं चढ़ूँगा, जब तक तू देवताओं की महान शपथ न ले ले कि तू इस दौरान मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाएगी।”
उसने कहा; महिमावान देवी कैलिप्सो मुस्कुराई, और अपने हाथ से उसके माथे को सहलाते हुए बोली:—
“विकृत, और छल-कपट की सच्चाई को समझने में धीमे!
तेरा हृदय तुझे ऐसा बोलने की अनुमति कैसे दे सकता है?
अब मुझे साक्षी मानो, पृथ्वी, और हे विशाल आकाश,
हमारे ऊपर, और हे स्टिक्स नदी का जल,
जो हमारे नीचे बहता है, सबसे शक्तिशाली शपथ,
और सभी पूजनीय देवताओं द्वारा सबसे अधिक सम्मानित,
कि मैं तुझे कोई और हानि नहीं पहुँचाना चाहता,
बल्कि मैं तेरे लिए योजना बना रहा हूँ, और तुझे सलाह दे रहा हूँ,
कि मैं क्या करता यदि मुझे तेरी जैसी आवश्यकता होती।
मेरा मन अधिक न्यायप्रिय है; मेरे हृदय में
एक दयालु हृदय है, न कि कठोर हृदय।”
ऐसा कहकर, महिमामयी देवी शीघ्र कदमों से आगे बढ़ीं, और जहाँ उन्होंने कदम रखा, वहाँ वह उनके पीछे-पीछे तब तक चलता रहा जब तक कि वे गुंबददार गुफा में नहीं पहुँच गए— देवी और नायक। वहाँ उसने वह आसन ग्रहण किया जहाँ से हेमीज़ अभी-अभी उठा था। अप्सरा ने मनुष्यों के खाने-पीने की सभी वस्तुएँ

लाकर उसके सामने रख दीं। वह महान यूलिसिस के आसन के ठीक सामने बैठ गई। वहाँ उसकी दासियों ने अमृत रखा और उस पर अमृत उंडेला। दोनों ने अपने हाथ आगे बढ़ाए और तैयार भोजन ग्रहण किया, जब तक कि अंततः भूख और प्यास की पुकार शांत नहीं हो गई; फिर महिमावान देवी कैलिप्सो ने बोलना शुरू किया:— “लार्टेस के पुत्र, अनेक छल-कपटों वाले पुरुष, हे उच्च कुल के यूलिसिस! क्या तुम इस प्रकार अपने जन्म देश के लिए विदा हो रहे हो? तो अलविदा; परन्तु, यदि तुम भाग्य द्वारा तुम्हारे लिए निर्धारित कष्टों को जान पाते, इससे पहले कि तुम उसके तट पर कदम रखते, तो तुम मेरे साथ इस घर में ठहरते और अमर हो जाते, अपनी पत्नी को देखने की तुम्हारी प्रबल इच्छा की तरह—एक ऐसी इच्छा जो दिन-प्रतिदिन तुम्हें वश में करती है। मैं अपने आप को उससे चेहरे या रूप में कम सुंदर नहीं मान सकता; क्योंकि अमर लोगों के साथ नश्वरों की संतान कभी नहीं हो सकती। रूप या चेहरे के मामले में महिलाएं एक-दूसरे से तुलना करने योग्य होती हैं।
बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया:—
“कृपावान देवी, मेरा धैर्य रखो; मैं भली-भांति जानती हूँ कि तुम क्या कह सकती हो। बुद्धिमान पेनेलोप रूप और कद में तुम्हारे निकट भी नहीं आती, क्योंकि वह नश्वर है—तुम अमर हो, और सदा युवा हो; फिर भी दिन-प्रतिदिन मैं तरसती हूँ कि एक बार फिर घर लौट आऊँ, और अपने लौटने के क्षण को देखने के लिए व्याकुल हूँ। भले ही कोई देवता मुझे काले सागर में मार डाले, मैं उस प्रहार को सह लूँगी, क्योंकि मेरे हृदय में एक ऐसा मन है जो पीड़ा सहने में धैर्य रखता है; मैंने बहुत कुछ सहा है, और गहरे समुद्र में तूफानों में, और युद्ध में बहुत कुछ झेला है; ऐसा भी होने दो।
उसने बात की; सूरज डूब गया; रात हो गई;
और अब दोनों एकांत में चले गए
गुंबददार गुफा में गहराई में, जहाँ, साथ-साथ,
उन्होंने विश्राम किया। लेकिन जब भोर की संतान,
अरोरा, गुलाबी उंगलियों वाली, ने बाहर देखा,
यूलिसिस ने अपना बनियान और लबादा पहन लिया; अप्सरा ने भी चांदी-सफेद वस्त्र धारण किया, जो विशाल, कोमल और सुंदर था। उसने अपने आप को सजाया और कमर के चारों ओर एक सुंदर सुनहरी कमरबंद लपेटी, अपने सिर पर एक घूंघट डाला और उदार यूलिसिस को विदा करने की योजना बनाई। उसने दोधारी, लोहे की एक भारी

कुल्हाड़ी भेंट की, जो हाथ में अच्छी तरह से फिट बैठती थी, जिसका हैंडल जैतून की लकड़ी से बना था, मजबूती से जड़ा हुआ और सुंदर था। इसके बाद उसने उसे एक पॉलिश की हुई कुल्हाड़ी दी और उसे द्वीप के एक दूर कोने की ओर ले गई, जहाँ ऊँचे-ऊँचे पेड़, एल्डर और पोपलर खड़े थे, और देवदार के पेड़ जो बादलों तक पहुँचते थे, बहुत पहले से रसहीन और सूखे हुए थे, और इस तरह लहरों पर तैरने के लिए अधिक उपयुक्त थे। फिर, सबसे ऊँचे पेड़ों को दिखाने के बाद, गौरवशाली देवी कैलिप्सो अपने घर की ओर चल पड़ी।
फिर उसने पेड़ काटे, और जल्द ही काम पूरा हो गया। उसने कुल बीस पेड़ों को ज़मीन पर उतारा, और तेज़ धार वाले स्टील से उनके तनों को चौकोर किया, और सावधानीपूर्वक उनके किनारों को चिकना किया, और उन्हें एक रेखा से तराशा। दयालु देवी कैलिप्सो, विंबल्स को लाकर, उसने बीमों में छेद किए, और उन्हें एक साथ फिट करके, कीलों और क्लैंप से कस दिया। जैसे कोई कुशल कारीगर किसी मालवाहक जहाज के लिए चौड़ी कील बनाता है, वैसे ही यूलिसिस ने बेड़ा को इतनी चौड़ाई दी। उसने भारी-भरकम बीमों पर एक डेक बनाया, और उसे एक छोर से दूसरे छोर तक लंबी तख्तियों से ढक दिया। इस पर उसने एक मस्तूल खड़ा किया, और मस्तूल से एक गज जोड़ा; फिर उसने एक पतवार बनाई, ताकि बेड़ा अपने मार्ग पर चलता रहे, और चारों ओर विलो की शाखाओं की बुनाई से उसके किनारों को समुद्र की लहरों से बचाया। कैलिप्सो, दयालु देवी, उसके लिए बहुत सारा कैनवास लाई, जिसे उसने उचित रूप से पाल का आकार दिया, और उसे डोरियों, रस्सियों और सहारे से बांधकर, लीवर की मदद से उसे गहरे समुद्र में धकेल दिया।
चौथा दिन था। उसका काम अब पूरा हो चुका था, और पाँचवें दिन देवी ने अपने द्वीप से, स्नान से लौटकर, उसे विदा किया। वह अपने दिए हुए सुगंधित वस्त्रों में सुसज्जित था। उसने गहरे लाल रंग की शराब से भरी एक मशक, पानी से भरी एक बड़ी मशक और भोजन के लिए एक टोकरी रखी, जिसमें ऐसे व्यंजन थे जो भूख बढ़ाते थे। उसने आगे एक सुखद और कोमल हवा भेजी। महान यूलिसिस ने खुशी से अपना कैनवास हवा में लहराने के लिए फैलाया, और बड़ी सावधानी से पतवार संभालते हुए बैठ गए, और प्लीएड्स, देर से अस्त होने वाले बूट्स और ग्रेट बेयर, जिसे कुछ लोग नाव भी कहते हैं, जो घूमते हुए हमेशा ओरियन की ओर देखता है, और अकेला ही गहरे पानी में नहीं डूबता, पर टकटकी लगाए देखते रहे। क्योंकि गौरवशाली देवी कैलिप्सो ने आदेश दिया था कि अपनी समुद्री यात्रा में वह उस नक्षत्र को हमेशा अपने बाईं ओर रखें। अब यात्रा के सत्रह दिन बीत

चुके थे, और अठारहवें दिन धुंधली ऊंचाइयाँ दिखाई दीं, जो फ़ेएशियन भूमि का निकटतम बिंदु थीं, जो एक ढाल की तरह अँधेरे समुद्र पर स्थित थीं।
लेकिन शक्तिशाली नेपच्यून, इथियोपियाई लोगों के बीच से आकर, उसे देख लिया। दूर सोलीमा की पर्वत चोटियों से उसने उस यात्री को देखा, और भयंकर क्रोध से जल उठा, और अपना सिर हिलाकर मन ही मन कहा:—
“अजीब बात है! अब मुझे लगता है कि देवताओं की नई योजनाएँ हैं
इस यूलिसिस के लिए, जिसका निर्माण तब हुआ जब मैं अभी भी इथियोपिया में था। वह फ़ेएशियनों की भूमि के निकट आ रहा है, जहाँ यह निर्धारित है कि वह अपने दुखों की सीमा को पार कर जाएगा;
लेकिन पहले, मुझे लगता है, उसे बहुत कुछ सहना पड़ेगा।”
उसने बात की, और अपने चारों ओर बादलों को बुलाया और अपने हाथ में त्रिशूल धारण करके सागर को प्रज्वलित किया, सभी हवाओं के सभी तूफानों को बुलाया और धरती और आकाश को एक साथ कोहरे से ढक दिया, जबकि ऊपर से रात अचानक छा गई। पूर्वी हवा और दक्षिणी हवाएँ एक साथ पश्चिम की तेज़ हवाओं के साथ बह निकलीं, और उत्तर की निर्मल हवा ने अपनी विशाल लहरें उठा लीं। यूलिसिस के घुटने और हृदय कांप उठे, और उसने अपनी आत्मा से विलाप करते हुए कहा:
“मेरा क्या होगा? अभागा मनुष्य! मुझे डर है कि देवी ने जो कुछ कहा था, वह सब सच हो गया, उसने भविष्यवाणी की थी कि मेरे वतन पहुँचने से पहले ही मेरी यात्रा पर कितनी विपत्तियाँ आ पड़ेंगी। अब उसके वचन पूरे हो गए हैं। कैसे बृहस्पति विशाल आकाश को बादलों से ढक लेता है और गहरे सागर को हलचल में डुबो देता है! सभी हवाओं के तूफान और भी भयंकर हो जाते हैं, और अब मेरा भाग्य निश्चित है। तीन गुना धन्य, चार गुना धन्य, वे जो एट्रीयस के पुत्रों के लिए युद्ध करते हुए ट्रॉय के विशाल मैदान में गिरे: काश, मैं भी उसी दिन अपने भाग्य से मिल जाता और वहीं मर जाता, जिस दिन ट्रोजन सेना, मृत अकिलीज़ के चारों ओर, मुझ पर उनके पीतल के भाले फेंके गए थे; तब मुझे उचित दफ़न और यूनानियों के बीच महान गौरव प्राप्त हुआ था; अब मुझे एक दयनीय मृत्यु मरनी होगी।
जैसे ही वह बोल रहा था, ऊपर से उस पर एक विशाल और भयानक लहर टूट पड़ी; उसने बेड़ा को चारों ओर घुमाया, और वह उससे दूर गिर पड़ा। उसके हाथों से पतवार छूट गई; सभी हवाओं के एक भयंकर प्रवाह ने मस्तूल को दो टुकड़ों में तोड़ दिया; पाल और कैनवास दूर गहरे पानी में उड़ गए; लहर ने उसे लंबे समय तक पानी

के नीचे दबाए रखा, और उसने व्यर्थ ही उस विशाल लहर से जल्दी से ऊपर उठने की कोशिश की, क्योंकि कैलिप्सो द्वारा दिए गए वस्त्र उसे भारी लग रहे थे। लेकिन अंततः बाहर निकलकर, उसने अपने गले से उस कड़वे खारे पानी को बाहर निकाल दिया जो उसके माथे से बह रहा था। तब भी, निराशा से हताश होते हुए भी, उसका विचार बेड़ा पर था; और लहरों से जूझते हुए, उसने उसे पकड़ लिया, उस पर कूद पड़ा, और वहाँ बैठकर, मृत्यु के खतरे से बच निकला। फिर भी लहरें उसे इधर-उधर धकेलती रहीं। जैसे शरद ऋतु में हवा खेतों में कांटों को आपस में चिपकाकर उड़ा देती है, वैसे ही आकाश की हवाएँ उसे समुद्र पर इधर-उधर धकेलती रहीं।
और अब दक्षिणी हवा ने इसे उत्तर की ओर धकेल दिया
धक्के देने के लिए; अब पूर्वी हवा ने पश्चिम की ओर।
इनो ल्यूकोथिया ने उसे वहाँ जकड़ा हुआ देखा— कैडमियस का कोमल पैरों वाला बच्चा, कभी एक नश्वर प्राणी था, नश्वर स्वर में बोलता था, हालाँकि अब वह सागर की गहराइयों में देवताओं के सम्मान को साझा करता है। दया से उसने यूलिसिस को इस प्रकार व्यथित संघर्ष करते देखा, और नीचे की खाई से जलकौवे के रूप में उठकर, समुद्र-अप्सरा ने सुगठित बेड़ा पर अपना स्थान ग्रहण किया, और इस प्रकार उसने कहा:—
“अरे, अभागे मनुष्य! तूने पृथ्वी को हिला देने वाले नेपच्यून को कैसे क्रोधित कर दिया कि वह तुझे इन विपत्तियों से दंडित कर रहा है? फिर भी वह तेरा जीवन नहीं ले सकता, चाहे वह कितना भी प्रयास करे। अब मेरी आज्ञा मानो, क्योंकि तू बुद्धिमान प्रतीत होता है। अपने वस्त्र उतारकर, नाव को हवाओं के साथ बहने दो, और तू अपनी भुजाओं की शक्ति से तैरकर फ़ेएशियनों की भूमि की ओर बढ़, जहाँ तेरी सुरक्षा है। इस आवरण को ग्रहण करो, और इसके दिव्य ताने को अपने सीने के नीचे बाँध लो, और फिर कभी भयभीत न हो।” कठिनाई या खतरे से। लेकिन जैसे ही तुम द्वीप को छू लो, उसे उतार फेंको, और अपना चेहरा फेर लो, और उसे दूर फेंक दो जहाँ तुम खड़े हो, उस काले गहरे सागर में।
देवी ने घूंघट ओढ़ते हुए कहा,
और वह उथल-पुथल भरे गहरे सागर में एक जलकौवे के रूप में उतर गई; काली लहर ने उसे ढक लिया।
परन्तु फिर भी महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने विचार किया, और अपनी आत्मा से कहा:—

“अरे! शायद कोई देवता यहाँ मेरे साथ कोई और छल कर रहा है, मुझे मेरी नाव छोड़ने के लिए कह रहा है। मैं अभी आज्ञा नहीं मानूंगा, क्योंकि अभी भी दूर वह भूमि दिखाई दे रही है जहाँ कहा जाता है कि मेरी शरण है। मैं यही करूंगा, क्योंकि यही सबसे बुद्धिमानी लगती है। जब तक ये लकड़ियाँ टिकी रहेंगी, मैं यहीं रहूंगा और तूफान का सामना करूंगा; लेकिन जब लहरें मेरी नाव को चकनाचूर कर देंगी, तो मैं तैरूंगा, क्योंकि इससे बेहतर कुछ नहीं बचेगा।” जैसे ही उसने इस उद्देश्य को अपने मन में दोहराया, पृथ्वी को हिला देने वाले नेपच्यून ने एक शक्तिशाली लहर भेजी, जो भयानक, विशाल और ऊंची थी, और जहाँ वह बैठा था, वहीं उसने उसे प्रहार किया। जैसे एक तेज हवा खलिहान में ढेर किए सूखे भूसे को उठाती है और उसे हवा में बिखेर देती है, वैसे ही उस लहर ने भारी बीमों को बिखेर दिया। यूलिसिस उनमें से एक पर मजबूती से चिपककर, एक घुड़सवार की तरह अपने घोड़े पर सवार हो गया;
और अब उसने वस्त्र उतार दिए, जो सुंदर कैलिप्सो द्वारा उसे दिए गए थे, और उसने अपने सीने पर घूंघट बांध लिया, और आगे गहरे पानी में छलांग लगा दी, हथेलियाँ फैलाकर, तैरने के लिए तैयार। इसी बीच नेपच्यून ने उसे देखा— नेपच्यून, शक्तिशाली राजा—
और अपना सिर हिलाया, और मन ही मन कहा:—
“इस प्रकार जाओ, और दुर्भाग्य से बोझिल होकर भटकते रहो
जल में जब तक तुम बृहस्पति द्वारा पोषित जाति में न आ जाओ, लेकिन मैं अच्छी तरह समझता हूँ
तुम्हें अपने कष्टों का हिस्सा हल्का नहीं मिलेगा।”
इस प्रकार यह कहकर उसने अपने घोड़ों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, उनके सुंदर लहराते अयाल के साथ, जब तक कि वह
एगे पर नहीं पहुँच गया, जहाँ उसका शानदार महल खड़ा है।
लेकिन बृहस्पति की पुत्री पल्लास के विचार कुछ और ही थे।
उसने हर हवा का रुख रोक दिया,
और उन्हें आराम करने को कहा, और उन्हें सुला दिया,
लेकिन उसने उत्तर की तेज़ हवाओं को लहरों को चीरने के लिए बुलाया,
ताकि उच्च कुल का यूलिसिस,
मृत्यु और भाग्य से बच सके, और वह फ़ेएशियन लोगों का अतिथि बन सके—वे लोग जो समुद्र से प्रेम करते हैं।

दो दिन और दो रातें वह विशाल लहरों के बीच तैरता रहा, अक्सर उसका दिल मृत्यु की आशंका से भर जाता था। लेकिन जब सुनहरे बालों वाली ईओस ने तीसरे दिन का चक्र पूरा कर लिया, और सभी हवाएँ थम गईं, और जलमग्न रेगिस्तान में शांति छा गई, तो उसने देखा कि ज़मीन पास ही थी, जैसे किसी विशाल लहर की चोटी पर उठकर, उसने अपनी पैनी नज़र से देखा; और जैसे एक पिता का जीवन बचा रहने से उसके बच्चों के दिल खुश हो जाते हैं, जब वह लंबे समय तक बीमार, दर्द से तड़पता हुआ और किसी दुष्ट आत्मा के प्रभाव से कमजोर होता हुआ पड़ा रहता है, जब तक कि अंत में दयालु देवता उसे राहत नहीं देते, वैसे ही यूलिसिस को जंगलों और खेतों का दृश्य सुखद लगा। तैरते हुए उसने सोचा कि वह किनारे पर चढ़ेगा और कदम रखेगा; लेकिन जब वह इतना करीब आया कि चिल्लाने वाले की आवाज सुनाई दे सके, तो चट्टानों पर समुद्र की आवाज उसके कानों में पड़ी— क्योंकि वहाँ विशाल लहरें दहाड़ रही थीं और भयानक रूप से उफान मार रही थीं, और चारों ओर समुद्र के झाग से ढका हुआ था। यहाँ जहाजों के लिए कोई आश्रय नहीं था, न ही कोई आश्रय देने वाली खाड़ी, बल्कि ऊँचे किनारे, चट्टानें और पत्थर की दीवारें थीं। यूलिसिस के घुटने और दिल दोनों कांप उठे, और उसने अपने महान मन से विलाप करते हुए कहा:—
अब हाय! जैसे ही बृहस्पति ने मुझे वह दिखाया जिसकी मुझे देखने की ज़रा भी उम्मीद नहीं थी, वह ज़मीन, और मैंने इन सभी लहरों को चीरते हुए अपना रास्ता बनाया, मुझे उस बर्फीले गहरे पानी से निकलने का कोई रास्ता नहीं मिला। नुकीली चट्टानें इसे घेरे हुए हैं, और चारों ओर भयंकर लहरें गरज रही हैं; फिसलन भरी चट्टानें गहरी खाइयों के पास खड़ी हैं, और वहाँ पैर रखने की कोई जगह नहीं है जहाँ मैं अपने कदम रख सकूँ और बच निकल सकूँ। अब मुझे रोकने का हर प्रयास व्यर्थ है, उस विशाल लहर का जो मुझे तेज़ी से बहा ले जा रही है, ताकि मुझे नुकीली चट्टानों पर पटक दे। अगर फिर भी मैं आगे तैरकर देखने की कोशिश करूँ... द्वीप के किसी ढलान वाले किनारे या बंदरगाह पर, मुझे आंधी का डर है, कहीं वह मुझे वापस न फेंक दे, कराहते हुए, मछलियों से भरे गहरे समुद्र में; या कोई विशाल समुद्री राक्षस, उस भीड़ में से जिसे सर्वशक्तिमान एम्फिट्रिटे पालती है, किसी देवता द्वारा मेरे विरुद्ध भेजा जाए—क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि किनारों को हिलाने वाली शक्ति मुझसे क्रोधित है।

जब वह अपने मन में इन शंकाओं को मंथन कर रहा था, तभी एक विशाल लहर ने उसे ऊबड़-खाबड़ तट की ओर धकेल दिया। उसके अंग छिल जाते और उसकी सारी हड्डियाँ एक ही झटके में टूट जातीं, यदि नीली आँखों वाली कन्या, मिनर्वा ने उसे प्रेरित न किया होता। चट्टान की ओर बहते हुए, उसने तुरंत दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया, और हाँफते हुए तब तक उससे चिपका रहा जब तक कि वह विशाल लहर गुजर नहीं गई, और इस तरह वह उसके प्रकोप से बच गया। वह लहर वापस आई, और उसे एक बार फिर प्रहार किया, और उसे बहुत दूर समुद्र की ओर फेंक दिया। पॉलीपस के पंजे, अपने बिस्तर से उखड़कर, कंकड़ों से घनी तरह चिपक गए, और उसके शक्तिशाली हाथों से त्वचा के टुकड़े, चट्टान पर रह गए। शक्तिशाली लहर ने उसे बहा दिया; वह समय से पहले ही मर गया— बेचारा यूलिसिस!— लेकिन नीली आँखों वाली कन्या, पल्लास ने उसे भविष्य की जानकारी दी। किनारे की ओर लुढ़कती लहर से सीधे निकलकर, वह तट के किनारे तैरता हुआ गया और ढलान वाले समुद्र तट या सुरक्षित खाड़ी की उम्मीद में उसका अच्छी तरह से अवलोकन किया। लेकिन जब तैरते-तैरते वह एक शांत बहने वाली नदी के मुहाने पर पहुँचा, तो उसे वह स्थान दिखाई दिया जिसकी वह कामना कर रहा था - चिकना, बिना किसी चट्टान के। और यहाँ हवा से आश्रय भी था। उसने धारा का प्रवाह महसूस किया और श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की:
हे सर्वशक्तिमान, तू जो भी हो, मेरी प्रार्थना सुन! हे लंबे समय से प्रतीक्षित, मैं तेरे पास आया हूँ। मैं समुद्र पर नेपच्यून के खतरों से मुक्ति चाहता हूँ। अमर देवता उसकी प्रार्थना सुनते हैं, जो उनकी सहायता के लिए एक भगोड़ा है, जैसा कि मैं अब हूँ, जब मैं तेरी धारा में आता हूँ, और अनेक कष्टों से मुक्त होकर तेरे घुटने टेकता हूँ। हे यहाँ के शासक, मैं अपने आप को तेरा याचक घोषित करता हूँ; मुझ पर दया कर।
उसने कहा: नदी ने उसकी धारा को रोक दिया, लहरों को शांत किया, उन्हें स्थिर कर दिया और तैराक को नदी के मुहाने पर सुरक्षित उतार दिया। फिर उसने अपने घुटने और मजबूत भुजाएँ एक साथ छोड़ दीं, क्योंकि संघर्ष से उसका दिल कमजोर पड़ गया था। उसका शरीर सूजा हुआ था; खारा पानी मुँह और नाक से बह निकला; वह बिल्कुल बेबस पड़ा था, साँस फूल रही थी और वह कुछ बोल नहीं पा रहा था; अत्यधिक थकान ने उसे जकड़ लिया था। लेकिन जब उसने फिर से सांस ली, और उसकी खोई हुई इंद्रियां वापस लौट आईं, तो उसने इनो द्वारा दिए गए घूंघट को अपने सीने से उतार दिया, और उसे खारे पानी में फेंक दिया। एक विशाल लहर उसे धारा

में बहुत दूर तक ले गई; वहाँ देवी ने उसे अपने हाथों में थाम लिया। इस बीच, वह किनारे से हटकर सरकंडों के बीच लेट गया, और फसल से भरी धरती को चूमा, और इस प्रकार अपनी महान आत्मा से विलाप करते हुए कहा:—
“अरे! मुझे और क्या सहना पड़ेगा? मेरा क्या होगा? यदि मैं नदी के किनारे निर्दयी रातों के पहर बिताऊँ, तो नदी के किनारे जमी हुई निर्मम ठंड और ओस मुझे मेरी इस कमजोरी में ही मार डालेगी, क्योंकि भोर में नदी की ठंडी हवा चलती है; लेकिन यदि मैं इस पहाड़ी पर चढ़कर घने जंगल में, झाड़ियों के बीच सोने जाऊँ, तो ठंड और थकान मुझे रोक लेंगी, तो मुझे डर है कि जब तक मुझे सुखद नींद आती रहेगी, मैं जंगली जानवरों का शिकार बन जाऊँगा।”
फिर भी, जैसे-जैसे उसने और सोचा, यही सबसे अच्छा लगा। वह उठा और जंगल की तलाश में गया, और उसे पानी के पास, एक ऊँचाई पर, दूर तक फैले क्षेत्र को देखते हुए पाया। एक ही जगह से उगी दो झाड़ियों के बीच से वह अंदर गया— जैतून के पेड़, एक जंगली, एक फलदार। नम हवा कभी उनके आवरण को भेद नहीं पाई; कभी तेज़ धूप अपनी किरणें अंदर नहीं डाल पाई, न ही मूसलाधार बारिश, क्योंकि वे आपस में इतनी घनी तरह से लिपटी हुई थीं। यहाँ प्रवेश करके, यूलिसिस ने अपने हाथों से पत्तियों का एक बिस्तर बनाया। उसने इसे चौड़ा और ऊँचा बनाया, क्योंकि चारों ओर घने पत्ते गिर गए थे। उस प्रचुर भंडार में दो और तीन आदमी, कड़ाके की ठंड में भी, सर्दियों के तूफान का सामना कर सकते थे। महान पीड़ित यूलिसिस अपने पलंग पर लेटा हुआ, देखता और प्रसन्न होता, और अपने आप को उसके भीतर स्थापित कर लेता, और अपने ऊपर और चारों ओर पत्तों का ढेर लगा देता, मानो कोई दूर के खेतों में रहने वाला, बिना किसी पड़ोसी के, अंधेरी राख में एक जलती हुई लकड़ी छिपाता हो, और आग के बीजों को सावधानीपूर्वक जीवित रखता हो, कहीं ऐसा न हो कि उसे मजबूरन, अपने चूल्हे को जलाने के लिए उन्हें दूर से लाना पड़े;
इस प्रकार यूलिसिस ने पत्तों के उस ढेर में
स्वयं को दफना लिया, जबकि पल्लास ने उसकी आँखों पर
नींद उंडेल दी, और उसकी पलकें बंद कर दीं, ताकि वह अपने कष्टदायक परिश्रम के बाद
उचित विश्राम प्राप्त कर सके।

पुस्तक VI
यूलिसिस की खोज नौसिका ने की थी।
फेएशियन राजा अलसिनोस की पुत्री नौसिका को पल्लास के निर्देश पर नदी में जाकर अपने विवाह वस्त्र धोने के लिए भेजा गया। वस्त्र धोने के बाद उसकी दासियों ने खेलकूद की। शोर सुनकर यूलिसिस की नींद खुल गई, नौसिका ने उसे राहत दी और वस्त्र पहनाए, और उसे शहर में उसके पीछे आने और वहां अलसिनोस की पत्नी, रानी से विवाह का प्रस्ताव रखने के लिए कहा।
इस प्रकार परिश्रम और थकावट से अभिभूत होकर, महान पीड़ित यूलिसिस सो गया, जबकि पल्लास राज्य और नगर की ओर शीघ्रता से चली गई, जहाँ फ़ेएशियन लोग बसे हुए थे, जो प्राचीन काल में विशाल हाइपेरिया में, साइक्लोप्स की अभिमानी जाति के निकट निवास करते थे और उनके शक्तिशाली हाथों से अन्याय सहते थे। एक देवतुल्य सरदार, नौसिथोस, उन्हें एक नए निवास स्थान पर ले गया और उन्हें षड्यंत्रकारी पड़ोसियों से दूर, शेरिया में बसाया। उसने एक दीवार से उनके शहर की घेराबंदी की, वहाँ उनके लिए आवास बनाए, और देवताओं के लिए मंदिर बनवाए, और मैदान को खेतों में बदल दिया। लेकिन उसने मृत्यु को प्रणाम किया और पाताल लोक में चला गया, और देवताओं द्वारा बुद्धि से संपन्न अल्सीनोउस ने उसके स्थान पर शासन किया। अब अपने महल में, उदार यूलिसिस की वापसी की योजना बनाते हुए, नीली आँखों वाली देवी पल्लास आईं, और उस भव्य कक्ष में प्रवेश किया जहाँ एक युवती सो रही थी— विशाल हृदय वाले राजा एल्सीनोअस की पुत्री नौसिका, जो रूप और चेहरे से अमर देवियों के समान सुंदर थी। उसके पास लेटी हुई थीं, और द्वार के दोनों ओर, देवियों के समान सुंदर, दो दासियाँ थीं। चमकते हुए द्वार बंद थे। लेकिन पलास हवा के झोंके की तरह आई और उस युवती के सिर के पास खड़ी होकर बोली। देखने में वह प्रसिद्ध नाविक डायमास की पुत्री प्रतीत होती थी, एक ऐसी युवती जिसे नौसिका प्यार करती थी, और बचपन की सहेली। नीली आँखों वाली देवी अपने स्वरूप में खड़ी थी, और उसने इस प्रकार कहा:—
“नाउसिका, क्या तेरी माँ ने एक लापरवाह गृहिणी को जन्म दिया है? तेरे शानदार वस्त्र अभी भी उपेक्षित पड़े हैं, हालाँकि तेरा विवाह दिवस निकट है, जब तुझे अपने आप को सुंदर वस्त्रों से सजाना है, और वैसे ही वस्त्र उन लोगों को देने हैं जो तुझे विवाह संस्कार में ले जा रहे हैं; क्योंकि इस

प्रकार मनुष्यों की प्रशंसा प्राप्त होती है, और इस प्रकार तेरे पिता और तेरी दयालु माता दोनों प्रसन्न होंगे। अब भोर होते ही हम सब स्नानघर की ओर चलें। मैं भी तेरे साथ चलूँगा और वहाँ तेरी सहायता करूँगा, ताकि तू तुम यह काम जल्दी खत्म कर दो, क्योंकि तुम अब ज्यादा दिन अविवाहित नहीं रहोगी। तुम्हें पहले ही फ़ेएशियन वंश के सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति ने प्रलोभित कर लिया है, क्योंकि तुम्हारा जन्म भी उन्हीं की तरह श्रेष्ठ है। सुबह अपने प्रख्यात पिता से विनती करो कि वे अपने खच्चरों और रथ को तुम्हारे सुंदर कमरबंद, वस्त्र और चादरें ले जाने के लिए तैयार करें। ये चादरें पैदल चलने से कहीं अधिक सुंदर होंगी, क्योंकि नगर से दूर स्नानघर स्थित हैं।
ऐसा कहकर नीली आँखों वाली पल्लास ओलंपस लौट गई, जहाँ देवताओं ने परंपरा के अनुसार अपना शाश्वत निवास स्थान बनाया है। आंधी उसे हिला नहीं सकती, न ही वह वर्षा से भीगती है, और वहाँ कभी बर्फ नहीं गिरती। शांत, निर्मल आकाश में बादल नहीं हैं; और उस सुनहरे प्रकाश में, जो सब पर छाया रहता है, दिन-प्रतिदिन देवता आनंदित होते हैं। नीली आँखों वाली देवी ने सोई हुई कन्या को अपना संदेश देकर वहाँ से विदा ली।
जल्द ही उज्ज्वल सुबह हो गई। नौसिका उठी, शाही वस्त्र पहने, अपने सपने पर आश्चर्यचकित होकर वह महल से होते हुए अपने पिता और रानी को अपना इरादा बताने के लिए जल्दी से महल की ओर चल पड़ी। उसने उन दोनों को अंदर पाया। उसकी माँ अपनी दासियों के साथ चूल्हे के पास बैठी थी, और गहरे बैंगनी रंग में रंगे ऊन से लदे तकिये को चला रही थी। दहलीज पर उसके पिता खड़े थे, जो फाएशियनों के सरदारों से मिलने जा रहे थे, जहाँ उनके सबसे कुलीन लोगों ने उनकी उपस्थिति का अनुरोध किया था। तब दासी अपने प्रिय पिता के पास पहुँचकर बोली:—
“हे प्रिय पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिए एक रथ तैयार करने का आदेश दें, जिसकी भुजाएँ ऊँची हों और पहिए मजबूत हों, ताकि मैं उसे नदी के किनारे तक ले जा सकूँ, जहाँ मेरे कीमती वस्त्र, जो अब मैले पड़े हैं, शुद्ध हो सकें। इसी प्रकार, सभाओं में तुम्हारा भी स्वच्छ और निर्मल वस्त्रों में उपस्थित होना सुशोभनीय है। इन कक्षों में तुम्हारे पाँच पुत्र हैं, जिनमें से दो विवाहित हैं और तीन युवावस्था में हैं, और नृत्य के लिए उन्हें हमेशा धुले हुए नए वस्त्रों की आवश्यकता होती है। मुझे इन सबका प्रबंध करना होगा।”

उसने अपनी बात समाप्त कर दी, क्योंकि वह अपने भावी विवाह के बारे में कुछ भी कहने से कतरा रही थी। उसने उसके विचार को भांप लिया और कहा: “मेरी बेटी, मैं तुम्हें खच्चरों से मना नहीं करता, न ही किसी और चीज़ से। तो जाओ; मेरे सेवक ऊँची दीवारों और मजबूत पहियों वाली, और ऊपर एक चौड़े रैक वाली गाड़ी तैयार कर देंगे।”
उसने बात की और आदेश दिया। घोड़ों की देखभाल करने वालों ने आज्ञा का पालन किया, और बाहरी प्रांगण में मजबूत पहियों वाला रथ तैयार करके, जुए में जकड़े खच्चरों को लादकर उन्हें बांध दिया; और फिर युवती अपने कुटिया से चमकीले वस्त्र लेकर प्रकट हुई। उसने उन्हें चमकीले रथ में रखा, जबकि उसकी माँ ने दिन के भोजन के लिए कई स्वादिष्ट मांस और लजीज पकवानों से एक टोकरी भर दी, और एक बकरी की खाल में शराब डाली। जैसे ही उसकी बेटी रथ पर चढ़ी, उसने उसके हाथों में एक सोने का मटका दिया जिसमें उसके और उसकी दासियों के लिए चिकना अभिषेक तेल भरा था। नौसिका ने कोड़ा और चमकीली लगाम ली और खच्चरों को आगे बढ़ाने के लिए मारा। वे ज़ोरदार शोर मचाते हुए आगे बढ़े, और उनकी गति धीमी नहीं हुई, और वे वस्त्र और खुद को भी साथ ले गए—परंतु अकेले नहीं, क्योंकि उसके साथ उसकी दासियाँ भी थीं। अब जब वे नदी के रमणीय किनारे पर पहुँचे, जहाँ हमेशा के लिए खोखले किए गए कुंड थे, और उनमें से निर्मल जल बह रहा था जो सबसे गंदे दागों को भी धो सकता था, तो उन्होंने खच्चरों को खोल दिया और उन्हें गाड़ी से उतारकर बहती धारा के किनारे मीठी घास चरने के लिए छोड़ दिया; और वस्त्रों को निकालकर गहरे पानी में फेंक दिया, और जल्दबाजी में पैरों से उन्हें वहाँ रौंदते हुए मस्ती की होड़ में कुचल दिया। और जब काम पूरा हो गया, और सारे दाग धुल गए, तो उन्होंने वस्त्रों को समुद्र तट पर फैला दिया, जहाँ नदी ने बजरी को सबसे साफ कर दिया था। फिर उन्होंने स्नान किया, और अपने अंगों पर कोमल तेल लगाया, और नदी के किनारे भोजन किया—जबकि सूर्य की गर्म किरणों के नीचे उनके वस्त्र सूख रहे थे। और अब, जब वे सब भोजन से तरोताज़ा हो गए, तो स्वामिनी और दासियों ने अपने घूंघट हटा दिए और गेंद खेलने लगीं। सफेद भुजाओं वाली नौसिका ने गीत गाना शुरू किया। जैसे जब धनुर्धारी रानी डायना पहाड़ियों के बीच जाती है— ऊँचे टैगेटस के किनारे या एरिमांथस की ढलानों पर— आनंद से सूअरों और तेज़ हिरणों का पीछा करती है, और उसके चारों ओर ग्रामीण अप्सराएँ झुंड में खेलती हैं, लैटोना का हृदय प्रसन्न होता है, क्योंकि बाकी सभी से ऊपर उसकी

बेटी का सिर और माथा दिखाई देता है, और वह तुरंत उनके बीच पहचानी जाती है, हालाँकि वे सभी सुंदर हैं, ऐसी ही वह निष्कलंक कुंवारी अपनी दासियों के बीच थी।
अब जब वे घर लौटने ही वाले थे, खच्चरों पर लगाम लगाकर और चमकदार वस्त्रों को सावधानीपूर्वक तह करके, नीली आँखों वाली कन्या, पल्लास, को यह विचार आया
- यूलिसिस को जगाकर उसे उस चमकीली आँखों वाली कन्या को दिखाने के लिए, ताकि वह अजनबी को फ़ेएशियन शहर का रास्ता दिखा सके। शाही कन्या ने एक दासी के रूप में गेंद फेंकी; वह चूक गई और नदी में गिर गई जहाँ एक गहरा भंवर घूम रहा था। सब ज़ोर से चीख पड़े। महान यूलिसिस नींद से जाग उठा और सीधा बैठ गया, मन ही मन बातें करने लगा:—
“अरे! मैं किस क्षेत्र में आ गई हूँ? यहाँ कैसे लोग हैं—जंगली, बर्बर और अन्यायी, या आतिथ्य सत्कारशील और देवताओं का आदर करने वाले? हवा में आवाज़ें गूँज रही हैं, स्त्री की आवाज़ें, जैसे अप्सराओं की, जो पहाड़ों की चोटियों, नदियों के उद्गम स्थलों और नम घास के मैदानों में विचरण करती हैं। या शायद मैं ऐसे लोगों के पास हूँ जो बोल सकते हैं? नहीं, तो मुझे तुरंत बाहर जाकर सीखना चाहिए।”
इतना कहकर महान यूलिसिस झाड़ियों से निकल पड़ा। घनी झाड़ियों से उसने अपने बलवान हाथ से पत्तों से लदी एक शाखा तोड़ी और उसे अपनी कमर पर लपेट लिया। फिर वह एक पहाड़ी शेर की तरह आगे बढ़ा, जो अपनी शक्ति पर भरोसा करते हुए बारिश और हवा में निकलता है; उसकी आँखों से आग निकलती है; वह बैलों, भेड़ों या जंगली हिरणों पर झपट पड़ता है, क्योंकि भूख उसे बाड़े में बंद झुंड पर भी हमला करने के लिए उकसाती है। जब यूलिसिस उन सुनहरे बालों वाली युवतियों से मिलने जा रहा था, तब वह कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा था, क्योंकि वह नग्न था, लेकिन मजबूरीवश वहाँ गया था। उनके लिए उसका रूप भयावह था, क्योंकि उसके अंग अभी भी समुद्र के झाग से सने हुए थे। वे नदी के उभरे हुए किनारों के साथ-साथ दाएं-बाएं भाग गईं। अलसिनौस की पुत्री अकेली वहीं खड़ी रही, क्योंकि पल्लास ने उसे साहस दिया और उसके अंगों को कांपने से रोका। इसलिए वह वहीं प्रतीक्षा करती रही। यूलिसिस सोच रहा था कि क्या वह उस चमकीली आँखों वाली युवती के पास जाकर उसके घुटनों को थामकर उससे विनती करे, या फिर दूर रहकर ही उससे मीठे शब्दों में शहर का रास्ता दिखाने और उसे वस्त्र देने की प्रार्थना करे। इस प्रकार सोचते हुए उसे लगा कि दूर रहना

ही सबसे अच्छा है, और कोमल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि उसके घुटनों को थामने पर युवती नाराज़ हो जाए। कोमल शब्दों में कुशलतापूर्वक यूलिसिस ने इस प्रकार कहा:—
“हे रानी, मैं आपका याचक हूँ, चाहे आप नश्वर हों या देवी। यदि संयोगवश आप उस अमर वंश की हैं जो विशाल आकाश में निवास करते हैं, तो मेरी राय में आप रूप, कद और गरिमामय आभा में सम्राट जूपिटर की पुत्री डायना के समान हैं। यदि आप नश्वर और पृथ्वी पर रहने वाली हैं, तो आपके पिता और उनकी रानी तीन गुना धन्य हैं, आपके भाई तीन गुना धन्य हैं; और उनके हृदय आपके कारण आनंद से भर उठे होंगे, अपने वंश की ऐसी संतान को नृत्य में प्रवेश करते देखकर। लेकिन सबसे अधिक प्रसन्न उन सब से परे, जो राजसी उपहार लेकर, तुझे अपने घर दुल्हन बनाकर ले जाएगा; निश्चय ही मैंने तुम्हारे जैसा कोई नश्वर प्राणी, स्त्री या पुरुष, कभी नहीं देखा, और जब मैं तुम्हें निहारता हूँ तो आश्चर्यचकित हो जाता हूँ। तुम्हारे जैसा ही मैंने हाल ही में डेलोस में अपोलो की वेदी के पास एक युवा ताड़ का पेड़ उगते देखा; क्योंकि मैं बहुत से लोगों के साथ एक विनाशकारी यात्रा पर डेलोस गया था। मैं उसे लंबे समय तक विस्मित होकर देखता रहा, जैसा कि मैं अब हूँ— क्योंकि पृथ्वी पर कभी इतना सुंदर वृक्ष नहीं था। उछल पड़ा। इसलिए मैं आश्चर्यचकित और विस्मित हूँ, हे देवी, और श्रद्धा से तुम्हारे घुटनों को थामने से खुद को रोकता हूँ। फिर भी मैंने बहुत कुछ सहा है। कल शाम ही मैं बीसवें दिन काले सागर से बच निकला था, और ओगिगिया के द्वीप से दूर-दूर तक लहरें और तूफान मुझे ले जाते रहे। अब इस किनारे पर कोई देवता मुझे फेंक देता है, शायद यहाँ नए कष्ट सहने के लिए; क्योंकि अभी अंत नहीं है, और देवताओं को पहले बहुत सी चीजें पूरी करनी हैं। लेकिन हे रानी, तुम मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं सबसे पहले तुम्हारे पास आया हूँ। मैं इस भूमि के किसी भी निवासी को नहीं जानता। हे ईश्वर, मुझे अपना नगर दिखाओ; और मुझे ओढ़ने के लिए कोई पुराना, साधारण वस्त्र प्रदान करो—यदि वास्तव में, यहाँ आते समय तुम अपने साथ कुछ साधारण या भद्दा लाए हो। और ईश्वर तुम्हें वह सब आशीर्वाद प्रदान करे जो तुम चाहो, पति, घर और वैवाहिक सामंजस्य। इससे बेहतर, इससे अधिक धन्य अवस्था कोई नहीं है, जब पति- पत्नी सामंजस्य में रहकर प्रेमपूर्वक अपने घर का प्रबंधन करते हैं। तब वे जो उनसे घृणा करते हैं वे पश्चाताप करें, जो उनका भला चाहते हैं वे प्रसन्न हों, और वे स्वयं सबसे अधिक प्रसन्न हों। और फिर श्वेत भुजाओं वाली दासी

नौसिका ने कहा:— “हे अजनबी, तब से तुम न तो दुष्ट हो और न ही दुर्भावना से भरे हो—सच तो यह है कि ओलंपियन बृहस्पति अपनी इच्छा से धन-संपत्ति प्रदान करता है, चाहे वह कुलीन हो या नीच; और तुम्हारे दुख निःसंदेह उसी के द्वारा भेजे गए हैं, और यह उचित है कि तुम धैर्यपूर्वक समर्पण करो—अब जबकि तुम हमारे देश में पहुँच चुके हो और हमारे राज्य में हो, तुम्हें वस्त्रों की कमी नहीं होगी और न ही किसी और चीज की कमी होगी जो किसी जरूरतमंद अजनबी को दी जानी चाहिए।” मैं तुम्हें वह नगर दिखाऊँगी और उसका नाम बताऊँगी। इसके निवासी—फेएशियन—वे नगर पर अधिकार रखते हैं; इसके चारों ओर का सारा क्षेत्र उनका है, और मैं विशाल आत्मा वाले राजकुमार अलसिनोस की पुत्री हूँ, जिन्हें फेएशियनों का शासन और उनकी शक्ति सौंपी गई है।
उस युवती ने ऐसा कहा और अपनी सुनहरे बालों वाली दासियों को इस प्रकार आज्ञा दी: “रुको! हे मेरी दासियों, जब कोई पुरुष दिखाई दे तो तुम कहाँ भागती हो? तुम शायद सोचती हो कि वह कोई शत्रु है। नहीं, अब कोई भी पुरुष जीवित नहीं है, और न ही भविष्य में कभी जीवित होगा, जो फाएकेसी लोगों की भूमि में युद्ध लेकर प्रवेश करे। वे महान देवताओं को बहुत प्रिय हैं। हम अलग-थलग, दूर, असीम गहराई में, उसकी लहरों के बीच रहते हैं; हम सबसे दूरस्थ हैं; किसी अन्य जाति का हमसे कोई संबंध नहीं है। यह पुरुष हमारे पास एक भटकता हुआ आया है।” और दुखी, और उसके प्रति हमारी चिंताएँ हैं। अजनबी और गरीब बृहस्पति द्वारा भेजे गए हैं, और उनके प्रति थोड़ी सी भी परवाह करना कृतज्ञता का कारण है। युवतियों, अजनबी को भोजन और पेय दो, और उसे नदी के किनारे ले जाओ जहाँ हवा से बचाव हो।
स्वामिनी ने ऐसा कहा; और वे अपना भागना रोककर एक-दूसरे को रुकने का आदेश देकर सरदार को एक आश्रय के नीचे ले गईं, जैसा कि बलवान अल्किनोस की पुत्री, शाही दासी ने आदेश दिया था, और उसके वस्त्र के रूप में एक लबादा और कुर्ता उस स्थान के पास रख दिया, तथा निर्मल तेल से भरा एक सोने का पात्र भी रख दिया। फिर, जब उन्होंने उसे ताजे पानी में स्नान करने का आदेश दिया, तो कुलीन सरदार ने कहा:—
“हे युवतियों, यहाँ से हट जाओ, जब तक मैं अपने कंधों को खारे पानी से साफ करने और उन पर तेल लगाने की तैयारी कर रही हूँ; मेरे इन अंगों को तेल से लंबे समय से ताजगी नहीं मिली है। मैं तुम्हारे सामने स्नान नहीं करूँगी।

इन सुनहरे बालों वाली युवतियों के सामने नग्न खड़े होने में मुझे शर्म आएगी।”
उसने बात की; उन्होंने ध्यान से सुना और पीछे हट गए, और उन्होंने युवती को बताया कि उसने क्या कहा। फिर यूलिसिस ने अपनी पीठ से समुद्र की नमकीन फुहार धोई और बहते पानी में अपने चौड़े कंधों को धोया, और अपने माथे से समुद्र के झाग को पोंछा। और जब स्नान समाप्त हो गया, और उसके अंगों पर तेल लगा दिया गया, और उसने निष्कलंक दासी द्वारा भेजे गए वस्त्र पहन लिए, तब बृहस्पति की पुत्री, पल्लास ने उसे और अधिक भव्य और राजसी रूप में प्रकट किया, और उसके सिर पर मुकुट की तरह लहराते बालों को नीचे की ओर बहने का आदेश दिया, जैसे जलकुंभी के फूल। जैसे कोई कुशल कारीगर, जिसे वल्कन और मिनर्वा ने अपनी कला में प्रशिक्षित और सिखाया हो, चमकीले चांदी को सोने की किनारी से जोड़ता है, और उसका काम इतना सुंदर होता है, वैसी ही सुंदरता पल्लास ने नायक के माथे और कंधों पर बिखेर दी, जब वह समुद्र तट पर चल रहा था। और अपनी सुंदरता और गौरवशाली आचरण के साथ, वह अलग बैठा रहा। दासी ने प्रशंसा की और अपने सुनहरे बालों वाली सहेलियों से कहा:
“मेरी कन्याओं, मेरी बात सुनो। यह पुरुष स्वर्ग के सभी देवताओं की इच्छा के विरुद्ध फ़ेएशियन वंश के देवतुल्य पुत्रों में नहीं आता। पहले मुझे वह देखने में अशोभनीय लगता था; अब वह उन अमर लोगों के समान दिखता है जिनका घर विशाल स्वर्ग है। काश मैं उसके जैसे पुरुष को अपना पति कह पाती, यहाँ निवास करती, और यहीं संतुष्ट रहती। अब जल्दी करो, कन्याओं, और अजनबी के सामने भोजन और मदिरा परोसो।”
उसने कहा; उन्होंने सुना और प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा का पालन किया,
और यूलिसिस के सामने भोजन और शराब परोस दी।
धैर्यवान मुखिया यूलिसिस ने बड़े चाव से खाया और पिया, क्योंकि उसने लंबे समय तक उपवास किया था।
श्वेत भुजाओं वाली नौसिका को फिर कुछ और चिंताएँ सताने लगीं। उसने सुव्यवस्थित ढंग से तह किए हुए वस्त्रों को भव्य रथ के भीतर रखा, मजबूत खुरों वाले खच्चरों को जोता, और अपने स्थान पर विराजमान होकर, यूलिसिस को प्रेमपूर्वक सलाह देते हुए बोली:
“अब, अजनबी, उठो और शहर की ओर चलो,
और मेरे शाही पिता के महल तक मैं तुम्हारा मार्गदर्शक बनूँगा, जहाँ

निःसंदेह तुम हमारे फ़ेएशियन वंश के सबसे श्रेष्ठ पुरुषों से मिलोगे। परन्तु मेरी सलाह मानो—क्योंकि मैं तुम्हें अनुपयुक्त नहीं समझता। जब हम खेतों से होकर गुजरें,
जुताई के बीच, तुम मेरे दल में रहो,
युवतियों के साथ, खच्चरों और रथ के पीछे तेजी से चलते हुए। मैं तुम्हें मार्ग में आगे ले जाऊँगा।
परन्तु जब हमारा दल शहर की ओर ऊपर की ओर जाए,
जो अपनी मीनारनुमा दीवार से घिरा है, और हर तरफ
एक सुंदर बंदरगाह से घिरे, संकरे प्रवेश द्वार वाली एक जलडमरूमध्य के साथ, जहाँ हमारी सुसज्जित नौकाओं के लिए सड़क के किनारे लंगर डालने की जगह है, और वहाँ नेपच्यून के शानदार मंदिर के चारों ओर एक बाज़ार फैला हुआ है, जो विशाल पत्थरों से घिरा है, जिन्हें खदान से यहाँ लाया गया है, जहाँ नौकाओं की साज-सज्जा - पाल का कपड़ा और रस्सियाँ - रखी जाती हैं, और वहाँ चप्पू पॉलिश किए जाते हैं - क्योंकि फेएशियन तरकश और धनुष की परवाह नहीं करते, और अच्छी तरह से संतुलित मस्तूलों, रस्सियों और जहाजों पर विशेष ध्यान देते हैं, जिन्हें पार करना उनका गौरव है। वह गहरा, झागदार सागर—जब मैं वहाँ होती, तो मैं अपने ऊपर अभद्र ताने नहीं लाती, क्योंकि भीड़ में क्रूर पुरुष हैं। शायद उनमें से कोई नीच किस्म का व्यक्ति हमसे मिलकर कहे: ‘वह कौन सा पुरुष है, जो इतना सुंदर और तगड़ा है, जो इस तरह नौसिका का पीछा कर रहा है? उसकी किस्मत कैसी थी कि उसे वह मिल गया? क्या वह उसका पति बनेगा? शायद वह अपने जहाज से किसी भटके हुए को लाई है, किसी अजनबी को, क्योंकि यहाँ हमारे कोई पड़ोसी नहीं हैं; या शायद, वह कोई देवता है जिसे सच्ची प्रार्थना से स्वर्ग से बुलाया गया है। अब से उसके साथ। अच्छा होगा यदि उसे कहीं और पति मिल जाए, क्योंकि घर पर वह अपने कई कुलीन प्रेमियों को तिरस्कार से देखती है; वे फ़ेएशियन हैं।’ भीड़ ऐसा कहती, और इससे मेरे नाम पर कलंक लगता। मैं भी उस व्यक्ति को दोषी ठहराता जो ऐसा ही करे, और अपने माता-पिता के जीवित रहते, उनकी जानकारी के बिना, विवाह से पहले पुरुषों के साथ संबंध रखे। अजनबी, अब मेरी बात मानो, और तुम्हें मेरे पिता से शीघ्र ही सुरक्षित मार्ग मिल जाएगा, और तुम्हें अपने घर वापसी के सफर पर भेज दिया जाएगा। रास्ते में चिनार के पेड़ों का एक सुंदर उपवन आएगा, जो पल्लास को पवित्र है; इससे एक छोटी नदी बहती है, और इसके चारों ओर एक घास का मैदान है। इसी स्थान पर मेरे

पिता की ज़मीन है, और यहाँ उनका बगीचा फलता-फूलता है, जो शहर से इतनी दूर है कि कोई चिल्लाहट सुन सकता है। तुम वहीं बैठ जाओ और तब तक प्रतीक्षा करो जब तक हम शहर की गलियों में और मेरे पिता के घर न पहुँच जाएँ। जब ऐसा लगे कि हम वहाँ पहुँच गए हैं, तो उठो और आगे बढ़ो, फ़ेएशियन शहर की ओर, और पता करो कि उदार हृदय वाले राजा अल्किनोस कहाँ रहते हैं। मेरे पिता; उन्हें ढूँढ़ना कठिन नहीं है; एक बच्चा तुम्हें वहाँ ले जा सकता है। फ़ेएशियनों द्वारा निर्मित घरों में से कोई भी उस घर जैसा नहीं है जिसमें नायक अल्किनोस रहता है। जब तुम एक बार आँगन और महल में पहुँच जाओ, तो महल में जल्दी से तब तक जाओ जब तक तुम्हें मेरी माँ न मिल जाए, जो चूल्हे के पास बैठी है, जलती हुई आग में एक स्तंभ से टेक लगाकर, चमकीले समुद्री बैंगनी रंग के धागे बुन रही है, जो देखने में अद्भुत है, जबकि उसकी दासियाँ उसके पीछे बैठी हैं। उसके पास ही मेरे पिता का सिंहासन है। जिस पर वह दावतों में बैठता है और शराब पीता है, मानो किसी अमर व्यक्ति की तरह। इसे पार कर जाओ और मेरी माँ के घुटनों को थाम लो; ताकि तुम जल्द ही और खुशी से अपने लौटने का दिन देख सको, भले ही तुम्हारा घर दूर हो। क्योंकि यदि उसका मन तुम्हारे प्रति दयालु हो, तो तुम आशा कर सकते हो कि तुम अपने मित्रों से एक बार फिर मिल सकोगे और अपने जन्मस्थान में अपने सुंदर महल में फिर से प्रवेश कर सकोगे।
ऐसा कहकर उसने चमकता हुआ कोड़ा उठाया और खच्चरों पर प्रहार किया, जो शीघ्र ही नदी को पीछे छोड़ गए। वे सहज गति और एकसमान कदमों से आगे बढ़ते रहे। युवती ने लगाम को कुशलतापूर्वक संभाला और कोड़े का प्रयोग कोमल हाथों से किया, ताकि यूलिसिस और उसकी दासियों का दल पैदल ही उनके पीछे-पीछे चल सकें। और अब जब वे पल्लास के पवित्र उस सुंदर उपवन में पहुँचे, तब सूर्य अस्त हो रहा था। वहाँ महान सरदार यूलिसिस बैठ गया और तुरंत ही सम्राट ज़्यूस की पुत्री से प्रार्थना की:
“हे बृहस्पति के अजेय पुत्र, कवचधारी! अब मेरी प्रार्थना सुनो, क्योंकि कुछ समय से तूने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी, जब तटों को हिला देने वाले शक्तिशाली भूकंप ने मेरा पीछा किया और मुझे नष्ट कर दिया! मुझे फ़ेएशिया के पुत्रों से दया और करुणा प्राप्त करने की कृपा प्रदान करो।”
उसने प्रार्थना की, विनती की। पल्लास ने प्रार्थना सुनी, पर वह खुलकर उसके पास नहीं आई। अपने पिता के भाई के भय ने उसे रोके रखा; क्योंकि वह यूलिसिस का उसके जन्मस्थान तक हिंसक घृणा से पीछा करता रहेगा।

पुस्तक VII
अलसिनोस द्वारा यूलिसिस का स्वागत
नौसिका की शहर में वापसी, उसके बाद यूलिसिस का आगमन—एल्किनोस का महल और उद्यान—रानी और उसके पति द्वारा यूलिसिस का स्वागत—यूलिसिस द्वारा अपनी यात्रा और जहाज़ के डूबने की कहानी।
महान पीड़ित यूलिसिस ने प्रार्थना की। बलवान खच्चर उस युवती को शहर की ओर ले गए, और जब वह अपने पिता के भव्य महल में पहुँची, तो वह बरामदे के नीचे रुक गई। उसके भाई उसके चारों ओर, देवताओं के समान, आए और खच्चरों को खोलकर वस्त्र अंदर ले गए। उसने अपने कमरे की ओर रुख किया, जहाँ एक वृद्ध महिला, एक एपिरोट परिचारिका, जिसका नाम यूरीमेडस था, ने उसके लिए आग जलाई। उसे सुंदर चप्पू वाली नौकाओं द्वारा बहुत पहले एपिरस से लाया गया था, और उसे राजा एल्किनोउस को सौंप दिया गया था, जो फ़ेएशिया के सभी पुत्रों का शासक था, और वे उसकी वाणी को मानो देवता मानते थे। उसी ने शाही महलों में श्वेत भुजाओं वाली नौसिका का पालन-पोषण किया, उसके चूल्हे की देखभाल की और उसके लिए शाम का भोजन तैयार किया।
अब यूलिसिस उठा और शहर की ओर चल पड़ा, जबकि मित्रवत पल्लास अंधेरे में उसका रास्ता छिपाए रही, कहीं ऐसा न हो कि फ़ेएशियन लोगों में से कोई उसे अभद्र शब्दों से पुकारे या पूछे कि वह कौन है। और जैसे ही वह उस सुंदर शहर में प्रवेश कर रहा था, नीली आँखों वाली पल्लास उससे मिली, एक कलश लिए एक युवती के रूप में। वह उसके सामने खड़ी थी, और यूलिसिस ने उससे इस प्रकार पूछा:— “हे मेरी पुत्री, क्या तुम मुझे उस घर तक ले चलोगी जहाँ अलसिनौस रहता है, जो इस भूमि का शासक है? मैं एक अजनबी हूँ, जो बहुत दूर से आया हूँ, लंबे कष्टों के बाद, और इस राज्य में रहने वालों में से मैं किसी को भी नहीं जानता।” नीली आँखों वाली देवी पल्लास ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “पिता और अजनबी, मैं आपको घर दिखाऊँगी; मेरे भले पिता का निवास इसके पास ही है। कृपया चुपचाप मेरे पीछे आइए, मैं आपको रास्ता दिखाऊँगी। किसी भी पुरुष की ओर मत देखिए, न ही कोई प्रश्न पूछिए; क्योंकि यहाँ के लोग अजनबियों से स्नेह नहीं रखते, और दूर से आने वालों का अक्सर हार्दिक स्वागत करते हैं। वे अपनी तीव्र नौकाओं पर भरोसा करते हैं, जो नेपच्यून की कृपा से विशाल सागर को पार करती हैं। उनकी नौकाओं की गति पंखों या विचारों के समान है।”

इस प्रकार पल्लास बोली और शीघ्र ही आगे चल पड़ी। वह उसके पदचिन्हों पर चला। प्रशिक्षित फ़ेएशियन नाविकों ने उसे नहीं देखा—क्योंकि जिस शक्ति ने उसका नेतृत्व किया, सुनहरे बालों वाली पल्लास, उसने उसे देखने से रोक दिया और उस पर अंधकार का एक मैत्रीपूर्ण पर्दा डाल दिया। यूलिसिस ने आश्चर्यचकित होकर देखा, बंदरगाह और वीर जहाज़, बाज़ार जहाँ वीर उमड़ते थे, दीवारें लंबी, ऊँची और बाड़ से घिरी हुई, एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती थीं। लेकिन जब वे राजा के भव्य महल में पहुँचे, तो नीली आँखों वाली देवी ने मुखिया से इस प्रकार बोलना शुरू किया:—
“पिता और अजनबी, यहाँ तुम वह घर देख रहे हो जिसे तुमने मुझे दिखाने के लिए कहा था। तुम पाओगे कि राजकुमार, देवताओं के बच्चे, भीतर राजसी भोज कर रहे हैं। प्रवेश करो, और डरो मत; साहसी व्यक्ति हमेशा श्रेष्ठ होता है, चाहे वह कितनी भी दूर से आया हो। तुम सबसे पहले रानी को देखोगे। लोग उसे एरेटे कहते हैं। वह उसी वंश की है जिससे राजा अल्किनोस का वंश जुड़ा है। बहुत समय पहले इसके संस्थापक नौसिथोस का जन्म हुआ था। तटों को हिलाने वाले महान देवता नेपच्यून को, पेरीबिया द्वारा, जो अपनी जाति में सबसे सुंदर थी, और यूरीमेडोन की सबसे छोटी पुत्री थी, जिसने विशाल आत्मा वाले देवता को जन्म दिया, जिसने अभिमानी राक्षसों के वंश पर शासन किया और उस दोषी जाति को अपने ही जैसे भाग्य से नष्ट होते देखा। नेपच्यून ने उसे रिझाया; उसने उसे एक पुत्र को जन्म दिया, विशाल आत्मा वाले नौसिथोस, जिसे फ़ेएशिया ने अपना संप्रभु माना। नौसिथोस से रेक्सेनर और एल्किनोस का जन्म हुआ। जो पुत्र को जन्म देता है... अपोलो ने चांदी के धनुष से नवविवाहित रेक्सेनोर को उसके घर में ही मार डाला। उसका कोई पुत्र नहीं था, केवल एक पुत्री थी, जिसका नाम एरेट था; एल्सीनोअस ने उसे अपनी पत्नी बनाया, और पृथ्वी पर कहीं और किसी भी स्त्री की तुलना में उसका इतना सम्मान किया जाता है जितना किसी पति के घर की देखरेख करने वाली स्त्री का नहीं किया जाता। उसके बच्चे, राजा और सभी लोग हृदय से उसका आदर करते हैं, क्योंकि वे उसे देवी की तरह देखते हैं। जब वह सड़कों पर निकलती है, तो सभी जयजयकार के साथ उसका स्वागत करते हैं। वह कभी असफल नहीं होती। विवेकपूर्ण निर्णय लेते हुए, वह मनुष्य और मनुष्य के बीच विवादों का निपटारा दयालुता और न्यायपूर्वक करता है। और यदि तुम उसका अनुग्रह प्राप्त कर लो, तो आशा है कि तुम अपने मित्रों को एक बार फिर देख सकोगे, और अपनी जन्मभूमि पर बने अपने ऊंचे महल में खड़े हो सकोगे।

नीली आँखों वाली पल्लास ने ऐसा कहकर बंजर सागर को पार कर लिया। उसने शेरिया के रमणीय द्वीप को छोड़ दिया और मैराथन और एथेंस की विशाल गलियों की ओर चल पड़ी, जहाँ उसने इरेक्टियस के निवास स्थान वाले विशाल महलों में प्रवेश किया। वहीं यूलिसिस ने अलसिनोस के भव्य महल की ओर कदम बढ़ाया, पर दहलीज पार करने से पहले रुककर सोचने लगा। उस उदार राजा की ऊँची छत के नीचे चारों ओर सूर्य या चंद्रमा की तरह एक चमक बिखरी हुई थी। दहलीज से दोनों ओर पीतल की दीवारें थीं जो भीतरी कमरों की ओर जाती थीं, जिन पर नीले इस्पात के कंगनी लगे थे। विशाल इमारत के भीतर के दरवाजे सोने के थे, और पीतल की दहलीज पर चांदी के खंभे लगे थे, और चौखट चांदी की थी, और उसके ऊपर का मेहराब सोने का था; और दोनों ओर सोने और चांदी के खंभे खड़े थे, जो वल्कन की निपुण कारीगरी का दुर्लभ नमूना थे, जिन्हें महान अल्किनोस के घर की रक्षा के लिए रखा गया था, और उन्हें अमर जीवन प्रदान किया गया था, जिस पर उम्र का कोई असर नहीं होता था। भीतरी दीवारों के साथ, दोनों ओर, और दहलीज से भीतरी कमरों तक, दृढ़ता से सिंहासन स्थापित थे जिन पर महिलाओं के हाथों से बुने हुए नाजुक आवरण रखे थे। यहाँ फ़ेएशियाई राजकुमार बैठे थे; यहाँ वे खाते-पीते थे और निरंतर भोज करते थे। सुडौल वेदियों पर सोने के वस्त्र पहने दुबले- पतले लड़के खड़े थे, जिनके हाथों में जलती हुई मशालें थीं। पचास दासियाँ हॉल के भीतर प्रतीक्षा कर रही थीं, जहाँ कुछ चक्की में पीले अनाज को बारीक पीस रही थीं; कुछ जाला बुन रही थीं या बैठकर तकली घुमा रही थीं, तेज गति से, जैसे एस्पेन के पत्ते झिलमिलाते हों। अच्छी तरह से बुने हुए कपड़े तेल की तरह चमक रहे थे। जिस प्रकार फेएशियन जाति अपने तेज जहाजों को गहरे समुद्र में चलाने में श्रेष्ठ है, उसी प्रकार ये महिलाएं अपने बुनाई के काम में अन्य सभी से श्रेष्ठ हैं। पल्लास ने उन्हें हस्तकला और सुंदर डिजाइन में कौशल प्रदान किया है। महल के प्रांगण के बाहर, और द्वार के पास, चार एकड़ का एक विशाल उद्यान फैला हुआ था। चारों ओर एक बाड़ से घिरा हुआ, और ऊँचे पेड़ अंदर भरपूर वृद्धि से फल-फूल रहे थे - नाशपाती, अनार, सेब का पेड़ अपने सुंदर फलों के साथ, रसीला अंजीर, और जैतून हमेशा हरा-भरा रहता था। उनके फल सर्दियों में न तो गिरते हैं और न ही गर्मियों में, बल्कि पूरे साल फल देते रहते हैं। पश्चिम से लगातार बहने वाली हवा के कारण कुछ फल फूल जाते हैं और कुछ पक जाते हैं; नाशपाती के बाद नाशपाती ही उगती है। सेब से सेब, अंगूर से अंगूर, अंजीर से अंजीर पकता है। पास ही अंगूर की बेलों का एक उपजाऊ खेत

लगाया गया था; इसका कुछ हिस्सा खुला और धूप सेंकता हुआ था, जिससे मिट्टी सूख जाती थी, और यहाँ लोग अंगूर तोड़ते थे, और वहीं वे अंगूर निचोड़ते थे। आगे कुछ कच्चे अंगूर थे, जिनमें अभी-अभी फूल खिले थे, और कुछ ऐसे थे जो अभी- अभी लाल होने लगे थे। बगीचे की सबसे दूर की सीमा पर कई पौधों की क्यारियाँ थीं जो पूरे साल फूल देते थे। वहाँ दो फव्वारे बहते थे: उनमें से एक खेत में इधर-उधर बहता था; दूसरी धारा महल के प्रांगण की दहलीज के नीचे से बहती हुई बह गई, और सभी लोगों ने वहाँ अपने पात्र भर लिए। ये वे आशीर्वाद थे जो दयालु देवताओं ने राजा अल्किनोस और उनके परिवार पर बरसाए।
वहाँ खड़े महान पीड़ित यूलिसिस ने उस दृश्य की प्रशंसा की; और जब उसने मौन विस्मय में संपूर्ण दृश्य को देखा, तो वह जल्दी से दहलीज पार करके उस हॉल में प्रवेश कर गया जहाँ फ़ेएशियन सरदारों और राजकुमारों ने अपने प्यालों से उस अचेतन, आर्गस-क्वेलर, को शराब अर्पित की, जिसके देवता को उन्होंने अंतिम आहुति दी जब उन्होंने नींद के बारे में सोचा। महान पीड़ा भोगने वाला, पल्लास द्वारा उत्पन्न और उसके चारों ओर छाए घने कोहरे में छिपा हुआ, महल से होकर तेजी से गुजरा और शाही जोड़े, एरेट और एल्सीनोअस के पास पहुंचा। तब यूलिसिस ने एरेट के घुटनों को थाम लिया, तभी अचानक देवी द्वारा उठाया गया बादल गायब हो गया। महल में मौजूद सभी लोग अपने सामने उस व्यक्ति को देखकर स्तब्ध रह गए। इस प्रकार यूलिसिस ने प्रार्थना की:—
“हे देवतामयी प्रमुख रेक्सेनोर की पुत्री, एरेटे! मैं तेरे पति के पास आई हूँ, और तेरे घुटनों के बल, अनेक कष्ट सहते हुए, और इन अतिथियों के पास, जिन्हें ईश्वर सुखी जीवन जीने और अपने-अपने बच्चों को अपने घर में वह धन और सम्मान सौंपने का वरदान दें, जो लोगों के प्रेम ने उन्हें प्रदान किया है। मैं विनती करती हूँ, मुझे एक सुरक्षा कवच प्रदान कर, ताकि मैं अपने प्रिय देश को फिर से देख सकूँ। मैंने अपने प्रियतम से दूर, दुःख में कई वर्ष व्यतीत किए हैं।”
उसने अपना भाषण समाप्त किया और चूल्हे पर राख के बीच, आग के पास बैठ गया, और सब लोग एकदम शांत हो गए। अंत में, फ़ेएशियनों के सबसे बड़े और सबसे वाक्पटु प्रमुख, एचेनियस ने बोलना शुरू किया; उसे अतीत की बातों का व्यापक ज्ञान था। उदार इरादे से, सभा को संबोधित करते हुए उसने बोलना शुरू किया:— “एल्सिनोउस, यह दृश्य उचित नहीं है— एक अजनबी अंगीठी पर राख के बीच बैठा है। यहाँ मौजूद सभी लोग तेरे आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं और हिल नहीं रहे

हैं। मैं तुझसे विनती करता हूँ, इस अजनबी को उठा और उसे चाँदी जड़े सिंहासन पर बिठा। अपने दूतों को बुला और उनसे मदिरा मिलाने को कह, जिसे हम गर्जन के देवता बृहस्पति को अर्पित कर सकें, जो हर याचक का आदर करते हैं। महल के भोज की देखरेख करने वाली महिला हमारे अतिथि के लिए भंडार से भोज की व्यवस्था करे।”
जब पूज्य राजा अलसिनौस ने यह सुना, तो उन्होंने तुरंत यूलिसिस का हाथ पकड़ा— उस बुद्धिमान व्यक्ति को—उठाया—और उसे एक चमकदार सिंहासन पर बैठाया, जहाँ से उन्होंने अपने वीर पुत्र लाओडामास को उठने का आदेश दिया, जिसका सिंहासन उनके बगल में था।
“अब, प्रोटोनोअस, एक फूलदान में शराब मिलाओ, महल में सभी के लिए, ताकि इसे गर्जन के देवता, बृहस्पति को अर्पित किया जा सके, जो सभी की सेवा करते हैं और प्रत्येक याचक का सम्मान करते हैं।” जैसे ही उसने यह कहा, प्रोटोनोअस ने स्वादिष्ट शराब मिलाई, और दाएं से बाएं जाते हुए, सभी को प्याले बांटे; और जब सभी ने बृहस्पति को एक भाग अर्पित कर दिया, और सभी ने जी भर कर पी लिया, तो एल्सीनोअस ने बात सुनी, और इस प्रकार कहा:—
“फेएशियन के राजकुमारों और सरदारों, सुनो, मैं अपने हृदय की बात कह रहा हूँ। चूंकि उत्सव समाप्त हो चुका है, आप अपने घरों में विश्राम करें। कल सीनेटरों को एक बड़े समूह में बुलाया जाएगा। हम महल में अपने अतिथि का उचित सम्मान करेंगे और देवताओं की पूर्ण बलि देकर उनकी पूजा करेंगे। फिर हम विचार करेंगे कि उन्हें कैसे विदा किया जाए, ताकि बिना किसी बाधा और कठिनाई के, हमारे संरक्षण में वे खुशी-खुशी और शीघ्रता से अपनी जन्मभूमि लौट सकें, चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो, और उन्हें कोई हानि या नुकसान न हो।” इससे पहले कि वह इस धरती पर कदम रखे, उसे वहीं सहना होगा; और उसे वहीं वह सब सहना होगा जो उसकी माँ के जन्म के समय भाग्य और निर्दयी बहनों ने नवजात शिशु के लिए रचा था। लेकिन अगर वह स्वर्ग से आए अमर प्राणियों में से एक साबित हुआ, तो देवताओं की योजना कुछ और ही होगी। क्योंकि अब तक देवता हमारे पवित्र बलिदानों में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते रहे हैं, और हमारे साथ बैठकर हमारे जैसे ही भोज करते रहे हैं। और जब यात्री उनसे अकेले में मिलता है, तो वे कभी खुद को छिपाते नहीं; क्योंकि हम उनके बहुत करीबी रिश्तेदार हैं, जितना करीबी हो सकता है। साइक्लोप्स और क्रूर विशालकाय वंश की जाति।

बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया:— “नहीं, ऐसा मत सोचो, एल्सीनोअस। मैं रूप या आकार में उन अमर लोगों के समान नहीं हूँ, जिनका निवास स्थान विशाल स्वर्ग है। लेकिन मैं उन लोगों के समान हूँ जिन्हें तुम जानते हो, जो मनुष्यों में कष्ट सहने के आदी हैं; तुम्हें मेरी तुलना उनसे करनी चाहिए। मैं इससे भी अधिक कड़वे दुखों के बारे में बता सकता हूँ, जिन्हें मैंने सहा है; देवताओं को यही प्रसन्नता थी। लेकिन अब मुझे छोड़ दो, चाहे मेरे कष्ट कितने भी रहे हों, ताकि मैं अपने सामने रखा भोजन ग्रहण कर सकूँ। अधीरता से बढ़कर कुछ नहीं है।” पेट की पुकार
जब पीड़ित और दुखी भी
उसकी पुकार सुनने के लिए विवश हो जाते हैं। इसलिए अब भी,
मेरे हृदय में व्याप्त समस्त दुःख के बीच,
यह मुझे खाने-पीने और अपनी विपत्तियों के विचार को त्यागने के लिए प्रेरित करता है, जब तक कि यह स्वयं
तृप्त न हो जाए। परन्तु हे राजकुमारों, भोर के साथ ही, मेरी इस विपत्ति में,
मुझे मेरी जन्मभूमि तक पुनः पहुँचने का साधन प्रदान कीजिए।
क्योंकि, अपने समस्त कष्टों के बाद, मैं खुशी-खुशी मर जाऊँगा, यदि मैं एक बार फिर अपनी जागीरों,
अपने सेवकों और अपने भव्य महलों को देख सकूँ।
उसने अपनी बात समाप्त की; उन्होंने उसके शब्दों को स्वीकार किया और बुद्धिमानी से बोलने वाले अतिथि को अपने घर की ओर विदा किया। जब उन सभी ने अर्पण कर लिया और पी लिया, तो वे सभी अपने-अपने घर सोने चले गए और कुलीन सरदार यूलिसिस को महल में छोड़ दिया, जहाँ उसके साथ एरेट और उसका देवतुल्य पति बैठे थे, जबकि युवतियाँ भोज से घोड़ों को ले जा रही थीं। फिर श्वेत भुजाओं वाली एरेट बोलने लगी; जब उसकी दृष्टि यूलिसिस के सुंदर वस्त्रों पर पड़ी, तो वह उस लबादे और कुर्ते को भली-भांति जानती थी, जो उसने और उसकी दासियों ने मिलकर बुने थे, और इस प्रकार उसने उत्साहपूर्वक शब्दों में कहा:
“अजनबी, मुझे सबसे पहले तुमसे यह पूछना होगा कि तुम कौन हो, और किस जाति के हो। तुमने ये वस्त्र किससे प्राप्त किए हैं? कहीं तुम यह तो नहीं कह रहे हो कि तुम समुद्र पार भटकते हुए आए हो।”

बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे महारानी, मेरे सभी कष्टों का क्रम से वर्णन करना कठिन होगा, क्योंकि स्वर्ग के देवताओं ने उन्हें अनेक बनाया है; फिर भी मैं आपके सभी प्रश्नों का उत्तर दूंगा और आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। सागर के भीतर ओगिगिया नामक एक द्वीप है, जहाँ कैलिप्सो निवास करती है, जो एक चतुर देवी है, जिसके चमकीले बाल हैं, एटलस की पुत्री है और जिसकी शक्ति का प्रकोप है। कोई भी देवता उसके साथ नहीं रहता, न ही कोई नश्वर प्राणी। लेकिन मुझे, मेरी विपत्ति में, किसी देवता ने अकेले उसके पास पहुँचाया है।” निवास स्थान,
जब बृहस्पति ने अपनी श्वेत बिजली से हमला करते हुए, काले सागर के बीचोंबीच मेरी नाव को चीर डाला। वहाँ मेरे सभी वीर साथी
मारे गए, लेकिन मैंने अपनी दोनों बाहों में अपने अच्छे जहाज के कील को थामे रखा, और नौ दिनों तक तैरता रहा, जब तक कि दसवें दिन, अंधेरी रात में, देवता मुझे ओगिगिया के द्वीप पर ले आए,
जहाँ तेजस्वी बालों वाली कैलिप्सो रहती है,
और जिसकी शक्ति कायापलट है, जिसने मेरा सहर्ष स्वागत किया,
और मुझे प्यार किया, और मेरे जीवन को अमर और उम्र के प्रभाव से परे बनाना चाहती थी। आने वाले सभी समय में। और वहाँ मैंने सात वर्ष दूर तक, अपने आँसुओं से भीगे हुए, देवी द्वारा दिए गए अमृतमय वस्त्र पहने। लेकिन जब आठवाँ वर्ष शुरू हुआ, तो उसने मुझे प्रस्थान करने की सलाह दी, चाहे बृहस्पति ने ऐसा चाहा हो, या उसने स्वयं अपना इरादा बदल दिया हो। उसने मुझे जंजीरों से बने एक मजबूत बेड़े पर बिठाया, रोटी और स्वादिष्ट शराब का भरपूर भंडार भेजा, और मुझे अमृतमय वस्त्र पहनाए, और एक कोमल और अनुकूल हवा दी। सत्रह दिनों तक मैंने गहरे समुद्र में अपना स्थिर मार्ग बनाए रखा। और अठारहवें दिन तुम्हारे अपने द्वीप की छायादार ऊँचाइयाँ दिखाई दीं, और तब मेरा हृदय, दुर्भाग्य से भरा हुआ, प्रसन्न हुआ। फिर भी मुझे विपत्तियों से जूझना पड़ा, जो पृथ्वी को हिला देने वाले नेपच्यून द्वारा भेजी गई थीं, जिसने मेरे विरुद्ध हवाओं को बुलाया और मेरे मार्ग में बाधा डाली, और असीम सागर को उसकी गहराई तक हिला दिया। न ही लहरों ने मुझे मेरी जगह पर बनाए रखने के लिए उछाला, बल्कि मुझे कराहते हुए बेड़ा से बहा ले गईं, जिसके तख्ते उन्होंने बिखेर दिए। फिर भी मैं लहरों की गहराई में संघर्ष करता रहा, और तैरता रहा, जब तक हवा और लहरें मुझे तुम्हारे तट की ओर धकेलती

रहीं। जब मैं वहाँ उतरने की कोशिश कर रहा था, तो लहरें मुझे भयानक किनारे पर खड़ी विशाल चट्टानों की ओर धकेलती गईं। लेकिन, वापस मुड़कर, मैं फिर से तैरने लगा और एक नदी और उस जगह पर पहुँच गया जहाँ मैं उतरना चाहता था। शांत, बिना चट्टानों के, और हवा से सुरक्षित। मैं बेहोश हो गया, लेकिन जल्द ही होश में आ गया। अमृतमय रात छा गई। मैंने बृहस्पति से उतरी धारा को छोड़ दिया और झाड़ियों के बीच सो गया, अपने अंगों के चारों ओर सूखे पत्ते लपेट लिए, जबकि मेरी पलकों पर एक देवता ने भरपूर मात्रा में मरहम लगाया। रात भर, पत्तों के बीच, मैं सोता रहा, अपने दिल में उस सारे दुख के साथ, सुबह तक, दोपहर तक। फिर जैसे ही सूरज डूबा, मेरी सुखदायक नींद टूट गई, और मैंने देखा तेरी बेटी की दासियाँ किनारे पर खेल रही थीं, और वह उनके बीच, देवी के समान लग रही थी। मैं उसके पास याचना करने आया, और उसने मेरी याचना को इतनी कम उम्र की लड़की की तरह निर्दयता से स्वीकार नहीं किया, क्योंकि जवानी नादान होती है। उसने मुझे भरपूर भोजन और लाल शराब दी, और जब मैं नहा चुका था, तब मुझे वे वस्त्र दिए जो मैंने पहने हुए हैं। इस प्रकार मेरी पीड़ा की कहानी पूरी तरह से बयां हो गई है।
और फिर अलसिनौस ने उसे उत्तर दिया और कहा:—
“अजनबी, मेरी संतान ने एक कर्तव्य को अनदेखा कर दिया है—
कि वह तुम्हें अपनी दासियों के साथ यहाँ आने के लिए कहे,
क्योंकि तुमने ही सबसे पहले उससे विनती की थी।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे वीर, मैं तुमसे विनती करता हूँ, इसके लिए अपनी निर्दोष पुत्री को दोष मत दो। उसने मुझे अपनी दासियों के साथ आने का आदेश दिया था, परन्तु मैं रुक गया, क्योंकि मुझे तुम्हारा भय और आदर था, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें देखकर तुम अप्रसन्न हो जाओ; क्योंकि हम मनुष्य, अंधकारमय संदेहों के शिकार होते हैं।” फिर अल्किनोस बोला: “मेरे हृदय में जो हृदय धड़कता है, वह क्रोध से उतपदा नहीं लेता, और संयमित रहना बेहतर है। हे पिता बृहस्पति, और पल्लास और अपोलो, मुझे यही कहना है! मेरी इच्छा है कि तुम, मेरे समान और मेरे जैसे मन के होते हुए, मेरी पुत्री को अपनी दुल्हन के रूप में स्वीकार करो, और मेरे दामाद कहलाओ, और यहीं निवास करो। यदि तुम स्वेच्छा से यहीं रहो, तो मैं तुम्हें एक महल और धन-दौलत दूंगा। किसी भी फेएशियन को तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध जाने की हिम्मत न करने दो।” तुम्हें यहाँ रोकने के लिए। भगवान ऐसा न होने

दें! और ताकि तुम मेरे इरादे के प्रति आश्वस्त हो सको, मैं तुम्हारे घर वापसी के लिए कल का दिन निर्धारित करता हूँ। तब तक अपने बिस्तर पर सो जाओ; और वे तुम्हारी नाव को शांत समुद्र पर तब तक चलाएंगे जब तक तुम अपनी भूमि और घर, या जहाँ कहीं भी चाहो, पहुँच न जाओ, चाहे तट से दूर यूबोइया से भी दूर, जो सबसे दूरस्थ भूमि है— हमारे द्वीप के लोग यही कहते हैं, जिन्होंने इसे तब देखा था जब उन्होंने सुनहरे बालों वाले रादामंथस को समुद्र के रास्ते ले जाया था। पृथ्वी के पुत्र टिटियस से मिलने के लिए। वे वहाँ गए, और थोड़ी सी मेहनत से एक दिन में अपनी यात्रा पूरी कर ली, और उस नायक को हमारे द्वीप पर वापस ले आए। अब तुम जानोगे, और अपने मन में स्वीकार करोगे, कि हमारे जहाज और हमारे युवक चप्पू चलाने में कितने माहिर हैं, जो खारे पानी को घुमाते हैं।
राजा ने ऐसा कहा, और महान पीड़ित यूलिसिस ने प्रसन्नतापूर्वक सुना, और उसने प्रार्थना करना उचित समझा, और बृहस्पति से प्रार्थना करते हुए कहा:— “हे पिता बृहस्पति, कृपा करें कि राजा ने जो कुछ कहा है वह सब पूरा हो! तभी उसकी स्तुति उपजाऊ धरती पर फैलेगी और कभी नहीं बुझेगी, और मैं अपनी जन्मभूमि को फिर से देख पाऊंगा।”
अतः उन्होंने विचार-विमर्श किया। श्वेत भुजाओं वाली एरेट ने कहा,
और उसने बरामदे में अपनी दासियों को आदेश दिया कि वे पलंग बिछाएँ, और उन पर बैंगनी रंग के सुंदर कालीन बिछाएँ, जिन पर टेपेस्ट्री बनी हो,
और बाहरी आवरण के लिए रोएँदार लबादे बिछाएँ।
वे मशाल हाथ में लिए हुए हॉल से बाहर निकलीं;
और जब शीघ्रता से विशाल पलंग तैयार हो गया,
तो वे आईं और इस प्रकार मुखिया को विश्राम के लिए बुलाया:—
“उठो, अजनबी, आराम करो; तुम्हारा बिस्तर तैयार है।” युवतियों ने ऐसा कहा, और नींद का विचार यूलिसिस को अच्छा लगा। इसलिए उस रात, अपने गहरे पलंग पर, महान पीड़ित, गूंजते हुए बरामदे के नीचे सो गया। एल्सीनोअस ने उसे अपने ऊंचे महल के भीतर एक कोने में लिटाया, जिसके पास उसकी पत्नी रानी विवाह-शय्या पर लेटी थी।

पुस्तक VIII
यूलिसिस के सम्मान में मनाए जाने वाले उत्सव
फ़ेएशियनों की एक आम सभा, जिसमें यूलिसिस को इथाका वापस भेजने का निर्णय लिया गया - एक भव्य भोज - डेमोडोकस नामक गायक द्वारा गाया गया ट्रोजन युद्ध का गीत - सार्वजनिक खेल - यूलिसिस ने डिस्क फेंकने में जीत हासिल की - डेमोडोकस द्वारा गाया गया मार्स और वीनस का प्रेम गीत - उसका ट्रोजन घोड़े और ट्रॉय के पतन का गीत।
जब सुबह हुई, तो भोर का गुलाबी उंगलियों वाला बालक, शक्तिशाली और पूजनीय अलसिनोस, अपने पलंग से उठा। महान सरदार, नगरों को लूटने वाला यूलिसिस भी अपने पलंग से उठा। शक्तिशाली और पूजनीय अलसिनोस आगे बढ़ा और उसे फ़ेएशियनों के बाज़ार में ले गया, जो बेड़े के पास बना था। वहाँ वे पॉलिश किए हुए पत्थरों पर एक-दूसरे के पास बैठ गए। पलास, जो अब बुद्धिमान अल्किनोस के दूत के रूप में प्रतीत हो रही थी, पूरे शहर में घूम-घूम कर उदार यूलिसिस को उसके घर भेजने की योजना बना रही थी, और फिर आकर हर सरदार के पास खड़ी हो गई और बोली:—
“फेएशियनों के नेताओं और सरदारों, जल्दी से बाज़ार में आओ, और वहाँ उस अजनबी के बारे में सुनो जो गहरे सागर में भटकते हुए वहाँ आया है जहाँ बुद्धिमान अल्किनोस अपना दरबार लगाता है; वह रूप में देवताओं के समान है।” उसके बोलते ही हर किसी का मन और हृदय भावविभोर हो गया, और सारा बाज़ार और उसके सारे स्थान लोगों से भर गए। अनेक लोग लेर्टेस के सुंदर पुत्र को निहारते रहे; क्योंकि उसके चेहरे और रूप पर पल्लास ने एक महिमा बिखेर दी थी, और उसे अधिक लंबा और अधिक सुगठित बना दिया था, ताकि वह फ़ेएशियनों का अनुग्रह प्राप्त कर सके, और भय के योग्य तथा फ़ेएशियन सरदारों द्वारा पराक्रमी किए जाने वाले अनेक कारनामों को पूरा करने में सक्षम माना जाए। और अब जब सभी आमंत्रित लोग आ चुके थे, तब अल्सीनोउस ने पूरी सभा को संबोधित करते हुए कहा:—
“फेएशियन के राजकुमारों और सरदारों, सुनो: मैं अपने हृदय की बात कह रहा हूँ। यह अतिथि— मैं इसे नहीं जानता—मेरे निवास पर आया है, एक भटका हुआ— संभवतः उन जनजातियों से जो सुदूर पूर्व में निवास करती हैं, या संभवतः पश्चिम से— और उसने सुरक्षा और घर वापसी की गुहार लगाई है; और आइए हम

उन्हें तैयार करें, जैसा कि हमारी आदत रही है। कोई भी अजनबी मेरे द्वार पर तब तक नहीं आता जब तक उसे अपने जाने की प्रतीक्षा में लंबे समय तक तड़पने का कष्ट न सहना पड़े। आइए हम एक गहरे रंग के जहाज को पवित्र सागर में उसकी पहली यात्रा पर ले चलें। आइए हम उसके चालक दल का चयन करें। लोगों में, बाईस युवक, हमारे सर्वश्रेष्ठ नाविकों में से। तो चप्पूओं को बेंचों के पास बांध दो, उन्हें वहीं छोड़ दो, और हमारे महल में जल्दी से आओ और उस दावत में शामिल हो जाओ जो मैं तुम सबके लिए उदारतापूर्वक परोसूँगा। मैं युवकों को यही आज्ञा देता हूँ; परन्तु तुम, राजदंडधारी राजकुमारों, तुरंत मेरे सुंदर महल में आओ, ताकि हम वहाँ अपने अतिथि का आदर कर सकें; कोई भी इनकार न करे। दिव्य डेमोडोकस को भी बुलाओ, वह कवि, जिसे एक देवता ने भरपूर वरदान दिया था। गीत का मधुर उपहार,
जब आत्मा गीत गाने के लिए प्रेरित करती है तो यह आनंददायक होता है।
उसने बात की और आगे बढ़ा; राजकुमारों का राजदंडधारी दल उसके पीछे-पीछे चला। दूत ने इस बीच पवित्र कवि को ढूँढा। बावन चुने हुए युवक निष्फल समुद्र के किनारे तक गए; और जब वे जहाज और तट पर पहुँचे, तो उन्होंने जहाज के काले ढांचे को गहरे पानी में उतारा, मस्तूल और पाल लगाए, और चप्पूओं को चमड़े के छल्लों में अच्छी तरह से फिट किया, और अपनी नाव को गहरे पानी में बांधकर, अपने बुद्धिमान राजा के विशाल महलों में तेजी से चले गए। वहाँ बरामदा, आँगन और महल लोगों से भरे हुए थे; जवान और बूढ़े, असंख्य लोग वहाँ मौजूद थे; और वहाँ एल्सीनो ने बारह भेड़ें, आठ सफेद दाँतों वाले सूअर और दो टेढ़े पैरों वाले बैल बलि दिए। और उन्होंने इन्हें छीलकर, विधिवत तैयार किया और एक भव्य भोज तैयार किया। फिर दूत प्रकट हुआ, जो मधुर गायक को अंदर ला रहा था, जिसे देवी ने अत्यंत प्रेम से पाला था, और जिसने अच्छे और बुरे दोनों तरह के दंड दिए थे, उसकी दृष्टि क्षीण कर दी थी और उसे मधुर गीत प्रदान किए थे। मेहमानों के बीच पोंटोनोउस ने कवि के लिए चांदी जड़ा सिंहासन रखा, एक ऊंचे स्तंभ के सहारे उसका वीणा उसके सिर के ऊपर लटकाया, और उसे सिखाया कि उसे कैसे ढूंढना है और उतारना है। उसके पास दूत ने एक टोकरी और एक सुंदर मेज रखी, और शराब का एक प्याला रखा, ताकि वह जब चाहे पी सके; फिर सभी ने अपने हाथ आगे बढ़ाए और दावत में हिस्सा लिया।
और जब उनकी प्यास और भूख मिट गई, तो देवी ने कवि को वीरों की प्रशंसा में गीत गाने के लिए प्रेरित किया; यह एक ऐसा गीत था जिसकी प्रसिद्धि स्वर्ग तक

पहुँच चुकी थी, यह यूलिसिस और पेलियस के पुत्र अकिलीज़ के बीच हुए संघर्ष की कहानी थी, जो देवताओं के लिए आयोजित एक भव्य भोज में झगड़ रहे थे। वे क्रोधित शब्दों से लड़ रहे थे, और मनुष्यों के राजा एगामेम्नन अचेयन सेना के सबसे महान योद्धाओं को लड़ते हुए सुनकर प्रसन्न हुए। इन सब बातों की भविष्यवाणी उसे पवित्र पायथिया में फोएबस की वाणी द्वारा की गई थी, जब सम्राट ने भविष्यवाणी के लिए उस चट्टान को पार किया था जो उसकी दहलीज थी। तब विपत्तियों का सिलसिला शुरू हुआ, जो सर्वशक्तिमान बृहस्पति की इच्छा से इलियम और ग्रीस के पुत्रों पर आ पड़ा।
प्रसिद्ध डेमोडोकस ने ऐसा गाया। इसी बीच यूलिसिस ने अपने बलवान हाथों में बैंगनी रंग का एक बड़ा घूंघट लिया और उसे अपने सिर के चारों ओर लपेटकर अपना नेक चेहरा छिपा लिया, क्योंकि उसे शर्म आ रही थी कि फेएशियन लोग उसकी पलकों से बहते आँसू देख लेंगे। लेकिन जब पवित्र कवि ने अपना गीत समाप्त किया, तो उसने आँसू पोंछे और घूंघट को एक तरफ रख दिया, और शराब से भरे दो प्याले लिए और देवताओं को अर्घ्य अर्पित किया। फिर जब गायक ने दोबारा गाना गाया, और फ़ेएशियाई लोगों के सभी सरदार, उसके संगीत से मंत्रमुग्ध होकर, गीत को आगे बढ़ाने के लिए कहने लगे, तो यूलिसिस ने फिर अपना चेहरा छिपा लिया और रोने लगा। उसके आँसू किसी और ने नहीं देखे। केवल एल्किनोअस ही उसे देखता रहा, और उसके दुख को महसूस किया, और उसकी आहें सुनीं, और समुद्र प्रेमियों, फ़ेएशियाई लोगों से कहा:
अब जबकि हम सबने अपनी संतुष्टि के अनुसार भोज का आनंद लिया है और वीणा की मधुर ध्वनि सुनी है, जिसके सुर उदार भोज के साथ बहुत अच्छे लगते हैं, तो चलिए आगे बढ़ते हैं और खेलों में अपना कौशल आजमाते हैं, ताकि हमारा यह अतिथि अपने देश लौटकर बता सके कि मुक्केबाजी और कुश्ती में, कूदने और दौड़ने में हम कितने उत्कृष्ट हैं।
वह बोला और आगे बढ़ गया; वे उसके पीछे-पीछे चले। फिर दूत ने मधुर स्वर वाला वीणा फिर से ऊँचा लटका दिया, और डेमोडोकस का हाथ पकड़कर उसे उस स्थान से ले गया, और उसे उस मार्ग पर ले गया जिस पर पहले फ़ेएशिया के राजकुमार सार्वजनिक खेल देखने गए थे। वे बाज़ार में गए; एक विशाल असंख्य भीड़ उनके पीछे-पीछे चल रही थी। फिर बहुत से वीर युवा उठे
- एक्रोनियस और ओसाइलस,
एलाट्रेस, नाउटियस, प्रिमनियस, जिनके बाद

एंचियालस को पछाड़ दिया, और उसके पक्ष में
एरेटमियस, पोंटेस, प्रोरेस, थून, उठ खड़े हुए;
अनाबासिनेउस और एम्फियालस,
पोलिनियस का एक पुत्र, टेक्टन का पुत्र; फिर नौबोलस का पुत्र उठा, मंगल ग्रह के समान, युद्धप्रिय मुद्रा में, जिसका नाम यूरियलस था, और जो रूप-रंग में सबसे सुंदर था, फ़ेएशिया के सभी पुत्रों में से केवल एक को छोड़कर, वह था निर्दोष लाओडामस। इसके बाद राजा एल्किनोअस के तीन पुत्र उठे: लाओडामस, हेलियस और क्लिटोनियस, जो रूप में देवता के समान थे। इनमें से कुछ ने दौड़ में भाग लेना शुरू किया। उनके लिए एक मार्ग निर्धारित किया गया था, जो एक छोर से दूसरे छोर तक जाता था। वे एक झटके में और तेज़ी से आगे बढ़े, दौड़ते हुए उन्होंने मैदान में धूल उड़ा दी। दौड़ में सबसे तेज़ क्लिटोनियस था। जैसे खच्चर बंजर ज़मीन जोतते हैं, वैसे ही वह बैलों से आगे निकल गया, और भीड़ तक पहुँचकर सबको पीछे छोड़ गया। कुश्ती में बाकी सबने मेहनत की— और यहाँ यूरियलस उन सबसे आगे रहा; लेकिन छलांग में एम्फ़ियलस पहले स्थान पर रहा; एलाट्रियस ने सबसे मज़बूत हाथ से क्वॉइट फेंका;
और मुक्केबाजी की कला में लाओडामास,
सम्राट का वीर पुत्र, विजेता था।
जब भीड़ ने यह सब देखा, तब राजा के पुत्र लाओदामस ने कहा:—
“और अब, मेरे मित्रों, आइए हम अपने अतिथि से पूछें कि क्या उसने ऐसे करतब सीखे और उनका अभ्यास किया है। क्योंकि उसके पैर और जांघें कमजोर नहीं हैं, और दोनों भुजाएँ, दृढ़ गर्दन, और मजबूत शरीर है; और ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसमें युवावस्था की स्फूर्ति की कमी है, हालाँकि अनेक कठिनाइयों के कारण वह कुछ कमज़ोर हो गई है—क्योंकि मैं ऐसी किसी चीज को नहीं जानता जो सबसे बलवान व्यक्ति की भी इतनी कड़ी परीक्षा ले और उसे तोड़ दे, जितना कि समुद्र के खतरे।”
यूरियलस ने उत्तर दिया: “लाओडामास, तुमने ठीक कहा है, और सही कहा है: अब तुम जाओ और उससे स्वयं बात करो, और उसे चुनौती दो।”
राजा अल्किनोस के पुत्र ने यह सुनकर आगे आकर यूलिसिस से इस प्रकार कहा: “हे अतिथि और पिता, तुम भी इन करतबों को आजमाओ, यदि तुम इनमें प्रशिक्षित हो सको। मुझे लगता है कि तुम खेलों में निपुण होगे, क्योंकि मनुष्य के लिए अपने जीवन में इससे बड़ा गौरव कुछ नहीं कि उसने अपने हाथों और पैरों से अथक

परिश्रम करके कुछ हासिल किया हो। इसलिए, अपनी कुशलता आजमाओ और दुःख को स्थान मत दो। तुम्हारे प्रस्थान में अब अधिक विलंब नहीं होगा; तुम्हारी नाव रवाना हो चुकी है; चालक दल यहाँ तैयार है।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे लाओदामास, आप मुझे इन करतूतों को आज़माने के लिए क्यों विवश कर रहे हैं, जबकि मेरे सारे विचार मेरे दुखों के बारे में हैं, खेलों के बारे में नहीं? मैं, जिसने इतना दर्द और परिश्रम सहा है, आपके यहाँ अपने घर के लिए तड़प रहा हूँ, आपके राजा और आपके देश के सभी लोगों से विनती कर रहा हूँ।”
तब युरियालस ने फटकार भरे शब्दों में कहा: “अजनबी, मैं भली-भांति समझता हूँ कि तू खेलों में अपनी कुशलता का बखान नहीं कर सकता, जैसा कि कई अन्य कर सकते हैं; परन्तु तू उन लोगों में से है जो अनेक बेंचों वाले जहाजों में रहते हैं, नाविकों के दल पर शासन करते हैं— मात्र एक व्यापारी जो माल की तलाश में रहता है और माल की रखवाली करता है। तूने निःसंदेह लूटपाट से धन अर्जित किया है, और तू निश्चय ही कोई एथलीट नहीं है।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने भौंहें चढ़ाकर कहा:— “अजनबी, तुम उचित ढंग से नहीं बोलते, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की तरह बोलते हो जिसे अपने शब्दों की परवाह नहीं। देवता सभी को समान रूप से वे वरदान नहीं देते जो मनुष्य चाहते हैं— रूप की सुंदरता, बुद्धि और वाक्पटुता। एक व्यक्ति देखने में साधारण लगता है, परन्तु देवता उसे शब्दों की शक्ति प्रदान करते हैं। सब उसकी ओर प्रसन्नता से देखते हैं; वह जानता है कि वह क्या बोल रहा है; उसकी वाणी सौम्य और विनम्र है; वह सभी सभाओं में प्रख्यात है, और जब भी वह चलता है... शहर में, लोग उसे देवता मानते हैं।
उसका दूसरा रूप अमर लोगों के समान है, फिर भी उसमें उचित शब्द बोलने की शक्ति नहीं है। इसलिए तुम सुंदर दिखती हो—
एक देवता ने तुम्हें अन्यथा नहीं बनाया होता
जैसा हम तुम्हें देखते हैं—फिर भी तुम्हारी बुद्धि कम है,
और तुम्हारे असभ्य शब्दों ने मुझे क्रोधित कर दिया है
यहाँ तक कि हृदय तक। मैं खेलों में बिल्कुल भी अकुशल नहीं हूँ, जैसा कि तुम व्यर्थ बातें करती हो, और एक समय था,
जब मैं अपनी जवानी और अपनी मजबूत भुजाओं पर भरोसा कर सकता था,
मुझे लगता है कि इन प्रतियोगिताओं में मुझे सर्वश्रेष्ठ में से एक माना

जाता था। लेकिन अब मैं परिश्रम और दुःख से दबा हुआ हूँ; मैंने वीरों के साथ युद्धों में और तूफानी समुद्रों में बहुत कुछ सहा है। फिर भी, इस प्रकार पीड़ित होते हुए भी, मैं इन कारनामों को करने का प्रयास करूँगा; क्योंकि तेरे वचन बहुत तीखे रहे हैं, और वे मुझे परीक्षा के लिए प्रेरित करते हैं। वह बोला, और अपना लबादा ओढ़कर उठा, उसने फ़ेएशियनों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पत्थरों की तुलना में कहीं अधिक चौड़ा, मोटा और भारी पत्थर उठाया, और उसे ज़ोरदार भुजा से घुमाते हुए आगे फेंका; जाते समय उसमें से आवाज़ आई; और फ़ेएशियन, जो चप्पू और पाल चलाने में कुशल थे, उनके ऊपर झुक गए, और उसके हाथ से वह तेज़ पत्थर अन्य निशानों से परे उड़ गया। और पल्लास ने मानव रूप धारण करके उस स्थान पर एक निशान बनाया जहाँ वह पत्थर गिरा था, और कहा:—
“अजनबी! एक अंधा आदमी भी यहाँ टटोलते हुए तुम्हारा निशाना आसानी से पा सकता है, क्योंकि यह अनेकों के बीच नहीं, बल्कि उन सबसे परे है। इसलिए कम से कम इस खेल में तो डरो मत; क्योंकि यहाँ कोई भी फ़ेएशियन इतनी दूर तक क्वॉइट नहीं फेंक सकता जितना तुम फेंक सकते हो, और न ही तुम्हारी फेंकी हुई दूरी से आगे जा सकता है।”
उसने कहा; महान पीड़ित यूलिसिस ने सुना और यह जानकर प्रसन्न हुआ कि उस विशाल समूह में उसका एक मित्र है। हल्के मन से सरदार ने फ़ेएशियन भीड़ से कहा:
“उसी दिशा में आगे बढ़ो, नौजवानों, और मैं तुरंत एक और पत्थर फेंकूँगा, शायद उतनी ही दूर तक, या उससे भी आगे। अगर अभी भी कोई और है जो ऐसा चाहता है, तो वे आगे आएँ— क्योंकि तुम्हारे शब्दों ने मुझे बहुत आहत किया है— उन्हें मेरे साथ मुक्केबाजी या कुश्ती का मुकाबला करने दो, या दौड़ लगाने दो; मैं किसी भी फाएशियन को मना नहीं करता। सिवाय लाओदामास के; वह मेरा मेज़बान है, और कौन अपने मित्र के साथ ऐसी प्रतियोगिता में उतरेगा? वह मूर्ख और निकम्मा है जो किसी ऐसे व्यक्ति से झगड़ा करना चाहता है जो उसे शरण देता है।” उसे
एक अजनबी देश में; वह दिए गए स्वागत को खराब कर देता है।
बाकी के लिए, यहाँ कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है
जिसे मैं अस्वीकार या तिरस्कार करता हूँ; क्योंकि मैं उनकी वीरता को जानना चाहता हूँ, और आप सबके सामने अपनी वीरता का परीक्षण करना चाहता हूँ।

मानव जाति के बीच खेले जाने वाले किसी भी खेल में मैं बुरा नहीं हूँ,
चाहे वे कोई भी खेल हों। मैं पॉलिश किए हुए धनुष को चलाना अच्छी तरह जानता हूँ। मैं शत्रु सेना के बीच से तीर चलाकर दुश्मन पर प्रहार करने वाला पहला व्यक्ति होऊंगा, भले ही मेरे साथ साथी योद्धाओं की भीड़ खड़ी हो और उन्होंने भी अपने तीर चलाए हों। केवल एक ही व्यक्ति था जिसकी तीरंदाजी में कुशलता मुझसे कहीं अधिक थी, जब हम अचेयनों ने ट्रॉय में धनुष चलाया था, वह था फिलोक्टेट्स; पृथ्वी पर रोटी से जीवन यापन करने वाले सभी अन्य पुरुषों से मैं स्वयं को श्रेष्ठ मानता हूँ। फिर भी मैं प्राचीन काल के पुरुषों— हर्क्यूलस और ओचेलियन यूरिटस—से किसी प्रतिद्वंद्विता का दावा नहीं करता, जिन्होंने अमर देवताओं को धनुष से युद्ध की चुनौती दी थी। इसलिए शक्तिशाली यूरिटस का वध कर दिया गया। चुनौती दिए जाने पर क्रोधित अपोलो ने उस वीर को मार डाला। मैं भाला वहाँ से भी आगे फेंक सकता हूँ जहाँ दूसरे तीर मारते हैं। मेरा डर मेरे पैरों के लिए है, मैं इतना कमजोर हो गया हूँ कि तूफानी लहरों के बीच भोजन की कमी के कारण समुद्र में मेरे अंगों ने अपनी ताकत खो दी है।
उन्होंने यहीं पर अपनी बात समाप्त की, और सारी सभा मौन बैठी रही; केवल राजा अल्किनोस ने ही कहा:—
“अजनबी, चूंकि तू बिना किसी अपराधबोध के बोलता है, और केवल अपनी भुजाओं की शक्ति का प्रदर्शन करता है, इस बात से क्रोधित है कि सार्वजनिक खेलों के बीच यह व्यक्ति तुझ पर कटाक्ष करे, और चूंकि तेरी इच्छा केवल यही है कि अन्य सभी जो उचित रूप से बोल सकते हैं, आने वाले समय में तेरी उस शक्ति की निंदा न करें, तो अब मेरी बात सुन, और अपने महल के कक्षों में अन्य वीरों से उनके बारे में बात कर जब तू अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भोज में भाग ले, और उन चीजों के बारे में सोचे जिनमें हम श्रेष्ठ हैं—वे कलाएँ जो बृहस्पति ने हमें दी हैं, जो हमें विरासत में मिली हैं पूर्वजों। मुक्केबाजी और कुश्ती में हमारी ख्याति कम है, पर हम फुर्तीले हैं; हम अपनी नौकाओं को साहसपूर्वक गहरे समुद्र में चलाते हैं; हम दावतों में आनंद लेते हैं; हमें वीणा, नृत्य और वस्त्र परिवर्तन, गर्म स्नान और बिस्तर पसंद हैं। तो उठो, नृत्य के उस्तादों, और अपने सुरों को दोहराओ, ताकि हमारा अतिथि अपने घर के मित्रों को बता सके कि हम नाविकता, दौड़, नृत्य और गायन कला में अन्य सभी पुरुषों से कितने श्रेष्ठ हैं। तुममें से एक जाओ और डेमोडोकस के लिए उसका

सुरीला स्वर वाला वीणा,
जो हमारे महल में कहीं छूट गई है।"
इस प्रकार देवतुल्य राजा ने कहा। दूत उठा
राजमहल से मधुर वीणा लाने के लिए।
फिर नौ निर्णायक भी उठे, जो खेलों का संचालन करते थे; उन्होंने फर्श को समतल किया और दर्शकों के घेरे को और चौड़ा किया। इसके बाद दूत आया,
और डेमोडोकस के लिए मधुर वीणा लाया।
गायक बीच में गया, और वहाँ सुंदर नर्तकियाँ एकत्रित हुईं; वे युवा थे जीवन के पहले वैभव में। एकसमान कदमों से उन्होंने पवित्र फर्श पर नृत्य किया। यूलिसिस ने निहारते हुए उनके पैरों की झिलमिलाहट देखी और चकित रह गया। गायक ने सुर छेड़े और मधुरता से गीत गाना शुरू किया: उसने मंगल और चमकते मुकुट वाली वीनस के प्रेम का गुणगान किया, जो पहली बार वल्कन की छत के नीचे छुपकर मिले थे। मंगल ने अनेक उपहारों से उसे जीत लिया और उसके पति, अग्नि के राजा के साथ अन्याय किया। लेकिन सूर्य ने, जिसने उनका अपराध देखा, वल्कन के पास एक दूत भेजा। जब उसने यह अप्रिय समाचार सुना, तो बदला लेने की योजना बनाते हुए, वह जल्दी से अपनी लोहार की भट्टी में गया, जहाँ उसने ऐसी जंजीरें गढ़ीं जिन्हें कोई भी शक्ति न तो ढीला कर सके और न ही तोड़ सके, जो हमेशा के लिए मजबूती से बंधी रहें। जब जाल अपने सभी हिस्सों में तैयार हो गया, तो वह मंगल ग्रह से क्रोधित होकर उस स्थान पर लौटा जहाँ उसके कमरे में विवाह-शय्या रखी थी। उसने खंभों से चारों ओर से घेरने वाली जंजीरें बाँधीं और छत से कई जंजीरें बाँधीं, जैसे मकड़ी के बुने हुए धागे, जिन्हें कोई आँख नहीं देख सकती थी, यहाँ तक कि देवता भी नहीं, क्योंकि उसने उन्हें इतनी कुशलता से बुना था। फिर, जैसे ही उसने पलंग के चारों ओर फंदा लपेटा, उसने लेम्नोस जाने का नाटक किया, जो भव्य रूप से निर्मित था और उसे सभी देशों में सबसे प्रिय था। लेकिन मंगल, वह देवता जो चमकीली लगाम थामे हुए है, लापरवाह नहीं था, और जब उसने महान शिल्पकार को जाते देखा तो वह तेजी से वल्कन के घर गया, चमकते मुकुट को धारण करने वाली के प्रेम से प्रेरित होकर। वहाँ सिथेरिया बैठी थी, जो उसी क्षण एक मुलाकात से लौटी थी। अंदर आकर उसने उसका हाथ पकड़ा और कहा:—

“आओ, मेरे प्रिय, चलो पलंग पर चलें।
वल्कन अब यहाँ नहीं है; वह चला गया है,
और लेम्नोस में दूर सिंटियनों के बीच है, जो एक बर्बर भाषा बोलते हैं।” उसने बात की, और उसने उसकी बातों को स्वीकार किया, और दोनों बिस्तर पर लेट गए, तभी अचानक वल्कन के कुशल हाथों से बुने जाल ने उन्हें जकड़ लिया और चारों ओर से जकड़ लिया, जिससे वे हिल भी नहीं सके और न ही अपना कोई अंग हिला सके, और उन्होंने देखा कि अब बचने का कोई रास्ता नहीं था। और अब अग्नि का राजा पास आ रहा था, लेम्नोस द्वीप पहुँचने से पहले ही लौट रहा था, क्योंकि सूर्य उसकी ओर से पहरा दे रहा था और उसे सब कुछ बता रहा था। वह भारी मन से जल्दी से घर की ओर चल पड़ा, लेकिन जब वह पहुँचा तो दहलीज पर आकर रुक गया। असीम क्रोध ने उसे वश में कर लिया, और वह भयानक रूप से चिल्लाया, और स्वर्ग के सभी देवताओं को पुकारने लगा:
“हे पिता बृहस्पति, और हे सभी धन्यजनों, और अमर! आओ, क्योंकि यहाँ वह है जो तुम्हें हँसाएगा, फिर भी सहन नहीं किया जा सकता। बृहस्पति की पुत्री शुक्र, इस प्रकार मेरा अपमान करती है, लंगड़ी होने के बावजूद, और कसाई मंगल से प्रेम करती है; क्योंकि वह देखने में सुंदर है, और उसके पैर मजबूत हैं, जबकि मैं कमजोर हूँ—लेकिन इसके लिए मेरे माता-पिता के अलावा कोई और दोषी नहीं है, जिन्हें मुझे जन्म नहीं देना चाहिए था। देखो, जहाँ प्रेमी मेरे बिस्तर पर गले मिले थे— एक घृणित दृश्य। फिर भी वे वहाँ थोड़ी देर भी नहीं सोएँगे, चाहे वे बगल में ही क्यों न हों। बगल में, वे एक-दूसरे के प्रति आसक्त हैं; और वे दोनों जल्दी ऊंघने वाले भी नहीं हैं। जाल और जंजीरें उन्हें तब तक रोके रखेंगी जब तक कि उसके पिता वे सभी बड़े उपहार वापस नहीं कर देते जो मैंने हमारी शादी के दिन उसे उसकी बेटी, जो बेशक सुंदर है, लेकिन धोखेबाज है, को पाने के लिए दिए थे।
उसने कहा, और पीतल के महल में देवता उमड़ पड़े; वहाँ पृथ्वी को हिलाने वाला नेपच्यून आया; वहाँ परोपकारी हेमीज़ आया; वहाँ धनुर्धर देवता अपोलो भी आया; देवियाँ, स्त्रीत्वपूर्ण संयम के कारण, घर पर ही रहीं। इस बीच, सभी अच्छाइयों के दाता देवता प्रवेश द्वार पर खड़े थे; और जब उन्होंने वल्कन के धूर्त जाल को देखा, तो धन्य लोगों में अनंत हंसी गूंज उठी, और उनमें से एक ने अपने पड़ोसी से इस प्रकार कहा:—

“गलत का फल नहीं मिलता; धीमे चलने वाले तेज़ चलने वालों को पछाड़ देते हैं।

धीमे वल्कन ने सबसे तेज़ देवता मंगल को फंसा लिया है
ओलंपस पर; हालांकि स्वयं लंगड़ा है,
उसके जाल में व्यभिचारी फंस गया है,
जिसे अब अपने अपराध का दंड भुगतना होगा।”
तो वे आपस में बातें करने लगे। तब बृहस्पति के पुत्र अपोलो ने हर्मेस से इस प्रकार कहा:—
“हे हर्मेस, बृहस्पति के पुत्र और दूत, हे वरदानों के दानव, क्या तुम सहन कर सकते हो, इन मजबूत जंजीरों से जकड़े हुए, वीनस के साथ पलंग पर लेटना?”
दूत देवता, आर्गस-क्वेलर ने इस प्रकार उत्तर दिया: “नहीं, मैं चाहता हूँ कि ऐसा ही हो, हे धनुर्धर राजा अपोलो; मैं तीन गुना अधिक और अनंत शक्ति की जंजीरें सहन कर सकता हूँ, और सभी देवता और सभी देवियाँ मुझे देखने आ सकती हैं, मैं अपने स्थान पर स्वर्णिम वीनस के साथ बना रहूँगा।”
उसने कहा, और सभी अमर प्राणी सुनकर हँस पड़े। केवल नेपच्यून नहीं हँसा, बल्कि उसने गंभीर भाव से प्रसिद्ध शिल्पकार वल्कन से प्रार्थना की, मंगल ग्रह को मुक्त करने के लिए, और ये पंखयुक्त शब्द कहे:—
“अपने कैदी को रिहा कर दो। जो कुछ भी तुम मांगते हो, मैं यहाँ वादा करता हूँ — कि वह देवताओं के समक्ष तुम्हें उचित प्रतिफल देगा।”
प्रख्यात वल्कन ने उत्तर दिया: “हे पृथ्वी को कंपकंपाने वाले नेपच्यून, मुझ पर यह आदेश मत थोपो, क्योंकि निकम्मे देनदारों को दी गई प्रतिज्ञाओं का कोई मूल्य नहीं है। मैं एकत्रित देवताओं के बीच तुझसे अपना अधिकार कैसे मांग सकता हूँ, यदि मंगल, मुक्त होकर, ऋण और बंधनों से मुक्त हो जाए?”
फिर पृथ्वी को हिलाने वाले देवता ने उत्तर दिया:—
“वल्कन, भले ही मार्स देय दंड से इनकार करे,
और भाग जाए, यह मेरे द्वारा चुकाया जाएगा।”
फिर से प्रख्यात वल्कन ने कहा: "तेरे वचन को मैं अस्वीकार नहीं करना चाहिए और न ही मैं अस्वीकार करना चाहता हूँ।"
उसने कहा, और फिर वल्कन की शक्ति ने जाल को ढीला कर दिया, और उन मजबूत बेड़ियों से मुक्त होकर, दोनों कैदी उछल पड़े। मार्स थ्रेस के लिए उड़ गया, और हँसमुख वीनस साइप्रस के द्वीप पर, जहाँ पाफोस में उसका उपवन और सुगंधित

वेदी है। यहाँ देवियों ने उसे स्नान कराया, अमृतमय तेल से उसके अंगों का अभिषेक किया - ऐसा तेल जो शाश्वत देवताओं को नई सुंदरता प्रदान करता है, और उसे अंत में सुंदर वस्त्रों से सजाया, जो देखने में अद्भुत थे।
इस प्रकार प्रसिद्ध कवि ने गाया, जिसे सुनकर यूलिसिस अंतर्मन से प्रसन्न हुआ, और फाएशिया के सभी पुत्र, जो चप्पू और पाल चलाने में कुशल थे, भी प्रसन्न हुए।
अलसिनोस ने अपने पुत्रों लाओडामास और हेलियस को बुलाया और उन्हें अकेले नृत्य करने का आदेश दिया, क्योंकि बाकी सभी उनके बराबर नहीं थे। फिर कुशल पॉलीबस द्वारा बनाई गई एक सुंदर बैंगनी गेंद को लेकर, एक ने पीछे झुककर उसे ऊपर के धुंधले बादलों की ओर फेंका, और दूसरा आसानी से ऊपर उछलकर जमीन पर गिरने से पहले ही उसे पकड़ लिया। और जब उन्होंने कुछ देर तक गेंद उछाली, तो वे उपजाऊ धरती पर नाचने लगे, और अक्सर एक-दूसरे के साथ जगह बदलते रहे, जबकि घेरे के भीतर खड़े युवकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से हवा भर दी; शोर बहुत तेज था। तब महान यूलिसिस ने अलसिनौस से कहा:— “हे राजा अलसिनौस! हे वंश के सर्वोपरि, जिनके लिए आपने प्रतिज्ञा की है कि वे नृत्य में अन्य सभी से श्रेष्ठ होंगे, आपने जो कहा है वह पूर्णतः सिद्ध हो चुका है। मैं देखता हूँ और चकित हूँ।”
शक्तिशाली अलसिनौस ने यह सुनकर प्रसन्नतापूर्वक कहा, और फिर अपने समुद्री यात्रियों से इस प्रकार कहा:
“फेएशियनों के नेताओं और सरदारों, सुनो! यह अजनबी बुद्धिमान प्रतीत होता है। हम जल्दी से उसे ऐसे उपहार दें जो उसकी उदारता के अनुरूप हों। हमारे देश में बारह सम्मानित राजकुमार शासन करते हैं, और मैं तेरहवाँ राजकुमार हूँ। हर एक अपने साथ एक अच्छी तरह से धुली हुई चोगा, एक कुर्ता और साथ ही कीमती सोने का एक सिक्का लाए। इन सभी को एक साथ लाया जाए, ताकि इन्हें यहाँ देखकर हमारा अतिथि प्रसन्न मन से रात्रि भोज में शामिल हो सके। और यूरियलस, जिसने अभी-अभी इतनी अनुचित बातें कीं, उसे शब्दों और उपहार दोनों से प्रसन्न करो।
उसने बात की; सबने सहमति जताई, और प्रत्येक ने अपने दूत को उपहार लाने का आदेश देकर भेजा, और इस प्रकार यूरियलस ने राजा को संबोधित किया:—
“हे हमारे वंश के सबसे शक्तिशाली राजा अलसिनौस, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा और अपने अतिथि को प्रसन्न करने का प्रयास करूँगा। मैं उन्हें पीतल

की यह तलवार भेंट करूँगा, जिसकी मूठ चाँदी की है और म्यान हाथीदांत से बना नया है, जिसे वे एक अनमोल उपहार समझेंगे।”
उसने कहा, और चांदी जड़ी तलवार
उसके हाथ में दे दी, और ये प्रभावशाली शब्द कहे:—
“अजनबी और पिता, नमस्कार! यदि कोई शब्द भी बोला गया हो जिससे ठेस पहुंची हो, तो तूफ़ान उसे हमेशा के लिए मिटा दे। ईश्वर तुम्हें तुम्हारी पत्नी से फिर से मिलने का अवसर दे और तुम्हें तुम्हारी जन्मभूमि तक पहुंचाए, जहाँ तुम्हारे सभी कष्ट और मित्रों से यह लंबा वियोग समाप्त हो जाए!” बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:—
“प्रणाम हो, मित्र! और देवता तुम्हें सभी सुख प्रदान करें, और वह समय कभी न आए जब तुम उस तलवार को याद करो जो मैंने सुलह के शब्दों के साथ मेरे हाथों में सौंपी थी!”
उसने बात की और चांदी जड़ी तलवार को अपने कंधों पर टांग लिया। अब सूरज डूब चुका था, और कीमती उपहार लाए जा चुके थे। कुलीन दूत आए और उन्हें अलसिनौस के महल में ले गए, जहाँ उसके निर्दोष पुत्रों ने उनका स्वागत किया और उन्हें उनकी माता, रानी के सामने सुंदर ढंग से सजाया। इसी बीच, शक्तिशाली राजा अलसिनौस अपने महल की ओर आगे बढ़े, जहाँ उनके पीछे आने वालों ने ऊंचे आसन ग्रहण किए, और अलसिनौस ने एरेट से कहा:
“अब एक सुंदर संदूक यहाँ लाओ, जो हमारे पास सबसे अच्छा हो, और उसमें एक अच्छी तरह से धुली हुई चादर और कुर्ता रखो; आग पर हमारे अतिथि के लिए एक पीतल का कड़ाहा रखो, ताकि वह अपने स्नान के पानी को गर्म कर सके, और स्नान करने के बाद और फ़ेएशियन सरदारों द्वारा लाए गए उपहारों को क्रम से देखने के बाद, वह भोज में प्रसन्न होकर बैठ सके और संगीत का आनंद ले सके। मैं उसे सोने का यह सुंदर प्याला दूंगा, ताकि वह मेरी याद में प्रतिदिन अपने महल में बृहस्पति और अन्य सभी देवताओं को अर्घ्य अर्पित कर सके। हे भगवान! उसने कहा; एरेट ने अपनी दासियों को जल्दी करने का आदेश दिया
आग पर एक बड़ा तिपाई रखने के लिए।
तुरंत धधकती आग पर उन्होंने
तीन पैरों वाला एक पात्र रखा, और उसमें
पानी डाला, और लपटों पर नया ईंधन डाला।
लपटें पात्र के फूलते किनारों पर चढ़ गईं,

और पानी को गर्म कर दिया। इसी बीच एरेट अपने कमरे से एक सुंदर संदूक लाई, जिसमें उसने अपने मेहमान के लिए उपहार रखे— वे वस्त्र और सोना जो फेएशियनों ने दिए थे— और बाकी के साथ लबादा और कुर्ता भी रख दिया, और फिर उसने पंखदार शब्दों में सरदार को संबोधित किया:—
“ढक्कन को स्वयं देख लो, और उसके चारों ओर एक रस्सी बांध दो, कहीं ऐसा न हो कि घर लौटते समय तुम्हें कोई नुकसान हो, जब शायद तुम अंधेरे जहाज में सुखद नींद सो रहे हो।”
बुद्धिमान, समझदार और सजग यूलिसिस ने ढक्कन को उसकी जगह पर लगाया और छाती के चारों ओर एक डोरी लपेटी, जैसा कि रानी सर्क ने उसे बहुत पहले सिखाया था। फिर महल की गृहिणी उसे स्नान के लिए बुलाने आई। उसने भाप से भरे कुंड को देखकर प्रसन्नता का अनुभव किया, क्योंकि जब से उसने सुनहरे बालों वाली अप्सरा कैलिप्सो का निवास छोड़ा था, तब से उसकी इतनी देखभाल नहीं की गई थी, हालाँकि उसके साथ रहते हुए उसकी सेवा ऐसे की जाती थी मानो वह कोई देवता हो। अब जब दासियों ने उसे स्नान करते हुए देखा, और उसे तेल से अभिषेक किया, और उसे उसका शानदार लबादा और कुर्ता पहनाया, तो वह स्नान से बाहर आया, और उन लोगों के पास आया जो अपनी शराब के सामने बैठे थे। देवी के समान सुंदर नौसिका उस भव्य छत के एक स्तंभ के पास खड़ी थी, और यूलिसिस को गुजरते हुए देखकर, प्रशंसा करते हुए, उससे मधुर शब्दों में बोली:—
“अजनबी, अलविदा, और अपनी जन्मभूमि में याद रखना कि तुमने अपना जीवन मेरे ऋणी बनाया है।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने उत्तर देते हुए कहा:— “नाउसिका, उदार हृदय वाले राजा एल्सीनोअस की पुत्री! हे प्रभु, गर्जन के देवता बृहस्पति, जो जूनो के पति हैं, कृपा करके मुझे मेरा घर सुरक्षित वापस देखने का वरदान दें, क्योंकि मैं प्रतिदिन एक देवी के समान आपसे प्रार्थना करूँगा; क्योंकि हे देवी, आपने मेरा जीवन बचाया है।”
उसने बात की, और पास ही में अलसिनोस एक सिंहासन पर बैठ गया। और अब उन्होंने प्रत्येक को भोज परोसा और शराब मिलाई। एक दूत सज्जन कवि डेमोडोकस को वहाँ ले आया, जिसका सभी लोग सम्मान करते थे। उन्होंने उसे सभा के बीच में बिठाया, जहाँ वह एक ऊँचे स्तंभ से टिका हुआ था। फिर ऋषि यूलिसिस ने सफेद दाँतों वाले सूअर की चौड़ी कमर से एक हिस्सा काटा, जहाँ अभी भी चर्बी से घिरा हुआ मांस का एक टुकड़ा बचा था, और दूत से कहा:—

“हे दूत, इसे डेमोडोकस तक पहुँचाओ, ताकि वह खा सके। अपने दुःख में भी, मैं उसे गले लगाऊँगा, क्योंकि कवियों को समस्त पृथ्वी पर प्रत्येक जाति द्वारा सम्मान और आदर दिया जाता है। स्वयं देवी ने उन्हें गीत सिखाए हैं; वह गायकों से प्रेम करती हैं।”
उसने कहा; दूत ने वीर डेमोडोकस के सामने मांस रखा, जिसने उपहार को सहर्ष ग्रहण किया। तब सभी अतिथियों ने अपने हाथ बढ़ाए और मेज पर रखे भोजन को आपस में बाँटा; और जब उनकी प्यास और भूख मिट गई, तब ऋषि यूलिसिस ने गायक से कहा:

—

“डेमोडोकस, हे सर्वोपरि, मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि या तो बृहस्पति की पुत्री, देवी (म्यूज़) या अपोलो ने तुझे दर्शन दिए और तुझे शिक्षा दी। तूने सचमुच अचेयन योद्धाओं के भाग्य का वर्णन किया है— उन्होंने क्या किया और क्या सहा—उनके सभी परिश्रमों का वर्णन ऐसे किया है मानो तू स्वयं उनके बीच रहा हो, या तूने यह कहानी किसी प्रत्यक्षदर्शी से सुनी हो। अब, मैं प्रार्थना करता हूँ, आगे बढ़ और लकड़ी के घोड़े के आविष्कार का वर्णन कर, जिसे एपियस ने मिनर्वा की सहायता से बनाया था, और जिसे मुख्य योद्धा यूलिसिस ने चतुराई से पहुँचाया था। ट्रोजन गढ़, जिसकी कोख में सशस्त्र योद्धाओं ने शहर को तबाह कर दिया। और मैं, यदि तू यह कहानी सही ढंग से सुनाए, तो मैं तुरंत उन सभी को यह बता दूँगा जिन्हें किसी उदार ईश्वर ने गीत का पवित्र उपहार दिया है।
वह बोला; कवि ने प्रेरक ईश्वर का अनुभव किया, और गीत गाया, जहाँ से अर्गिव्स ने अपने तम्बुओं में आग के गोले फेंके और अपनी अच्छी नावों में चले गए, सिवाय उस दल के जो प्रसिद्ध यूलिसिस के साथ घोड़े पर बैठा था, ट्रोजन भीड़ के बीच, जो अब उसे गढ़ तक खींच लाए थे। तो वह वहाँ खड़ा था, जबकि उसके चारों ओर बैठे ट्रॉय के लोग बातें कर रहे थे और समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। बारी-बारी से उन्हें तीन सलाहें सूझीं - निर्दयी स्टील से खोखले तने को काट डालना; या फिर उसे ऊँचाई पर घसीटकर वहाँ से चट्टानों के बीच फेंक दो; या अंत में उस विशाल प्रतिमा को वहीं खड़ा रहने दो, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए भेंट के रूप में। और यही अंततः किया गया; क्योंकि भाग्य ने यही तय किया था कि जब भी उनके शहर की दीवारों के भीतर लकड़ी का घोड़ा होगा, तो उनका विनाश हो जाएगा, जिस पर सबसे शक्तिशाली अर्गिव्स, ट्रॉय के पुत्रों के बीच आकर प्रहार और वध करने आए थे। फिर कवि

ने गाया कि कैसे, उस कपटी घोड़े के गर्भ से निकले हुए, यूनान के पुत्रों ने इलियम को उजाड़ दिया; कैसे प्रत्येक ने अलग-अलग तरीकों से शहर को तबाह कर दिया, जबकि मंगल ग्रह के समान भयानक, यूलिसिस, मेनेलास के साथ मिलकर, डेफोबस के महल की तलाश में गए, और वहाँ एक भयंकर युद्ध लड़ा, जब तक कि शक्तिशाली पल्लास की सहायता ने उन्हें विजय नहीं दिला दी।
इस प्रकार प्रसिद्ध डेमोडोकस ने गाया; उस धुन ने यूलिसिस को आँसुओं में पिघला दिया, जिसकी पलकों से वे टपक कर उसके गालों को भीग गए। जैसे जब एक पत्नी अपने प्रिय पति के लिए रोती है, जो अपने शहर और लोगों के सामने मारा गया, उनकी रक्षा के लिए लड़ते हुए, उन्हें और अपने प्यारे बच्चों को घातक नुकसान से बचाते हुए, वह उसे हांफते और मरते हुए देखती है, और इस दृश्य को देखकर वह उसके शव पर चीखते हुए गिर पड़ती है, इस बीच विजेता उसे अपनी भालों से पीठ और कंधों पर मारते हैं, और उसे गुलामी में परिश्रम और शोक करने के लिए ले जाते हैं, जहाँ उसके गाल उस लंबे कड़वे शोक में अपनी लाली खो देते हैं;
इस प्रकार यूलिसिस की पलकों से आँसू गिरे, फिर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया

सिवाय इसके कि उसके बगल में बैठे अलसिनोस ने उन्हें देखा और उसकी गहरी आहें सुनीं, और इस प्रकार
अपने लोगों, चप्पू के स्वामी, से कहा:—
“फेएशियन वंश के राजकुमारों और सरदारों, ध्यान से सुनो। अब डेमोडोकस अपना मधुर स्वर वाला वीणा एक तरफ रख दे। उसके गीत का विषय सभी को एक जैसा आनंद नहीं देता। जब से हम भोजन के लिए बैठे हैं, और जब से हमारे महान कवि ने अपना गीत शुरू किया है, तब से हमारे अतिथि का शोक कभी समाप्त नहीं हुआ है; कोई गहरा दुख उनके हृदय पर छाया हुआ है। अब कवि को रुक जाना चाहिए, ताकि हम सभी भोज का आनंद ले सकें, हमारे अतिथि और हम, जिन्होंने उनका स्वागत किया है, क्योंकि ऐसा करना उचित है। और अब हमारे योग्य अतिथि के लिए सभी चीजें तैयार हैं, उनके साथ आने वाले लोग और ये उपहार भी।” हमारे स्नेह के वचन। एक अतिथि, एक याचक, भाई समान है, यहाँ तक कि उसके लिए भी जिसका हृदय आसानी से विचलित नहीं होता। इसलिए, अब और चालाकी से मत छिपाओ जो मैं पूछूंगा; खुलकर बोलना कहीं बेहतर होगा। अपनी माँ का नाम बताओ, अपने पिता का, और उन सभी का जो तुम्हारे भीतर और तुम्हारे शहर के आसपास रहते हैं। क्योंकि जन्म से ही

कोई भी व्यक्ति अनाम नहीं रहता। चाहे वह विनम्र हो या उच्च पदस्थ, जन्म के समय माता-पिता उन्हें नाम देते हैं। अपनी भूमि का नाम बताओ, लोगों, और तुम्हारे शहर, ताकि हमारे जहाज सीख सकें, और तुम्हें उस स्थान तक ले जा सकें; क्योंकि यहाँ हमारे फ़ेएशियन जहाजों में न तो कोई पायलट हैं, न ही पतवार, जैसे अन्य देशों के जहाजों में होते हैं। हमारे लोग मनुष्यों के विचारों और इरादों को जानते हैं। उन्हें सभी शहर और सभी उपजाऊ तट ज्ञात हैं जहाँ मनुष्य रहते हैं; वे कोहरे और अंधेरे में घिरे हुए, विशाल समुद्र को तेजी से पार करते हैं, बिना किसी डर के कि वे नष्ट हो जाएंगे या उन्हें कोई नुकसान होगा। मैंने अपने पिता नौसिथोस को यह कहते सुना कि नेपच्यून हमसे नाराज़ था क्योंकि हम उन्हें सुरक्षित रूप से उनके स्थान तक ले गए थे। घर
इतने सारे आदमी, और वह नष्ट कर देगा
बाद में किसी अच्छे फ़ेएशियन जहाज को,
एक काफिले से लौटते हुए, लहरों में
गहरे समुद्र में, और उसे वहीं छोड़ देगा,
हमारे शहर के सामने एक विशाल और ऊँचा पहाड़।
बूढ़े सरदार ने यही भविष्यवाणी की थी;
ईश्वर, जैसा उसे सबसे अच्छा लगेगा, मेरे पिता के वचनों को पूरा करेगा, या उन्हें अधूरा छोड़ देगा।
अब मुझे सच-सच बताओ कि तुम कहाँ-कहाँ घूमे हो,
और तुमने कौन-कौन से मानव कबीले देखे हैं;
बताओ कि उनमें से कौन बर्बर, असभ्य, अन्यायी हैं,
और जो मेहमाननवाज हैं और आदर करते हैं
धन्य देवताओं का। बताइए कि तू क्यों रोया
और आहें भरीं जब तूने सुना कि आर्गिव और अचियन सेना
और ट्रॉय नगर का क्या दुर्भाग्यपूर्ण हाल हुआ। देवताओं ने यह फरमान जारी किया; उन्होंने
मनुष्यों के पुत्रों के विनाश का आदेश दिया,
जो बाद में गीतों का विषय बन गया। क्या तेरा कोई वीर रिश्तेदार नहीं था जो ट्रॉय में मारा गया?
दामाद? तेरी पत्नी का पिता?

वे सब हमारे सबसे करीब हैं, सिवाय उनके जो
हमारे अपने खून के हैं। या शायद ऐसा हो सकता है कोई ऐसा घनिष्ठ मित्र हो, जो उन सभी गुणों से परिपूर्ण हो जो हमारा प्रेम जीत लेते हैं; क्योंकि हमें उस बुद्धिमान और सज्जन व्यक्ति को, जो हमारा मित्र है, उतना ही प्रिय मानना चाहिए जितना कि वह हमारा भाई हो।

पुस्तक 9
सिकॉनियन, लोटस-ईटर्स और साइक्लॉप्स
ट्रॉय के पतन के बाद यूलिसिस के कारनामों का वर्णन, जो उन्होंने एल्किनोअस के अनुरोध पर किया था—सिकोनियनों पर उनका हमला और उनके शहर का विनाश— सिकोनियनों का एकत्रीकरण और सुदृढ़ीकरण, जिन्होंने यूलिसिस के कई साथियों का नरसंहार किया—फूलों पर जीवित रहने वाले कमल खाने वाले— साइक्लोप्स की भूमि पर यूलिसिस का आगमन—पॉलीफेमस और उसकी बर्बरता— यूलिसिस का बदला, जिसने पॉलीफेमस की एक आंख निकाल दी और भाग गया। बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे राजा एल्सीनोअस, पुरुषों में सबसे प्रसिद्ध! ऐसे गायक को सुनना कितना सुखद है, जिसकी आवाज़ देवताओं की आवाज़ जैसी है। और मैं इससे अधिक आनंददायक कुछ नहीं सोच सकता, जब सभी अतिथि राजमहलों में सलीके से बैठे हों और गायक को सुन रहे हों, मेज पर रोटी और मांस परोसा जा रहा हो, और प्यालों से मदिरा निकालकर प्याले भर रहे हों। मेरे लिए इससे अधिक कुछ नहीं है। मनमोहक दृश्य।
“पर अब तुम्हारा मन मुझसे पूछने को प्रेरित हुआ है
मेरे द्वारा सहे गए कष्टों की कहानी,
और इससे मेरा दुःख फिर से जागृत हो जाएगा। पहले क्या, फिर आगे क्या, मैं बताऊँ? अंत में क्या?
क्योंकि अनेक विपत्तियाँ मुझ पर अमरों द्वारा डाली गई हैं। पहले मैं अपना नाम बता दूँ, ताकि तुम जान सको, और शायद, मेरी मृत्यु के दिन से पहले, मैं तुम्हारा मेज़बान बन सकूँ, भले ही दूर रहूँ।
मेरा नाम यूलिसिस है, और मेरे पिता का नाम लेर्टेस है; मैं लोगों के बीच चतुर युक्तियों में निपुण के रूप में व्यापक रूप से जाना जाता हूँ, और मेरा यश स्वर्ग तक पहुँच गया है। धूप से भरे इथाका में मैं निवास करता हूँ, जहाँ दूर से दिखाई देने वाला ऊँचा नेरिटस जंगलों से सरसराता है। चारों ओर कई द्वीप हैं, घनी आबादी वाले, एक-दूसरे के निकट। वहाँ सामोस स्थित है, डुलिचियम और घने जंगलों से घिरा ज़ैकिंथस। अपने निचले किनारों के साथ इथाका, डूबते सूरज की ओर सबसे ऊँचा स्थित है; बाकी उस तरफ हैं जहाँ सुबह सबसे पहले होती है। यह एक ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र है, लेकिन अपने युवाओं का शानदार ढंग से पोषण करता है, और मैंने पृथ्वी पर इससे अधिक सुंदर स्थान कभी

नहीं देखा। कैलिप्सो लेट, वह महिमामयी देवी, अपनी गुफा में लंबे समय तक मुझे रोके रखा और चाहती थी कि मैं उसका पति बनूँ; अपने शाही घर में, विचित्र कलाओं की स्वामिनी ऐयान सर्क ने भी मुझे रोके रखा और चाहती थी कि मैं उसका पति बनूँ—फिर भी वे मेरे हृदय के संकल्प को नहीं बदल सकीं। क्योंकि अपनी जन्मभूमि और माता-पिता से बढ़कर कुछ भी प्यारा और प्रिय नहीं है, भले ही संयोगवश हमारा भाग्य एक समृद्ध घर में हो, फिर भी अपने सगे- संबंधियों से दूर और एक विदेशी भूमि में। अब मुझे उस विपत्तिपूर्ण यात्रा के बारे में बोलने दीजिए। जिसे बृहस्पति की इच्छा ने ट्रॉय से मेरी वापसी पर निर्धारित किया था।
“ट्रोजन तट से मुझे उड़ाने वाली हवा मुझे सिकॉनियों के पास ले गई, जो इस्मारस में रहते थे। मैंने शहर को उजाड़ दिया और उसके निवासियों को मार डाला, उनकी पत्नियों को ले गया और उनकी सारी संपत्ति अपने आदमियों में बाँट दी, ताकि किसी को भी बराबर हिस्सा न मिले। फिर मैंने उन्हें बड़ी जल्दी से उस क्षेत्र को छोड़ने की चेतावनी दी। पागलों! उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।”
“और वहाँ उन्होंने खूब शराब पी, और समुद्र तट पर कई भेड़ों और कई धीमी गति से चलने वाले बैलों को मार डाला, जिनके सींग मुड़े हुए थे। फिर सिकॉनियों ने अपने पड़ोसी सिकॉनियों को बुलाया, जो उनसे कहीं अधिक बहादुर और संख्या में अधिक थे, जिनका निवास मुख्य भूमि पर था, और जो घोड़ों पर सवार होकर लड़ने के लिए प्रशिक्षित थे, या आवश्यकता पड़ने पर पैदल भी। वे झुंड में आए, वसंत ऋतु में नए पत्तों या सुबह के फूलों की तरह घने। फिर हमारी दुर्भाग्यपूर्ण टोली पर बृहस्पति की ओर से एक बुरा भाग्य और कई दुख आ पड़े। उन्होंने अपनी पंक्तियाँ बनाईं और हमारे अच्छे जहाजों पर हमला किया, जहाँ मनुष्य का सामना हुआ। पीतल के भालों के साथ।
जब सुबह हुई और दिन का पवित्र प्रकाश और भी तेज हो गया, तब हमने हमले का सामना किया
और अपनी जगह पर डटे रहे, हालांकि वे संख्या में अधिक थे।
लेकिन जब सूरज पश्चिम की ओर ढल रहा था, तब दुश्मन विजयी हुआ; अचेयन दल को हार का सामना करना पड़ा और उन्हें भागने पर मजबूर होना पड़ा। उस दिन हमारे बेड़े के प्रत्येक जहाज से छह वीर पुरुष मारे गए; बाकी बच निकले।

“हम आगे बढ़ते रहे, अपने मारे गए साथियों पर गहरा शोक मनाते हुए, फिर भी स्वयं मृत्यु से बच निकलने पर प्रसन्न थे। और हमने अपने अच्छे जहाजों में तब तक समुद्र में प्रवेश नहीं किया जब तक हमने अपने उन सभी बेचारे दोस्तों को तीन बार नाम लेकर पुकार नहीं लिया जो सिस्कोनियन हाथों युद्ध में मारे गए थे। बादलों के स्वामी, बृहस्पति ने हमारे विरुद्ध उत्तर की हवा को एक तूफान के रूप में भेजा, और पृथ्वी और आकाश को बादलों में लपेट लिया, और आकाश से अचानक रात छा गई। झुके हुए मस्तूलों के साथ हमारे जहाज तेजी से आगे बढ़े; तेज आंधी ने पाल फाड़ दिए; हमने पाल खींचे और हमने उन्हें नीचे रख दिया
जहाजों के भीतर, पूर्ण विनाश के भय से,
और उत्सुकता से मुख्य भूमि की ओर हमने पतवारें मोड़ दीं। वहाँ हम दो दिन और दो रातें पड़े रहे,
दुःख और कठिनाई से थके हुए। जब अंततः
सुनहरी सुबह तीसरे दिन को लेकर आई,
हमने मस्तूल उठाए, और सफेद पाल फैलाकर
हवा का सहारा लेकर बैठ गए। हवा ने हमें नाविक की सहायता से आगे बढ़ाया; और तब मैं अपनी जन्मभूमि पर सुरक्षित पहुँच गया होता, यदि समुद्र की धाराओं और लहरों
और उत्तरी हवा ने मुझे वापस न धकेला होता।
जिस समय मैंने मालेया के केप को पार करने का प्रयास किया,
और मुझे मेरे मार्ग से भटकाकर साइथेरे ले गया।
उन भयानक हवाओं के आगे बढ़ते हुए
नौ दिनों तक मछलियों से भरे गहरे समुद्र में,
दसवें दिन हम उस भूमि पर पहुँचे जहाँ रहते हैं
कमल खाने वाले, ऐसे लोग जिनका भोजन फूल हैं।
हम मुख्य भूमि पर उतरे, और हमारे दल ने
बेड़े के जहाजों के पास अपना शाम का भोजन किया। और जब हम सब खा-पी चुके थे
मैंने खोजकर्ताओं को भेजा—दो चुने हुए लोग, तीसरा एक दूत था—यह जानने के लिए कि कौन सी जाति पृथ्वी के फलों से पोषित मनुष्यों की

समृद्ध क्षेत्र बनाते हैं। वहाँ कोई बंजर मिट्टी नहीं है; यह समय पर सभी फल अच्छी तरह से उगा सकती है। धूसर गहरे समुद्र के किनारे चिकने और नम घास के मैदान हैं। अंगूर की बेल लंबे समय तक फलेगी-फूलेगी; किसान का काम आसान है, और किसान बड़ी फसल काटेगा। फसलें, क्योंकि नीचे की मिट्टी उपजाऊ है।
और वहाँ एक सुरक्षित बंदरगाह है, जहाँ केबल की कोई आवश्यकता नहीं है; वहाँ कोई लंगर नहीं डाला जाता,
न ही किनारे से रस्सियाँ बाँधी जाती हैं, लेकिन जो लोग वहाँ प्रवेश करते हैं वे तब तक रहते हैं जब तक अनुकूल हवा के साथ नाविकों को फिर से समुद्र में जाने की इच्छा न हो। एक निर्मल धारा एक खोखली चट्टान के नीचे एक स्रोत से बहती है
उस बंदरगाह के दूसरे छोर पर,
और उसके चारों ओर चिनार के पेड़ उगते हैं। वहाँ हमारा बेड़ा गया; किसी देवता ने हमें अंधेरी रात में रास्ता दिखाया था, क्योंकि हमने कुछ भी नहीं देखा था।
घना था हमारे जहाजों के चारों ओर उदासी छाई हुई थी; चंद्रमा आकाश में नहीं चमक रहा था, बादलों ने उसकी रोशनी बुझा दी थी। किसी की नज़र में द्वीप या किनारे से टकराती लंबी लहरें नहीं दिख रही थीं, जब तक कि हमारे अच्छे जहाज ज़मीन पर नहीं आ गए, और वहाँ उतरकर हम किनारे पर सो गए और पवित्र सुबह के उगने का इंतज़ार करने लगे।
और जब अंत में भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, तो हम द्वीप के चारों ओर घूमे, प्रशंसा करते हुए। इसी बीच, अप्सराओं, उस देवता की पुत्रियों ने, जो ढाल धारण करते हैं, पहाड़ी बकरियों को जगाया, ताकि हमारे दल अपना सुबह का भोजन बना सकें। और तुरंत अपने जहाजों से हमने अपने टेढ़े धनुष और लंबे भाले उठा लिए।
“ ‘मेरे सभी प्रिय मित्रों को यहीं रहने दो, जबकि मैं अपने जहाज और चालक दल के साथ यह जानने के लिए निकलूँ कि ये किस जाति के मनुष्य हैं, क्या वे असभ्य, बर्बर और अन्यायी हैं, या अतिथियों के प्रति दयालु और देवताओं के प्रति श्रद्धावान हैं।’ मैंने कहा, और अपने सभी चालक दल को जहाज पर चढ़ने और रस्सियों को ढीला छोड़ने का आदेश देकर, मैं अपने जहाज पर सवार हो गया। उन सभी ने आज्ञा का पालन किया, और पंक्तियों में बैठकर बेंचों पर बैठ गए, और अपने चप्पूओं से धूसर सागर को प्रहार किया। लेकिन जब हम उस पड़ोसी तट पर

पहुँचे, तो हमने समुद्र के किनारे एक ऊँची गुफा देखी, जो लॉरेल की झाड़ियों से ढकी हुई थी। वहाँ बहुत से मवेशी आराम कर रहे थे, भेड़ और बकरियाँ दोनों। उसके चारों ओर एक आँगन था, तराशे हुए पत्थरों से बना एक ऊँचा घेरा, जिसमें लंबे तने वाले चीड़ के पेड़ और ऊँचे बलूत के पेड़ थे। यहाँ एक विशालकाय आदमी रहता था, जो अकेले ही अपनी भेड़ों की देखभाल करता था। वह कभी दूसरों से बात नहीं करता था, बल्कि अकेले ही अपने बुरे कामों की योजना बनाता था। वह एक भयानक विलक्षण प्रतिभा था, और रोटी पर जीने वाले किसी भी व्यक्ति जैसा नहीं था, बल्कि एक विशाल पर्वत शिखर की तरह था, जो जंगलों से घिरा हुआ था और बाकियों से ऊपर अकेला खड़ा था।
“फिर, मैंने बाकी सभी को जहाज पर रुकने और उसकी रखवाली करने का आदेश दिया, और अपने सबसे बहादुर आदमियों में से बारह को चुना जिन्हें मैं अपने साथ ले गया। मेरे पास जहाज पर एक बकरी की खाल में गहरे रंग की शराब थी—एक सुखद किस्म की, जो मारोन, इवान्थेस के पुत्र, जो इस्मारस के संरक्षक देवता फोएबस के पुजारी थे, ने मुझे दी थी, जब श्रद्धा से प्रेरित होकर हमने उन्हें, उनके बच्चों और उनकी पत्नी को मृत्यु से बचाया था। क्योंकि उनका निवास फोएबस के घने उपवन में था। उन्होंने जो उपहार दिए वे कीमती थे—सात टैलेंट गढ़ा हुआ सोना; एक प्याला। चांदी से; और उसने मेरे लिए बारह घड़ों में उत्तम, उत्तम शराब निकाली, जो मिलावट रहित थी, और देवताओं के लिए पेय थी। उसके घर में कोई भी, नौकरानियाँ या पुरुष, इसके बारे में नहीं जानता था, सिवाय मालिक और उसकी पत्नी और घर की मुखिया के। जब भी वे इस उत्तम लाल शराब को पीते थे, वह केवल एक प्याला शराब से भरता था, और उसमें बीस और पानी मिलाता था। प्याले से ऐसी सुगंध निकलती थी जो देवताओं को प्रसन्न कर सकती थी, और उस पेय को दूर रखना कठिन था। मैंने एक अच्छी तरह से भरी हुई मशक ली, साथ ही खाने की टोकरी भी ली—क्योंकि मेरे विचारशील मन ने मुझे चेतावनी दी थी, कहीं ऐसा न हो कि मेरा सामना किसी ऐसे व्यक्ति से हो जाए जो बेहद ताकतवर और क्रूर स्वभाव का हो, और जिसे न्याय या सही का कोई ज्ञान न हो। “जल्द ही हम गुफा के पास पहुँच गए, लेकिन वह वहाँ नहीं मिला; वह उपजाऊ मैदानों में अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था। हम अंदर गए और वहाँ जो कुछ देखा, उसे देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। चारों ओर पनीर से भरी टोकरियाँ रखी थीं; मेमनों और बकरियों के बाड़े भरे हुए थे, हर एक अलग बाड़े में; बड़े, छोटे और नए दूध देने वाले, सभी के लिए अलग-अलग जगह थी। बर्तन मट्ठे से भरे

हुए थे— चिकने ढंग से बने हुए बर्तन और बाल्टियाँ जिनमें वह मवेशियों का दूध दुहता था। तब मेरे साथियों ने मुझसे बहुत आग्रह किया कि मैं उनके साथ कुछ समय बिताऊँ। पनीर लेकर, लौटकर, मेमनों और बकरियों को तेज़ी से हमारे अच्छे जहाज़ में ले जाओ जहाँ वे अस्तबल में थे, और फिर खारे समुद्र पर रवाना हो जाओ। मैंने उनकी इच्छा पूरी नहीं की; अगर मैंने कर दी होती तो कहीं बेहतर होता। मेरा इरादा भेड़ों के मालिक से मिलने और उनकी मेहमाननवाज़ी को परखने का था। यह उन लोगों के लिए सुखद दृश्य नहीं था जिनके साथ मैं आया था।
“और फिर हमने आग जलाई, और बलि दी, और पनीर खाया, और गुफा के अंदर बैठकर इंतज़ार किया, जब तक कि वह अपने झुंडों को चराकर वापस नहीं आया; वह सूखी लकड़ियों का भारी बोझ लेकर आया, ताकि रात के खाने के समय आग जला सके। उसने अपना बोझ गुफा के बाहर इतनी ज़ोर से फेंका कि हम डर के मारे गुफा के एक कोने में दुबक गए। उसने अपने स्वस्थ झुंड को, उन सभी को जिनका वह दूध पीता था, उस विशाल चट्टानी गुंबद के नीचे भगा दिया, लेकिन नर बकरियों और मेढ़ों को बाहर ही छोड़ दिया। और फिर उसने एक एक विशाल अवरोध खड़ा कर दिया,
एक भारी भार; 22 गाड़ियाँ भी,
चार पहियों वाली और मजबूत, उसे ज़मीन से नहीं हिला सकती थीं:
ऐसा ही विशाल पत्थर उसने उठाया और
प्रवेश द्वार के सामने रख दिया। फिर वह बैठ गया और एक-एक करके भेड़ों और बकरियों का दूध दुहा,
और प्रत्येक को उसका बच्चा दिया। इसके बाद, आधा दूध उसने जमाया और दही को बुनी हुई टोकरियों में रख दिया; और बाकी आधा दूध उसने शाम के पेय के लिए कटोरियों में रख लिया।
उसके सारे काम इस प्रकार समाप्त हुए, उसने आग जलाई,
और हमें वहाँ देखा जहाँ हम छिपे हुए थे, और हमसे पूछा:—
“ ‘तुम कौन हो, अजनबी? मुझे बताओ तुम कहाँ से आए हो
समुद्र पार से। क्या तुम व्यापारी हो,
या अपनी इच्छा से भटकने वाले, उन लोगों की तरह जो
लूटपाट के लिए समुद्र में घूमते हैं, और अपनी जान जोखिम में डालकर दूर-दूर के किनारों पर मौत ले जाते हैं?’

“उसने बात की, और हम जो डूबते दिलों से सुन रहे थे, उस गहरी आवाज और भयानक रूप से कांप उठे, और मैंने इस प्रकार उत्तर दिया: ‘हम यूनानी हैं जो इलियम से आए हैं, बदलते हवाओं के कारण विशाल समुद्र के पार धकेल दिए गए हैं, और जब हम अपने घर की तलाश कर रहे थे, तो हमने एक अलग यात्रा की, और हमें दूसरे मार्ग पर विवश होना पड़ा; यही बृहस्पति की इच्छा थी। हम अपने आप को एगमेमन के सैनिक होने का दावा करते हैं, एट्रेस का पुत्र, जिसकी प्रसिद्धि अब स्वर्ग के नीचे सबसे महान है, वह शहर इतना शक्तिशाली था जिसे उसने लूटा था, और उसने इतने सारे योद्धाओं को मार डाला था; अब हम तुम्हारे सामने घुटने टेककर विनती करते हैं, और तुमसे विनती करते हैं कि हमें अपने अतिथि के रूप में स्वीकार करो, या फिर वे उपहार प्रदान करो जो प्रथा के अनुसार अजनबी को दिए जाते हैं। हे महान! देवताओं का आदर करो; क्योंकि हम तुम्हारी कृपा के पात्र हैं। और आतिथ्यवान बृहस्पति, जिसकी उपस्थिति प्रत्येक योग्य अजनबी के साथ होती है, जब भी कोई विनती करने वाला या अजनबी अन्याय का शिकार होता है, तो उसका बदला लेता है।
मैंने कहा, और उसने क्रूरता से मुझे उत्तर दिया:— ‘हे अजनबी, तू मूर्ख है, या किसी दूर देश से आया है—तू जो मुझे देवताओं से डरने या उनका आदर करने का आदेश देता है। हम साइक्लोप्स—एजिस-धारक, बृहस्पति, या किसी अन्य धन्य देवता की परवाह नहीं करते; हम उनसे श्रेष्ठ हैं। यह मत सोचो कि मैं बृहस्पति के क्रोध से बचने के लिए तुझे या तेरे साथियों को बख्श दूँगा, जब तक कि यह मेरी मर्ज़ी न हो; परन्तु कह—क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ—तूने अपना वीर पोत कहाँ उतारा था? क्या वह पास था, या क्या यह द्वीप के किसी दूरदराज कोने में है?
“उसने मुझे बहकाने के लिए बातें कीं, लेकिन मैंने उसकी चालाकी को भलीभांति पहचान लिया और छल भरे शब्दों से उत्तर दिया:—
“नेपच्यून, जो तटों को हिला देता है, उसने मेरी नाव को तुम्हारे द्वीप के किनारे की चट्टानों पर टकराकर चकनाचूर कर दिया, और उसे चट्टानी तट से टकरा दिया। खुले समुद्र से आंधी उसे यहाँ ले आई, और मैं, इन सबके साथ, मृत्यु के भयानक भाग्य से बच निकला।”
“मैंने कुछ कहा; उस बर्बर ने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि उछल पड़ा, और मेरे साथियों पर हाथ डालकर, उनमें से दो को पकड़ लिया, और उन्हें पिल्लों की तरह ज़मीन पर पटक दिया। उनके दिमाग बाहर निकल आए, और जहाँ गिरे वहाँ ढेर हो गए।

उसने उन्हें अपने भोजन के लिए टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और पहाड़ों के जंगली शेर की तरह, उन्हें वैसे ही खा गया, और कुछ भी नहीं छोड़ा— न आंतें, न मांस, न मज्जा वाली हड्डियाँ। हम उसकी क्रूरता देखकर रो पड़े, और हमने अपने हाथ बृहस्पति की ओर उठाए, और हमारे दिल निराशा से भर गए। और जब उस साइक्लोप्स ने अपना पेट भर लिया, मानव मांस खाकर और दूध पीकर, वह अपनी गुफा में लेट गया, अपने झुंडों के बीच फैला हुआ। मेरे साहसी हृदय में यह विचार आया कि मैं उसके पास जाऊं, और अपनी जांघ पर धारदार तलवार चलाऊं, और जहां कमर और जिगर जुड़ते हैं, वहां से एक प्रहार करके उसकी छाती को भेद दूं। एक दूसरा विचार मुझे रोक गया - कि एक दयनीय मृत्यु हमें आड़े आएगी, क्योंकि हमारे पास उस विशाल चट्टान को हिलाने की शक्ति नहीं थी जिसे उसने ऊंचे द्वार पर रखा था। इसलिए हम सारी रात शोक मनाते रहे, पवित्र सुबह की प्रतीक्षा करते रहे; और जब भोर की वह गुलाबी उंगलियों वाली पुत्री प्रकट हुई, साइक्लोप्स ने आग जलाई और अपने सुंदर झुंड का एक-एक करके दूध दुहा, और उनके बच्चों को उनकी माँ के पास ले आया। जब उसने अपने घरेलू काम पूरे कर लिए, तो उसने सुबह के भोजन के लिए हमारे दो भेड़ों को फिर से पकड़ लिया। उसने उन्हें खा लिया और फिर गुफा को बंद करने वाली विशाल चट्टान को आसानी से हटा दिया। अपने अच्छी तरह से पोषित झुंड को बाहर निकालते हुए, उसने उस विशाल अवरोध को वापस रख दिया, जैसे कोई तरकश का ढक्कन लगाता है। ज़ोरदार आवाज़ के साथ... साइक्लॉप्स उस अच्छी तरह से पोषित झुंड को खेत में ले गया, जबकि मैं कई योजनाओं के बारे में सोचता रहा, उसे नुकसान पहुँचाने और अपने अन्याय का बदला लेने के लिए, यदि पैलास मुझे वह गौरव प्रदान करे। मेरे मन में, जैसे- जैसे मैं योजनाओं पर विचार करता गया, यह योजना सबसे बुद्धिमान प्रतीत हुई। “स्टॉलों के पास जैतून की लकड़ी का एक विशाल गदा पड़ा था, जो अभी हरा था, जिसे साइक्लोप्स ने उसके तने से तराशा था ताकि वह उसे सूखने के बाद ले जा सके। जब वह पड़ा था, तो हमें वह किसी चौड़ी काली नाव का मस्तूल लग रहा था, जिसमें बीस नाविक सवार होते थे, और जो विशाल समुद्र के पार माल ढोने के लिए बनाई गई थी—उसकी लंबाई और मोटाई इतनी अधिक थी। उसके पास खड़े होकर, मैंने उसमें से एक फ़ैदम की लंबाई काट ली और उसे अपने आदमियों को दे दिया, और उन्हें उसके किनारों को चिकना करने का आदेश दिया, और उन्होंने मेरी बात मान ली, जबकि मैंने छोटे सिरे को तेज किया और उसकी नोक को चमकती धूप में कड़ा किया।” आग;

और तीन बार उस एकलोक्स ने अपनी मूर्खता में पिया।
लेकिन जब मैंने देखा कि शराब उसके होश को धुंधला करने लगी है, तो मैंने उससे विनम्रता से इस प्रकार कहा:—
“ ‘हे साइक्लोप्स, तुमने पूछा है कि लोग मुझे किस नाम से जानते हैं। मैं तुम्हें बताऊँगा, परन्तु तुम भी बदले में मुझे कोई आतिथ्य सत्कार का उपहार दो, जैसा तुमने वादा किया है। मेरा नाम नोमान है, मेरे माता-पिता ने मुझे यह नाम दिया है, और मेरे सभी मित्र मुझे नोमान कहकर पुकारते हैं।’
मैंने अपनी बात समाप्त की, और उसने क्रूरतापूर्वक उत्तर दिया:— ‘नोमान अपने दल का अंतिम व्यक्ति होगा जिसे मैं खा जाऊंगा, बाकी सभी को मैं उसके सामने ही भस्म कर दूंगा। यह विश्राम मेरी ओर से उपहार हो।’
“वह बोला, और पूरी लंबाई में पीछे की ओर गिरते हुए, अपनी विशाल गर्दन एक तरफ करके ज़मीन पर लेट गया; उस पर गहरी नींद छा गई थी। फिर उसके मुँह से शराब में मिले हुए मानव मांस के टुकड़े निकले, और उसके नशे में धुत्त गले से शोरगुल के साथ बाहर निकले। मैंने खूंटी को जलते हुए कोयलों के बीच रखा ताकि वह गर्म हो जाए, और अपने आदमियों को प्रोत्साहित करते हुए उत्साह भरे शब्द कहे, ताकि कोई भी अपने डर के कारण मुझे धोखा न दे। और जब जैतून की लकड़ी जलने लगी— क्योंकि अभी हरी होने के बावजूद उसने आसानी से सिक्का ले लिया— मैंने उसे अंगारों से निकाल लिया। मेरे चारों ओर खड़े थे मेरे साथियों, जिन्हें किसी देवता ने शांत, उच्च साहस से प्रेरित किया था, उन्होंने अपने हाथों में नुकीली छड़ ली और उसकी आँख में घुसा दी। उनसे ऊँचे चबूतरे पर बैठकर मैंने उसे घुमाया। जैसे कोई कारीगर जहाज की लकड़ी में छेद करता है, उसके नीचे दोनों ओर खड़े लोग पट्टे से उसे घुमाते हैं, और वह लगातार घूमती रहती है। उसी प्रकार, उस नुकीली छड़ को उसकी आँख में घुसाकर, हमने उसे घुमाया। गर्म लकड़ी पर खून बहने लगा; पलकें और माथा झुलस गए। भाप से, और झुलसी हुई आँख की जड़ें आग से चटक रही थीं। जैसे कोई लोहार कुल्हाड़ी या छेनी बनाते समय, उसे तपाकर, फुफकारते हुए ब्लेड को ठंडे पानी में डुबोता है, जिससे स्टील मजबूत होता है, वैसे ही उस जैतून के खंभे के चारों ओर साइक्लॉप्स की आँख फुफकार रही थी। उसने एक भयानक चीख मारी; चट्टानें उससे गूंज उठीं, और हम डर के मारे उससे भाग गए। अपनी आँख से उस खंभे को निकालते हुए, जो पूरी तरह से गंदा और खून से लथपथ था, उसने उसे दोनों हाथों से पागलों की तरह फेंक दिया। फिर उसने पुकारा... साइक्लोप्स जो

गुफाओं में रहता था
उस हवादार ऊँचाई पर। उन्होंने उसकी आवाज सुनी
और विभिन्न रास्तों से आए, और गुफा के पास खड़े हो गए
और उसके शोक का कारण पूछा।
“ ‘हे पॉलीफेमस, तुझे क्या तकलीफ है कि तू इस अमृतमयी रात में अपनी चीखों से हमारी नींद भंग कर रहा है? क्या किसी मनुष्य ने तेरे विरुद्ध तेरे झुंडों को भगाया है, या छल या बलपूर्वक तेरा जीवन लेने का प्रयास किया है?’
विशाल पॉलीफेमस ने अपनी गुफा से उत्तर दिया:—
‘हे मित्रों! नोमान ही मुझे मार रहा है; नोमान मुझे छल से मार रहा है; बल से नहीं’
फिर उन्होंने पंखों वाले शब्दों में फिर कहा:— ‘यदि कोई तुझ पर अत्याचार न करे, और तू बिलकुल अकेली हो, तो ध्यान रख कि कोई भी रोगों से नहीं बच पाता; वे बृहस्पति द्वारा भेजे जाते हैं। परन्तु सागर के राजा, पिता नेपच्यून से प्रार्थना कर।’
“उन्होंने ऐसा कहा और चले गए। मन ही मन मैं हँसा यह सोचकर कि मैंने जो नाम लिया था, और अपनी चतुर योजना से, मैंने साइक्लोप्स को धोखा दे दिया था। इसी बीच, दर्द से कराहते हुए, और अपने हाथों से टटोलते हुए, उसने प्रवेश द्वार पर लगी चट्टान को हटा दिया। वह वहाँ बाहें फैलाकर बैठा रहा, ताकि जो भी झुंड के साथ गुफा से बाहर निकलने की कोशिश करे, उसे पकड़ ले, क्योंकि उसने मुझे इतना मंदबुद्धि समझा। फिर मैंने योजना बनाई कि अपने साथियों और खुद को मौत से कैसे बचाऊँ। मैंने हज़ारों रणनीतियाँ और तरकीबें सोचीं— क्योंकि यहाँ जीवन दांव पर लगा था, और खतरा बहुत बड़ा था। अंततः मैंने इस पर ध्यान केंद्रित किया।
“भेड़ें गोल-मटोल और सुंदर थीं, और विशाल थीं
घनी काली ऊन से ढकी हुई। मैंने चुपचाप
उन्हें तीन-तीन करके टहनियों से एक दूसरे से बांध दिया
जिनसे उस अधर्मी अपराध के अजूबे,
साइक्लोप्स ने अपना बिस्तर बनाया था। हर तीन भेड़ों में से बीच वाली भेड़ एक आदमी को ले जा रही थी; दो भेड़ें,
एक-एक तरफ, उसकी सुरक्षा के लिए थीं।
इस प्रकार हममें से प्रत्येक को तीन भेड़ों द्वारा ले जाया गया; लेकिन

मैंने
अपने लिए सबसे सुंदर भेड़ को चुना,
और उसकी पीठ से पकड़कर, उसके घने पेट के नीचे फिसलकर,
खुद को फैला लिया
अंत में, और दृढ़ हृदय और हाथों से उस भरपूर ऊन को मजबूती से थामे रखा। फिर हमने पवित्र सुबह के उदय की प्रतीक्षा में आहें भरीं।
और जब भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह, फिर से प्रकट हुई, तो नर भेड़ें चरने के लिए निकल गईं, जबकि भेड़ें अस्तबलों में ही रहीं, मिमियाती रहीं, लेकिन उनका दूध नहीं निकला था, क्योंकि उनके थन भारी थे। स्वामी ने बड़ी सावधानी से, हालांकि उसे बहुत दर्द हो रहा था, उठने और गुजरने वाले हर भेड़ की पीठ को संभाला, फिर भी, सोचने में धीमे होने के कारण, वह यह नहीं समझ पाया कि मेरे आदमी उनकी ऊनी छाती के नीचे छिपे हुए थे। जब झुंड का आखिरी मेढ़ा बाहर निकला, तो उसका मोटा ऊन मेरे वजन से भारी था, और मैं भी। व्याकुल विचारों से घिरे हुए, उसने अपनी पीठ को छुआ,
और इस प्रकार विशालकाय पॉलीफेमस ने कहा:—
“मेरे प्रिय मेढ़े, अब तुम गुफा से निकलने वाले अंतिम क्यों हो? भेड़ों को पहले जाने देना तुम्हारी आदत नहीं थी, बल्कि तुम फूलों वाली घास में चरने के लिए सबसे पहले आते थे, शान से कदम रखते हुए चलते थे, और ताजे पानी के झरने पर सबसे पहले पहुँचते थे, और शाम को सबसे पहले अस्तबल की तलाश में जाते थे; अब तुम सबसे आखिरी हो। क्या तुम अपने स्वामी के लिए शोक करते हो, जिसने अपनी आँख खो दी है, जो एक धोखेबाज दुष्ट और उसके नीच साथियों ने निकाल दी है, जिन्होंने मुझे सबसे पहले शराब पिलाकर बेहोश कर दिया था—यह नोमन—जो, अगर सही है तो मैं मान लो, वह मृत्यु से नहीं बच पाया है। हे, क्या तू भी मेरी तरह सोचता, और अगर तुझे बोलने की शक्ति होती, तो मुझे बता पाता कि वह मेरी ताकतवर भुजाओं से कहाँ छिपा है? तब उसका मस्तिष्क, ज़मीन पर बिखरकर, इधर-उधर फैल जाता; तब मेरा हृदय कुछ हल्का हो जाता, उन विपत्तियों के बीच भी जो उस निकम्मे नोमान ने मुझ पर लाई हैं!
“उसने कहा और उसे बाकियों के बीच भेज दिया; और जब हम गुफा और आंगन से थोड़ा आगे निकल गए, तो मैंने जानवर पर अपनी पकड़ ढीली कर दी और अपने आदमियों को खोल दिया। फिर हमने जल्दी से घेर लिया और मोटी और शान से चलने वाली भेड़ों का एक बड़ा झुंड भगा दिया, और उन्हें अपने जहाज पर ले आए, जहाँ हमारे

दोस्तों ने खुशी से हमारा स्वागत किया, हालाँकि जो लोग मारे गए थे उनके लिए उनके मन में दुख और आँसू थे। फिर भी मैंने उन्हें रोने नहीं दिया, बल्कि गुस्से से इशारों से आदेश दिया कि सुंदर ऊन वाली भेड़ों को जल्दी से जहाज पर चढ़ाया जाए और हमारे जहाज को खारे समुद्र में उतारा जाए।” वे जहाज पर सवार हुए, जहाँ प्रत्येक ने बेंचों पर अपना स्थान ग्रहण किया, और लगन से चप्पू चलाते हुए गहरे समुद्र में प्रहार किया; और जब हम इतनी दूर पहुँच गए कि किनारे पर खड़े किसी व्यक्ति की चीख सुनाई दे सकती थी, तब मैंने साइक्लोप्स को ताना मारते हुए कहा: “हा! साइक्लोप्स! जिन्हें तूने अपनी पथरीली गुफा में अपने क्रूर क्रोध में निगल लिया, वे युद्ध में निपुण मेरे मित्र थे; तेरे अपने ही कर्मों का फल तुझे भरपूर मिला है। निर्दयी! जिसने अपने घर की छत के नीचे शरण लिए अजनबियों को खाने से नहीं डरा, बृहस्पति और अन्य देवता इस प्रकार उनका बदला लेंगे।
मैंने कहा; उसके हृदय में क्रोध और भी उग्र हो गया। उसने एक पर्वत शिखर से उसका शिखर तोड़कर हमारी नाव के पास फेंक दिया, जहाँ वह लगभग पतवार को छू गया। चट्टान पानी में बहुत ऊँची उछली जहाँ वह गिरी, और लौटती लहर हमें वापस किनारे की ओर ले गई। मैंने एक लंबी डंडी वाली पाइक पकड़ी और उसे किनारे से दूर धकेल दिया, जिससे नाविकों को अपनी चप्पूओं को पूरी ताकत से चलाने और बच निकलने के लिए प्रोत्साहन मिला। मैंने सिर हिलाकर इशारा किया। नाविकों ने पूरी ताकत से चप्पू चलाना शुरू कर दिया, जब तक कि हम समुद्र में बहुत दूर नहीं निकल गए। भूमि
जैसा कि मैंने पहले कहा था, और फिर
मैंने साइक्लोप्स को चिल्लाकर पुकारा, हालाँकि मेरे दल ने
विनती भरे शब्दों से इसे रोकने का प्रयास किया,
और पहले एक आदमी ने और फिर दूसरे ने कहा:—
“हे सबसे मूर्ख! उस बर्बर व्यक्ति को क्रोधित क्यों कर रहे हो—जिसने अभी- अभी अपना वज्र समुद्र में फेंका है, और हमें उस भूमि की ओर धकेल दिया है जहाँ हम लगभग मर ही गए थे? यदि वह हमारी एक चीख या एक शब्द भी सुन ले, तो वह हमारे सिर कुचलने के लिए एक पत्थर फेंकेगा और हमारे जहाज को नष्ट कर देगा, उसका वज्र इतना घातक है।”
“उसने बात तो की, पर मेरे साहसी हृदय को कोई फर्क नहीं पड़ा;
और फिर मैंने गुस्से में दोबारा कहा:—

“ ‘साइक्लोप्स, यदि कोई भी नश्वर मनुष्य
तुम्हारी इस अशोभनीय अंधता को देखे और इसका कारण पूछे, तो उसे बताना कि लार्टेस का पुत्र,
यूलिसिस, किलेबंद नगरों का विनाशक,
जिसका घर इथाका है, तुम्हारी आँख निकाल दे।’
“मैंने कहा; उसने विलाप भरी आवाज़ में उत्तर दिया:—
‘अब, हाय मुझ पर! मेरे विषय में प्राचीन भविष्यवाणियाँ
सच हो गई हैं। यहाँ
टेलेमस यूरिमिडेस नामक एक द्रष्टा रहता था,
महान, नेक और भविष्यवाणी में विख्यात,
और भविष्यवाणी करते-करते वह
साइक्लोप्स के बीच बूढ़ा हो गया। उसने मेरे आने वाले भाग्य की भविष्यवाणी की—
कि मैं अपनी दृष्टि खो दूँगा, और यूलिसिस के हाथों
और उसकी चालाकी से। फिर भी मैं
एक महान व्यक्तित्व, अपार शक्ति,
और विशाल कद वाले व्यक्ति की हमारे तट पर उतरने की प्रतीक्षा कर रहा था। अब मैं एक मात्र कमज़ोर हूँ, तुच्छ
और छोटे कद के, उसने मेरी आँख निकाल दी,
पहले मुझे शराब पिलाकर बेहोश कर दिया। फिर भी, हे यूलिसिस, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम इधर आओ और अपने योग्य आतिथ्य सत्कार के उपहार ग्रहण करो; और मैं नेपच्यून से प्रार्थना करूँगा, और सर्वशक्तिमान देवता से विनती करूँगा कि वह तुम्हें सुरक्षित घर पहुँचाए।
मैं उसका पुत्र हूँ, और वह स्वयं को मेरा पिता बताता है। यदि वह चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है,
और सभी अमर देवताओं में से कोई भी
या नश्वर मनुष्य मुझे मेरी दृष्टि वापस नहीं दे सकता।
“उसने कहा; मैंने उत्तर दिया: ‘मैं तो तेरा जीवन और श्वास छीनकर तुझे पाताल लोक भेज दूँगा, जहाँ तेरी आँख को ठीक करना नेपच्यून की शक्ति से भी परे हो जाएगा।’”

“जैसा मैंने कहा, साइक्लोप्स ने अपने हाथ उठाए,
और उन्हें तारों भरे आकाश की ओर फैलाया, और इस प्रकार
गहरे आकाश पर शासन करने वाले देवता से प्रार्थना की:—
“ ‘हे काले बालों वाले नेपच्यून, जो पृथ्वी को घेरे हुए हैं! यदि मैं तुम्हारा हूँ, और तुम स्वयं को स्वीकार करते हो, मेरे पिता, कृपा करो कि यह यूलिसिस कभी भी अपनी जन्मभूमि न पहुँच पाए! परन्तु यदि यह भाग्य की इच्छा हो कि वह अपने मित्रों को फिर से देखे, और अपने महल में प्रवेश करे, अपने देश में, देर से और दुःखपूर्ण वापसी हो, अपने सभी साथियों को खोकर, और एक उधार के जहाज में, और अपने घर में नए दुःख उसका इंतजार कर रहे हों।’
“उसने प्रार्थना की, और नेपच्यून ने उसकी प्रार्थना सुन ली।
फिर साइक्लोप्स ने एक और पत्थर उठाया,
जो पिछले वाले से कहीं बड़ा था, और उसे घुमाकर,
विशाल शक्ति से फेंक दिया। वह हमारे काले रंग के आगे वाले जहाज के पीछे गिरा, जहाँ वह लगभग पतवार के सिरे से टकरा गया। गिरते हुए पत्थर के नीचे समुद्र में ऊंची लहरें उठीं, और हमारे जहाज को उस किनारे की ओर ले गईं जिसकी हम तलाश कर रहे थे। जब हम उस द्वीप पर पहुँचे जहाँ हमारे अन्य जहाज एक साथ खड़े थे, तो हमने अपने दोस्तों को वहाँ बैठे पाया जहाँ वे लंबे समय से शोक में प्रतीक्षा कर रहे थे।
हमने किनारे को छुआ और अपने मैंने नाव को चिकनी रेत पर चढ़ाया और समुद्र तट पर कदम रखा; और जहाज पर मौजूद भेड़ों में से, जो साइक्लोप्स के झुंड का हिस्सा थीं, उन्हें बाँट दिया, ताकि किसी को भी बराबर हिस्सा मिले। जब बाकी सभी को बाँट दिया गया, तो मेरे योद्धा मित्रों ने मेमने को मुझे दे दिया। मैंने उसका मेमना समुद्र तट पर बृहस्पति को बलि चढ़ाया, जो बादलों को नियंत्रित करने वाला शनि का पुत्र है, जिसका शासन सर्वव्यापी है; मैंने उसकी जांघें जला दीं। उसने भेंट पर ध्यान नहीं दिया; तब भी उसने मेरे सभी वीर जहाजों को नष्ट करने और मेरे सभी सैनिकों की मृत्यु की योजना बनाई। प्रिय साथियों। उस पूरे दिन, सूर्यास्त तक, हम बैठे रहे और भरपूर भोजन और उत्तम शराब का आनंद लिया। लेकिन जब सूरज डूब गया और अंधेरा धरती पर छा गया, तो हम किनारे पर सो गए; और जब भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह, फिर से प्रकट हुई, तो मैंने अपने साथियों को प्रसन्नता भरे शब्दों में डेक पर चढ़ने और रस्सियों को खोलने के लिए बुलाया। वे तेज़ी से जहाज पर चढ़े और

बेंचों पर बैठ गए, चप्पू संभाले और उनसे गहरे समुद्र में प्रहार किया।
उदासी में आगे बढ़ते हुए, बच निकलने की खुशी में, हम रवाना हुए, फिर भी अपने खोए हुए साथियों के लिए शोक मना रहे थे।

पुस्तक X
एयोलस, लेस्ट्रिगोनियन और सर्क
यूलिसिस का एयोलस की भूमि पर आगमन, जिसने उसे एक थैली में हवाएँ दीं - नाविकों की मूर्खता, जिन्होंने यूलिसिस के सोते समय थैली खोल दी - एक भीषण तूफान - विशालकाय लेस्ट्रिगन्स के साथ विनाशकारी मुठभेड़ - सर्क द्वीप पर आगमन - यूनानियों का सूअरों में रूपांतरण और फिर से अपने पूर्व रूप में लौटना - मृतकों के लोक की यात्रा की तैयारी।
“हम एओलियन द्वीप पर पहुँचे, जहाँ देवताओं के प्रिय, हिप्पोटस के पुत्र एओलस ने अपना निवास स्थान बनाया था। यह एक तैरता हुआ द्वीप था; पीतल की दीवार से घिरा हुआ था, और चिकनी चट्टानों से घिरा हुआ था। उसके महल में बारह बच्चे पैदा हुए, छह बेटियाँ और छह सुंदर पुत्र; उसने अपनी बेटियों को अपने पुत्रों से विवाह के लिए दे दिया। और वे अपने प्रिय पिता और उनकी रानी के साथ प्रतिदिन भोज करते थे, जिसमें उनके सामने विभिन्न प्रकार के मांस परोसे जाते थे। उसके महल में दिन भर बांसुरी की ध्वनि सुगंधित हवा में गूंजती रहती थी; रात में युवक अपनी विनम्र पत्नियों के बगल में
सुंदर सोफों पर सोए हुए, जिन पर कालीन बिछे थे।
इस प्रकार उनके नगर और सुंदर निवास पर आकर,
मुझे एक सौहार्दपूर्ण स्वागत मिला। पूरे एक महीने तक राजा ने मुझे अपने साथ रखा, और पूछताछ की
ट्रॉय के भाग्य,
आर्गिव बेड़े और ग्रीस वापसी से संबंधित सभी बातों के बारे में,
और जैसे-जैसे घटनाएँ घटीं, मैंने उन्हें सब कुछ बताया।
और जब मैंने उनसे वहाँ से जाने की बात की,
और उनसे मुझे विदा करने की प्रार्थना की, तो उन्होंने मान लिया,
और हमें समुद्र के लिए तैयार करने में मदद की।
नौ साल के बैल का मूत्राशय
उसने हमें एक बंधन दिया, जिसमें उसने तूफानी हवाओं को संकुचित और बांध दिया था; क्योंकि शनि के पुत्र ने उसे हवाओं पर प्रभुत्व दिया था, और उन्हें अपनी इच्छा से शांत या उत्तेजित करने की शक्ति दी थी। उसने हमारी विशाल नाव में इसे चांदी की एक चमकदार जंजीर से बांध दिया, ताकि कोई भी तेज

हवा अंदर न आ सके। उसने केवल पश्चिमी हवा को हमारे जहाजों और हमें हमारे रास्ते पर ले जाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। लेकिन ऐसा नहीं होना था; हम अपनी ही मूर्खता के कारण नष्ट हो गए।
नौ दिनों तक हम दिन-रात डटे रहे; और दसवीं रात को हमारे अपने खेत नज़र आने लगे, जहाँ किनारे पर हमने आदमियों को आग जलाते देखा। इसी बीच, मेरे थके हुए शरीर को सुकून भरी नींद आ गई, क्योंकि लंबे समय से मैं लगातार मेहनत से पतवार संभाल रहा था, और इसे किसी और के हाथों में नहीं सौंपना चाहता था, मेरी यही इच्छा थी कि मैं सबसे छोटे रास्ते से अपने देश पहुँचूँ। फिर मेरे दल ने आपस में बात की और कहा कि मैं हिप्पोटस के उदार पुत्र, ऐओलस से अपने साथ बहुमूल्य उपहार लाया हूँ। सोने और चांदी के। वे एक दूसरे के बगल में खड़े थे और एक दूसरे को देखते हुए उन्होंने कहा:—
“ ‘हमारा सरदार कितना अद्भुत है, आदरणीय और सभी मनुष्यों द्वारा प्रिय, वह जहाँ चाहे विचरण करता है, जिस भी राज्य में! ट्रॉय के तट से वह कई बहुमूल्य वस्तुओं के साथ रवाना हुआ, लूट का अपना हिस्सा लेकर, जबकि हम, जो उसके साथ गए और आए, अभी भी खाली हाथ हैं; और अब एओलस ने, यह दिखाने के लिए कि वह उसे कितना महत्व देता है, यहाँ खजाने रखे हैं। आओ, हम उन्हें देखें; हमें पता चले कि इसमें कितना सोना और चांदी छिपा है।’
“इस प्रकार आपस में बातें करते हुए, उन्होंने उस बुरी सलाह का पालन किया। उन्होंने बोरी खोली, और तुरंत हवाएँ दौड़ पड़ीं और जहाज़ को पकड़ लिया, और विलाप करते हुए चालक दल को उनके देश से बहुत दूर गहरे समुद्र में बहा ले गईं; और फिर मैं जागा, और अपने नेक मन में सोचा कि क्या मुझे तुरंत गहरे समुद्र में गिरकर मर जाना चाहिए, या चुपचाप सहन करते हुए जीवितों के बीच अपना स्थान बनाए रखना चाहिए। मैं रुका रहा, सहन किया, और अपने लबादे से ढका हुआ अपनी नाव में लेटा रहा, जबकि भयंकर बवंडर मुझे वापस ले गया... एओलियन द्वीप, हमारे कराहते हुए दल।
“हम तट पर उतरे और अपनी नौकाओं में पानी लाए। फिर मेरे आदमियों ने बेड़े के पास भोजन तैयार किया; और भोजन और शराब का स्वाद चखने के बाद, मैंने एक दूत और एक मित्र को साथ लिया, और ऐओलस के भव्य महल में जल्दी से पहुँचा, जहाँ मैंने उसे उसकी पत्नी और बच्चों के साथ भोज करते हुए पाया। हम महल के द्वार की दहलीज पर बैठ गए, और वे सब चकित रह गए और पूछने लगे:—

“ ‘तुम यहाँ क्यों हो? हे यूलिसिस! तुम्हारा शत्रु कौन सा देवता तुम्हारा पीछा कर रहा है? जिसे हमने तुम्हारी जन्मभूमि, तुम्हारे घर या तुम्हारी मनपसंद किसी भी जगह तक पहुँचने के लिए इतनी अच्छी तैयारी के साथ भेजा था?’ “उन्होंने कहा, और मैंने दुखी होकर उत्तर दिया:— ‘सारा दोष मेरे नासमझ दल का है
और मेरी अपनी दुर्भाग्यपूर्ण नींद का। फिर भी, मेरे मित्रों,
इस गड़बड़ी को सुधारें, क्योंकि आपमें शक्ति है।’
“इस प्रकार मैंने विनम्रतापूर्वक शब्द कहे, परन्तु वे मौन बैठे रहे, पिता ने केवल इतना ही उत्तर दिया:—
“यहाँ से चले जाओ! हमारे द्वीप को तुरंत छोड़ दो, हे सबसे नीच मनुष्य! यह ठीक नहीं होगा कि मैं उसके जाने पर उसका स्वागत करूँ या उसकी सहायता करूँ, जो देवताओं द्वारा घृणा किया जाता है— और तुम देवताओं द्वारा घृणा किए जाते हो। चले जाओ!”
“उसने कहा और हमें महल के द्वार से विलाप करते हुए विदा कर दिया। हम दुखी मन से आगे बढ़े। और अब कठिन और लंबे समय तक चप्पू चलाने से—जो हमारी अपनी मूर्खता का फल था—हमारे सभी दल निराश हो गए, और सुरक्षित वापसी की सारी आशा समाप्त हो गई।”
“हम छह दिन और छह रातें नाव से यात्रा करते रहे; सातवीं रात हम विशाल द्वारों वाले ऊँचे लेस्ट्रिगोनी शहर में पहुँचे, लामोस नगर में, जहाँ से निकलते ही चरवाहा अंदर आने वाले चरवाहे को पुकारता है। वहाँ एक ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो कभी नींद के आगे न झुके, दुगनी कमाई कर सकता है, पहले पशुओं को चराकर, और फिर भेड़ों की देखभाल करके; क्योंकि वहाँ दिन में चराए जाने वाले खेत रात में दूसरों द्वारा चराए जाते हैं। हम उसके भव्य बंदरगाह पर पहुँचे, जो चारों ओर से उठती हुई ऊँची चट्टानों से घिरा हुआ है, और उसके किनारे संकरे प्रवेश द्वार का निर्माण करते हैं। वहाँ... अन्य दल
अपनी नौकाओं को तैनात करते हैं, और उन्हें एक दूसरे के करीब, उस पहाड़ी से घिरे बंदरगाह में बांध देते हैं।
वहाँ कोई लहर, यहाँ तक कि छोटी भी नहीं उठती;
पानी शाश्वत शांति से जगमगाता है।
मैंने केवल अपने गहरे रंग के पतवार वाले जहाज को बाहर रखा,
और उसके केबल को एक उभरी हुई चट्टान से बांध दिया।

“मैं एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी पर चढ़ा और आगे देखा। खेती के कोई निशान नहीं दिखे, न ही मनुष्यों या बैलों के काम के, केवल नीचे से उठता हुआ धुआँ हवा में था। फिर मैंने जासूस भेजे यह जानने के लिए कि रोटी पर जीने वाले मनुष्यों की कौन सी जाति इस भूमि पर निवास करती है। मैंने दो चुने हुए पुरुषों को भेजा, तीसरे को एक दूत बनाया; और ये एक समतल रास्ते से भीतर की ओर गए, जिस पर गाड़ियाँ घने जंगलों से शहर में ईंधन लाती थीं। रास्ते में वे शहर के सामने एक सुराही लिए एक युवती से मिले— जो एक भव्य पुत्री थी। लेस्ट्रिगोनी वंश का राजा, एंटीफेट्स, नीचे आ रहा था जहाँ आर्टेशिया का सुचारु जलस्रोत नगरी को जल देता था। वे पास पहुँचे और उससे पूछा कि वहाँ का शासक कौन है और उसकी प्रजा कौन है। उसने तुरंत अपने पिता के निवास स्थान, एक भव्य भवन की ओर इशारा किया। वे उस आलीशान महल में प्रवेश कर गए और वहाँ पर्वत शिखर के समान ऊँची, राजा की पत्नी को देखकर कंपकंपी छूट गई। उसने बड़ी शीघ्रता से अपने पति, राजा एंटीफेट्स को सभा से बुलाया। उसने हत्या के इरादे से अपने पति को बुलाया। वह आया और मेरे एक बेचारे दोस्त को पकड़कर उसे निगल गया, जबकि बाकी दो अचानक भाग निकले और जहाजों तक पहुँच गए। फिर उसने एक भयानक चीख मारी जो पूरे शहर में गूंज उठी। ताकतवर लैस्ट्रिगन्स हजारों की संख्या में चारों ओर से टूट पड़े, आम आदमियों की बजाय दानवों जैसे लग रहे थे। उन्होंने ऊपर की चट्टानों से भारी-भरकम पत्थर फेंके, और मरने वालों की चीखें और टूटे हुए जहाजों के गिरने की आवाजें गूँज उठीं। उन्होंने हमारे दोस्तों को अपनी भयानक दावतों के लिए मछलियों की तरह भाले से मार डाला, और इस तरह उन्हें ले गए। दूर। जब बंदरगाह के भीतर के लोग मारे जा रहे थे, मैंने अपनी अच्छी तलवार निकाली और अपने जहाज के नीले अग्रभाग से बंधी रस्सियों को काट डाला, और अपने आदमियों का हौसला बढ़ाया, और उन्हें चप्पू पर कूदने का आदेश दिया, ताकि हम अपने खतरे से बच सकें। उन्होंने सुना, और अपने चप्पू ऐसे चलाए जैसे जान बचाने के लिए नाव चला रहे हों। गैली इन चट्टानों से खुशी-खुशी समुद्र में निकल पड़ी; बाकी सभी वहीं नष्ट हो गए।
“हम आगे बढ़ते रहे, हमारे दिलों में अपने खोए हुए दोस्तों के लिए दुख था, हालाँकि मृत्यु से मुक्ति पाकर हम प्रसन्न थे। और अब हम एक द्वीप पर उतरे — एईया, जहाँ सुनहरे बालों वाली सर्क रहती थी, एक उच्च पदस्थ और गीत में निपुण देवी, बुद्धिमान एईटेस की सगी बहन। दोनों प्रकाश के स्रोत, सूर्य की

संतान थीं, और सागर की पुत्री पर्स ने उन्हें जन्म दिया था। हमें यहाँ एक आश्रय मिला, जहाँ जहाज़ खड़े हो सकते थे; और किसी देवता के मार्गदर्शन में हम चुपचाप अपनी नाव को किनारे पर ले आए, और उतर गए, और दो दिन और रातें आराम करने के लिए दीं, कठिनाई और दुःख से रहित।
जब सुनहरे बालों वाली सुबह ने तीसरा दिन लाया, तो मैंने अपना भाला और अपनी अच्छी तलवार ली, और जहाज छोड़कर एक ऊँचाई पर चढ़ गया, इस उम्मीद में कि मुझे मानवीय परिश्रम का कोई निशान दिखाई दे या कोई आवाज़ सुनाई दे। एक खड़ी चट्टान पर खड़ा होकर मैंने देखा कि नीचे फैली धरती से धुआँ उठ रहा है, जहाँ घने जंगलों के बीच सर्कस का महल खड़ा है। उस काले धुएँ को देखकर मेरे मन में विचार आया कि मुझे वहाँ पूछताछ करनी चाहिए। मैंने तब तक सोचा जब तक कि अंत में मुझे यही सबसे बुद्धिमानी भरा लगा—कि मैं तुरंत समुद्र तट पर स्थित अपने अच्छे जहाज पर लौट जाऊँ। और मैंने अपने दल को उनका भोजन दिया, और उन्हें आगे भेजा, ताकि वे उस क्षेत्र का अवलोकन कर सकें। उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ मेरी सुसज्जित नाव खड़ी थी, किसी दयालु देवता ने, जिसकी दृष्टि में मैं अकेला भटक रहा था, मेरे रास्ते में एक विशाल हिरण भेज दिया, जिसके सींग ऊँचे थे। वह जंगल में अपने चरागाह से नदी किनारे पानी पीने आया था, क्योंकि उसे तेज़ धूप की गर्मी लग रही थी। भागते हुए मैंने उस पर प्रहार किया; हथियार ने उसकी रीढ़ की हड्डी के ठीक बीचोंबीच वार किया। पीतल की तलवार आर-पार हो गई, और चाँद के साथ वह धूल में गिर पड़ा और उसने अपनी प्राण शक्ति त्याग दी। मैं उसके पास गया और अपना पैर उसके विरुद्ध रखा और पीतल का भाला निकाल लिया और उसे वहीं टिका दिया। फिर मैंने झाड़ियों से लचीली बेंतें तोड़ीं और उनसे एक रस्सी बनाई, जो दोहरी होकर एक हाथ लंबी हो गई। उससे मैंने उस विशालकाय प्राणी के पैर बांधे और उसे अपनी गर्दन पर लादकर अपने काले जहाज तक ले आया। मैंने भाले का सहारा लेकर अपने कदम बढ़ाए, क्योंकि अब उसे कंधे पर हाथ से उठाना संभव नहीं था। जानवर का आकार इतना बड़ा था। मैंने उसे जहाज के सामने फेंक दिया, अपने आदमियों को उत्साहवर्धक शब्दों से प्रोत्साहित करते हुए, और मैंने उनमें से प्रत्येक से इस प्रकार कहा:
“मेरे मित्रों, हम अपनी दयनीय स्थिति में भी, समय से पहले प्लूटो के लोक में नहीं जाएँगे। जब तक हमारे अच्छे जहाज में भोजन और शराब मौजूद हैं, तब

तक हमें अपने दैनिक भोजन और अकाल से पीड़ित चीड़ के पेड़ों को नहीं भूलना चाहिए।”
“मैंने कहा; वे सब आज्ञाकारी हो गए, और मेरे कहने पर
बाहर आए, और बंजर गहरे समुद्र के किनारे खड़े होकर
हिरण की प्रशंसा करने लगे, क्योंकि वह विशालकाय था;
और जब उनकी आँखें आश्चर्य से थक गईं,
मेरे लोगों ने अपने हाथ धोए, और शीघ्र ही
एक भव्य भोज तैयार कर लिया। उस पूरे दिन
सूर्यास्त तक हम वहाँ बैठे रहे और प्रचुर मात्रा में मांस और उत्तम मदिरा का आनंद लिया;
और जब सूर्य अस्त हो गया, और अंधेरा छा गया,
हम किनारे पर सो गए। लेकिन जब सुबह,
भोर की गुलाबी उंगलियों वाली संतान, प्रकट हुई,
मैंने अपने आदमियों की एक सभा बुलाई और बोला:—
“मेरे मित्रों, अपने कष्टों के बीच, मेरी बातों को ध्यान से सुनो। हम यहाँ नहीं जान सकते कि पश्चिम किधर है, न ही पूरब कहाँ है, न ही वह सूर्य, जो समस्त मानवजाति के लिए प्रकाशमान है, पृथ्वी के नीचे कहाँ उतरता है, न ही वह कहाँ से उदय होता है। फिर भी हम परामर्श करेंगे, यदि परामर्श के लिए स्थान हो—जिस पर मुझे संदेह है, क्योंकि जब मैं उस ऊँचाई पर चढ़ा तो मैंने एक द्वीप को देखा जो असीम गहराई से घिरा हुआ था—एक नीचा द्वीप। बीच में मैंने देखा कि जंगल की झाड़ियों से धुआँ उठ रहा है।”
मैंने कहा; उनके दिलों में उनका साहस मर गया
क्योंकि उन्हें याद आया कि एंटीफेट्स,
लैस्ट्रिगॉन ने क्या किया था, और नरभक्षी साइक्लोप्स ने क्या घिनौने काम किए थे, और वे जोर-जोर से रोने लगे।
आंसू बहुत बहे, लेकिन अब हमारे इस दुर्भाग्यशाली समूह के लिए उन आंसुओं का कोई फायदा नहीं था।
“मैंने अपने सुसज्जित सैनिकों की गिनती करके उन्हें दो बराबर दलों में बाँटा, और प्रत्येक दल का एक मुखिया नियुक्त किया। मैंने स्वयं एक दल का नेतृत्व किया; वीर यूरीलोचस ने दूसरे दल की कमान संभाली।”

“फिर हमने पीतल के हेलमेट में पर्ची हिलाई;
बहादुर यूरिलोचस की पर्ची निकली,
और वह हमारे बाईस आदमियों के साथ
तेजी से कदम बढ़ाते हुए, और अभी भी आँसू बहाते हुए आगे बढ़ा,
जबकि हम उतने ही दुखी होकर पीछे रह गए।
“उन्होंने वह सुंदर निवास स्थान पाया जहाँ सर्सी रहती थी, घाटी के भीतर तराशे हुए पत्थरों का एक महल, फिर भी भव्य रूप से निर्मित। वहाँ पहाड़ी भेड़िये और शेर थे, जिन्हें सर्सी ने शक्तिशाली औषधियों से वश में कर लिया था; फिर भी इन्होंने आगंतुकों पर हमला नहीं किया, बल्कि अपनी लंबी पूंछ हिलाते हुए, अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गए और उन पर ऐसे प्यार जताने लगे जैसे मास्टिफ कुत्ते अपने मालिक पर, जब वह दावत से लौटकर उनके लिए भोजन लाता है। इसी प्रकार मजबूत पंजों वाले भेड़िये और शेर मेरे आदमियों पर प्यार जताने लगे। मेरे आदमियों ने उन शिकारी जानवरों को भय से देखा।” फिर भी वे गए, और चमकीले बालों वाली देवी के बरामदे में खड़े होकर, उन्होंने उसकी मधुर आवाज में गाते हुए सुना, जैसे भीतर से वह अनंत जाल में शटल चला रही हो, जो देवियों द्वारा बुना जाता है— नाजुक, चमकीले रंग का और सुंदर। “तब पोलाइट्स, जो मेरे सभी साथियों में सबसे प्रिय और सबसे विवेकशील सरदार थे, बोले:—
“ ‘यहाँ कोई है, मेरे मित्रों, जो मधुरता से गाती है, एक विस्तृत जाल बुनती है, और सारा तल उसकी आवाज़ से गूंज उठता है। वह जो भी हो, स्त्री हो या देवी, आइए हम उसे पुकारें।’
“उसने बात की; सबने ज़ोर से पुकारा, और वह बाहर आई और तुरंत चमकते दरवाज़े खोल दिए, और मेरे साथियों को अंदर आने को कहा। बिना सोचे समझे वे उसके पीछे चल दिए। केवल यूरिलोकस बाहर ही रह गया, क्योंकि उसे छल का संदेह था। वह उन्हें अंदर ले गई और सिंहासनों पर बैठा दिया। फिर उसने उनके लिए प्रैम्नियन शराब को पनीर, आटा और ताज़ा शहद के साथ मिलाया, और मिश्रण में औषधियाँ मिलाईं—ऐसी औषधियाँ जिनसे वे अपने घर की स्मृति भूल गए—उसने उन्हें पेय दिया और उन्होंने पी लिया। फिर तुरंत उसने उन्हें एक छड़ी से छुआ और उन्हें बंद कर दिया।” बाड़ों में, सिर और आवाज से सूअरों में परिवर्तित, रोएँ और आकार, फिर भी मानवीय मन उनमें शेष रहा। इस प्रकार दुखी होकर उन्हें उनकी कोठरियों में धकेल दिया गया, जहाँ सर्कस ने उन्हें बलूत

और इलेक्स के बलूत और कॉर्नल के फल दिए, जो लोटपोट होते सूअरों को पोषण देते हैं।
“यूरिलोचस हमारे अच्छे जहाज पर वापस आया
हमारे बेचारे साथियों और उनके भाग्य की खबर लेकर,
उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं सका; वह उस विपत्ति से स्तब्ध था ; उसकी आँखें आँसुओं से भर गई थीं
और उसका पूरा मन शोक में डूब गया था।
हम बहुत आश्चर्यचकित हुए; हमने उससे बहुत देर तक पूछताछ की,
और अंत में उसने हमारे खोए हुए दोस्तों के बारे में इस प्रकार बताया:—
“ ‘उस घने जंगल से होकर, जैसा तुमने आज्ञा दी थी, हे प्रख्यात मुखिया! हम तब तक चलते रहे जब तक हम एक भव्य, तराशे हुए पत्थरों के महल तक नहीं पहुँच गए, जो एक घाटी में स्थित था, फिर भी गरिमामय। वहाँ कोई, देवी या स्त्री, व्यस्तता से एक विशाल जाल बुन रही थी, और बुनते हुए मधुर गीत गा रही थी। मेरे साथियों ने जोर से पुकारा, और वह बाहर आई, और तुरंत चमकदार दरवाजे खोल दिए, और हमें अंदर आने को कहा। बिना सोचे समझे बाकी सब पीछे-पीछे चले गए, जबकि मैं अकेला, छल का संदेह करते हुए, बाहर ही रह गया। मेरे साथी, उस क्षण से, वे फिर कभी दिखाई नहीं दिए; उनमें से एक भी दोबारा सामने नहीं आया, हालांकि मैं बहुत देर तक बैठकर उनकी प्रतीक्षा करता रहा।
“उसने कहा; मैंने अपनी चांदी जड़ी तलवार
अपने कंधों पर टांग ली—पीतल का एक विशाल ब्लेड—
और उसके साथ अपना धनुष भी, और उसे
आगे चलने का आदेश दिया। उसने मेरे घुटनों को पकड़ लिया और प्रार्थना की मुद्रा में अपने दोनों हाथों से
थाम लिया,
और दुख से ये पंखदार शब्द कहे:—
“मुझे वहाँ मत ले जाओ; मुझे जाने के लिए मजबूर मत करो, हे बृहस्पति के पालक पुत्र! मुझे यहीं छोड़ दो; क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम वापस नहीं लौटोगे, और न ही हमारे खोए हुए मित्रों में से किसी एक को बचाओगे। हमारा कर्तव्य है कि हम बचे हुए लोगों के साथ तुरंत भाग निकलें और बच निकलें।”

“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘यूरिलोचस, तुम यहीं हमारे विशाल जहाज के पास रहो, खाते-पीते रहो। मैं अवश्य जाऊंगा। मुझ पर एक बहुत बड़ी आवश्यकता है।’”
“मैंने कहा, और जहाज और किनारे से ऊपर द्वीप की ओर चली गई; और जब मैंने खुद को उस भयानक घाटी में पाया, और जादूगरनी सिरसे के निवास स्थान वाले विशाल महल से कुछ ही दूरी पर, रास्ते में मुझे एक युवक मिला; वह जवानी की शुरुआत में लग रहा था, जब जवानी में सबसे ज्यादा आकर्षण होता है। उसने मेरा हाथ पकड़ा और थामे रखा, और मुझसे बात करते हुए कहने लगा:—
“हे उतावले इंसान! तू इस तरह कहाँ भटक रहा है? पहाड़ियों के बीच अकेला, जहाँ हर जगह तेरे लिए अनजान है? तेरे साथी सर्क के महल में सूअरों की तरह तंग कोठरियों में बंद हैं। क्या तू उन्हें आज़ाद करने आया है? नहीं, तू भी उन्हीं की तरह यहीं रहना चाहेगा। मैं तुझे उस विपत्ति से बचाने का उपाय बताता हूँ। इस शक्तिशाली जड़ी बूटी को ले ले, और इसे सर्क के महल में ले जा, और यह तुझ पर आने वाली विपत्ति को दूर कर देगी। अब मैं खुलासा करता हूँ।” सर्से की कपटपूर्ण कलाएँ। वह तुम्हारे लिए एक मिश्रित पेय लाएगी और कटोरे में मादक पदार्थ मिलाएगी, लेकिन तुम्हें इस प्रकार हानि नहीं पहुँचाएगी; वह पुण्यकारी पौधा जो मैंने तुम्हें दिया है, उसे रोक देगा। और सुनो: जब वह तुम्हें अपनी छड़ी से मारे, तो अपनी जांघ से अपनी अच्छी तलवार निकालो और उस पर ऐसे झपटो मानो उसकी जान लेने के लिए, और वह डर से दुबक जाएगी और तुम्हें गले लगाने की विनती करेगी। उसे मना मत करो, ताकि वह तुम्हारे साथियों को मुक्त न कर दे और तुम्हें भी तुम्हारे देश वापस न भेज दे; लेकिन सबसे पहले वह पवित्र शपथ लेती है जो धन्य देवताओं को बांधती है, कि वह तुम्हें कोई और हानि नहीं पहुंचाएगी, और न ही तुम्हारी मर्दाना शक्ति छीनेगी। “आर्गस-क्वेलर ने कहा, और धरती से शक्तिशाली पौधा उखाड़कर मुझे दे दिया, और मुझे उसकी सारी शक्तियाँ सिखा दीं। उसकी जड़ काली है, और फूल दूध की तरह सफेद है। देवताओं में उसका नाम मोली है; मनुष्यों के लिए उसे खोदना कठिन है; देवताओं को कुछ भी कठिन नहीं लगता।”
“जंगल वाले द्वीप से होते हुए हर्मेस ऊंचे ओलंपस की ओर चला गया, जबकि मैं धड़कते दिल के साथ सर्सी के महलों की ओर चल पड़ा। वहाँ, जब मैं उस सुनहरे बालों वाली देवी के बरामदे के नीचे खड़ा था, तो मैंने ज़ोर से पुकारा; देवी ने मेरी आवाज़ सुनी और आईं, और तुरंत अपने चमकदार दरवाज़े खोल दिए, और मुझे

अंदर आने के लिए कहा। मैं उनके पीछे गया, अभी भी दुखी था। उन्होंने मुझे अंदर ले जाकर चांदी जड़े सिंहासन पर बैठाया, जो सुंदर और भव्य था, और उसके नीचे एक पायदान रखा, और मुझे तैयार किया। एक मिश्रित पेय, एक सुनहरे प्याले में, और उसमें एक दुष्ट इरादे से मादक पदार्थ मिलाया गया था। उसने मुझे प्याला दिया; मैंने उसे पी लिया; जादू का कोई असर नहीं हुआ, और फिर उसने मुझे अपनी छड़ी से मारा और कहा:— ‘जाओ सूअरखाने में, और अपने साथियों के साथ लेट जाओ।’
“उसने कुछ कहा; लेकिन अपनी भरोसेमंद तलवार निकालकर, मैंने उसे अपनी जांघ पर रखकर उस पर ऐसे झपट्टा मारा मानो उसकी जान लेने के लिए। वह चीखी और झुककर मेरी बांह के नीचे से निकलकर मेरे घुटनों को पकड़ लिया और दयनीय स्वर में ये शब्द कहे:— “ ‘तुम कौन हो? किस जाति और किस देश के हो? और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? मैं यह देखकर अचंभित हूँ कि तुमने वह जादुई रस पी लिया और उसकी शक्ति के आगे नहीं झुके। कोई भी जीवित व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, जिसने एक बार उन औषधियों का स्वाद चखा हो या उन्हें अपने होठों से छुआ हो, उनका सामना नहीं कर पाया है। तेरे हृदय में एक ऐसी आत्मा निवास करती है जिसे इस प्रकार वश में नहीं किया जा सकता। क्या तू वही यूलिसिस नहीं है, जो बुद्धिमान रणनीतियों का स्वामी है, जिसके ट्रॉय से यहाँ आने की भविष्यवाणी, अपनी काली नाव में, स्वर्ण छड़ी वाले हेमीज़ ने कई बार की है? परन्तु अपनी तलवार म्यान में रखो और मेरे साथ पल बिताओ, ताकि प्रेम में बंध कर, भविष्य में एक दूसरे के विश्वास पर भरोसा कर सकें।
“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘हे सर्सी, तुम मुझसे यह कैसे कह सकती हो कि मैं तुम्हारे साथ नरमी से पेश आऊँ, जबकि तुमने अपने महल में मेरे मित्रों को सूअर बना दिया है, और अब भी मुझे अपने पास रखने की साजिश रच रही हो, मुझे अपने कमरे में आने और तुम्हारे पलंग पर सोने के लिए लुभा रही हो, ताकि तुम मेरी मर्दाना शक्ति छीन सको। मैं तुम्हारे पलंग पर तब तक नहीं आऊँगा जब तक तुम, हे देवी, एक गंभीर शपथ लेकर यह वादा न करो कि तुम मुझे फिर कभी हानि पहुँचाने का प्रयास नहीं करोगी।’
“मैंने कहा; उसने तुरंत अपेक्षित शपथ ली, और शपथ के उच्चारण और पुष्टि के बाद, मैं उसके आलीशान पलंग पर चला गया। इस बीच, चार मेहनती दासियाँ महल में सेवा कर रही थीं—वे महल की सेविकाएँ थीं, जिनका जन्म झरनों और उपवनों से हुआ था, और पवित्र नदियों से जो समुद्र में बहती थीं। एक ने सिंहासनों को

भव्य आवरणों से सजाया; ऊपर बैंगनी रंग का पर्दा था, और नीचे सूती कपड़े के जाल थे; दूसरी ने सिंहासनों के ठीक सामने चाँदी की मेजें रखीं, और उन पर सोने के डिब्बे रखे; तीसरी ने उसने चांदी के कटोरे में उत्तम मदिरा मिलाई, और सोने के प्याले रखे; और अंत में, चौथी ने फव्वारे से पानी लाया, और नीचे एक विशाल तिपाई पर बड़ी आग जलाई और पानी को गर्म किया। जब पानी चमकते पीतल के भीतर उबलने लगा, तो वह मुझे स्नानघर ले गई और तिपाई से मुझे धोया। मेरे सिर और कंधों पर उसने सुखपूर्वक आँसू बहाए, जिससे मेरे शरीर से थकान और सुस्ती दूर हो गई। और जब उसने मुझे इस प्रकार स्नान कराया और तेल से अभिषेक किया, तो उसने एक शाही मुकुट पहनाया। मुझे लबादा और कुर्ता पहनाकर, अंदर ले जाया गया और मेरी गद्दी दिखाई गई—एक भव्य चांदी जड़ा सिंहासन, उच्च कोटि की कारीगरी से बना—और मेरे पैरों के लिए एक पायदान रखा गया। फिर एक दासी सोने का सुराही लेकर आई, और उसमें से मेरे हाथों के लिए शुद्ध जल चांदी के पात्र में डाला। इसके बाद उसने मेरे पास एक पॉलिश की हुई मेज रखी, जिस पर महल की मालकिन ने दावत सजाई, अपने भंडार से कई स्वादिष्ट व्यंजन परोसे, और मुझे खाने के लिए कहा। मुझे वह भोज पसंद नहीं आया। मेरे विचार कहीं और थे; अंधकारमय कल्पनाएँ।
मेरे मन में थे। जब सर्क ने मेरी मनोदशा को चिह्नित किया।
जैसे मैं एक उदास दिवास्वप्न में बैठा था,
और दावत को छूने के लिए अपने हाथ नहीं बढ़ा रहा था,
वह मेरे पास आई और उसने ये पंखदार शब्द कहे:—
“ ‘यूलिसिस, तुम क्यों ऐसे बैठे हो जैसे तुम्हारे पास बोलने की शक्ति ही न हो, तुम अपने हृदय को कुतरने वाले विचारों में डूबे हो, न भोजन का स्वाद चख रहे हो और न शराब का? क्या तुम अब भी धोखे का सपना देख रहे हो? यह अच्छा नहीं है कि तुम अब भी इससे डरते रहो, क्योंकि मैंने इसके विरुद्ध एक शक्तिशाली शपथ ली है।’
“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘जिस मनुष्य का हृदय निष्ठावान हो, वह अपने बंदी मित्रों को एक बार फिर मुक्त देखने से पहले भोजन या शराब का स्वाद कैसे सहन कर सकता है? यदि तू मुझे दयालुता से खाने-पीने के लिए कह रही है, तो मुझे अपने प्रिय साथियों को मुक्त देखने दे।’
“मैंने कहा; और सर्क ने अपनी छड़ी ली और अपने महलों से बाहर निकली, और सूअरखाने का द्वार खोलकर, नौ वर्ष के सूअरों के झुंड को बाहर निकाल दिया।

वे उसके सामने कतार में खड़े हो गए, और वह एक-एक करके उन पर एक और औषधि छिड़कती रही। तुरंत ही उनके अंगों से वे बाल झड़ गए जो उन पर उग आए थे, जब शक्तिशाली सर्क ने पहले तो वह घातक औषधि दी थी। अब फिर से मेरे मित्र पुरुष बन गए थे, और पहले से छोटे थे, और अधिक उदात्त और राजसी कद-काठी वाले थे। वे वे सब मुझे जानते थे; और हर एक ने मेरा हाथ अपने हाथ में थाम लिया, और महल में खुशी के आँसू और सिसकियाँ गूँज उठीं। शक्तिशाली देवी सर्सी भी भावुक हो उठीं; वह मेरे पास आईं और मेरे बगल में खड़ी होकर ये मधुर शब्द बोले:— “ ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, यूलिसिस! समुद्र के किनारे अपने अच्छे जहाज पर जाओ और उसे तट पर ले आओ, और वहाँ की गुफाओं में सामान और हथियार छिपा दो, और वापस आओ और अपने मित्रों को साथ ले आओ।’
“उसने कहा, और उसका कहा सुनकर मेरा उदार मन तुरंत पिघल गया। मैं तुरंत समुद्र के किनारे अपने अच्छे जहाज पर गया, और वहाँ मैंने अपने मित्रों को आँसू बहाते हुए, गहरे विलाप करते हुए पाया। जैसे किसी फार्म में बछड़े उछलते-कूदते घूमते हैं, जैसे गायों का झुंड घास के मैदानों से लौटकर बाड़े में आता है, जहाँ वे जी भर कर चर चुकी होती हैं, और बाड़ा उन बच्चों को संभाल नहीं पाता जो लगातार मिमियाते हुए अपनी माताओं के चारों ओर उछलते रहते हैं; वैसे ही जब मेरे साथियों ने मुझे आँसुओं के बीच देखा, तो वे मुझसे मिलने के लिए दौड़ पड़े, और उनकी खुशी ऐसी थी मानो वे अपने वतन में हों।
और उनका अपना शहर, इथाका के ऊबड़-खाबड़ तट पर,
जहाँ वे पैदा हुए और पले-बढ़े;
और रोते हुए उन्होंने ये मधुर शब्द कहे:—
“ ‘हे बृहस्पति के पालक पुत्र! हम तुम्हारा स्वागत करते हैं
तुम्हारी वापसी पर उतने ही हर्ष के साथ
मानो हम सब उस भूमि पर पुनः पहुँच गए हों
जिसने हमें जन्म दिया, हमारा इथाका। और अब
बताओ कि हमारे अन्य मित्रों की मृत्यु किस कारण हुई।’
“उन्होंने कहा; मैंने सांत्वना भरे शब्दों में उत्तर दिया:— ‘पहले हमारी नाव को किनारे पर ले आओ, और हमारे सामान और सभी हथियारों को गुफाओं में छिपा दो, और फिर सब लोग जल्दी से मेरे पीछे आओ, और सर्कस के पवित्र महलों में हमारे दोस्तों से मिलो, भरपूर भोजन का आनंद लेते हुए।’

मैंने कहा; और मेरे आदमियों ने खुशी-खुशी आज्ञा का पालन किया, सिवाय इसके कि केवल यूरिलोचस ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, और ये जोशीले शब्द कहे:

—

“ ‘अरे, हम कहाँ जा रहे हैं, अभागे लोगो? क्या तुम इतने बुरे भाग्य के लिए उत्सुक हो, कि तुम्हें वहाँ जाना ही होगा जहाँ सर्सी रहती है, जो हमारा इंतज़ार कर रही है, हमें शेर, सूअर या भेड़ियों में बदलने के लिए, और हमें उसके विशाल घर में रहने और उसकी रखवाली करने के लिए मजबूर करने के लिए? ऐसा ही साइक्लोप्स के साथ हुआ था, जब हमारे दोस्त इस साहसी सरदार के साथ उसके निवास स्थान पर गए थे, और उसकी मूर्खता के कारण वहाँ मारे गए थे।’
“उसने बात की; और तब मैंने सोचा कि मैं अपनी तलवार अपनी मजबूत जांघ से निकाल लूँ, और उसकी तीक्ष्ण धार से उसका सिर काट दूँ और उसे धरती पर गिरने दूँ, यद्यपि वह मेरा निकट संबंधी था; फिर भी बाकी सबने मुझे रोक लिया, हर कोई दयालुता भरे शब्द बोल रहा था:—
“ ‘नहीं, बृहस्पति के पालक पुत्र! यदि तुम सहमत हो, तो यह व्यक्ति पीछे रहेगा और जहाज के साथ रहेगा, और वह जहाज की रक्षा करेगा, लेकिन तुम हमें वहाँ ले चलो जहाँ सर्क के पवित्र महल स्थित हैं।’
“वे बोले, और जहाज और किनारे से ऊपर भूमि पर चले गए, और यूरिलोचस जहाज के साथ नहीं रहा; वह मेरे पीछे आया, क्योंकि वह मेरी भयानक धमकी से डरता था। इस बीच, सर्सी ने महल में मेरे साथियों को नहलाया, और तेल से उनका अभिषेक किया, और उन्हें सुंदर लबादे और कुर्ते पहनाए। वहाँ हमने उन्हें भोज करते हुए पाया। जब उन्होंने और मेरे साथ आए लोगों ने एक-दूसरे को देखा, और अतीत की यादें उनके मन में लौट आईं, तो वे फूट-फूट कर रोए, और सारा महल उनके सिसकियों से गूंज उठा। और फिर...” शक्तिशाली देवी आकर बोलीं:—
“ ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, इन दुखों को लंबा मत करो। मैं भली-भांति जानता हूँ कि तुमने गहरे समुद्र में क्या-क्या सहा है, और दुष्ट पुरुषों ने ज़मीन पर तुम्हारे साथ क्या-क्या बुराइयाँ की हैं। अब अपने सामने रखा भोजन ग्रहण करो, शराब पियो, जब तक कि तुम्हारे हृदय में वह साहस न आ जाए जो तुम्हारे पास तब था जब तुमने बहुत पहले अपना वतन, बीहड़ इथाका छोड़ा था। तुम अपनी लंबी यात्राओं के दौरान लगातार सोचते-सोचते बेहाल और निराश हो गए हो, और तुम्हारे मन में आनंद के लिए कोई जगह नहीं बची है, क्योंकि तुमने बहुत कष्ट सहा है।’

“उसने बात की; उसके शब्दों ने आसानी से हमारे उदार मन को राजी कर लिया, और हम दिन-प्रतिदिन पूरे एक साल तक वहीं ठहरे रहे, और भरपूर मांस और उत्तम मदिराओं का भव्य भोज किया। लेकिन जब साल खत्म हुआ, और घंटे फिर से घूमने लगे, तो मेरे प्यारे दोस्तों ने सर्कस के महल से मुझे बुलाया और कहा:—
“ ‘हे सरदार, अपनी जन्मभूमि को मत भूलो,
यदि भाग्य ने तुम्हें कभी ऐसा करने की अनुमति दी हो कि तुम सुरक्षित रूप से उस भव्य इमारत
में लौट आओ, जो तुम्हारी जन्मभूमि में स्थित तुम्हारा महल है।’
“उन्होंने ऐसा कहा, और मेरा उदार मन द्रवित हो गया। उस दिन सूर्यास्त तक हम बैठे रहे और भरपूर मांस और उत्तम मदिरा का आनंद लिया; और जब सूरज डूब गया, तो वे अंधेरे कक्षों में विश्राम करने चले गए, जबकि मैं सर्से के आलीशान पलंग पर गया, उसके घुटनों पर एक याचक बनकर। देवी ने मेरी प्रार्थना सुनी, और मैंने पंखदार शब्दों में कहा:—
“ ‘हे सिरसे! मैं प्रार्थना करता हूँ, उस वादे को पूरा करो जो तुमने मुझे मेरे घर भेजने का किया है। मेरा हृदय उसके लिए तड़प रहा है, और मेरे सभी मित्रों का हृदय भी, जो मेरे जीवन को थका देते हैं, जब तुम पास नहीं होती हो तो मेरे चारों ओर विलाप करते हैं।’
“मैंने कहा; शक्तिशाली देवी ने इस प्रकार उत्तर दिया:—
‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान,
यूलिसिस! तुम्हें मेरे साथ
अनिच्छा से नहीं रहना चाहिए; बल्कि तुम्हें अभी एक और यात्रा करनी है, और सबसे पहले
प्लूटो और उसकी भयानक रानी प्रोसरपाइन के निवास स्थान पर जाना होगा, और वहाँ अंधे द्रष्टा टायरेसियस—थेब्स के—
की आत्मा से परामर्श करना होगा, जिसकी बुद्धि बची रही; क्योंकि प्रोसरपाइन ने
मृत्यु में उसे मन की शक्ति लौटा दी,
ताकि केवल वही आने वाली चीजों को जान सके।
शेष ये वो छायाएं हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर मंडराती रहती हैं। “देवी ने ऐसा कहा; और मेरा हृदय दुःख से भर गया, और मैं पलंग पर बैठ कर रोने लगी, और अब मैं जीना नहीं चाहती थी, और दिन का उजाला देखना भी नहीं चाहती

थी। परन्तु जब मेरा दुःख, आँसू बहाते हुए और करवटें बदलते हुए, कुछ कम हुआ, तो मैंने सर्कस से इस प्रकार कहा:—
“ ‘हे सर्सी, जब मैं यह यात्रा करूँगी तो मेरा मार्गदर्शन कौन करेगा? क्योंकि मनुष्य द्वारा निर्मित कोई भी नौका आज तक प्लूटो के राज्य में नहीं पहुँची है।’
“मैंने कहा; शक्तिशाली देवी ने मुझे उत्तर दिया:— ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, इस बात की चिंता मत करो कि तुम्हारी नाव का मार्ग कौन तय करेगा, बल्कि मस्तूल उठाओ और चमकता हुआ पाल फैलाओ, और बैठ जाओ, और उत्तर की हवा को अपनी नाव को आगे बढ़ाने दो। जैसे ही तुम महासागर पार कर लो, और निचले किनारे पर पहुँच जाओ, और प्रोसरपाइन के उपवनों, चिनार के ऊँचे समूहों और विलो वृक्षों के बीच पहुँच जाओ, जिनके सूखे फल गिरते हैं, अपनी नाव को वहाँ गहरे पानी में बाँध दो। ओशनस के भंवर,
और प्लूटो के कष्टहीन निवास की ओर बढ़ते हैं।
वहाँ अचरॉन में पाइरीफ्लेगेथॉन की धाराएँ और स्टिक्स की उस भुजा, कोकिटस की धाराएँ बहती हैं। जहाँ सदा गर्जना करते जल मिलते हैं, वहाँ एक चट्टान खड़ी है;
उसके पास जाओ, और मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि मिट्टी में एक हाथ लंबी और चौड़ी खाई खोदो।
और उसके चारों ओर सभी मृतकों को अर्पण करो—पहले दूध और शहद, फिर मीठी शराब, और अंत में पानी, उन पर सफेद आटा छिड़को। वहाँ चढ़ाओ अपनी प्रार्थना उन दिव्य रूपों के समूह से पूरी श्रद्धा से करो,
और यह प्रतिज्ञा करो कि तुम बलिदान करोगे,
जब तुम अंततः इथाका आओगे,
एक निर्दोष, बांझ बछिया,
अपने प्रांगण में, और वेदी पर कीमती वस्तुओं का ढेर लगाओगे; और केवल द्रष्टा,
टायरेसियस को, अकेले ही, एक मेढ़ा जिसका ऊन
पूरी तरह से काला है, जो तुम्हारे सभी झुंडों में सबसे उत्तम है।
और विधिवत प्रार्थना करने के बाद
मृतकों के सभी प्रतिष्ठित राष्ट्रों से,
तब एक मेढ़े और एक काली भेड़ की बलि दो, उनके मुख एरेबस की ओर मुड़े हुए थे,

परन्तु तुम्हारा मुख दूसरी ओर, नदी की धाराओं की ओर। वहाँ मृतकों की आत्माएँ असंख्य संख्या में एकत्रित होंगी। तब अपने मित्रों को बुलाओ, और आदेश दो कि क्रूर पीतल से मारे गए भेड़ों की खाल जल्दी से उतार दें, और वहाँ शवों को जलाकर देवताओं की आराधना करो— शक्तिशाली प्लूटो और भयानक प्रोसरपाइन की। तब अपनी जांघ पर तलवार खींचो, और बैठ जाओ, और उन सभी वायुमयी आकृतियों में से किसी को भी रक्त को छूने मत दो, जब तक कि तुम पहले आज्ञा न दो। टायरेसियस आएगा, और शीघ्र ही आएगा— लोगों का नेता—और बताएगा कि तुम्हें कौन सी यात्रा करनी है, तुम्हें कितनी दूरी तय करनी है, और तुम्हें दिखाएगा कि तुम मछली से भरे गहरे समुद्र को कैसे पार कर सकते हो। “उसने बोलना शुरू किया; और जब वह बोल रही थी, तभी सुबह अपने सुनहरे सिंहासन पर विराजमान हो उठी। अप्सरा ने मुझे एक लबादा और कुर्ता दिया, और स्वयं को एक सफेद वस्त्र में सजाया, जिसमें कई तहें थीं— एक नाजुक और सुंदर जाल। अपनी कमर के चारों ओर उसने सोने का एक चमकदार घेरा बना रखा था, और अपने माथे पर एक घूंघट डाल रखा था। मैं महल में घूम-घूम कर अपने मित्रों को जगाने लगा, और मैंने प्रत्येक से प्रसन्न स्वर में कहा:—
“ ‘अब और आलस्यपूर्ण विश्राम और सुखद नींद में मत लिप्त रहो; हमें प्रस्थान करना है। दयालु सर्से हमें जाने की सलाह देती है।’
मैंने बात की, और उनके उदार मन आसानी से मेरी ओर झुक गए। फिर भी मैं अपने सभी साथियों को द्वीप से सुरक्षित नहीं ला सका। एल्पेनोर हमारे दल में सबसे छोटा था, न तो वह युद्ध में बहादुर था और न ही विचार में बुद्धिमान। शराब के नशे में चूर और ठंडक पाने के लिए वह सर्कस के पवित्र घर में बाकी सबसे अलग सोने के लिए लेट गया था; और जैसे ही मेरे दोस्त उठे, शोर और कोलाहल ने उसे जगा दिया; वह लंबी सीढ़ी से आना भूल गया; छत से सिर के बल गिर पड़ा; उसकी गर्दन रीढ़ की हड्डी से टूट गई। और उसकी आत्मा मृत्युलोक चली गई। “मेरे मित्र मेरे चारों ओर आ गए, और मैंने उनसे कहा:— शायद आप सोच रहे होंगे कि आप अपने जन्मस्थान के लिए रवाना हो रहे हैं; लेकिन जान लीजिए कि सर्से हमें कहीं और भेज रही है, थेबन भविष्यवक्ता टायरेसियस से परामर्श करने के लिए, प्लूटो और भयानक प्रोसरपाइन के निवास स्थान पर।”
“मैंने कहा, और सुनकर उनके हृदय बैठ गए; वे बैठ गए, रोने लगे और अपने बाल नोचने लगे, परन्तु उनका शोक और उनके आँसू व्यर्थ थे।

“इस प्रकार जब हम दुखी मन से अपने अच्छे जहाज की ओर बढ़े
समुद्र तट पर, लगातार रोते हुए,
इसी बीच, सर्क ने उसके डेक का दौरा किया था,
और वहाँ उसने एक मेमने और एक काली भेड़ को बाँध दिया था
ऐसे तरीकों से जिन्हें हम देख नहीं पाए; क्योंकि कौन सी आँख उस देवता की उपस्थिति को पहचान सकती है, जो
एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता है, और दिखना नहीं चाहता?”

पुस्तक XI
यूलिसिस की मृतकों की भूमि की यात्रा
मृतकों की भूमि की यात्रा—भविष्यवक्ता टायरेसियस के साथ साक्षात्कार— वहाँ यूलिसिस द्वारा देखे गए नायक और नायिकाएँ—अपनी माँ, और एगामेम्नन, अकिलीज़ और अन्य लोगों के साथ साक्षात्कार—मृतकों के व्यवसाय—दोषियों के दंड।
“अब, जब हम किनारे पर अपनी नाव के पास पहुँचे,
तो हमने उसे पहले गहरे समुद्र में खींचा,
और मस्तूल और पाल लगाए, और भेड़ों को नाव पर चढ़ाया, और दुखी और आँसुओं से भरे हुए
हम स्वयं नाव पर सवार हो गए। सुनहरे बालों वाली और प्रतिष्ठित
संगीत की पारखी सर्कस ने हमारे साथ एक दयालु सहयात्री को भेजा—एक हवा जो गहरे रंग के धनुष वाली नाव के पीछे बहती थी, और पालों को फुलाती थी; और अब, सभी चीजें अपनी जगह पर होने के बाद,
पूरे जहाज में, हम बैठ गए—हवा
और नाविक हमें हमारे मार्ग पर मार्गदर्शन कर रहे थे।
सभी दिन हमारे पाल फैलाए गए, जैसे ही हमारा जहाज गहरे समुद्र पर चला; सूरज डूब गया; विशाल समुद्र के रास्ते अंधेरे हो गए, और हमारी नाव ओशनस की दूर सीमाओं तक पहुँच गई।
“वहाँ वह भूमि है, और वहाँ सिमेरियन लोग रहते हैं, शाश्वत बादलों और अंधकार में। जब तेजस्वी सूर्य तारों भरे आकाश में ऊपर जाता है, और जब वह आकाश से पृथ्वी पर अस्त होता है, तब न तो वह अपनी किरणों से उन पर दृष्टि डालता है। अस्वास्थ्यकर रात उस दयनीय जाति पर छाई रहती है। हम भूमि पर उतरे, और अपनी नाव को किनारे पर खींचकर, हमने नाव से भेड़ें लीं, और समुद्र-धारा के किनारे चलते रहे, जब तक कि हम उस स्थान पर नहीं पहुँच गए जिसके विषय में देवी सर्क ने कहा था।”
“यहाँ पेरिमीदेस और यूरिलोचस ने पीड़ितों को अपनी पकड़ में रखा था, जबकि मैंने अपनी जांघ पर अपनी विश्वसनीय तलवार रखी और धरती में एक हाथ लंबी और चौड़ी खाई खोदी, जिसके चारों ओर हम खड़े हुए और सभी मृतकों पर अर्पण किया— पहले दूध और शहद, फिर गाढ़ी शराब और अंत में पानी, और उन पर सफेद आटा

छिड़का। फिर मैंने उन हवा में तैरते रूपों के समूह से पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की और प्रतिज्ञा की कि जब मैं अंततः इथाका पहुँचूँगा, तो मैं एक निर्दोष, बांझ बछिया का बलिदान करूँगा।”
मेरे अपने आंगनों में, और वेदी की चिता को ढेर करो
कीमती चीजों से, और केवल द्रष्टा के लिए,
टायरेसियस, अकेले, एक मेढ़ा जिसका ऊन
पूरी तरह से काला था, मेरे सभी झुंडों में सबसे अच्छा।
“जब मैंने प्रार्थना और मन्नतों के साथ मृतकों के राष्ट्रों की इस प्रकार पूजा की, तो मैंने भेड़ों को लिया और खोखली खाई के ऊपर उनके गले छेद दिए। खून काला बह रहा था; और मेरे चारों ओर एरेबस से मृतकों की आत्माएँ उमड़ पड़ीं—युवा पत्नियाँ और अविवाहित युवतियाँ, वर्षों और परिश्रम से थके हुए पुरुष, और कम उम्र की कुंवारी लड़कियाँ अपने नए शोक में, और युद्ध में मारे गए कई योद्धा, भाले से क्षत-विक्षत, और खूनी कवच पहने हुए, जो खाई के चारों ओर हर तरफ उड़ रहे थे, कभी यहाँ, कभी वहाँ, साथ चीख-पुकार मच गई, और मैं भय से पीला पड़ गया। फिर मैंने अपने मित्रों को पुकारा और उन्हें आदेश दिया कि वे चाकू से मारे गए पीड़ितों की खाल उतार दें, और उन्हें आग से जलाकर देवताओं का आह्वान करें— शक्तिशाली प्लूटो और भयानक प्रोसरपाइन का। फिर मैंने अपनी जांघ से अपनी विश्वसनीय तलवार निकाली, और बैठ गया, और उन सभी मायावी प्रेतों को रक्त के पास नहीं आने दिया, जब तक कि मैं थेबन भविष्यवक्ता से प्रार्थना न कर लूँ।
“और सबसे पहले मेरे साथी एल्पेनोर की आत्मा आई, क्योंकि उसे अभी तक पृथ्वी की विशाल गोद में दफनाया नहीं गया था। हमने उसे सिरसे के महलों में मृत छोड़ दिया था, बिना रोए और बिना दफनाए। हमारा एक और काम था। लेकिन जब मैंने उसे देखा तो मुझे उस पर दया आई, और आँसू बहाते हुए मैंने ये शब्द कहे: ‘एल्पेनोर, तुम कितने उत्सुक हो, रात और अंधेरे के इन स्थानों में? तुमने पैदल ही सही, मुझसे कहीं अधिक गति पकड़ी है, जबकि मैं अपने अच्छे जहाज में हूँ।’
“मैंने कहा; प्रेत सिसकते हुए बोला और मुझे उत्तर दिया:— ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, यूलिसिस! यह किसी देवता और अत्यधिक शराब के कारण निर्धारित दुष्ट भाग्य था, जिसने मेरी मृत्यु का कारण बना। मैं सिरसे के महल में सो गया, और नीचे जाने वाली लंबी सीढ़ियों का रास्ता भूलकर छत से

गिर गया, और गिरने से मेरी गर्दन रीढ़ की हड्डी से टूट गई; मेरी आत्मा पाताल लोक में चली गई। मैं अब तुम्हें उन लोगों की कसम देता हूँ जिन्हें तुमने पीछे छोड़ दिया है। हे मेरे पति और मेरे पिता—वही जिनके द्वारा मेरा बचपन में पालन-पोषण हुआ—और मेरे पुत्र टेलीमाकस द्वारा, जो मेरे महल में अकेला रह गया है—क्योंकि मैं भली-भांति जानता हूँ कि तुम, प्लूटो के राज्य से जाते समय, अपने वीर पोत को एई द्वीप में बांधोगे—हे राजा, वहाँ तुम मुझे याद रखोगे, और वहाँ से जाते समय मुझे बिना रोए, बिना दफनाए नहीं छोड़ोगे, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम पर देवताओं का क्रोध लाऊँ। बल्कि मुझे वहाँ जला दोगे। मेरे सारे कवच, और ढेर,
उस प्राचीन गहरे सागर के पास, मेरे लिए एक टीला बना दो—
एक अभागा व्यक्ति जिसके बारे में आने वाली पीढ़ियाँ
सुनेंगी। मेरे लिए ऐसा करो, और मेरी समाधि पर वह चप्पू सीधा खड़ा कर दो जिससे मैंने
अपने जीवित रहते हुए, तुम्हारे मित्रों के बीच नाव चलाई थी।
“उसने कहा और मैंने उत्तर दिया: ‘दुखी युवक, मैं तुम्हारे लिए ये सब कार्य विधिवत करूँगा।’”
“और फिर एंटिक्लिया की आत्मा आई—
मेरी अपनी मृत माता, राजा ऑटोलिकस की पुत्री, उदार हृदय वाली। जब मैं ट्रॉय के लिए रवाना हुई थी, तब मैंने उसे जीवित छोड़ा था, और अब
उसे वहाँ देखकर मैं रोई और उस पर दया आई,
फिर भी मैंने उसे दुःख के साथ ही सही, रक्त के पास आने से मना किया, जब तक कि मैं पहले टायरेसियस से न मिल लूँ। वह भी आया, थेबन द्रष्टा, टायरेसियस, अपने हाथ में सोने की छड़ी लिए हुए; उसने मुझे पहचान लिया और मुझसे इस प्रकार कहा:—
“ ‘हे अभागे मनुष्य, तूने दिन का प्रकाश छोड़कर मृतकों के बीच आकर इस आनंदहीन भूमि पर क्यों आ गया? खाई से निकल जा और अपनी तलवार फेर ले, ताकि मैं खून पी सकूँ और भविष्यवाणी का वचन कह सकूँ।’
“उसने कहा; खाई से पीछे हटते हुए, मैंने अपनी चांदी जड़ी तलवार को म्यान में डाल दिया, और गहरे लाल रक्त को पीने के बाद, निर्दोष पैगंबर मेरी ओर मुड़े और बोले:—

“ ‘महान सरदार यूलिसिस, तुम्हारी इच्छा अपने घर की सुखद यात्रा की है, फिर भी एक देवता तुम्हारा विरोध करेगा। मेरी समझ से, तुम नेपच्यून के मार्गदर्शन में अपनी यात्रा पर आगे बढ़ोगे। उसने तुम्हारे प्रति अपने हृदय में क्रोध संजो रखा है, क्योंकि तुम्हारे हाथों ने उसके पुत्र की दृष्टि छीन ली थी। फिर भी तुम कई कठिनाइयों का सामना करने के बाद भी लौट सकते हो, यदि तुम अपनी लालसा को वश में रखो, और अपने साथियों की लालसा को भी, जब तुम अपने वीर जहाज को त्रिनाक्रियन द्वीप पर लाओगे। अंधकारमय गहराई से सुरक्षित। वहाँ तुम्हें सूर्य के बैल और मुरझाते भेड़ के बच्चे मिलेंगे— सर्वव्यापी और सर्वश्रव्य सूर्य। यदि तुम इन्हें अप्रभावित छोड़ दो, और अपनी वापसी का विचार मन में रखो, तो तुम कष्ट सहते हुए भी इथाका स्थित अपने घर लौट सकते हो; परन्तु यदि तुम इन्हें हानि पहुँचाओगे, तो परिणाम तुम्हारे जहाज और उसके चालक दल का विनाश होगा; और तुम, यदि बच भी जाओ, तो अपने देश देर से लौटोगे, अपने सभी साथियों को खोकर, और एक विदेशी में। नाव पर सवार होकर, तुम अपने घर में अन्याय पाओगे—अभिमानी पुरुष जो तुम्हारी संपत्ति को बर्बाद करते हैं, तुम्हारी कुलीन पत्नी के चाहने वाले, और विवाह के उपहार भेंट करते हैं। लौटकर तुम उनके हिंसक कृत्यों का बदला लोगे; और जब तुम उन्हें अपने महलों में मार डालोगे, चाहे छल से या तलवार से, खुले युद्ध में, तब एक सुंदर चप्पू लेकर आगे बढ़ो, जब तक कि तुम्हारा सामना ऐसे पुरुषों से न हो जाए जिन्होंने न समुद्र को जाना है, न नमक से सना भोजन खाया है, और न ही कभी समुद्र को देखा है। लाल रंग के अग्रभाग वाली नावें, न ही सुडौल चप्पू,
जो जहाजों के पंख हैं। मैं एक चिन्ह घोषित करूँगा जिससे उन्हें पहचाना जा सके, और तुम इसे
गलत नहीं समझ सकते। जब कोई यात्री तुमसे मिले,
और कहे कि तुम अपने मजबूत कंधे पर सूप उठाए हुए हो, तो रुक जाओ और अपने सुडौल चप्पू को सीधा जमीन में गाड़ दो, और वहाँ राजा नेपच्यून को एक गंभीर बलिदान अर्पित करो—
एक मेढ़ा, एक बैल, और उसके सूअरों के झुंड से एक जंगली सूअर। और फिर अपने घर लौटकर, ध्यान रखना कि तुम पवित्र बलि चढ़ाओ। हे समस्त शाश्वत प्राणियों, जो विशाल आकाश में निवास करते हैं, प्रत्येक को उसके उचित क्रम में। अंत में, तेरी मृत्यु समुद्र से दूर, तेरे पास आएगी और तुझे

शांतिपूर्वक विदा करेगी। एक शांत वृद्धावस्था में, जो सुखी लोगों के बीच समाप्त होती है। मैंने तुझे सच कहा है।
“उसने कहा, और मैंने उसे इस प्रकार उत्तर दिया: ‘हे टायरेसियस, देवताओं ने वही निर्णय लिया है जो तुमने कहा है। परन्तु मुझे सच-सच बताओ—मैं अपनी मृत माता की आत्मा को देख रहा हूँ; वह वहाँ रक्त के पास मौन बैठी है, और अपने पुत्र की ओर देखने या उससे बात करने की जहमत भी नहीं उठा रही है। हे महान भविष्यवक्ता, मुझे निर्देश दो कि मैं किस प्रकार अपनी माता को यह बताऊँ कि मैं उसका पुत्र हूँ।’
मैंने कहा, और तुरंत ही द्रष्टा ने उत्तर दिया:— ‘यह आसानी से बताया जा सकता है; मैं तुम्हें यह बात ध्यान में रखने के लिए देता हूँ। मृतकों में से जिसे भी तुम पास आने और रक्त पीने की अनुमति दोगे, वह सत्य बोलेगा; जिन्हें तुम रक्त चखने से मना करोगे, वे चुपचाप चले जाएंगे।’
“राजा टायरेसियस की आत्मा, यह कहते हुए,
प्लूटो के निवास स्थान पर चली गई; उसने
वह भविष्यवाणी दी जो मैंने माँगी थी। मैं अब भी
प्रतीक्षा कर रहा था जब तक कि मेरी माँ, फिर से पास आकर,
काला रक्त नहीं पी लिया; वह मुझे अचानक पहचान गई,
और दया भरे स्वर में ये पंखदार शब्द कहे:—
“ ‘हे मेरे बच्चे, तुम जीवित मनुष्य होकर इस अंधकारमय स्थान में कैसे आ गए? जीवन की साँस लेने वालों के लिए इन स्थानों का दौरा करना कठिन है, जहाँ से होकर बड़ी नदियाँ और भयानक बाढ़ बहती हैं—इनमें से पहली है ओशनस, जिसके जल को कोई भी पैदल या किसी भरोसेमंद नाव पर सवार होकर पार नहीं कर सकता। क्या तुम ट्रॉय से अपने रास्ते में यहाँ आए हो, एक थके-हारे यात्री की तरह अपने जहाज और मित्रों के साथ? और क्या तुम अभी तक इथाका नहीं गए हो, और न ही अपने द्वीप महल में अपनी पत्नी को देखा है?’
“उसने कहा, मैंने उत्तर दिया: ‘प्रिय माँ, यही आवश्यकता है जो मुझे प्लूटो के निवास स्थान पर लाई है, थेबन भविष्यवक्ता टायरेसियस से परामर्श करने के लिए। मैं अचेयन तट पर नहीं लौटा हूँ, न ही अपने देश पहुँचा हूँ, फिर भी मैं निरंतर भटकता रहता हूँ; हर जगह मुझे दुर्भाग्य मिलता है—यहाँ तक कि उस समय से जब महान अगामेम्नन के दल में, मैं घोड़ों के लिए प्रसिद्ध इलियम आया था, और वहाँ के निवासियों पर युद्ध किया था। अब मुझे बताओ, हे ईश्वर, और सच-

सच बताओ, कैसे भाग्य ने तुम पर यह विपत्ति ला दी… क्या यह मृत्यु की लंबी नींद थी? धीमी बीमारी से? या फिर, चुपके से आकर, धनुर्धारी रानी, डायना ने अपने मौन बाणों से तुम्हें मार डाला? और मुझे मेरे पिता और मेरे महल में छोड़े गए पुत्र के बारे में बताओ। क्या मेरा शासन, जो मैं धारण करता था, अब भी उन पर टिका है, या किसी और ने उसे ले लिया है, क्योंकि लोग मानते हैं कि मैं अब कभी वापस नहीं आऊंगा? और मुझे मेरी विवाहित पत्नी, उसके विचारों और इरादों के बारे में बताओ, और क्या वह अभी भी मेरे पुत्र के साथ है? क्या वह अभी भी मेरी जागीरों की संरक्षक है, या उन अचेयनों के सबसे कुलीन सरदार ने उसे वहाँ से दुल्हन बनाकर ले गया है?
मैंने कहा; मेरी आदरणीय माता ने इस प्रकार उत्तर दिया:— ‘यह निश्चित है कि वह तुम्हारे महल में उदास रहती है। थका देने वाले दिन और रातें उसकी आँखों में आँसू भरे हैं। अभी तक किसी ने भी तुम्हारा स्थान नहीं लिया है, लेकिन टेलीमाकस अभी भी तुम्हारे राज्य का कार्यभार संभाले हुए है, और उदार भोज देता है जो एक राजकुमार के लिए उचित है, क्योंकि सभी उसे आमंत्रित करते हैं। खेतों में तुम्हारा पिता रहता है, और शहर में कभी नहीं दिखाई देता; न उसके पास पलंग हैं, न लबादे, न ही कीमती चटाई, बल्कि पूरी सर्दी वह वहीं सोता है जहाँ नींद आती है। चूल्हे पर काम करने वाले मजदूर धूल के बीच दयनीय वस्त्र पहने रहते हैं; और जब ग्रीष्म ऋतु आती है, या शरद ऋतु के दिन फल पकते हैं, तो उनका बिस्तर जमीन पर होता है, और उन पत्तों से बना होता है जो हर जगह अंगूर के बागों में बिखरे होते हैं। वहाँ वे लेटे-लेटे शोक मनाते हैं, और अपने दुःख को संजोते हुए तेरे भाग्य पर विलाप करते हैं, और बुढ़ापे के कष्टों को गहराई से महसूस करते हैं। और इस प्रकार मैंने अपने भाग्य को स्वीकार किया और मर गया; क्योंकि अचूक धनुष की देवी ने चुपके से आकर तेरे महलों में मुझे मौन तीरों से नहीं मारा, और न ही धीमी बीमारी ने।
मुझ पर इस तरह छा जाओ, जैसे क्रूरतापूर्वक मेरे अंगों को नष्ट करते हुए, अंत में मेरी जान ले लो;
परन्तु तुम्हारे लिए निरंतर तड़प, तुम्हारे बारे में चिंतित विचार, और तुम्हारी कोमलता की स्मृति,
यूलिसिस, ने मेरे प्यारे जीवन का अंत कर दिया।
“उसने कहा; मैं अपनी मृत माँ की आत्मा को अपनी बाहों में लेना चाहती थी। मैंने तीन बार कोशिश की, एक प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर, और तीनों बार वह

आकृति एक परछाई या सपने की तरह मेरे सामने से गुज़री। और फिर मेरे हृदय में गहरा दुःख और भी तीव्र हो गया, और मैंने तीखे शब्दों में कहा:—
“ ‘प्रिय माँ, तुम अपना स्थान क्यों नहीं बनाए रखतीं, ताकि मैं तुम्हें गले लगा सकूँ, और यहाँ, प्लूटो के राज्य में और एक-दूसरे की बाहों में, हम एक-दूसरे में दुःख की भावना को शांत कर सकें? क्या शक्तिशाली प्रोसरपाइन ने मुझे यहाँ मिलने के लिए केवल एक खाली छाया भेजी है, ताकि मैं और अधिक शोक और आहें भर सकूँ?’
“मैंने कहा, और तब मेरी पूज्य माता ने कहा:— ‘यह मत मानो कि बृहस्पति की पुत्री प्रोसरपाइन तुम्हें धोखा दे रही है। यह हमारे समस्त वंश का भाग्य है जब वे मर जाते हैं। नसें हड्डियों और मांस को तब तक नहीं बांधतीं जब तक कि श्वेत हड्डियों से जीवन निकल नहीं जाता। तब आत्मा स्वप्न की तरह उड़ जाती है और इधर-उधर भटकती रहती है। परन्तु तुम फिर से प्रकाश की ओर जल्दी लौट आओ, और जो मैंने कहा है उसे याद रखो, ताकि आने वाले दिनों में लौटने पर तुम अपनी पत्नी को बता सको।’
“इस प्रकार हमने विचार-विमर्श किया। इसी बीच, शक्तिशाली प्रोसरपाइन से प्रेरित होकर, स्त्रियाँ मेरे चारों ओर आ गईं; वे झुंड में गहरे लाल रक्त के पास एकत्रित हुईं। फिर, जब मैं प्रत्येक से प्रश्न पूछने के बारे में विचार कर रहा था, तो मुझे यह सबसे बुद्धिमानीपूर्ण लगा—मैंने अपनी मजबूत जांघ से तीक्ष्ण तलवार निकाली, और वहाँ मौजूद सभी को एक साथ रक्त का स्वाद नहीं चखने दिया; इसलिए वे एक-एक करके आईं, और प्रत्येक ने बारी-बारी से अपने वंश की घोषणा की। इस प्रकार मैंने सभी से प्रश्न पूछे।”
“तब मैंने सबसे पहले उच्च कुल की टायरो को देखा, जिसने दावा किया कि वह उस निर्दोष पुरुष सैल्मोनियस की पुत्री है, और जो स्वयं को एओलस के पुत्र क्रेथियस की पत्नी कहती थी। वह पवित्र नदी एनीपियस से प्रेम करती थी, जो पृथ्वी पर बहने वाली सभी धाराओं में सबसे सुंदर है, और अक्सर उसके सुखद जल के किनारे टहलती थी। वह, जिसकी भुजाएँ द्वीपों को घेरे हुए हैं, नेपच्यून ने एक बार नदी का रूप धारण किया, और उसके गहरे मुहाने पर उससे मिला; बैंगनी जल उनके चारों ओर एक दीवार की तरह सीधा खड़ा था, और एक मेहराब बनाया, और देवता और स्त्री को छिपा लिया। वहाँ उसने उसे मुक्त किया। टायरो का कुँवारा क्षेत्र, उस पर नींद की वर्षा कर रहा था। उसके बाद उसने उसका हाथ थाम लिया और कहा: ‘हे कन्या, हमारे प्रेम में आनंदित हो, क्योंकि वर्ष के

आगमन के साथ तुम तेजस्वी पुत्रों को जन्म दोगी; देवताओं का आलिंगन निष्फल नहीं होता। उनका ध्यानपूर्वक पालन-पोषण करो। अब अपने निवास स्थान पर लौट आओ, और अपने वचनों पर ध्यान रखो, और अपना रहस्य छुपाए रखो। तुम्हें यह जानना चाहिए कि मैं नेपच्यून हूँ, वह जो पृथ्वी को हिलाता है।’
“उसने कहा और लहरों से भरे गहरे पानी में छलांग लगा दी।
और वह माँ बनी और उसने पेलियास और नेलियस को जन्म दिया, जो शक्तिशाली बृहस्पति के वीर सेवक थे। इआओलकोस की विशाल भूमि पर पेलियास निवास करती थी और भेड़ों के विशाल झुंड पालती थी, जबकि नेलियस ने पाइलोस में रेत के बीच अपना घर बनाया। उसकी माँ, रानी ने इस बीच क्रेथियस के अन्य पुत्रों को जन्म दिया—पहले एसन, फिर फेरेस, और घुड़सवारी में माहिर एमीथॉन।
“और उसके बाद मैंने एंटियोपी को देखा, जो एसोपस की पुत्री थी—वह जिसने यह दावा किया था कि वह बृहस्पति की बाहों में सोई थी। उसके दो पुत्र हुए—एक एम्फियन, दूसरा ज़ेथस—और उन्होंने सात द्वारों वाले थेब्स शहर की स्थापना की और उसे मीनारों से घेर लिया; क्योंकि वे कितने भी वीर क्यों न हों, मीनारों से घिरे उस विशाल शहर में सुरक्षित नहीं रह सकते थे।”
“और उसके बाद मैंने एम्फिट्रियन की पत्नी, अल्केमेना को देखा, जिसने हरक्यूलिस को जन्म दिया था, सिंह हृदय वाला निडर वीर— क्योंकि उसने स्वयं को शक्तिशाली बृहस्पति की बाहों में सौंप दिया था। मैंने वहाँ मेगारा को भी देखा, जो हंसमुख क्रेयन के घराने की पुत्री थी। एम्फिट्रियन के पुत्र, जिसने सामर्थ्य में अप्रतिम था, ने उसे अपनी पत्नी बनाया था।”
“मैंने ओडिपस की माँ को भी देखा, सुंदर एपिकास्टे, जिसने अपने जीवनकाल में अनजाने में एक जघन्य अपराध किया था— उसने अपने ही बेटे से विवाह किया था, जिसने पहले उसके पिता की हत्या करके उससे विवाह किया था; परन्तु देवताओं ने इस अपराध की अफवाह फैला दी। वह थेब्स के रमणीय नगर में कैडमियनों पर शासन करता था; फिर भी वह दुःख में जीता था, क्योंकि क्रोधित देवताओं ने यही नियत की थी। और वह पाताल लोक और उन द्वारों पर चली गई जो सदा के लिए बंद हैं; क्योंकि दुःख से व्याकुल होकर उसने एक ऊँची बीम पर एक रस्सी
और उसी से नष्ट हो गया, उसे अनगिनत विपत्तियाँ सहने के लिए छोड़ गया, जैसे कि एक बेटे पर एक माँ का क्रोध थोप सकता है।
“और वहाँ मैंने अत्यंत सुंदर स्त्री क्लोरिस को देखा, जिसे नेलियस ने बड़े-बड़े विवाह उपहारों से लुभाया और एक दुल्हन के रूप में घर लाया; वह

इयासस के पुत्र एम्फियन की पुत्रियों में सबसे छोटी थी, जो ओर्कोमेनस, मिन्ये नगर और पाइलोस राज्य का शासक था। उसने नेलियस से तीन प्रख्यात पुत्रों को जन्म दिया—नेस्टर, क्रोमियस और एक उच्च कोटि का सरदार, पेरिक्लिमेनस। उसने पेरो को भी जन्म दिया, जो सुंदरता में अद्भुत था और आसपास के सभी क्षेत्रों में उसका प्रेम था; लेकिन नेलियस उस कन्या को किसी को नहीं देगा, सिवाय उसे जो फिलासे से भगाएगा, चौड़े माथे और टेढ़े सींगों वाले बैलों को, वीर इफ़िक्लिस के—एक कठिन कार्य। केवल एक व्यक्ति, एक निर्दोष भविष्यवक्ता, ने साहस किया; लेकिन उसने खुद को भाग्य, कठोर बेड़ियों और देहाती चरवाहों की सेना द्वारा रोका हुआ पाया। महीने और दिन बीतते गए, और पूरा साल, घंटों के हिसाब से, पूरा हो गया। वीर इफ़िक्लिस, जिसने भविष्यवक्ता से सुना था... भविष्यवाणियों ने समझाया, जंजीरें हटा दीं, और बृहस्पति की इच्छा पूरी हुई।
“तब मैंने टिंडारस की पत्नी लेदा को देखा, जिसने टिंडारस से दो महान पुत्रों को जन्म दिया, कैस्टर घुड़सवार और पोलक्स जो सेस्टस (तलवार) चलाने में कुशल था। उन दोनों का स्थान आज भी उपजाऊ पृथ्वी पर है; क्योंकि बृहस्पति ने उन्हें ऐसा सम्मान दिया है कि वे बारी-बारी से एक दिन जीते हैं और फिर मृतकों के साथ बारी-बारी से रहते हैं; वे देवताओं में शुमार हैं।” इसके बाद एलोयस की पत्नी इफिदामिया प्रकट हुईं, जिन्होंने अपने कथनानुसार नेपच्यून का प्रेम प्राप्त कर लिया था। उन्होंने दो अल्पायु पुत्रों को जन्म दिया—एक रूप में देवता के समान, जिसका नाम ओटस था; और दूसरा, जो बहुत प्रसिद्ध था, जिसका नाम एफियाल्टेस था। उदार पृथ्वी ने उन्हें पोषित किया और वे मनुष्य जाति में सबसे लंबे और ओरियन को छोड़कर सबसे सुंदर बने। जब दोनों ने केवल नौ वर्ष का जीवन देखा, तब उनकी लंबाई नौ क्यूबिट और ऊंचाई नौ फैदम थी। वे जीवित देवताओं के विरुद्ध थे। उन्होंने ओलंपियन शिखर पर भयंकर और उग्र युद्ध छेड़ने की धमकी दी, और ओस्सा को ओलंपस पर फेंकने की, और पेलियन को उसके घने पत्तों वाले जंगलों सहित ओस्सा पर ढेर करने की धमकी दी, ताकि आकाश को इस प्रकार परावर्तित किया जा सके। और यदि वे अपनी युवावस्था में होते, तो वे अपनी धमकी को सच कर देते। बृहस्पति के पुत्र और सुनहरे बालों वाली लैटोना ने उनके माथे पर रुई उगने से पहले ही उनकी जान ले ली, और उनके माथे पर उगने वाले रोएँ से उनकी ठुड्डी ढक ली।

“मैंने फ़ेड्रा, प्रोक्रिस और बुद्धिमान मिनोस की संतान, एरिआडने को देखा, जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थी, जिसे एक बार वीर थीसियस क्रेते से पवित्र एथेंस के उपजाऊ तट तक ले गया था, लेकिन उसे प्राप्त नहीं कर सका। डायना ने बैक्सस द्वारा सुनाई गई कहानी को ध्यान से सुना और डिया द्वीप में उस कन्या का वध कर दिया।”
“और मैंने मेरा को देखा, और क्लीमेन को, और एरिफिले को, जो अपने अपराध में घृणित थी, जिसने अपने पति को सोने के भाव बेच दिया। लेकिन उन सभी का नाम लेना व्यर्थ होगा—वीर पुरुषों की पत्नियाँ और बेटियाँ जिन्हें मैंने देखा—क्योंकि पहले अमृतमय रात छंट जाएगी। और अब मेरे लिए सोने का समय आ गया है, अपने अच्छे जहाज पर अपने मित्रों के बीच, या शायद यहाँ। इस बीच, मेरी वापसी की चिंता देवताओं और आप लोगों के साथ है।”
उसने बोलना शुरू किया और सब चुप हो गए: महल के उन कक्षों की छायाओं में मौजूद सभी लोग उसके शब्दों के जादू से स्थिर हो गए। और इस प्रकार श्वेत भुजाओं वाली रानी एरेट ने बोलना शुरू किया:—
“फेएकेसियाई लोगों, यह व्यक्ति आपको कैसा दिखाई देता है? रूप, कद और विवेक में? यह मेरा अतिथि है, परन्तु आप में से प्रत्येक इस अवसर के सम्मान का भागीदार है। अब, मैं प्रार्थना करता हूँ, इसे जल्दबाजी में विदा न करें, और न ही कंजूसी करें; अपने उपहारों को इस जरूरतमंद पर बरसाएँ; क्योंकि आपके घरों में बहुत धन है, जो देवताओं की कृपा से आप पर बरसाया गया है।”
फिर, फ़ेएशियाई लोगों के सबसे वृद्ध मुखिया, एचेनियस ने कहा:—
“मेरे मित्रों, हमारी बुद्धिमान रानी का वचन कभी गलत नहीं होता, न ही कभी अनुचित होता है, और आपका कर्तव्य है कि आप उसे सुनें और उसका पालन करें: लेकिन सब कुछ अल्सीनोउस पर निर्भर करता है—उसका वचन और कर्म दोनों।”
फिर बारी-बारी से अलसिनोस ने कहा: “वह वचन पूरा होगा, यदि मैं यहाँ शासक रहूँ, फ़ेएशियनों पर, जो नौकायन में कुशल हैं। परन्तु परदेसी, चाहे वह अपने घर के लिए तरसता हो, सुबह तक यहीं ठहरे, ताकि उसके उपहारों का भंडार पूरा हो जाए। उसे घर भेजना सबका दायित्व होगा, परन्तु मेरा, क्योंकि सर्वोच्च सत्ता मेरे हाथ में है।”
तब बुद्धिमान यूलिसिस ने कहा: “हे राजा अल्सीनोअस, अपने पूरे वंश में श्रेष्ठ! यदि आप मुझे अपने साथ बारह महीने तक रहने की आज्ञा दें, और अंत में मेरी वापसी के लिए व्यवस्था करें, और मुझे शाही उपहार दें, तो मुझे

प्रसन्नता होगी; क्योंकि अधिक धन-संपन्न होने पर, अपने देश लौटने पर मेरा भाग्य उतना ही सुखद होगा। तब मेरा सम्मान होगा, और इथाका में मुझे फिर से देखने वाले सभी लोगों द्वारा मेरा हार्दिक स्वागत किया जाएगा।”
और फिर बारी-बारी से अलसिनोस बोले:— “यूलिसिस, जब हम तुम्हें देखते हैं, तो हमें यह डर नहीं लगता कि तुम झूठे हो, या उन लोगों में से एक हो, जिन्हें काली धरती पालती है, जो इधर-उधर भटकते हैं और झूठ गढ़ते हैं, ताकि हम उन पर शक न करें। तुम्हारी वाणी सुशोभित है और तुम्हारे विचार महान हैं, और तुमने ठीक से बताया है, जैसे कोई गायक बताता है, तुम्हारे सभी आर्गिव भाइयों और तुम्हारे अपने लोगों का इतिहास। अब खुलकर बताओ, क्या तुमने उन वीर पुरुषों में से किसी को भी देखा है जो गए थे? क्या हम तुम्हारे साथ ट्रॉय गए थे, और उस क्षेत्र में उनका क्या भाग्य था? एक अनंत लंबी रात अभी हमारे सामने है। हमें तुम्हारी अद्भुत कहानियाँ सुनाओ। मैं पवित्र सुबह होने तक सुन सकता हूँ, अगर तुम इतनी देर तक अपने द्वारा सहन की गई कठिनाइयों के बारे में सुन सको।
उसने बोलना शुरू किया, और बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “हे राजा एल्सीनोअस, अपने सभी लोगों से श्रेष्ठ। क्योंकि बात करने का एक समय होता है; सोने का भी समय होता है। यदि तुम और सुनना चाहो, तो मैं अपने साथियों के सबसे बड़े दुखों की कहानी सुनाने में संकोच नहीं करूँगा, जो बाद में जीवन से विमुख हो गए; और यद्यपि वे क्रूर ट्रोजन युद्ध से बच गए थे, लेकिन लौटने पर एक स्त्री के धोखे और अपराध के कारण उनकी मृत्यु हो गई।” जब पवित्र प्रोसरपिना ने स्त्रियों के भूतों को इधर-उधर बिखेर दिया, तब एट्रेस के पुत्र एगामेम्नन की आत्मा आई। वह अपने साथ उन लोगों की भीड़ लेकर आई, जो एगिस्थस के महल में उसी की तरह भाग्य का सामना कर चुके थे और मर गए थे। जब उसने गहरा लाल रक्त पिया, तो उसने मुझे एक नज़र में पहचान लिया और ज़ोर से विलाप किया, और फूट-फूट कर रोने लगा, और मुझे छूने के लिए अपने हाथ बढ़ाए; लेकिन उनमें पकड़ने या दबाने की कोई शक्ति नहीं थी, जैसी कभी उन सक्रिय अंगों में हुआ करती थी। मैं उसे देखकर रोने से खुद को रोक नहीं पाई। उसके प्रति, क्योंकि मेरे हृदय से मुझे उस पर दया आई, और मैंने ये प्रेरणादायक शब्द कहे:—
“ ‘एट्रियस के सबसे गौरवशाली पुत्र, मनुष्यों के राजा!
हे एगामेम्नन, वह भाग्य जो मनुष्य को मृत्यु की शाश्वत नींद में सुला देता

है, तुझे कैसे आसीन कर बैठा? क्या नेपच्यून ने अपनी पूरी शक्ति से हवाओं को बुलाकर तेरे बेड़े को नष्ट कर दिया, या क्या तेरे शत्रुओं ने तुझे तब मारा जब तू उनके बैलों और सुंदर भेड़ों को भगा रहा था, या किसी शहर और वहाँ की असहाय महिलाओं की रक्षा के लिए लड़ रहा था?’
“मैंने कहा, और एगामेम्नन ने इस प्रकार उत्तर दिया:— ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान,
यह नेपच्यून नहीं था जिसने हवाओं को बुलाकर
अपने पूरे प्रकोप से मेरे बेड़े को नष्ट कर दिया,
न ही शत्रु योद्धाओं ने मुझे ज़मीन पर मारा,
बल्कि एगिस्थस, जो मेरी मृत्यु पर तुला हुआ था,
मेरी दोषी पत्नी के साथ मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचा,
और मुझे अपने घर बुलाया और वहाँ मेरी हत्या कर दी,
भोज में भी, जैसे कोई हिरणी गौशाला में बैल को मार डालती है। मेरे साथ उन्होंने मेरे साथियों को भी मार डाला, जैसे सफेद दाँतों वाले जानवरों का झुंड सूअरों को किसी बड़े जागीरदार के लिए काटा जाता है, जो शादी या कोई भव्य भोज आयोजित करता है। तूने कई लोगों को तलवार से मरते देखा है, कठिन युद्ध में, एक-एक करके, और फिर भी तू हम पर दया करता, यदि तूने देखा होता मृतकों को शराब के घड़े के पास और लदी हुई मेजों के नीचे, जबकि फर्श खून से लथपथ था। मैंने कैसेंड्रा की दयनीय चीख सुनी, प्रियम की बेटी की चीख, जिसे मेरे बगल में धोखेबाज क्लिटेम्नेस्ट्रा ने मार डाला था। और मैं वहीं पड़ा था। और मरते हुए, मैंने अपनी तलवार पकड़ने के लिए अपने हाथ उठाए। निर्लज्ज स्त्री अपने रास्ते चली गई, न तो मेरी आँखें बंद करने के लिए रुकी, न ही मेरे मुँह को उसकी जगह पर दबाने के लिए, हालाँकि मेरी आत्मा पाताल लोक की ओर जा रही थी। इससे अधिक भयानक, इससे अधिक लज्जा में डूबी हुई कोई चीज नहीं है, सिवाय उस स्त्री के जिसने ऐसे कृत्यों को अंजाम देने का मन बना लिया है — वह दुष्ट जो इतना घिनौना अपराध रचती है—उस पुरुष की हत्या जिससे उसने कुंवारे रहते हुए विवाह किया था। मैंने यहाँ अपने बच्चों से, और अपने प्राचीन घर में अपने पूरे परिवार से गर्मजोशी से स्वागत की उम्मीद की थी। यह स्त्री, घोर दुष्टता में लिप्त होकर उसने अपने ऊपर और अपनी समस्त स्त्री जाति पर कलंक लगाया है, यहाँ तक कि उन पर भी जो भलाई करने का विचार करती हैं।

“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘हे भगवान, जो गर्जन के स्वामी हैं, बृहस्पति, वे स्त्रियों के कारण एट्रीयस के घर से कितनी घृणा करते होंगे! पहले तो हम हेलेन के कारण लाखों की संख्या में मारे गए; अब क्लिटेम्नेस्ट्रा ने तुम्हारे दूर रहने के दौरान तुम्हारे विरुद्ध यह छल रचा है।’
“मैंने कहा, और तुरंत उसका उत्तर आया:—
‘इसलिए अपनी पत्नी के प्रति विनम्र मत बनो,
और उसे अपने मन की कोई भी बात मत बताओ। उसे केवल कुछ अंश ही बताओ,
और बाकी को छुपा कर रखो। फिर भी, हे यूलिसिस, तेरा जीवन तेरी पत्नी से खतरे में नहीं है;
क्योंकि इकारियस की पुत्री पेनेलोप बुद्धिमान और सदाचारी आचरण के नियमों में भली-भांति पारंगत है। जब हम युद्ध के लिए गए, तो हमने उसे एक युवा दुल्हन के रूप में छोड़ दिया; उसकी गोद में एक शिशु था, एक लड़का, जिसे अब बड़ों के बीच बैठना होगा; और सौभाग्यशाली है वह, क्योंकि निश्चय ही उसका पिता लौटकर उस युवक को देखेगा, और वह अपने पिता को गले लगाएगा, जैसा कि उचित है। परन्तु जहाँ तक मेरी बात है, मेरी पत्नी ने मुझे अपने पुत्र को देखने नहीं दिया; क्योंकि पहले उसने मुझे मार डाला। इसलिए मैं तुम्हें यही चेतावनी देता हूँ— मेरी बात मानो। अपने जहाज को खुलेआम अपने देश में मत लाओ, बल्कि छुपकर लाओ, क्योंकि अब हम स्त्री पर भरोसा नहीं कर सकते। इस बीच, मुझे मेरे पुत्र के विषय में बताओ, और यदि तुमने उसके बारे में कुछ सुना हो तो ईमानदारी से बताओ। चाहे वह ओर्कोमेनस में जीवित हो, या रेतीले पाइलोस में, या मेनेलास के विशाल राज्य स्पार्टा में; क्योंकि मेरा ओरेस्टेस अभी तक पृथ्वी और जीवन से विदा नहीं हुआ है।
उन्होंने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘हे एट्रीडेस, मुझसे यह प्रश्न क्यों पूछते हो? मुझे नहीं पता कि तुम्हारा पुत्र जीवित है या मृत, और यह व्यर्थ की बातों का समय नहीं है।’
“इस प्रकार हम उदास बातें करते खड़े रहे, और हमारे आँसू बहते रहे। इसी बीच पेलियस के पुत्र अकिलीज़, पैट्रोक्लस, उत्कृष्ट एंटिलोकस और एजैक्स की आत्माएँ पास आ गईं— एजैक्स अपने रूप और कद में पेलियस के निर्दोष पुत्र को छोड़कर सभी यूनानियों से श्रेष्ठ था। तब तेजतर्रार एसीसाइड्स की आत्मा ने मुझे पहचाना, और उसने पंखदार शब्दों में कहा:—

“ ‘यूलिसिस! तुम्हें इस महानतम कार्य को करने के लिए किसने प्रेरित किया? तुमने पाताल लोक में उतरने का साहस कैसे पाया, जहाँ मृत, उन लोगों के निराकार रूप रहते हैं जिनका कार्य पृथ्वी पर पूरा हो चुका है?’
“उसने कहा; मैंने उत्तर दिया: ‘यूनानियों में महानतम! पेलेउस के पुत्र अकिलीज़! मैं टायरेसियस की सलाह सुनने आया हूँ, शायद वह मुझे बता सके कि मैं अपने बीहड़ इथाका तक कैसे पहुँचूँ; क्योंकि मैंने अभी तक अपने जन्मस्थान पर कदम नहीं रखा है, और न ही ग्रीस के निकट गया हूँ। मुझे हर जगह दुर्भाग्य का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन हे अकिलीज़, तुम्हारे समय से पहले कोई भी मनुष्य तुमसे अधिक भाग्यशाली नहीं रहा, और न ही भविष्य में कोई होगा—क्योंकि जब तुम जीवित थे, तब हमने तुम्हारा सम्मान ऐसे किया मानो तू एक देवता था, और अब फिर से इन लोकों में तू मृतकों पर शासन करता है; इसलिए, ऐकिलीज़, तुझे दुखी नहीं होना चाहिए।
“मैंने कहा; अकिलीज़ ने तुरंत उत्तर दिया:— ‘हे महान यूलिसिस, मृत्यु के विषय में इस प्रकार मत बोलो, मानो तुम मुझे सांत्वना दे सको। मैं पृथ्वी पर एक मजदूर बनना पसंद करूँगा, और मजदूरी पर किसी साधारण व्यक्ति की सेवा करना पसंद करूँगा, जो मामूली खुशी देता हो, उन सभी पर शासन करने के बजाय जो मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। बल्कि मेरे महान पुत्र के बारे में बोलो, क्या वह अभी तक युद्धों में शामिल हुआ है या नहीं, सेना के अग्रभागों में लड़ने के लिए। और मुझे यह भी बताओ कि क्या तुमने निर्दोष पेलियस के बारे में कुछ सुना है—क्या वह अभी तक अपने अनेक साथियों के बीच सम्मानित है? मायर्मिडोंस,
या क्या अब वे उसे कम सम्मान देते हैं
हेलास और फथिया में, क्योंकि बुढ़ापा
उसके हाथों और पैरों को कमजोर कर देता है, और मैं अब
वहाँ, सूर्य के नीचे, उसकी सहायता करने के लिए नहीं हूँ,
जितना शक्तिशाली मैं ट्रॉय के विशाल मैदान पर था,
जब अचियन कारण के लिए युद्ध करते हुए मैंने
उस वीर लोगों को हराया था। क्या मैं फिर से आ सकता हूँ, बस एक पल के लिए, अपनी पूर्व शक्ति के साथ,
अपने पिता के महल में, मैं
उस शक्ति और इन अजेय हाथों को

उन लोगों के लिए आतंक बना दूँगा जो उसके साथ अन्याय करते हैं, और उसे राजा के योग्य सम्मान से वंचित कर दो।
“उसने कहा; मैंने उत्तर दिया: ‘मैंने निर्दोष पेलियस के बारे में कुछ नहीं सुना, लेकिन मैं तुम्हारे पुत्र नियोप्टोलेमस के विषय में सत्य बताऊंगा, जैसा कि तुम चाहते हो। मैं उसे स्काइरोस से एक शानदार नाव में लेकर आया था ताकि वह सुशस्त्र यूनानियों से मिल सके। इसलिए जान लो कि जब हम ट्रॉय शहर के विरुद्ध युद्ध की योजना बनाने के लिए परिषद में बैठे थे, तो वह हमेशा बोलने वाला पहला व्यक्ति होता था, और उसके शब्द व्यर्थ नहीं होते थे। केवल देवतुल्य नेस्टर और मैं ही वाद-विवाद में उसका मुकाबला कर सकते थे। और जब हम शहर की दीवारों के चारों ओर लड़ रहे थे, तो वह जरा भी नहीं रुका। विशाल सेना में अन्य लोगों के बीच, वह उनसे आगे निकल गया, और किसी भी वीर पुरुष को पीछे नहीं छोड़ा। उसने भयंकर युद्ध में कई लोगों को मार डाला, जिनका नाम लेना मेरी शक्ति से परे था, क्योंकि वे सभी इतने अधिक थे कि उसने यूनान के हित में उन्हें मार गिराया। फिर भी, मैं एक का नाम लेता हूँ, यूरिपिलस, टेलीफस का पुत्र, जो अपनी ही तलवार से मारा गया। अपने दल के कई सदस्यों, सिटियनों के साथ, जो अपने सरदार की पत्नी को दिए गए उदार उपहारों के कारण युद्ध में गए थे; वह रूप में पुरुषों में सबसे श्रेष्ठ था। मैंने मेमनन को छोड़कर, ऐसा कभी नहीं देखा। जब हम, ग्रीस के सरदार, एपियस द्वारा निर्मित लकड़ी के घोड़े पर सवार हुए, और मुझे वहाँ की सभी चीजों का जिम्मा सौंपा गया, उस घनी संरचना वाले धोखे को खोलने और बंद करने का, जबकि यूनानियों में अन्य उच्च पदस्थ लोग अपने आँसू पोंछ रहे थे और उनके अंग काँप रहे थे, मैंने कभी तुम्हारे बेटे को अपने सुंदर चेहरे पर पीला पड़ते या आँसू पोंछते नहीं देखा, बल्कि उसने मुझसे विनती की कि वह हमारे छिपने की जगह से निकल जाए, और उसने अपनी तलवार की मूठ पकड़ी और ऊपर उठाया। उसका भाला पीतल से भारी था, क्योंकि उसने मन ही मन ट्रोजन सेना को पहले ही नष्ट कर दिया था। जब अंततः हमने प्रियम के ऊंचे शहर को पराजित और लूट लिया, तो वह अपने हिस्से के सारे लूट के माल—एक बड़े इनाम—के साथ एक जहाज पर सवार हो गया। वह अचंभित था, आमने-सामने की लड़ाई में उसे कोई चोट नहीं आई थी, और न ही दूर से कोई घाव लगा था, जैसा कि अक्सर लड़ाई में होता है, क्योंकि मंगल ग्रह मनुष्यों की परवाह किए बिना क्रोधित होता है।

“मैंने कहा। तेज गति से चलने वाली एसीसाइड्स की आत्मा
एस्फोडेल से घने घास के मैदानों के ऊपर से
लंबे-लंबे कदमों से चली गई, मुझसे अपने बेटे की प्रसिद्धि की कहानी सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।
“मृत्यु में लेटे अन्य प्रेत शोक में डूबे खड़े थे, और प्रत्येक ने अपना- अपना दुख व्यक्त किया; परन्तु तेलमोन के पुत्र अयाक्स का प्रेत दूर ही रहा, इस बात से नाराज़ था कि मैंने उस बेड़े पर विजय प्राप्त कर ली थी, जिस पर पेलेउस के पुत्र का शस्त्र था। उसकी देवी-माता ने उन्हें हमारे सामने पुरस्कार के रूप में रख दिया था, और ट्रॉय के बंदी पुत्र और पल्लास ने विजय प्रदान की थी। अब मैं कितना चाहता हूँ कि मैंने उस संघर्ष में विजय न प्राप्त की होती, क्योंकि इसी कारण से अंधकारमय पृथ्वी को यह सब प्राप्त हुआ है।” वीर एजैक्स, जिसने अपनी महानता और वीरता में पेलेउस के निर्दोष पुत्र को छोड़कर सभी यूनानियों को पीछे छोड़ दिया। तब मैंने शांत शब्दों में कहा:—
“ ‘हे अजाक्स, निर्दोष तेलमोन के पुत्र! क्या तू मृत्यु में भी उस क्रोध को नहीं भूलेगा जो उन शापित शस्त्रों के लिए हुए संघर्ष के कारण उत्पन्न हुआ था? देवताओं ने उन्हें यूनानियों के लिए घातक बना दिया है, क्योंकि तू, हमारी सेना का रक्षक, गिर पड़ा, और हमने तेरे लिए उतना ही गहरा शोक मनाया जितना हमने पेलियस के पुत्र के लिए मनाया था। और इसमें किसी का कोई दोष नहीं था; यह बृहस्पति ही था जिसने युद्धप्रिय यूनानियों की सेना से घोर घृणा की और तुझ पर यह विपत्ति डाली। अब, हे राजा, निकट आओ, हमारी वाणी और शब्द सुनो, और प्रार्थना है, अपने उदार हृदय में उठ रहे क्रोध को रोको। मैंने कुछ कहा; उसने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि अन्य दिवंगत आत्माओं के बीच एरेबस की ओर चला गया। फिर भी मैं उससे कुछ कहना चाहता था, चाहे वह कितना भी क्रोधित क्यों न हो, या उससे और अधिक बात करना चाहता था, लेकिन मेरी इच्छा अन्य मृतकों को देखने की प्रबल थी।
“तब मैंने बृहस्पति के महान पुत्र, मिनोस को, हाथ में स्वर्ण राजदंड लिए, मृतकों का न्याय करने के लिए बैठे हुए देखा, जो राजा के चारों ओर अपने पक्ष रख रहे थे। वे प्लूटो के महलों में खड़े या बैठे थे—एक विशाल महल जिसमें बड़े द्वार थे।”

और फिर मैंने विशाल ओरियन को एस्फोडेल से हरे-भरे मैदानों के पार जाते देखा, उस खूंखार जानवर को जिसे उसने मार डाला था; वह पीतल का गदा लिए हुए था, जिसे किसी मनुष्य की शक्ति तोड़ नहीं सकती थी।
“और मैंने वहाँ टिटियस को देखा—महान पृथ्वी
उसकी माता—उस पर फैली हुई थी, जब वह लेटा हुआ था,
नौ एकड़ भूमि पर, उसके बगल में दो गिद्ध थे,
जो उसके जिगर को नोच रहे थे, अपनी चोंचें
उसके मांस में घुसा रहे थे; और उसके हाथ उन्हें भगाने में सक्षम नहीं थे, क्योंकि उसने बृहस्पति की घमंडी पत्नी लैटोना को बल प्रयोग करने की कोशिश की थी, जब वह
सुंदर पैनोपियस के रास्ते पाइथो जा रही थी।
“और फिर मैंने टैंटलस को देखा, जो भीषण यातनाओं का शिकार था, एक झील में खड़ा था जो उसकी ठुड्डी तक पहुँचती थी। प्यास से व्याकुल होने के बावजूद, वह पी नहीं सकता था; जितनी बार वह पानी लेने के लिए अपना बूढ़ा सिर झुकाता, पानी बह जाता और धरती में समा जाता, और उसके पैरों के चारों ओर काली मिट्टी दिखाई देती; किसी देवता ने उसे सुखा दिया था। और ऊँचे पेड़ उसके ऊपर झुके हुए थे, फलों से लदे हुए— नाशपाती और अनार, देखने में सुंदर सेब, रसीले अंजीर और हरे रंग के जैतून। और जब वह प्राचीन मनुष्य ने उन्हें उनकी डंडियों से तोड़ने के लिए अपने हाथ बढ़ाए, तभी हवा चली और उन्हें दूर-दूर तक घने बादलों में उड़ा ले गई।
“वहाँ मैंने सिसिफस की परछाईं देखी, उसके कष्टों के बीच। वह दोनों हाथों से एक विशाल पत्थर को पहाड़ी पर धकेल रहा था। उसे ऊपर धकेलने के लिए, वह हाथों और पैरों से उस भारी पत्थर पर झुक रहा था; परन्तु, पहाड़ी की चोटी पार करने से पहले ही एक ऐसी शक्ति का आभास हुआ जिसने उसे वापस लुढ़का दिया, और वह अनियंत्रित चट्टान उसके सामने मैदान में गिर पड़ी। फिर उसने उसे ऊपर उठाने के लिए परिश्रम किया, जबकि पसीने की धाराएँ उसके अंगों से बह रही थीं, और धूल उसके माथे पर जम गई थी।
“तब मैंने पराक्रमी हरक्यूलिस को देखा— वीर की छवि— क्योंकि वह स्वयं अमर देवताओं के बीच बैठा है, उनके भोजों में सहर्ष भाग ले रहा है, और सुंदर चरणों वाली हेबे— पराक्रमी बृहस्पति और सुनहरी चप्पलों वाली जूनो की पुत्री— उसकी पत्नी है। उसकी छवि के चारों ओर भूत शोर मचाते हुए इधर-उधर

उड़ रहे थे, जैसे भयभीत पक्षी। उसकी दृष्टि रात के समान काली थी। उसके हाथ में नंगा धनुष था, डोरी पर एक बाण था, और वह भयंकर दृष्टि से देख रहा था, जैसे कोई तीर चलाने ही वाला हो। उसने अपनी छाती पर पहना हुआ था वह विशाल कमरबंद, जिसकी पट्टी पर सोने की अद्भुत मूर्तियां उकेरी गई थीं—भालू, जंगली सूअर, भयंकर शेर, युद्ध, झड़पें, घावों से मृत्यु और नरसंहार। जिसने वह पट्टी बनाई थी, उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था, और न ही वह बाद में ऐसा कर सकता था। जैसे ही मेरी नज़र उससे मिली, उस वीर ने मुझे पहचान लिया, और मुझे दया से देखते हुए, पंखों वाले शब्दों में मुझसे कहा:—
“ ‘लार्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, फिर भी दुखी; निश्चय ही तू एक क्रूर भाग्य का भागी है, जैसा मैंने सूर्य के प्रकाश को देखते हुए सहा। मैं शनि के बृहस्पति का वंशज हूँ, फिर भी मुझे अपने से नीच जाति के एक व्यक्ति की सेवा करने के लिए विवश होना पड़ा, जिसने मुझे कठिन कार्य सौंपे। उसने मुझे एक बार यहाँ भेजा था, रक्षक कुत्ते को लाने के लिए; उसने सोचा कि इससे कठिन कार्य कोई नहीं हो सकता। मैं उसे यहाँ से लाया, मैं उसे पाताल लोक से ऊपर ले आया, हर्मेस और नीली आँखों वाली पल्लास की सहायता से।’
“इस प्रकार बोलकर वह फिर से प्लूटो के निवास में लौट गया। मैं वहीं रुका रहा और अपनी जगह पर डटा रहा, इस आशा में कि शायद अभी भी कुछ वीर आएँ जो प्राचीन काल में शहीद हो गए थे, और शायद मैं उनमें से कुछ को देख सकूँ— उन प्राचीनों को, जिन्हें देखने की मुझे बहुत लालसा थी— थीसियस और पिरिथौस को, जो गौरवशाली पुरुष थे, देवताओं के पुत्र थे। लेकिन अब मेरे चारों ओर एक ज़ोरदार शोर के साथ अनगिनत मृतकों के राष्ट्र जमा हो गए; और मैं भय से पीला पड़ गया, कहीं कठोर प्लूटो के महलों से कुछ आ न जाए। प्रोसरपाइन को राक्षसी कन्या, गॉर्गन का भयानक चेहरा भेजना चाहिए। अपने जहाज की ओर जल्दी से बढ़ते हुए, मैंने चालक दल को जहाज पर चढ़ने और रस्सियों को ढीला छोड़ने का आदेश दिया। वे जल्दी से जहाज पर चढ़ गए और बेंचों पर बैठ गए। ओशनस के माध्यम से धारा मेरी नाव को ले गई, पहले चप्पूओं से और फिर अनुकूल हवाओं से सहायता मिली।

पुस्तक XII
सायरन, स्काइला और चरीबडीस
यूलिसिस की सर्से द्वीप पर वापसी—घर वापसी यात्रा के संबंध में सर्से की सलाह—सायरन—स्किल्ला और चारिब्डिस से बचाव—ट्रिनाक्रिया में उसका आगमन—उसके साथियों द्वारा सूर्य के बैलों का वध—परिणामस्वरूप एक तूफान आया, जिसमें उसके सभी साथी मारे गए, और वह केवल तैरकर कैलिप्सो द्वीप पर पहुँचकर बच निकला।
“अब जब हमारी नाव ओशनस को छोड़कर गहरे समुद्र में प्रवेश कर चुकी थी, तब हम एईए द्वीप पर पहुँचे, जहाँ भोर की संतान, सुबह निवास करती है, अपने नृत्य करती है, और सूर्य पृथ्वी से उदय होता है। हम वहाँ उतरे और अपनी नाव को किनारे पर खींच लाए; हम उतरे और समुद्र के किनारे सोने के लिए लेट गए, और पवित्र भोर के उदय की प्रतीक्षा करने लगे।”
“फिर जब गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, भोर की संतान, मैंने अपने साथियों को भेजा, सर्क के महलों से एल्पेनोर का शव लाने के लिए। और जहाँ एक चट्टानी किनारा गहराई में फैला हुआ था, हमने पेड़ काटे, और अंतिम संस्कार किया, बहुत आँसुओं के साथ; और वहाँ शरीर और हथियारों को आग में जलाकर, हमने एक मकबरा बनाया, और मृतकों के लिए एक स्तंभ खड़ा किया, और उसके शिखर पर एक नुकीला चप्पू लगाया।
“यह सब विधिवत किया गया; फिर भी हेड्स से हमारी वापसी की खबर छिपी नहीं रही। उसने जल्दी से कपड़े पहने और आई; उसकी दासियाँ भी उसके साथ आईं, रोटी, मांस का भंडार और भरपूर शराब लेकर; और इस प्रकार बुद्धिमान देवी ने बीच में खड़े होकर कहा:—
“ ‘आह, साहसी लोगो! जो अभी जीवित हैं, प्लूटो के निवास स्थान पर जा चुके हैं; दो बार मरना तुम्हारा भाग्य है, जबकि अन्य केवल एक बार मरते हैं। फिर भी अब आज भोजन करो, शराब पियो और दावत करो, और भोर होते ही तुम यात्रा पर निकल पड़ोगे; और मैं तुम्हें मार्ग दिखाऊंगा और इसके सभी खतरों के बारे में तुम्हें सिखाऊंगा, ताकि तुम भूमि पर या जल पर, अपने घोर नुकसान के लिए गलत सलाहों का पालन करने पर पश्चाताप न करो।’
“उसने बात की, और हमारे विश्वास से भरे मन उसकी सलाहों से आसानी से प्रभावित हो गए। उस पूरे दिन, सूर्यास्त तक, हम बैठे रहे और भरपूर मांस और

उदार शराब का भोज किया; और जब सूरज डूब गया और अंधेरा छा गया, तो हमारी नाव के बंधनों के पास चालक दल सोने के लिए लेट गया, जबकि सर्से ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे अलग ले गई, और मुझे बिठाया, और मेरे सामने बैठ गई, और मुझसे उन सभी चीजों के बारे में पूछा जो मैंने देखी थीं। मैंने उसे ईमानदारी से बताया, और तब शक्तिशाली देवी सर्से ने कहा:—
“अब तक तो सब ठीक है; अब मेरी बातों पर ध्यान दो, और कोई देवता तुम्हें इसे याद रखने में मदद करे! तुम्हें सबसे पहले उस जगह जाना होगा जहाँ जलपरियाँ रहती हैं। वे उस रास्ते से गुजरने वाले हर किसी पर जादू कर देती हैं। अगर अनजाने में कोई उनके इतने करीब पहुँच जाए कि उनकी आवाज़ सुन सके, तो उसके चारों ओर उसकी पत्नी और तुतलाते बच्चे फिर कभी इकट्ठा नहीं होंगे, खुशी से उसकी सुरक्षित वापसी का स्वागत करने के लिए। जलपरियाँ हरे-भरे मैदान में बैठी रहती हैं, और मधुर स्वरों से आने वालों को मोहित करती हैं, जबकि उनके बगल में सड़ते हुए इंसानों की हड्डियाँ ढेर में पड़ी रहती हैं।” मुरझाई हुई खालें। सावधान रहो और उन्हें अनदेखा कर दो। पहले हथेली में अच्छी तरह गूंथे हुए मोम से अपने साथियों के कान भर दो, ताकि कोई आवाज़ अंदर न जा सके। अगर तुम चाहो तो संगीत सुनो, लेकिन अपने लोगों से कहो कि वे तुम्हें हाथ-पैर बांधकर अच्छे जहाज से, मस्तूल के सहारे सीधा खड़ा कर दें, और उसके चारों ओर रस्सी लपेट दें, ताकि तुम मधुर धुनें सुन सको। लेकिन अगर तुम फिर अपने आदमियों से विनती करो, उन्हें तुम्हें आज़ाद करने का आदेश दो, तो उन्हें आदेश दिया जाए कि वे तुम्हें और भी कसकर बांध दें। और जब वे सायरनों को पार कर जाएँगी, तो मैं तुम्हारे लिए यह निर्णय नहीं करूँगा कि कौन सा मार्ग लेना है; तुम स्वयं विचार करो; मैं तुम्हें दो मार्ग बताता हूँ। वहाँ चट्टानों का एक ढेर है, जहाँ काली आँखों वाली एम्फिट्रिटे की शक्तिशाली लहर गर्जना करती है; इन्हें धन्य देवता भटकने वाले कहते हैं। कोई पक्षी उन्हें सुरक्षित पार नहीं कर सकता, यहाँ तक कि डरपोक कबूतर भी नहीं, जो हमारे पिता बृहस्पति के लिए अमृत लाते हैं, परन्तु फिसलन भरी चट्टान हमेशा किसी न किसी को उठा ले जाती है, जिसकी हानि की भरपाई देवता तुरंत कर देते हैं, ताकि उनकी संख्या बनी रहे। मनुष्य द्वारा निर्देशित कोई भी नौका कभी भी इस स्थान पर आकर अक्षुण्ण नहीं रही; गहरे समुद्र की लहरों और हवा में आग के तूफानों ने जहाजों के मलबे और डूबे हुए लोगों के शवों को दूर-दूर तक बिखेर दिया है। गहरे समुद्र में चलने वाली नौकाओं में

से केवल एक ही नौका सुरक्षित रूप से उनसे बच निकली है—आर्गो, जो ऐएटा स्थित अपने घर से लौटते समय प्रसिद्धि से सर्वप्रसिद्ध थी—और अगर जूनो, जेसन की खातिर, उसे सुरक्षित रूप से पार करने न आती, तो लहरें उसे विशाल चट्टानों से टकरा देतीं।
“‘दो चट्टानें हैं; एक विशाल आकाश की ओर उठती है
अपनी नुकीली चोटी, जहाँ एक गहरा भूरा बादल
मंडराता है, और हटता नहीं; उस चोटी के ऊपर आकाश कभी साफ नहीं होता, न ही गर्मियों के दिनों में
और न ही पतझड़ में; न ही मनुष्य इसकी ढलानों पर चढ़ सकता है,
और न ही नीचे उतरने का साहस कर सकता है—कि किनारे इतने चिकने हैं, मानो मनुष्य की कला ने उन्हें पॉलिश किया हो। वहाँ बीच में
एरेबस की ओर पश्चिमी तरफ
एक छायादार गुफा फैली हुई है; हे महान यूलिसिस, तुम वहाँ अपनी नाव चलाओ, फिर भी
इतनी दूर रहो कि डेक पर खड़े होकर, एक युवक धनुष से तीर चला सकता है, जो गुफा के मुँह तक जाता है। वहाँ सिला निवास करती है, और भयानक चीखों से हवा भर देती है; उसकी आवाज़ नवजात पिल्लों के रोने जैसी है, लेकिन वह स्वयं एक भयानक चमत्कार है—एक ऐसा दृश्य जिसे कोई भी देखना नहीं चाहेगा, चाहे वह देवता ही क्यों न हो। उसके बारह पैर हैं, सभी आकारहीन; छह लंबी गर्दनें, प्रत्येक पर एक भयानक सिर, और तीन पंक्तियाँ, घने और असंख्य, मृत्यु की धमकी देते हुए। और उसका आधा शरीर गुफा के गर्भ में है, और उस अंधेरे से बाहर आता है। खाड़ी में उसके सिर बाहर निकले हुए हैं,
चट्टानों पर शिकार की तलाश में—
डॉल्फ़िन, या डॉगफ़िश, या विशाल व्हेल,
जैसे कि गुनगुनाती एम्फ़िट्रिटे असंख्य संख्या में पैदा करती है। कोई नाविक यह दावा नहीं कर सकता
कि वह अपने दल के साथ बिना किसी नुकसान के स्काइला से बच निकला है; वह डेक से एक जीवित व्यक्ति को छीन लेती है, और अपने प्रत्येक भयानक मुँह में उसे ले जाती है।
“यूलिसिस, तुम एक और चट्टान देखोगे, जो कम ऊँचाई की है, उसके इतनी पास कि हाथ से फेंका गया भाला भी उस तक पहुँच सकता है। उस पर एक विशाल जंगली अंजीर

का पेड़ है, जिसके पत्ते घने हैं। नीचे, अमर जन्म वाली चारिब्डिस, गहरे पानी को नीचे खींचती है; दिन में तीन बार वह उसे बाहर निकालती है, और तीन बार भयानक भंवर के साथ उसे अंदर खींच लेती है। हे, ऐसा न हो कि तुम्हारा भाग्य हो कि तुम उस समय आओ जब गहरा पानी तेजी से नीचे बह रहा हो! तब तो नेपच्यून भी तुम्हें नहीं बचा पाएगा। तो फिर तेजी से अपना मार्ग बदलकर स्काइला की चट्टान की ओर बढ़ो।” और उस रास्ते से गुजरो; यह कहीं बेहतर होगा कि जहाज से छह लोग मर जाएं बजाय इसके कि सभी लोग खो जाएं।
“उसने कहा, और मैंने उत्तर दिया: ‘हे देवी, कृपा करके मुझे सच-सच बताइए, क्या मैं तुरंत चैरिबडिस से बचकर अपने मित्रों की रक्षा नहीं कर सकता जब वह आक्रमण करे?’”
“मैंने कहा; शक्तिशाली देवी ने मुझे उत्तर दिया:— ‘उग्र पुरुष! क्या तू अब भी युद्ध और शक्ति प्रदर्शन के बारे में सोच रहा है? क्या तू अमर देवताओं के सामने भी हार नहीं मानेगा? वह विपत्ति नश्वर नहीं है; वह मर नहीं सकती, वह कांपने और सिहरने वाली है, भयंकर है और कभी पराजित नहीं हो सकती। साहस के लिए कोई जगह नहीं है; भाग जाना ही सबसे अच्छा है। और यदि तू चट्टान के पास हथियार उठाने में देर करे, तो मुझे डर है कि कहीं वह फिर से अपने सभी सिरों के साथ तुझ पर टूट न पड़े और तुझ पर झपट न पड़े। जितने हो सके उतने आदमियों। राक्षस के ठिकाने से होकर जितनी तेज़ी से हो सके गुज़र जाओ, और क्रेटेइस से प्रार्थना करो, जिसने स्काइला को जन्म दिया, जो मनुष्यों के लिए विपत्ति बनी, और जो उसके क्रोध को शांत करे, ताकि वह तुम पर फिर से हमला न करे।
“तब तुम अपनी यात्रा में त्रिनाक्रिया द्वीप पर पहुँचोगे, जहाँ सूर्य के चरागाहों में उसके अनेक बैल और मुरझाती भेड़ें चरती हैं—सात बैलों के झुंड और उतनी ही भेड़ों के झुंड, और प्रत्येक झुंड में पचास भेड़ें। वे कभी प्रजनन नहीं करतीं; वे कभी मरती नहीं। दो चरवाहिनियाँ उनकी देखभाल करती हैं, देवियाँ, लंबे बालों वाली अप्सराएँ—एक लैम्पेलिया, दूसरी फाएथुसा। अप्सराओं को नाएरा ने ढलते सूर्य के लिए जन्म दिया था, और जब उनकी रानी माँ ने उनकी देखभाल की। उन्होंने उनका पालन-पोषण किया था, और उन्हें दूर त्रिनाक्रिया में रहने के लिए नियुक्त किया था, जहाँ वे अपने पिता के भेड़- बकरियों और बैलों की रखवाली करते थे। यदि तुम्हारा मन लौटने पर केंद्रित हो, और तुम इन भेड़-बकरियों और मवेशियों को सुरक्षित छोड़ दो, तो तुम सब

इथाका पहुँच जाओगे, चाहे कितनी भी कठिन यात्रा करनी पड़े। परन्तु यदि तुम उन्हें जल्दबाजी में हानि पहुँचाओगे, तो मैं तुम्हारे जहाज और उसके सारे चालक दल के विनाश की भविष्यवाणी करता हूँ; और यदि तुम बच भी जाओगे, तो देर से और दुःख में लौटोगे, अपने सभी साथियों को खोकर।
“उसने कहा; सुबह अपने सुनहरे सिंहासन पर विराजमान होकर देख रही थी; महिमामयी देवी अपने मार्ग पर चल पड़ीं, द्वीप की ओर, मैं अपने जहाज पर गया, और पुरुषों को जहाज पर चढ़ने और रस्सियाँ ढीली करने का आदेश दिया। और वे तुरंत जहाज पर चढ़ गए, और विधिवत रूप से बेंचों पर बैठ गए, और बैठते ही चप्पू से धूसर जल को हिलाने लगे। सुनहरे बालों वाली, संगीतमय आवाज की शक्तिशाली देवी, सर्से ने हमारे काले धनुष वाले जहाज के पीछे एक अनुकूल हवा भेजी, जिसने हमें खुशी से आगे बढ़ाया, और पाल भर दिए। जब हमने अपने जहाज पर सभी को व्यवस्थित कर लिया, तो गैली में, हम बैठ गए, और अनुकूल हवा और पतवार को हमें आगे ले जाने के लिए छोड़ दिया, और इस प्रकार मैंने उदासी में चालक दल से कहा:
“मेरे मित्रों! यह अच्छा नहीं होगा कि केवल एक या दो ही उन भविष्यवाणियों को जानें जो मैंने देवियों में महान सिरसे से सुनी हैं; और अब मैं उन्हें प्रकट करूँगा, ताकि आप सभी, चाहे हमें मरना हो या मृत्यु के भाग्य से बचना हो, पहले से ही आगाह हो जाएँ। और सबसे पहले वह हमें दुष्ट जलपरियों और उनके गीत से आगाह करती है। केवल मैं ही उनकी आवाज़ सुन सकता हूँ, लेकिन पहले आपको मुझे ऐसे बंधनों से बाँधना होगा जो टूटने योग्य न हों, ताकि मैं मस्तूल के सहारे सीधा खड़ा रह सकूँ; और रस्सियों को इसके चारों ओर बाँध दें। यदि मैं तब विनती करूँ...” और मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे मुक्त करो, बंधनों को और मजबूत बनाओ।
“इस प्रकार मैंने अपने दल से बात की और उन सभी को बताया कि जब हमारा सुंदर जहाज सायरन द्वीप के निकट आ रहा था, तो उन्हें यह जानना चाहिए कि अनुकूल हवाएँ उसे धीरे-धीरे आगे बढ़ा रही थीं। फिर हवा एकदम शांत हो गई; मानो किसी देवता ने हवाओं को शांत कर दिया हो। तुरंत ही सभी लोग उठे और पाल समेटकर जहाज के भीतर रख दिए, और बैठकर देवदार की लकड़ी से बने अपने पॉलिश किए हुए ब्लेडों से समुद्र को सफेद कर दिया। फिर मैंने मोम का एक टुकड़ा लिया और उसे कई भागों में काट दिया, और प्रत्येक भाग को अपने मजबूत हाथों से गूंथा। दबाव से गर्म हो गया, और उसकी किरणों से जो पृथ्वी के चारों ओर यात्रा करता

है, सम्राट सूर्य। यह बात मैंने अपने सभी आदमियों के कानों में भर दी, पहले से आखिरी तक। उन्होंने मुझे बारी-बारी से, मस्तूल के सहारे सीधा खड़ा कर दिया, हाथ-पैर बांध दिए, और रस्सियाँ उसके चारों ओर बाँध दीं। फिर वे बैठ गए और चप्पू से गहरे समुद्र में पानी को रौंदने लगे। और जब, तेजी से दौड़ते हुए, हम सायरन के इतने करीब आ गए कि उनकी आवाज सुनाई दी, तो हमारी नाव उनके सामने से नहीं गुजरी, और उन्होंने मधुरता से गाया:—
“ ‘हे विश्वप्रसिद्ध यूलिसिस! तुम जो अचेयनों की शान हो, अपनी नाव को भूमि की ओर मोड़ो, ताकि तुम हमारा गीत सुन सको। अभी तक कोई भी व्यक्ति अपनी नाव में हमारे पास से नहीं गुजरा है, इससे पहले कि उसने हमारे मधुर गीत सुने हों। वह प्रसन्न होकर एक ज्ञानी व्यक्ति बनकर जाता है; क्योंकि हम जानते हैं कि ट्रॉय के विशाल राज्य में यूनानियों और ट्रोजनों ने स्वर्ग की इच्छा से सहन किया, और उपजाऊ पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में जो कुछ घटित होता है।’
“वे इस प्रकार गा रहे थे, और धुन मधुर थी। मैं सुनने के लिए तरस रहा था, और मैंने सिर हिलाकर मुझे मुक्त करने का संकेत दिया; उन्होंने अपने चप्पू और तेज़ कर दिए। तभी यूरिलोकस और पेरिमीडिस उछल पड़े, और अतिरिक्त रस्सियों से मुझे बांध दिया, और दूसरों को और कसकर बांध दिया। और जब हम उस स्थान से आगे निकल गए, और सायरनों का गीत अब और नहीं सुनाई दिया, तो मेरे साथी जल्दी से अपने कानों से मोम लेने आए, और रस्सियों को ढीला करके मुझे मुक्त कर दिया।”
जैसे ही हम द्वीप से निकले, मैंने कोहरा और पर्वतीय लहर देखी, और मैंने पानी की गर्जना सुनी। मेरे भयभीत साथियों के हाथों से चप्पू छूट गए, गहरा सागर शोरगुल में था; लेकिन जहाज वहीं रुक गया, क्योंकि सभी नाविकों ने अपना काम बंद कर दिया था। मैं जहाज के सभी लोगों के पास गया और उन्हें उत्साहवर्धक शब्दों से प्रोत्साहित किया, एक-एक करके, और कहा:—
“मेरे मित्रों, विचार करो कि हम बुरे भाग्य से अछूते नहीं हैं, न ही हम उस समय से अधिक दयनीय स्थिति में हैं जब क्रूर साइक्लोप्स ने हमें अपनी विशाल गुफा में बंदी बना रखा था; फिर भी मेरे शौर्य और मेरी सलाह और युक्तियों के कारण हम बच निकले, और मुझे विश्वास है कि तुम आज की घटनाओं को उसी तरह याद रखोगे। अब चलो कार्य करें। जैसा मैं सलाह देता हूँ वैसा ही करो; अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाओ, अपनी चप्पूओं से इन विशाल लहरों को मारो, और शायद

बृहस्पति हमें उस मृत्यु से बचा ले जो हमें धमका रही है।” हे नाविक, मैं तुम्हें शपथ दिलाता हूँ—और मेरी बात मानो, क्योंकि हमारे इस वीर पोत का पतवार केवल तुम्हारे हाथों में सौंपा गया है—इसलिए कोहरे और उफनती लहरों से दूर, इस ओर से जहाज को चलाओ, और चट्टान का ध्यान रखो, कहीं ऐसा न हो कि जहाँ वह समुद्र में निकली हो, तुम उसे अनदेखा कर दो और हम सबको विनाश की ओर ले जाओ।
“मैंने कहा, और सबने तुरंत मेरी बात मान ली। फिर भी मैंने स्काइला के बारे में कुछ नहीं कहा—जिससे अब हम बच नहीं सकते थे—कहीं ऐसा न हो कि डर के मारे सारा दल चप्पू चलाना बंद कर दे और जहाज के निचले हिस्से में घुस जाए। और तब मैं उस कठोर आदेश को भूल गया जो सर्क ने मुझे दिया था, कि मैं युद्ध के लिए हथियार न उठाऊं। मैंने अपने चमकते हुए हथियारों से अपने अंगों को ढक लिया और दो भारी भाले उठा लिए, और डेक पर जाकर जहाज के अगले हिस्से पर खड़ा हो गया—क्योंकि मुझे लगा कि स्काइला—चट्टानों की वह राक्षसी—सबसे पहले वहीं अपना रूप दिखाएगी—मुझे पकड़ने के लिए। साथियों। फिर भी मैंने उसे नहीं देखा, हालाँकि लंबे समय तक देखते-देखते मेरी आँखें थक गई थीं। उन धुंधली चट्टानों पर उत्सुकता से।
“दुख की बात है कि हम जलडमरूमध्य में प्रवेश कर गए, जहाँ एक ओर स्काइला और दूसरी ओर भयानक चट्टान चैरिबडिस खड़ी थी, जो अपने भयानक खाई में खारे पानी की बाढ़ को खींच रही थी; और जैसे ही उसने इसे फिर से बाहर फेंका, यह एक धधकती आग की तरह पानी को उछालता और गुनगुनाता रहा, जबकि फुहारें ऊपर की ओर उछलकर दोनों चट्टानों पर गिरीं; और जब उसने एक बार फिर खारे समुद्र को निगल लिया, तो वह अथाह गहराई में घूमने लगा, जबकि बहुत नीचे नीली रेत की तलहटी दिखाई दे रही थी। मेरे आदमियों डर से मेरा चेहरा पीला पड़ गया; हमने खाई में देखा और सोचा कि हमारा अंत निकट है। तभी सिला ने हमारे खोखले जहाज से मेरे छह साथियों को छीन लिया, जो वीरता और सामर्थ्य में सर्वश्रेष्ठ थे। मैंने अपने अच्छे जहाज की ओर देखा; मैंने उनकी ओर देखा और उनके हाथ-पैर हवा में झूलते हुए देखे, मेरे ऊपर, जबकि धरती पर आखिरी बार वे दिल की पीड़ा में मेरा नाम पुकार रहे थे। जैसे कोई मछुआरा उभरी हुई चट्टान पर बैठकर अपनी पतली छड़ी से चारा डालता है, छोटी मछलियों को फंसाने के लिए, वह सींग की तरह फेंकता है। एक जंगली बैल दूर से अपनी रेखा की रक्षा करता है, पानी में जाता है, और एक मछली को झटक कर बाहर निकालता है, और उसे तड़पते हुए किनारे

की ओर फेंक देता है; ठीक वैसे ही वे भी चट्टानों तक तड़पते हुए ऊपर उठे, और वहाँ सिला ने उन्हें अपनी गुफा के मुँह पर निगल लिया, पीड़ा की चीखों के साथ मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए। यह सचमुच सबसे दुखद दृश्य था, जो कुछ भी मैंने सहा है और जहाँ कहीं भी मैं पानी में घूमा हूँ, जो मेरी आँखों ने देखा है। “इस प्रकार चट्टानों से बचकर, स्काइला और चारिब्डिस के भयानक ठिकाने से निकलकर, हम सूर्य के रमणीय द्वीप के पास पहुँचे, जहाँ चौड़े माथे वाले सुंदर बैल चरते थे, और भेड़ों के झुंड, स्वर्ग का चक्कर लगाने वाले देवता के मोटे-ताज़े जानवर। समुद्र में रहते हुए ही मैंने अपने काले जहाज से अस्तबलों में झुंडों की रंभाने की आवाज़ और भेड़ों के मिमियाने की आवाज़ सुनी, और तुरंत मेरे मन में अंधे द्रष्टा टायरेसियस, थेब्स के उस व्यक्ति, और ऐयन सर्क के शब्द आए, जो अक्सर मुझे उस देवता के द्वीप से दूर रहने की चेतावनी दी गई थी जिसका प्रकाश सभी को मधुर लगता है। और फिर मैंने दुखी हृदय से अपने साथियों से कहा:
“मेरे साथियों, तुम सब पीड़ित हो, ध्यान से सुनो। मैं उन भविष्यवाणियों का खुलासा करूंगा जो दिवंगत टायरेसियस और ऐयन सर्से ने दी थीं। देवी ने मुझे गंभीर चेतावनी दी थी कि सूर्य के द्वीप के पास न जाऊं, जिसका प्रकाश सभी को मधुर लगता है, क्योंकि उन्होंने कहा था कि वहां कोई बड़ा दुर्भाग्य हमारा इंतजार कर रहा है। अब चलो जहाज को तेज करें और द्वीप को पार करें।”
मैंने कहा; यह सुनकर उनके हृदय टूट गए,
और यूरीलोचस ने कड़वाहट से उत्तर दिया:—
“हे यूलिसिस, तू कठोर है; तू अत्यंत बलवान है; कोई परिश्रम तेरे अंगों को नहीं थकाता; वे लोहे के बने होने चाहिए, क्योंकि तेरी इच्छा, परिश्रम और अनिद्रा से व्याकुल तेरे साथियों को, उस भूमि पर फिर से कदम रखने से रोकती है, और उस द्वीप पर जल के बीच एक भव्य भोज आयोजित करने से रोकती है। तू चाहता है कि हम शीघ्र आने वाली रात में रवाना हों, और द्वीप से दूर, धुंधले समुद्र में भटकें। रात में शक्तिशाली हवाएँ चलती हैं जो जहाजों को नष्ट कर देती हैं, और विनाश से कोई कैसे बच सकता है, यदि कोई... अचानक दक्षिण से या पश्चिम से तेज़ हवा के साथ तूफ़ान उठ खड़ा हो, ऐसा तूफ़ान जो सभी सर्वशक्तिमान देवताओं के बावजूद, गहरे समुद्र में जहाज़ को डुबो दे? चलो, अंधकारमय रात्रि का पालन करें, और अपना शाम का भोजन करें, अपने वीर जहाज़

के पास ही रहें, और भोर होते ही फिर से सवार होकर विशाल समुद्र में प्रवेश करें।
“यूरिलोकस ने ऐसा कहा; बाकी सबने सहमति जताई।
और तब मुझे पता चला कि कोई देवता
हमारे समूह के लिए बुराई की योजना बना रहा है,
और मैंने उसे तीखे शब्दों में इस प्रकार कहा:—
“यूरिलोचस, तुम मुझे अपनी इच्छा के अधीन कर रहे हो, क्योंकि मैं अकेला हूँ। अब तुम सब मुझसे दृढ़तापूर्वक शपथ लो कि यदि तुम्हें यहाँ बैलों का झुंड या भेड़ों का समूह मिले, तो तुम एक भी बैल या भेड़ को मारने का साहस नहीं करोगे, बल्कि सिरसे द्वारा दिए गए भंडार से संतुष्ट होकर भोजन करोगे।” मैंने कहा, और मेरे साथियों ने तुरंत मेरी अपेक्षा के अनुसार शपथ ली; और जब वह गंभीर शपथ ली गई, तो हम अपनी नाव को एक घुमावदार खाड़ी में, मीठे पानी के एक झरने के पास, किनारे पर ले आए और लंगर डाल दिया। मेरे साथी डेक से उतरे और वहाँ अपना शाम का भोजन तैयार किया। उन्होंने तब तक खाया-पिया जब तक उनकी प्यास और भूख शांत नहीं हो गई, और फिर उन्होंने उन लोगों के बारे में सोचा जिन्हें स्काइला ने हमारी नाव के डेक से छीनकर खा लिया था; वे सोचते और रोते रहे जब तक कि उनके आँसुओं के बीच नींद उन पर धीरे से छा नहीं गई। अब रात का तीसरा भाग आ गया था; तारे डूब रहे थे जब बादलों को नियंत्रित करने वाले बृहस्पति ने भयंकर हवा भेजी, और धरती और आकाश दोनों को बादलों से ढक दिया, और आकाश से अंधेरा छा गया। जब सुबह हुई, भोर की गुलाबी उंगलियों वाली पुत्री, हमने जहाज को एक विशाल गुफा में खींच लिया। वहाँ अप्सराओं के आसन थे, और वहाँ हमने वे सुंदर स्थान देखे जहाँ वे नृत्य करती थीं। मैंने अपने आदमियों की एक सभा बुलाई और उनसे कहा:—
“मेरे मित्रों, हमारे अच्छे जहाज में भोजन और पेय है;
हम इन बैलों से दूर रहें, अन्यथा हमें
कष्ट सहना पड़ेगा; क्योंकि ये झुंड और ये सुंदर भेड़ें
एक भयानक देवता, सूर्य—
सर्वव्यापी और सर्वश्रव्य सूर्य—के लिए पवित्र हैं।”
मैंने कहा, और सब मेरी बातों से आसानी से प्रभावित हो गए। पूरे एक महीने तक दक्षिण से तेज़ हवाएँ चलती रहीं, और उसके बाद पूर्व और दक्षिण के अलावा कोई हवा नहीं चली। जब तक हमारे पास रोटी और लाल शराब थी, मेरे साथियों ने जीवन

के प्रेम से प्रेरित होकर बैलों को बख्श दिया। लेकिन जब हमारी नाव में रखा सारा सामान खत्म हो गया, तो वे अपनी ज़रूरत में द्वीप पर भटकने लगे और शिकार की तलाश करने लगे, और कांटेदार हुकों से मछलियों और पक्षियों को फँसाते रहे—जो कुछ भी हाथ लगा—जब तक कि वे भूख से कमज़ोर नहीं हो गए। इस बीच मैं अकेला चला गया। मैं द्वीप में देवताओं से प्रार्थना करने गया, कि शायद उनमें से कोई मुझे मेरे लौटने का मार्ग बता दे। इस प्रकार भटकते हुए मैं उस भूमि में, सबसे अलग, एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा जहाँ हवा नहीं आती थी, और मैंने धुले हाथों से स्वर्ग में निवास करने वाले सभी देवताओं से प्रार्थना की। अंत में उन्होंने मेरी पलकों को गहरी नींद में सुला दिया। इसी बीच, यूरिलोचस ने घातक सलाहों से मेरे आदमियों को इस प्रकार उपदेश दिया:
“सुनो, मेरे साथियों, तुम सब पीड़ित हो,
जो शब्द मैं बोलने जा रहा हूँ। मृत्यु के सभी तरीके
मनुष्य जाति के लिए घृणित हैं;
परन्तु भूख से मरना, इस प्रकार अपने भाग्य का सामना करना,
सबसे भयानक है। आओ हम सूर्य के सभी बैलों में से सर्वश्रेष्ठ बैलों को अलग कर दें,
और उन्हें उन अमर लोगों को बलिदान कर दें जो विशाल आकाश में निवास करते हैं। और यदि हम
अपने देश इथाका पहुँचें, तो हम वहाँ
सूर्य के लिए, जिसका मार्ग हमारे सिर के ऊपर से गुजरता है,
एक भव्य मंदिर का निर्माण करेंगे, और उसके गर्भगृह को
अनेक उपहारों और दुर्लभ वस्तुओं से सुशोभित करेंगे। परन्तु यदि ऐसा हो उनकी इच्छा, जिसे अन्य सभी देवताओं ने भी स्वीकार किया है, क्रोध में आकर हमारी नाव को डुबो देना, उनके इन ऊंचे सींग वाले बैलों के लिए, मैं इस उदास द्वीप में अकाल से मरने के बजाय गहरे समुद्र की लहरों के बीच अपनी जान दे देना पसंद करूंगा।
“यूरिलोकस ने ऐसा कहा; दल ने सहमति जताई। फिर पास के झुंड से उन्होंने सभी बैलों में से सबसे अच्छे बैल चुने; क्योंकि काले रंग के जहाज के पास ही, चौड़े माथे वाले, सुंदर और टेढ़े सींगों वाले बैल चर रहे थे। मेरे दल के सदस्य मारे गए बैलों के चारों ओर खड़े थे, और देवताओं से प्रार्थना करते

हुए, अपने हाथों में कोमल बलूत के पत्ते लिए हुए थे, जो अभी-अभी एक ऊंचे पेड़ से तोड़े गए थे, क्योंकि हमारे अच्छे जहाज के गोदाम में अब सफेद जौ नहीं थी। जब उन्होंने प्रार्थना कर ली, और बैलों को मारकर साफ कर लिया, तो उन्होंने उनकी जांघों को काटकर दोहरी तहों से ढक दिया। झिल्ली के टुकड़े रखे और उन पर कच्चे टुकड़े रख दिए। जलते हुए मांस पर चढ़ाने के लिए उनके पास शराब नहीं थी; इसके बजाय उन्होंने पानी डाला और सारी आंतों को भून लिया। जब जांघें पूरी तरह से जल गईं और आंतों का स्वाद चख लिया गया, तो बाकी सब छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर सीखों पर लगा दिया गया।
“तभी मेरी पलकों से हल्की नींद टूट गई। मैं जल्दी से किनारे और अपने अच्छे जहाज की ओर भागा, और पास पहुँचकर मैंने बलि से उठती हुई सुगंधित भाप देखी। तब दुःख से मैंने शाश्वत देवताओं से प्रार्थना की:—
“ ‘हे पिता बृहस्पति, और हे समस्त धन्य देवताओं, जो सदा जीवित रहते हैं, यह एक क्रूर नींद थी जिसमें आपने मुझे मेरे घोर नुकसान के लिए सुला दिया; मेरे साथियों ने यहाँ एक भयानक अन्याय किया है।’
“लैम्पेटिया, अपने लंबे वस्त्रों के साथ, जल्दी से पृथ्वी के चारों ओर यात्रा करने वाले सूर्य के पास उड़ गई, उसे यह बताने के लिए कि मेरे दल ने उसके बैलों को मार डाला है, और इस प्रकार क्रोध में उसने देवताओं से कहा:— “ ‘हे पिता बृहस्पति, और हे सभी धन्य देवताओं, जो कभी नहीं मरते, मेरे साथ हुए अन्याय का बदला लो, लार्टेस के पुत्र यूलिसिस के साथियों से, जिन्होंने मेरे बैलों को बेरहमी से मार डाला, जिनमें मुझे हर बार आनंद आता था जब मैं तारों भरे आकाश में उठता था, और जब मैं फिर स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरता था। यदि वे इस अन्याय के लिए पर्याप्त क्षतिपूर्ति नहीं करते, तो मैं पाताल लोक में चला जाऊँगा, जहाँ मैं मृतकों के बीच चमकूँगा।’
बादलों को विवश करने वाले बृहस्पति ने उत्तर दिया:—
‘हे सूर्य! अमर देवताओं
और नश्वर मनुष्यों के बीच, पोषण देने वाली पृथ्वी पर, तुम चमकते रहो। मैं शीघ्र ही एक श्वेत वज्र से,
उनके जहाज को काले सागर के मध्य में चीर डालूँगा।’
“यह बात मैंने बाद में चमकीले बालों वाली कैलिप्सो से सुनी; उसने खुद कहा कि उसने यह बात दूत मरकरी से सुनी थी।”

जब मैं समुद्र के किनारे जहाज पर पहुँचा, तो मैंने एक-एक करके सभी को कड़ी फटकार लगाई, फिर भी हमें कोई उपाय नहीं सूझा; बैल मर चुके थे; और अब देवताओं ने चमत्कारों से मेरे साथियों को चकित कर दिया—खालें हिलने और रेंगने लगीं, कच्चे और भुने हुए मांस, बैलों की आवाज में रंभाने लगे। पूरे छह दिन मेरे साथियों ने दावत की, झुंड से सूर्य के सबसे अच्छे बैल लेकर। जब शनि के बृहस्पति ने सातवाँ दिन लाया, तो आंधी थम गई; हवा शांत हो गई, और हम तुरंत जहाज पर चढ़ गए।
मस्तूल सीधा खड़ा था, और सफेद पाल फैलाकर,
हमने फिर से विशाल समुद्र में कदम रखा।
“जब हम द्वीप से निकल चुके थे, और अब दिखाई दे रहा था
कोई और भूमि नहीं, केवल समुद्र और आकाश,
शनि के पुत्र ने एक भयानक बादल को
जहाज के ऊपर इकट्ठा कर लिया, और
अपना अंधकार गहरे समुद्र पर फैला दिया। कुछ ही देर में हमारा जहाज
आगे बढ़ गया, इससे पहले कि भयंकर पश्चिमी हवा
चली और एक तूफान आ गया। एक तेज झटके ने
मस्तूल को पकड़े हुए दोनों रस्सियों को तोड़ दिया; मस्तूल पीछे गिर गया; रस्सियाँ उलझकर जहाज के निचले हिस्से में गिर गईं;
मस्तूल जहाज के पिछले हिस्से पर गिरते हुए,
पायलट के सिर पर जा टकराया और उसकी हड्डियाँ चूर-चूर कर दीं,
और वह डेक से कूद गया। जैसे कोई गहरे पानी में गोता लगाता है; उसकी वीर आत्मा ने तुरंत अपने अंगों को छोड़ दिया। बृहस्पति ने ऊपर से गर्जना की, और जहाज पर एक वज्रपात किया, जिससे जहाज भयानक प्रहार से कांप उठा और दम घोंटने वाले गंधक से भर गया, जिससे मेरे साथी गहरे पानी में गिर पड़े। वे जहाज के चारों ओर मक्खियों की तरह तैरते रहे; बृहस्पति ने उन्हें वापस लौटने से रोक दिया था। मैं जहाज में ही इधर-उधर भटकता रहा, जब तक कि तूफान की ताकत ने जहाज के किनारों और कील को अलग नहीं कर दिया। लहरों के सामने नंगी कील बह गई। मस्तूल टूट गया था।
ठीक आधार पर, लेकिन उसके चारों ओर एक पट्टा था
जो बैल की खाल से बना था; इससे मैंने बांधा

पुस्तक XIII
इथाका में यूलिसिस का आगमन
अलसिनोस के दरबार से यूलिसिस का प्रस्थान—इथाका में जहाज का आगमन— फेएशियनों द्वारा सोते हुए यूलिसिस को किनारे पर ले जाकर छोड़ देना—उसके खजाने का भी उतरना—लौटते समय जहाज का नेपच्यून द्वारा एक चट्टान में परिवर्तित हो जाना—पल्लास और यूलिसिस के बीच सूइटरों के विनाश के संबंध में संवाद—खजाने को एक गुफा में छिपाना—यूलिसिस का एक बूढ़े व्यक्ति में रूपांतरित हो जाना।
उसने बोलना शुरू किया, और उन अंधकारमय कक्षों में मौजूद सभी लोग मौन हो गए; सभी मौन आनंद में डूबे हुए थे। फिर एल्सीनोउस ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा:— “चूंकि तू, यूलिसिस, एक अतिथि के रूप में आया है,
इस ऊंचे महल और इन पीतल के कमरों में,
इतने लंबे समय तक कष्ट सहने के बाद, तुझे अपने घर वापसी के रास्ते पर भटकते हुए नहीं जाना चाहिए।
और मैं तुममें से प्रत्येक को यही आज्ञा देता हूँ
जो इस महल में हमारे भोज में उत्तम लाल मदिरा पीते हैं, और कवि को सुनते हैं:
पहले से ही एक पॉलिश किए हुए संदूक में रखे हैं
वस्त्रों के परिवर्तन, सोने की कलाकृतियाँ,
और अन्य उपहार, जो फ़ेएशियन सरदारों ने
हमारे अतिथि के लिए रखे हैं; अब आओ हम में से प्रत्येक एक
एक बड़ा तिपाई और एक फूलदान,
और हम राज्य की सभा में
लागत की भरपाई सुनिश्चित करेंगे, क्योंकि अन्यथा
प्रत्येक को भारी बोझ उठाना पड़ेगा।”
ऐसा अलसिनोस ने कहा; उन्होंने सहमति जताई और सोने के लिए अपने घरों की ओर चल दिए, लेकिन जब भोर की संतान,
गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, तो वे आए,
सभी अतिथि के सम्मान में पीतल के उपहार लेकर जहाज पर आए। शक्तिशाली राजकुमार अल्सीनोउस ने जहाज में घूमते हुए सभी को बेंचों के नीचे इस

प्रकार से व्यवस्थित किया कि चप्पू चलाने वाले किसी को भी कोई हानि या बाधा न पहुंचे। फिर वे सभी राजा के महल में वापस गए और दावत की तैयारी की। शक्तिशाली राजकुमार एल्किनोउस ने बादलों को वश में करने वाले बृहस्पति, शनि के पुत्र, समस्त समाज के शासक को एक बैल भेंट किया। उन्होंने जांघों को जलाया और भव्य उत्सव मनाया, और हर तरफ आनंद का माहौल था। दिव्य डेमोडोकस, वह कवि जिसका सभी लोग आदर करते थे, ने उनके लिए गीत गाए। इस बीच यूलिसिस अक्सर चमकते सूरज को देखने के लिए मुड़ता और उसे अस्त होते देखने की लालसा करता, क्योंकि वह अपने घर वापसी के लिए रवाना होने को बहुत उत्सुक था। जैसे कोई चरवाहा अपने शाम के भोजन की प्रतीक्षा करता है, जिसके लिए दिनभर दो गहरे भूरे बैल बंजर भूमि में ठोस हल खींचते रहे हों, और सूर्यास्त का समय उसका स्वागत करता है, जो उसे भोजन के लिए बुलाता है, और वह थके हुए, लड़खड़ाते घुटनों के साथ चलता है, वैसे ही यूलिसिस के लिए दिन का प्रकाश अस्त हुआ। फिर उसने समुद्र प्रेमियों, फ़ेएशियनों के साथ, और विशेष रूप से एल्किनोअस के साथ, इस प्रकार बातचीत की:—
हे अपने वंश के सबसे गौरवशाली सम्राट, अल्सीनोअस! अब जब आपने देवताओं को विधिवत रूप से मदिरा अर्पित कर दी है, तो कृपया मुझे शांतिपूर्वक विदा करें और आपका भला हो! मेरे हृदय की जो भी इच्छा थी, आपने उदारतापूर्वक प्रदान की है— एक अंगरक्षक दल और बहुमूल्य उपहार; और देवता इन पर अपना आशीर्वाद बरसाएँ! काश मैं अपनी निष्कलंक पत्नी से पुनः मिल सकूँ और अपने मित्रों को समृद्ध पाऊँ! और जिन्हें मैं पीछे छोड़ रहा हूँ, आप अपनी युवावस्था की पत्नियों और बच्चों को दीर्घायु बनाएँ! देवता आपको और मेरे परिवार को सभी सद्गुणों से परिपूर्ण करें। उन्हें,
और आपके द्वीप पर कोई बुराई न आए!
उसने बात की; सभा में सभी ने उसके शब्दों को स्वीकार किया, और उस अजनबी को विदा करने का आदेश दिया, जिसने इतनी गरिमापूर्ण बातें कही थीं। तब शक्तिशाली राजकुमार अलसिनोस मुड़ा और दूत से कहा:—
“अब पोंटोनूस, एक जार में शराब मिलाओ,
और हमारे घर के नीचे सभी को एक हिस्सा दो,
ताकि हम पिता बृहस्पति से प्रार्थना करके उस अजनबी को उसके वतन वापस भेज सकें।”

उसने कहा; पोंटोनोउस ने मेहमानों के लिए उदार शराब मिलाई और उसे प्रत्येक के पास ले गया, जिन्होंने उसे वहीं से जमीन पर उंडेल दिया, जहाँ वे बैठे थे, विशाल स्वर्ग के सभी निवासियों के लिए; और फिर महान यूलिसिस उठ खड़ा हुआ, और उसने गोल प्याला एरेट के हाथों में रख दिया, और इस प्रकार रानी ने पंखों वाले शब्दों में कहा:—
“विदाई, हे रानी, उन लंबे वर्षों के लिए, जब तक बुढ़ापा और मृत्यु, जो सभी का भाग्य है, न आ जाए। अब मैं विदा लेता हूँ, परन्तु तुम यहाँ अपनी प्रजा और अपने प्रिय पुत्रों के बीच, और राजा अल्किनोस के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करो!”
उच्च कुल के सरदार ने ऐसा कहा और पीछे हट गया,
और दहलीज पार कर गया। राजा अल्किनोस ने
उसके साथ एक दूत भेजा ताकि वह उसे मार्ग दिखाए
बेड़े के जहाज और गहरे समुद्र की सीमा तक।
एरेट ने भी अपनी दासियों को भेजा—
एक नया लबादा और कुर्ता लेकर, एक
एक उत्तम रूप से गढ़ा हुआ संदूक लेकर, और तीसरी
रोटी और लाल शराब लेकर; और जब वे जहाज पर पहुँचे, समुद्र के किनारे, मेहनती दल ने अपना सामान उठाया और जहाज के निचले हिस्से में भोजन और पेय पदार्थ रखे, लेकिन डेक पर बिछा दिया और जहाज के पिछले हिस्से में एक चटाई और चादर डाल दी, ताकि यूलिसिस वहाँ शांति से सो सके। वह जहाज पर चढ़ गया और चुपचाप लेट गया, जबकि सभी नाविकों ने उचित क्रम में बेंचों पर अपनी-अपनी सीटें ले लीं। छिद्रित चट्टान से पहले रस्सियाँ ढीली करते हुए, उन्होंने उन्हें अपने काम में लगाया और चप्पू से खारा पानी उछाला, जबकि सरदार की पलकों पर मीठी, गहरी और शांत नींद छाई हुई थी, मानो मृत्यु के करीब हो। जैसे कोड़े की मार से घायल होकर, चार सजे-धजे घोड़े ऊँची छलांग लगाकर मैदान में एक साथ दौड़ पड़े; वैसे ही नाव का अगला हिस्सा उछलकर आगे बढ़ा, जबकि उसके पीछे गरजते समुद्र की एक विशाल काली लहर उमड़ रही थी। गैली सुरक्षित और स्थिर रूप से चलती रही, और न ही कोई बाज़, जो पक्षियों में सबसे तेज़ है, उसके साथ चल सकता था, क्योंकि वह इतनी तेज़ी से उड़ रही थी, और उसमें एक ऐसा वीर सवार था जो देवताओं के समान था, ज्ञान में, और जिसने युद्धों में और उग्र लहरों

के बीच यात्राओं में बहुत कष्ट झेले थे, हालाँकि अब वह शांति से सो रहा था, अतीत की विपत्तियों को भूलकर।
अब जब वह सबसे चमकीला तारा, भोर का अग्रदूत, भोर की पुत्री, उदय हुआ, तब तक नाव समुद्र पार कर चुकी थी और द्वीप पर पहुँच चुकी थी।
इथाका में एक बंदरगाह है, जो प्राचीन समुद्री देवता फोरसिस का निवास स्थान है। खड़ी ढलानें एक दूसरे की ओर अंदर की ओर फैली हुई हैं, और समुद्र से आने वाली कर्कश हवाओं की शक्तिशाली लहरों को पीछे धकेलती हैं, जबकि बंदरगाह के मुहाने से गुजरने के बाद जहाज बिना रस्सियों के ही खड़े रहते हैं। उस सुंदर बंदरगाह के दूर छोर पर फैली शाखाओं वाला एक जैतून का पेड़ खड़ा है, और वह अप्सराओं की एक सुखद छायादार गुफा को ढक लेता है, जिन्हें नाइएड कहा जाता है। भीतर पत्थर के प्याले और घड़े सजे हुए हैं, और मधुमक्खियाँ उनमें अपना शहद जमा करती हैं। वहाँ पत्थर से बनी चरखियों से अप्सराएँ अपने गहरे बैंगनी रंग के वस्त्र बुनती हैं, जिन्हें देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं; वहाँ सदा बहने वाले झरने हैं। दो प्रवेश द्वार हैं: एक उत्तर की ओर, जिससे मनुष्य प्रवेश करते हैं; परन्तु एक अधिक पवित्र द्वार दक्षिण की ओर है, और कोई भी मनुष्य वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। उस मार्ग से देवता गुजरते हैं।
वे ज़मीन पर उतरे, क्योंकि वे उस जगह को अच्छी तरह जानते थे। चप्पू चलाने वालों की भुजाओं से इतनी ज़ोर से प्रेरित होकर, गैली (नाव) अपनी आधी लंबाई तक समुद्र तट पर चढ़ गई। फिर चालक दल उस अच्छे जहाज़ से बाहर आया और सबसे पहले उन्होंने यूलिसिस को लिनन और टेपेस्ट्री की कीमती तहों के साथ उठाया और उसे रेत पर गहरी नींद में लिटा दिया। फिर उन्होंने जहाज़ के गोदाम से वे उपहार भी निकाले, जो उसने अपने द्वीप को छोड़ते समय फ़ेएशिया के राजकुमारों को बुद्धिमान पल्लास की सलाह से दिए थे। उन्होंने इन्हें जैतून के पेड़ के पास, रास्ते से हटकर, ढेर कर दिया, ताकि यूलिसिस के जागने से पहले कोई भी गुजरते हुए इनके मालिक को नुकसान न पहुंचा सके। फिर दल अपने घर की ओर चल पड़ा; लेकिन नेपच्यून, जो बहुत पहले यूलिसिस के खिलाफ़ दी गई धमकियों को दोहरा नहीं सका, उसने बृहस्पति की इच्छा जानने की कोशिश की: “हे पिता बृहस्पति! अब मैं देवताओं के बीच आदरणीय नहीं रहूँगा, क्योंकि फ़ेएशिया के लोग, यद्यपि उनकी जाति मेरे वंश की है, मेरा आदर नहीं करते। मेरा इरादा था कि यूलिसिस अपने घर बहुत कष्ट सहे बिना न पहुँच पाए, हालाँकि

मैंने कभी उसकी वापसी में बाधा डालने का नहीं सोचा था, क्योंकि तूने ही यह वादा और सहमति दी थी। फिर भी, फ़ेएशिया के इन लोगों ने एक भव्य नाव में उसे समुद्र पार ले जाकर, जब वह सो रहा था, उसे इथाका में लिटा दिया और उसे बड़े- बड़े उपहार दिए।” पीतल और सोने का प्रचुर भंडार, और बुना हुआ सामान, इतना अधिक कि वह इलियम पर कब्जा करने के बाद भी अपने हिस्से के सारे माल के साथ सुरक्षित लौट आता तो भी इतना कुछ नहीं ला पाता।
तब बादलों को विवश करने वाले बृहस्पति ने उत्तर दिया: “हे पृथ्वी को कंपाने वाले, शक्तिशाली साम्राज्य के शासक! तूने क्या कहा? देवता तुझे उचित सम्मान देने से इनकार नहीं करते; उनके लिए यह घातक होगा कि वे उस व्यक्ति का अपमान करें जो उम्र और शक्ति में उन सबसे श्रेष्ठ है। परन्तु यदि मनुष्यों में कोई ऐसा हो जो अपनी शक्ति पर इतना भरोसा रखता हो कि तुझे सम्मान न दे, तो जो तुझे उचित लगे और जैसा तू चाहे, वही कर।”
तटों को हिलाने वाले देवता ने तुरंत उत्तर दिया;
“तू जो कह रहा है, मैं तुरंत कर दूंगा, लेकिन मुझे तेरे क्रोध का भय है और मैं उससे बचना चाहता हूँ।
मैं उस सुंदर फ़ेएशियन नौका को नष्ट कर दूंगा, जो धुंधले समुद्र के पार लौट रही है,
यूलिसिस को घर ले जाने से, ताकि फ़ेएशियन अब और भटकते हुए लोगों को इस तरह से सुरक्षा न दें, और मैं एक ऊँचा पर्वत भी खड़ा कर दूंगा जो उनके शहर को छिपा देगा।”
तब बादलों को नियंत्रित करने वाले बृहस्पति ने फिर कहा:
“हे मेरे भाई, यही सर्वोत्तम होगा: जब नागरिकों की भीड़ पहले से ही जहाज को पास आते हुए देखे, तब उसे एक चट्टान में रूपांतरित कर दो, जो एक गैली के समान हो, ताकि वे सभी आश्चर्य से निहार सकें; इस प्रकार तुम उनके नगर के सामने एक ऊँचा पर्वत खड़ा कर दोगे।”
जब तटों को हिलाने वाले ने यह सुना, तो वह फ़ेएशियाई द्वीप शेरिया की ओर उड़ गया, और तब तक वहीं खड़ा रहा जब तक कि वह जहाज समुद्र पार करके तेज़ी से उसके पास नहीं आ गया। वह उसके पास पहुँचा और अपनी खुली हथेली से उस पर प्रहार किया, और जहाज को चट्टान बना दिया, जो गहरे समुद्र की तलहटी में मजबूती से जड़ जमा चुका था, और फिर वह अपने रास्ते चला गया।

तब फाएकेवासियों की उस भीड़ में, जो लंबी चप्पू चलाने में माहिर थे और नौकायन में अपनी विख्याति के लिए प्रसिद्ध थे, पंखदार शब्द बोले गए। और एक-दूसरे की ओर देखते हुए उन्होंने इस प्रकार कहा:
“हा! हमारे प्यारे जहाज को समुद्र में किसने रोक रखा है?
इस पल हमने उसे घर की ओर तेजी से आते देखा।”
वे इस प्रकार बातें करते रहे, कारण से अनभिज्ञ।
परन्तु फिर अलसिनोस ने सभा से कहा:—
“हाँ! अब मुझे भविष्यवाणी के प्राचीन शब्द याद आ रहे हैं—मेरे पिता के— जो अक्सर कहते थे कि नेपच्यून बहुत नाराज़ है कि हम आने वाले हर व्यक्ति को उसके घर तक सुरक्षित पहुँचाएँ। आने वाले समय में—मेरे पिता की यही भविष्यवाणी थी—देवता एक सुसज्जित नाव को नष्ट कर देगा जो फाएशियनों की होगी, धुंध भरे गहरे समुद्र में, सुरक्षा सेवा से लौटते हुए, और हमारे शहर के सामने एक ऊँचा पर्वत खड़ा कर देगा। बूढ़े व्यक्ति ने यही भविष्यवाणी की थी; उनके शब्द अब पूरे हो गए हैं। अब जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।” और हम सब आज्ञा का पालन करें। अब से हमारे तट पर आए अजनबियों को उनके घर ले जाने से बचें; और हम नेपच्यून को बारह उत्तम बैलों की बलि दें, ताकि वह हम पर दया करे और हमारे शहर को मनुष्यों की दृष्टि से एक विशाल पर्वत से न छिपाए। उसने कहा, और वे भयभीत हो गए और तुरंत बलि के लिए बैल ले आए। इस प्रकार, वेदी के चारों ओर खड़े होकर, फ़ेएशियन सरदारों और राजकुमारों ने संप्रभु नेपच्यून से प्रार्थना की।
अब महान यूलिसिस अपनी नींद से जाग उठा
अपनी ही भूमि में, और फिर भी उसे इसका एहसास नहीं था।
वह बहुत समय से दूर था, और अब पल्लास,
बृहस्पति की पुत्री, ने उसके चारों ओर एक धुंध छा दी थी,
ताकि वह अभी तक दूसरों को ज्ञात न हो सके,
और ताकि वह उसे पहले बता सके कि उसे क्या सीखना चाहिए; न तो उसकी पत्नी, न ही उसके मित्र, न ही उसके लोग उसके लौटने की खबर जान पाएंगे, इससे पहले कि वह अपने चाहने वालों के दल से अपने अन्याय का बदला ले, और इसलिए सब कुछ उसके लिए एक नया रूप धारण कर गया—दूर तक फैले रास्ते, जहाँ जहाज लंगर डाले खड़े थे, ऊँची चट्टानें, और फैले हुए पेड़। वह उठा और सीधा खड़ा हो गया, और

अपने जन्मस्थान के तट को निहारते हुए रोया, और अपनी जांघ पीटते हुए गहरे दुःख में बोला:—
“अरे! मैं किस क्षेत्र में आ गया हूँ, किन लोगों के बीच? अधर्मी, क्रूर और अन्यायी? या वे मेहमाननवाज लोग हैं, जो देवताओं से डरते हैं? और मैं इन वस्तुओं को कहाँ रखूँ, और मैं कहाँ जाऊँ? काश वे सब अभी भी फ़ेएशियनों के साथ होते, और मुझे कोई दूसरा महान और शक्तिशाली राजा मिल जाता जो कृपा करके मेरा स्वागत करता और मुझे मेरे देश वापस भेज देता। मुझे नहीं पता कि इन खजानों को कहाँ रखूँ, और मुझे इन्हें यहाँ नहीं छोड़ना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि दूसरे आकर इन्हें लूट के रूप में छीन लें। नहीं, ये फ़ेएशियन सरदार और सलाहकार हर बात में न तो बुद्धिमान थे और न ही न्यायप्रिय। उन्होंने मुझे खूबसूरत इथाका के तट पर उतारने का वचन दिया था, और अपना वादा नहीं निभाया। हे भगवान, इस अन्याय का बदला लें! वही जो याचक की रक्षा करता है, जो सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखता है, और दोषियों को दंडित करता है। अब मैं अपने भंडार की समीक्षा करूँगा और उन्हें फिर से गिनूँगा, ताकि मैं देख सकूँ कि मुझे यहाँ छोड़ने वालों ने कुछ लिया है या नहीं।
ऐसा कहकर उसने अपने सभी उपहारों की गिनती की— सुंदर तिपाई, कड़ाही, सोने की कलाकृतियाँ, और भव्य बुने हुए वस्त्र; इनमें से किसी की भी कमी नहीं थी। फिर वह अपने जन्मस्थान को फिर से देखने के लिए व्याकुल हो गया, और धीरे- धीरे शोरगुल वाले समुद्र के किनारे टहलते हुए विलाप करने लगा। वहाँ पल्लास एक युवा चरवाहे के रूप में उससे मिलने आई, जो राजाओं के पुत्रों की तरह कोमल रूप से बनी हुई थी। उसके कंधे पर एक लबादा था; उसके पैर सैंडल में चमक रहे थे: उसके हाथ में एक भाला था। जैसा कि यूलिसिस ने देखा, उसका हृदय प्रसन्न हो उठा, और वह जल्दी से आगे बढ़ा, और उसने पंखदार शब्दों से उसका अभिवादन किया:
“हे सुंदर युवक, जो इस तट पर मुझसे मिलने वाला पहला व्यक्ति है, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ और आशा करता हूँ कि तुम मुझसे किसी दुर्भावना से नहीं मिले होगे। जो कुछ तुम यहाँ देख रहे हो और मेरी रक्षा करो; मैं तुमसे एक देवता के समान प्रार्थना करता हूँ और तुम्हारे घुटनों पर गिरता हूँ। और कृपया मुझे बताओ, ताकि मैं सत्य जान सकूँ, यह कौन सी भूमि है? यहाँ के लोग कौन हैं? यहाँ के निवासी कौन हैं? क्या यह एक रमणीय द्वीप है, या यह केवल उपजाऊ मुख्य भूमि का किनारा है जो समुद्र की ओर ढलान बनाता है?”

और फिर नीली आँखों वाली देवी पल्लास ने कहा:
“तुम सरल मन के हो, सिवाय इसके कि तुम दूर से आए हो, अगर तुम पूछते हो कि यह कौन सा देश है। यह बिल्कुल भी अनाम क्षेत्र नहीं है; इसे बहुत से लोग अच्छी तरह जानते हैं
जो उगते सूरज के नीचे रहते हैं,
और जो शाम के धुंधले क्षेत्र में पीछे रहते हैं।
यह ऊबड़-खाबड़ है, और घोड़ों के लिए अनुपयुक्त है,
फिर भी यह बंजर नहीं है, हालाँकि इसकी सीमाओं के भीतर समतल भूमि नहीं है। यह अनाज और शराब में समृद्ध है, क्योंकि मौसमी बारिश और ओस इसे तरोताज़ा कर देती है। मिट्टी। यहाँ बकरियों के बड़े-बड़े झुंड और बैल चरते हैं; इसके जंगलों में हर तरह के पेड़ हैं, और इसके झरने कभी सूखते नहीं। हे अजनबी, इथाका की प्रसिद्धि ट्रोजन तट तक पहुँच चुकी है, हालाँकि मैंने सुना है कि वह ग्रीस से बहुत दूर है।
उसने कहा; महान पीड़ित यूलिसिस, अपने देश में आकर प्रसन्न हुआ, जिसका नाम पल्लास, कवचधारी बृहस्पति की संतान, ने अभी-अभी लिया था। फिर उसने मधुर शब्दों से बात की, पर सत्य नहीं; उसने अपनी धूर्तता को त्याग दिया, और अपने हृदय में चतुर आविष्कार की शक्ति को सदा के लिए जागृत कर लिया:
“क्रीट के विशाल मैदानों में, जो समुद्र के उस पार दूर स्थित हैं, मैंने इथाका के बारे में सुना, जहाँ मैं अब अपने इन सामानों के साथ आया हूँ। मैंने अपने बेटों के लिए इतना सामान छोड़ा और भाग गया, क्योंकि मैंने ओर्सिलोचस को मार डाला था, जो पैदल सेना का महारथी था, इडोमेनियस का प्रिय पुत्र, जिसने दौड़ में अपनी तेज़ी से क्रीट राज्य के सबसे आगे दौड़ने वालों को परास्त कर दिया था। उसने ट्रोजन लूट के मेरे हिस्से को पूरी तरह से छीनने की कोशिश की, जिसके लिए मैंने वीरों के साथ युद्ध में और समुद्र में उग्र लहरों के बीच कठिनाइयाँ सहन की थीं। कारण यह था: ट्रॉय की घेराबंदी में मैं उसके पिता की सेवा करने के लिए आत्मसमर्पण नहीं करूँगा, बल्कि उससे अलग होकर, मैंने अपने साथियों के साथ एक टुकड़ी का नेतृत्व किया। खेतों से लौट रहे युवक से मेरी मुलाकात हुई, और मैंने उसे भाले से मार डाला—क्योंकि रास्ते के पास ही मैं अपने एक साथी के साथ घात लगाकर बैठा था। रात बहुत गहरी थी; किसी ने नहीं देखा, और न ही कोई जानता था कि किसने उसकी जान ली। जब मैंने उसे इस प्रकार मार डाला, तो मैं तेज भाले के

साथ जल्दी से फोनीशियनों के एक जहाज पर गया, और उनकी सहायता की याचना की। और उन्हें बड़ा इनाम दिया, और उन्हें आदेश दिया कि वे मुझे लेकर पाइलोस की ओर चलें और मुझे वहीं छोड़ दें, या जहाँ एपेई के लोग एलिस के पवित्र तट पर अधिकार रखते हैं। लेकिन प्रतिकूल हवाओं के बल ने उन्हें अनिच्छा से वहाँ से भगा दिया; उनका कोई छल करने का इरादा नहीं था। हम भटकते हुए यहाँ पहुँचे, ठीक रात को; और नाविकों ने कड़ी मेहनत से चप्पू चलाकर अपने जहाज को बंदरगाह के भीतर ला खड़ा किया। भोजन के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया, हालाँकि हमें इसकी बहुत आवश्यकता थी। सभी जल्दी से उतरे और किनारे पर लेट गए। गहरी नींद मेरे थके हुए अंगों पर छा गई। लोगों ने मेरे सामान को जहाज के निचले हिस्से से निकाला। सामान लेकर, और उन्हें लेकर
जहाँ मैं रेत पर सो रहा था, वहाँ से रवाना होकर
घनी आबादी वाले सिदोनिया के लिए निकल पड़ा, और मुझे
यहाँ बिल्कुल अकेला, मेरे दिल में दुख के साथ छोड़ गया।"
उसने बात की; नीली आँखों वाली देवी, पल्लास, मुस्कुराई, और उसने मुखिया को प्यार से छुआ। वह अब एक सुंदर और राजसी महिला प्रतीत हो रही थी, जो दुर्लभ शिल्पकला में निपुण हो। और उसने उससे मधुर शब्दों में कहा:
वह कितना भी चतुर और छल-कपट का उस्ताद क्यों न हो, जो छल-कपट में तुझसे भी आगे निकल जाए, चाहे वह देवता ही क्यों न हो—तू निर्भीक है, छल-कपट में तत्पर और छल-कपट में असीमित! तू अपने देश में भी छल-कपट और भ्रामक शब्दों से नहीं बच सकता, जैसा कि तू जन्म से करता आया है। परन्तु अब हम अन्य विषयों पर बात करें, क्योंकि हम दोनों छल-कपट में निपुण हैं। तू परामर्श और वाणी में जीवित मनुष्यों में सर्वोपरि है, और मैं दूरदर्शिता और छल-कपट के लिए प्रसिद्ध हूँ। अमरों में से एक। क्या तुम अब तक बृहस्पति की पुत्री पल्लास एथेनी को नहीं जानते, जिसकी सहायता हर समय खतरे से तुम्हारी रक्षा के लिए उपस्थित रहती है, और जिसने हाल ही में तुम्हें संपूर्ण फेएशियन जाति का स्नेह प्राप्त कराया है? और मैं यहाँ तुम्हारे लिए बुद्धिमानी भरी सलाह देने और समृद्ध फेएशियन सरदारों द्वारा तुम्हारे प्रस्थान पर दिए गए भंडार को छुपाने आया हूँ। मैं तुम्हें यह भी बताऊंगा कि भाग्य की इच्छा से तुम्हें अपने महल की छत के नीचे क्या सहना होगा। फिर भी इसे साहसपूर्वक सहो, क्योंकि तुम्हें सहना ही होगा। और न ही किसी पुरुष या स्त्री से अपने बारे में और न ही यहाँ आने के बारे में बात करो, बल्कि उन

अनेक बातों को चुपचाप सहन करो जो तुम्हें दुखी करती हैं, और हिंसक पुरुषों से होने वाले अपमान को सहो।
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: हे देवी, मनुष्य के लिए तुम्हें पहचानना कठिन है, चाहे उसकी दृष्टि कितनी भी तीव्र क्यों न हो, क्योंकि तुम अपनी इच्छा से कोई भी रूप धारण कर लेती हो। फिर भी मैं यह जानता हूँ कि जब हम, यूनान के पुत्र, ट्रॉय के राज्य में युद्ध कर रहे थे, तब तुम मुझ पर दयालु थीं। परन्तु जब हमने प्रियम के ऊँचे नगर पर विजय प्राप्त कर ली और जहाज पर सवार हो गए, और जब किसी देवता ने अचेयनों को तितर-बितर कर दिया, उसके बाद, हे बृहस्पति की पुत्री, मैंने तुम्हें फिर कभी नहीं देखा। मैंने तुम्हें कभी अपनी नाव में प्रवेश करते हुए नहीं देखा और न ही मुझे खतरे से बचाते हुए—लेकिन मैं भटकता रहा, जगह-जगह, मेरा दिल दुख से बोझिल था, जब तक कि देवताओं ने मुझे बचाया नहीं, और जब तक कि फ़ियाकियों के समृद्ध राज्य में तुम्हारी सलाह ने मेरा साहस वापस नहीं लौटाया, और तुमने स्वयं मुझे शहर तक पहुँचाया। और अब मैं तुम्हारे महान पिता के नाम पर प्रार्थना करता हूँ—क्योंकि मैं अब भी यह नहीं सोच सकता कि मैं सुखद इथाका आया हूँ, बल्कि किसी और तट पर फेंक दिया गया हूँ, और मुझे डर है कि तुम ही हो। मेरे साथ मजाक कर रहे हो, और इस प्रकार बोले हो
परन्तु मुझे धोखा देने के लिए—मुझे बताओ, क्या यह सच है
कि मैं अपनी प्रिय भूमि में हूँ?
और फिर नीली आँखों वाली देवी पल्लास ने कहा: “तेरे विचार ऐसे ही होते हैं, इसलिए मैं तुझे तेरी ज़रूरत में नहीं छोड़ सकती। मैं जानती हूँ कि तेरी वाणी कितनी तत्पर, तेरा विचार कितना तेज़ और तेरा निर्णय कितना बुद्धिमान है। यदि कोई दूसरा व्यक्ति इतनी लंबी यात्राओं से लौटकर आता, तो वह तुरंत अपने बच्चों और पत्नी के पास अपने घर लौट आता। परन्तु तू उनसे कुछ पूछना या सुनना नहीं चाहता, जब तक तू अपनी संगिनी की सच्चाई की परीक्षा न ले ले— जो अब तेरे महल में बैठी है और प्रतीक्षा कर रही है।” तेरे लिए व्यर्थ, और निरंतर शोक में
और रोते-रोते उसके दिन और रात बीत जाते हैं।
मुझे कभी संदेह नहीं था—वास्तव में, मुझे पता था
कि तू, अपने सभी साथियों को खोकर, अपने देश पहुँच जाएगा, लेकिन मुझे अपने पिता के भाई नेपच्यून का सामना करने से डर लगता था, जो क्रोधित था,

और भयंकर रूप से क्रोधित था, क्योंकि तूने उसके प्रिय पुत्र की दृष्टि छीन ली थी। लेकिन अब
ध्यान दे, और मैं तुझे इथाका दिखाऊँगा
कुछ संकेतों से; उन्हें देख और विश्वास कर।
गहरे सागर के प्राचीन फोरकिस का बंदरगाह।
यहाँ है; और वहाँ फैला हुआ जैतून का वृक्ष,
ठीक बंदरगाह के शीर्ष पर; और, ठीक बगल में,
ठंडी अंधेरी गुफा, अप्सराओं के लिए पवित्र
जिन्हें नाइएड कहा जाता है—एक चौड़ी गुंबद वाली गुफा जहाँ कभी
तुम अक्सर चुनी हुई बलि चढ़ाती थी,
अप्सराओं को भेंट के रूप में—और यहाँ तुम देखते हो
नेरिटस पर्वत अपने सभी जंगलों के साथ।”
देवी ने ऐसा कहा और कोहरा छंट गया, और सारा दृश्य प्रकट हो गया। यूलिसिस ने देखा, वह बहुत प्रसन्न था, अपनी प्यारी भूमि में आनंदित था, और झुककर उसने उपजाऊ धरती को चूमा, और अपने हाथ उठाकर अप्सराओं से प्रार्थना की: “अप्सराओं, जलदेवियों, बृहस्पति की पुत्री, मुझे फिर से तुम्हारे साथ होने की आशा नहीं थी। प्रसन्न प्रार्थनाओं के साथ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। हम शीघ्र ही तुम्हें अपने उपहार अर्पित करेंगे, जैसे पहले करते थे, यदि बृहस्पति की पुत्री, शिकारी रानी, कृपापूर्वक मुझे जीवित रहने का वरदान दे और मेरे प्रिय पुत्र को आशीर्वाद दे।”
फिर नीली आंखों वाली देवी पल्लास ने कहा:
“निराश रहो, और किसी भी चिंताजनक विचार को अपने मन को विचलित न करने दो। चलो हम सब मिलकर उन खजानों को छुपा दें जो तुम लाए हो
इस पवित्र गुफा में किसी सुरक्षित स्थान पर; उसके बाद हम आगे क्या करना है, इस पर विचार करेंगे।”
देवी ने ये शब्द कहे और अंधकारमय गुफा में चली गईं, जहाँ से उन्होंने उसके गुप्त स्थानों की जासूसी की; वहीं यूलिसिस अपने हाथों में खजाने लेकर वहाँ पहुँचा—सोना, टिकाऊ पीतल, और उत्तम वस्त्र—जो उसे फेएशियनों ने दिए थे। उन्होंने इन्हें उचित क्रम में एक साथ रखा; फिर एजिस धारण करने वाले बृहस्पति की पुत्री पल्लास ने एक विशाल चट्टान से गुफा का द्वार बंद कर

दिया। फिर, पवित्र जैतून के वृक्ष के पास बैठकर, उन्होंने अभिमानी दूल्हों के दल को नष्ट करने की योजना बनाई, और नीली आँखों वाली पल्लास ने कहा:— “हे कुलीन और अनेक छल-कपटों में निपुण, लेर्टेस के पुत्र! अब वह घड़ी आ गई है जब तुम यह विचार करोगे कि तुम कैसे उन निर्लज्ज लोगों से बदला लोगे जिन्होंने तुम्हारे घर पर पिछले तीन वर्षों से अपना प्रभुत्व जमा रखा है, और तुम्हारी कुलीन पत्नी को रिझाने और उसे उपहार देने का प्रयास किया है, जबकि वह तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा में तड़पती रही और प्रत्येक प्रेमी को आशाएं देती रही, और संदेशों द्वारा सभी से वादे करती रही, यद्यपि अपने हृदय में वह एक अलग उद्देश्य संजोए हुए थी।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया:
“हे भगवान, मैं तो पूरी तरह से नष्ट हो जाता,
उसी बुरे भाग्य से जो एट्रीड्स एगामेम्नन के साथ मेरे अपने महल के महलों में हुआ था, लेकिन हे देवी, तुम्हारे शब्दों ने मुझे वह प्रकट किया जो मुझे जानना चाहिए था।
अब मुझे सलाह दो कि मैं कैसे बदला ले सकता हूँ।
सदा मेरे साथ रहो, और मुझे साहस से मजबूत करो, जैसा तुमने तब किया था जब हमने इलियम के ऊंचे शिखर को ध्वस्त किया था। काश तुम तब भी मेरी सहयोगी होती! मैं तुमसे लड़ने के लिए तैयार हूँ, हे नीली आँखों वाली पल्लास, तीन सौ शत्रुओं के साथ, हे भयानक देवी, यदि तुम मुझे सलाह दो तो।”
और फिर नीली आँखों वाली पल्लास ने दोबारा कहा: “मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। जब हम एक बार काम शुरू कर देंगे, तो तुम मेरी नज़रों से ओझल नहीं हो पाओगे; और कई अभिमानी चाहने वाले अपने खून और दिमाग से तुम्हारे विशाल महल के फर्श को दागदार कर देंगे। अब मैं तुम्हारा रूप बदल दूँगी, ताकि कोई तुम्हें पहचान न सके। मैं तुम्हारी सुंदर त्वचा को सुखा दूँगी, और वह टेढ़े-मेढ़े अंगों पर लटक जाएगी; तुम्हारे भूरे बालों को मैं गिरा दूँगी, और तुम्हारे चारों ओर एक ऐसा लबादा डाल दूँगी जिसे सब घृणा से देखेंगे। मैं तुम्हारी चमकदार आँखों को बदल दूँगी।” तुम दृष्टिहीन लगोगे, और इस प्रकार तुम सभी दूल्हों के सामने एक नीच और अभागे व्यक्ति के रूप में दिखाई दोगे, अपनी पत्नी और उस पुत्र के सामने जिसे तुमने अपने महल में छोड़ दिया था। तब सबसे पहले उस चरवाहे के पास जाओ, जो तुम्हारे सूअरों की देखभाल करता है; क्योंकि वह वफादार है और तुम्हारे पुत्र और चतुर पेनेलोप से

प्रेम करता है। वहाँ तुम उसे अपने सूअरों की देखभाल करते हुए पाओगे, जो कोरेक्स की चट्टान और एरेथुसा के झरने के पास चरते हैं। वे पौष्टिक बलूत के फल खाते हैं और साफ, गहरे रंग का पानी पीते हैं, जिससे सूअरों का मांस मोटा होता है। वहीं रुककर, तुम जो कुछ भी जानना चाहते हो, उसके बारे में ध्यान से पूछताछ करो, जबकि मैं, सुंदर स्त्रियों के निवास स्थान स्पार्टा की ओर जाते हुए, तुम्हारे पुत्र यूलिसिस, टेलेमाकस को बुलाता हूँ, जो राजा मेनेलास के विशाल राज्य में उनसे मिलने आया है, यह जानने के लिए कि क्या तुम अभी भी जीवित हो।
बुद्धिमान यूलिसिस ने उससे उत्तर दिया:
“तुम, जिसे सब कुछ ज्ञात है, तुमने उसे मेरे विषय में क्यों नहीं बताया? क्या उसे भी भटकना पड़ेगा और बंजर गहरे सागर में कष्ट भोगना पड़ेगा, और अपनी संपत्ति दूसरों के लिए छोड़नी पड़ेगी, ताकि वे उसे लूट लें?”
और फिर नीली आँखों वाली देवी ने दोबारा कहा:
“इस विचार से विचलित मत हो। मैंने ही उसे वहाँ भेजा था, ताकि वह मनुष्यों की प्रशंसा का पात्र बन सके। वहाँ उसे कोई बुराई नहीं मिलेगी;
बल्कि वह एट्रीयस के पुत्र के महलों में बैठा है,
भरपूर विलासिता के बीच सुरक्षित। यह सच है
कि अभी भी चाहने वाले घात लगाए बैठे हैं,
अपने काले जहाज में, उसे उसके जन्मस्थान पहुँचने से पहले ही मार डालने के लिए; लेकिन ऐसा होने में अभी बहुत समय लगेगा
इससे पहले कि धरती तुम्हारे धन को नष्ट करने वाले कई घमंडी चाहने वालों को ढक ले।”
तो पलास बोली, और उसने अपनी छड़ी से उसे छुआ, और उसकी खिली हुई त्वचा को उसके सुस्त अंगों पर सिकुड़ने का कारण बना दिया, और उसके सुनहरे बालों को झड़ने का कारण बना, और उसके पूरे शरीर पर बूढ़े आदमी की झुर्रियाँ छा गईं, और उसकी हाल ही में चमकीली आँखों की चमक फीकी पड़ गई। उसने एक और वस्त्र दिया—एक मैली बनियान; एक फटा हुआ, गंदा लबादा, जो धुएँ से सना हुआ था; और उसके ऊपर एक विशाल हिरण की खाल, जिसके बाल झड़ गए थे। इसके अलावा, उसने एक छड़ी दी, और एक फटी हुई थैली, जिसमें कई जगह से फटे हुए थे, जो एक मुड़ी हुई डोरी से बंधी थी। यह सब कहने और करने के बाद, वे अलग हो गए; और देवी स्पार्टा के पवित्र नगर में टेलीमाचस को खोजने के लिए उड़ गईं।

पुस्तक XIV
यूलिसिस और यूमेअस की मुलाकात
भिखारी के वेश में आए यूलिसिस का यूमेअस द्वारा किया गया आतिथ्यपूर्ण स्वागत—यूलिसिस द्वारा स्वयं के बारे में गढ़ा गया झूठ—यूलिसिस का वापस आने का वादा—यूमेअस की कुटिया में रात्रिभोज—रात के लिए एक लबादा प्राप्त करने के लिए यूलिसिस की युक्ति।
फिर उस सुरक्षित स्थान से ऊबड़-खाबड़ रास्ते से होते हुए यूलिसिस घने जंगलों की पहाड़ियों में चला गया। उसने उस जगह की तलाश की जहाँ पल्लास ने उसे मिलने के लिए कहा था, उस महान सूअर चराने वाले से, जो उन सभी सेवकों में से, जिन्हें यूलिसिस ने दिन भर का सामान लाने का मुख्य जिम्मा सौंपा था। उसने उसे वहाँ पाया, बरामदे के नीचे, अपने हवादार झोपड़े के सामने बैठा हुआ, जो दूर से दिखाई देता था, अच्छी तरह से बना हुआ और विशाल, अकेला खड़ा था। यूमेअस ने, जब उसका स्वामी दूर था, इसे बनवाया था, हालाँकि रानी ने उसे आदेश नहीं दिया था और न ही बूढ़े लेर्टेस ने। उसने इसे उन पत्थरों से बनवाया था जो वह खदानों से लाया था। इसके चारों ओर उसने काँटों की बाड़ लगाई थी, और उन्हें बलूत की लकड़ी के बीच से काटकर बनाए गए कई खंभों से घेर दिया था। उस घेरे के भीतर उसने बारह बाड़े बनाए थे, एक दूसरे के बगल में, सूअरों के लेटने के लिए। प्रत्येक बाड़े में पचास सूअर लोटते थे, सभी मादा; वे वहीं बच्चे पैदा करते थे। लेकिन नर कम थे, और उन्हें बाहर रखा जाता था। और ये
चाहने वालों का दल प्रतिदिन कम होता जा रहा था,
उन्हीं को खाकर, क्योंकि यूमेअस हमेशा अपने सभी मोटे-ताज़े झुंड में से सबसे अच्छे को ही भेजता था।
इनकी संख्या उन्नीस सौ थी। उनके बगल में चार विशालकाय कुत्ते सोते थे, जिन्हें मुख्य सूअर चराने वाला पालता था,
जो भेड़ियों की तरह खूंखार थे। यूमेअस अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था और सैंडल पहन रहा था, जिन्हें उसने एक रंगीन बैल की खाल से तराशकर आकार दिया था, जबकि अन्य हिरणियाँ अलग-अलग कामों पर गई थीं—तीन सूअरों के झुंड को हांकने के लिए—चौथी को शहर में एक मोटा-ताज़ा जानवर लाने के लिए भेजा गया

था, ताकि अभिमानी दूल्हों का दल, उसे बलि के रूप में चढ़ाकर, उसके मांस का भोज कर सके।
यूलिसिस को आते देख भौंकने वाले कुत्ते उसकी ओर दौड़ पड़े और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे। यूलिसिस तुरंत सावधानी बरतते हुए बैठ गया और अपनी लाठी ज़मीन पर गिरा दी। वह अपने ही क्षेत्र में अनुचित नुकसान झेलने से बच गया। लेकिन तभी सूअर चराने वाला तेज़ी से उसके पीछे आया और प्रवेश कक्ष से होते हुए लाठी गिरा दी। उसने कुत्तों को डांटा और उन पर पत्थर फेंककर उन्हें अलग-अलग भगा दिया और राजा से कहा:
“हे वृद्ध पुरुष, झोपड़ी के खूंखार कुत्तों ने तुम्हें लगभग फाड़ ही डाला होता, और तुम मुझ पर घोर निंदा करते। अन्य दुख और विपत्तियाँ देवताओं ने मेरे भाग्य में लिखी हैं। यहाँ दुखी होकर बैठा मैं विलाप करता हूँ एक ईश्वरीय स्वामी का, और दूसरों की देखभाल करता हूँ उसके मुरझाते सूअरों की; जबकि, शायद भूख से बेहाल होकर, वह परदेसियों के बीच भटकता है, दूसरे राज्यों में, यदि वह वास्तव में जीवित है, और सूर्य को देखता है। लेकिन मेरे पीछे आओ, और घर में आओ, ताकि वहाँ भोजन और शराब से तरोताज़ा होकर, हे वृद्ध पुरुष, तुम घोषणा कर सको। तुम कहाँ से आए हो और तुमने क्या-क्या सहा है।
तब अच्छे चरवाहे ने कहा, और आगे बढ़कर झोपड़ी में ले गया, और अपने मेहमान को बैठने के लिए कहा, और उसके बैठने के लिए घनी सरकंडे की चटाई बिछाई, और उस पर एक जंगली बकरी की खुरदरी खाल बिछाकर एक नरम और आरामदायक पलंग बनाया। इतने सौहार्दपूर्ण स्वागत से प्रसन्न होकर, यूलिसिस ने इस प्रकार कहा:— “हे मेरे मेजबान, बृहस्पति और सभी अमर देवता तुम्हें इस प्रकार के स्वागत के बदले में तुम्हारी सभी मनोकामनाएं पूरी करें!”
और फिर, यूमेअस, तुमने इस प्रकार उत्तर दिया: “मेरे अतिथि, किसी अजनबी का तिरस्कार करना उचित नहीं है, चाहे वह तुमसे कितना भी विनम्र क्यों न हो, क्योंकि अजनबी और गरीब लोग यहोवा की कृपा से भेजे जाते हैं; हमारे उपहार भले ही छोटे हों, लेकिन सहर्ष दिए जाते हैं, जैसा कि उन लोगों के साथ हमेशा होता है जो युवा स्वामियों की सेवा करते हैं, जिनसे वे डरते हैं। स्वयं देवता भी निस्संदेह उसकी सुरक्षित वापसी को रोकते हैं, जिसने मुझे बहुत प्यार किया और इससे पहले वह सब कुछ दे देता जो एक दयालु स्वामी अपने आश्रित को देता है— एक घर, एक खेत, और वह पत्नी जिसे उसने प्रलोभित किया है।”

ईश्वर ने जिन निष्ठापूर्ण सेवाओं को सफल बनाया है, उनका फल देते हुए, जैसे उसने मेरी सेवा को सफल बनाया है। यदि मेरे स्वामी वृद्ध हो गए होते, तो वे मेरी मेहनत का फल देते; परन्तु वे मर चुके हैं। काश, हेलेन का घर, जिसके कारण इतने लोग मारे गए, पूरी तरह नष्ट हो गया होता! क्योंकि वह अगामेम्नन के आह्वान पर निकला, आदेश का सम्मान करते हुए, और इलियम के तट पर, जो अपने घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था, ट्रॉय के पुत्रों से लड़ा।
वह बोला, और अपनी कमीज़ कमर पर बाँधी, और सूअरों के बाड़ों की ओर तेज़ी से बढ़ा जहाँ सूअरों के झुंड लेटे हुए थे। वहाँ से उसने दो सूअर निकाले, उन्हें काटा, भूना, मांस के टुकड़े किए, और उन्हें सींकों पर तपाया, और जब सारा मांस भुन गया, तो उसे गरमागरम, सींकों पर ही रखकर, सफेद आटे से छिड़ककर, यूलिसिस के सामने रख दिया। फिर उसने एक लकड़ी के कटोरे में मधुर स्वाद वाली शराब मिलाई, और यूलिसिस के सामने बैठ गया, और इस प्रकार अपने अतिथि से विनम्रतापूर्वक कहा:
“हे अजनबी, इन सूअरों का भोज करो। हम जो सेवा करते हैं, हम भी इन्हें खा सकते हैं; यह उन प्रेमियों का समूह है जो मोटे सूअरों का भोज करते हैं—वे पुरुष जो न तो स्वर्ग के क्रोध से डरते हैं और न ही दया से विचलित होते हैं। महान देवता कभी भी हिंसक कार्यों से प्रसन्न नहीं होते; वे निष्पक्षता और न्याय का सम्मान करते हैं। यहाँ तक कि वे भी जो शत्रु और लुटेरे बनकर विदेशी तटों पर उतरते हैं, और बृहस्पति की इच्छा से बहुत सारा माल लूटकर ले जाते हैं, अपने लदे हुए जहाजों के साथ घर लौटते समय, प्रतिशोध के भय को अपने मन में गहराई से महसूस करते हैं। लेकिन ये प्रेमी जान लो— शायद उन्होंने किसी देवता को यह कहते सुना हो— कि राजा मर गया है; वे न तो शालीनता से विनती करते हैं, न ही अपने घरों को लौटते हैं, बल्कि आराम से उसकी संपत्ति को बेहिसाब खर्च करते हैं, और कभी भी संकोच नहीं करते। बृहस्पति ने मानवजाति को जितने भी दिन और रात दिए हैं, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जब उन्हें बलिदान के लिए केवल एक या दो बलि की आवश्यकता हो, और वे उसके दाख के घड़े बेहिसाब खाली कर देते हैं। एक समय उसकी आय बहुत अधिक थी। न तो इस काली मिट्टी वाले महाद्वीप पर कोई नायक है, न ही इथाका द्वीप में। उसके पास इतनी दौलत है, और न ही बीस आदमियों के पास, एक साथ। मेरी बात ध्यान से सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ। बारह गायों के झुंड जो मुख्य भूमि पर चरते हैं, उसके हैं; उतनी ही भेड़ों के झुंड, उतने ही सूअरों के झुंड; उतने ही

बकरियों के झुंड, जिनकी देखभाल वहाँ अजनबी और हिरणियाँ करती हैं, जो उसके सेवक हैं। इसके अलावा, यहाँ, हमारे आगे खेतों में, बकरियों के ग्यारह बड़े झुंड चरते हैं, जिनकी देखभाल उसके भरोसेमंद आदमी करते हैं, जिनमें से हर एक रोज़ाना एक बकरी घर लाता है, जो सबसे अच्छी और मोटी होती है। इस बीच, मैं इन सूअरों का रखवाला हूँ, और झुंड में से मैं सबसे अच्छे सूअरों को चुनकर महल में भेजता हूँ।
सूअर चराने वाला यही कह रहा था, जबकि यूलिसिस बड़े चाव से मांस खा रहा था और चुपचाप शराब पी रहा था, सभी दावेदारों के लिए शोक मनाते हुए। जब भोजन समाप्त हो गया और भोजन से उसे शक्ति मिली, तो उसके मेज़बान ने उस प्याले को शराब से भर दिया जिससे वह पी रहा था, और उसे यूलिसिस को दे दिया, जो बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने उसे ग्रहण किया, और उत्साह से उत्तर दिया:
“हे मेरे मित्र, वह कौन सा धनी और शक्तिशाली सरदार था, जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, और जिसने तुम्हें खरीदा था? तुम कहते हो कि उसने अगामेम्नन की प्रसिद्धि बढ़ाने के लिए अपनी जान दे दी। उसका नाम बताओ, क्योंकि शायद मैं उसके बारे में कुछ जानता हूँ। बृहस्पति और महान देवता जानते हैं कि क्या मैंने उस व्यक्ति को देखा है, और तुम्हारे लिए कुछ समाचार है; क्योंकि मैं अनेक देशों में घूम चुका हूँ।”
और फिर उस नेक सूअर चराने वाले ने कहा: “हे वृद्ध पुरुष, कोई भी घुमक्कड़ जो यूलिसिस का समाचार लाए, वह उसकी पत्नी और पुत्र को कहानी पर विश्वास नहीं दिला पाएगा। क्योंकि घुमक्कड़ लोग, आतिथ्य सत्कार की आवश्यकता में, झूठ बोलने के आदी होते हैं और कभी सच नहीं बोलते। जो आवारा इथाका आता है, वह सीधे मेरी मालकिन के पास अपने झूठ लेकर जाता है। वह उसका सहृदयता से स्वागत करती है और उससे प्रश्न करती है, जबकि उसकी पलकों से आँसू बहते रहते हैं—ऐसे आँसू जो उन स्त्रियों के होते हैं जिनके स्वामी दूर देश में मर गए हों।” हे बूढ़े, तुम भी शायद ऐसी ही कोई कहानी गढ़ सकते थे, अगर कोई तुम्हें यह खबर देने के बदले में एक लबादा और एक कुर्ता दे दे। लेकिन हवा में उड़ने वाले कुत्तों और पक्षियों ने निस्संदेह उस शरीर को खा लिया है जिससे जीवन निकल चुका है, और उसकी हड्डियों से खाल नोच डाली है, या गहरे समुद्र की मछलियों ने उसे खा लिया है, और उसकी हड्डियाँ किनारे पर रेत में दबी पड़ी हैं। इस प्रकार वह हमसे बिछड़ गया है, और उसके सभी मित्रों का भाग्य शोक है, मेरा सबसे अधिक; क्योंकि मुझे वह कहीं नहीं मिलेगा। हे

स्वामी, कितना दयालु है, चाहे मैं अपने पिता और माता के घर आऊं, जहाँ मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ। और मुझे इतना दुख नहीं होता कि मैं उन्हें अपनी आँखों से देख सकूँ, और अपने जन्मस्थान पर, जैसे मैं यूलिसिस के खो जाने का शोक मनाता हूँ। यद्यपि वह दूर है, हे अजनबी अतिथि, फिर भी मुझे उसका नाम आदरपूर्वक लेना चाहिए, क्योंकि उसने मुझे अत्यंत प्रेम किया और मेरी बहुत देखभाल की; और यद्यपि वह अब हमारे साथ नहीं है, फिर भी मैं उसे बड़े भाई की तरह मानता हूँ।
महान पीड़ित यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“तब से, मेरे मित्र, तुम न तो कहते हो और न ही सोचते हो कि वह फिर आएगा, और न ही विश्वास करते हो कि यूलिसिस लौटेगा। मैं अब अपने शब्दों को शपथपूर्वक दोहराता हूँ, यूलिसिस लौटेगा। मेरी इस खुशखबरी के लिए यह पुरस्कार दिया जाए: ठीक उसी क्षण जब वह अपने घर में हो, मुझे एक सुंदर वस्त्र—चोगा और कुर्ता—प्रदान करो, और मैं यह उपहार स्वीकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे इसकी कितनी भी आवश्यकता क्यों न हो, जब तक वह फिर से न आ जाए। क्योंकि मैं उस व्यक्ति से घृणा करता हूँ जो... अपनी गरीबी से प्रेरित होकर, वह झूठे शब्दों से धोखा देता है। अब बृहस्पति गवाह है, और यह आतिथ्य भोज और भले यूलिसिस का चूल्हा जहाँ मैं बैठा हूँ, कि जो कुछ मैंने भविष्यवाणी की है वह सब पूरा होगा। इसी वर्ष यूलिसिस लौटेगा। जब यह महीना समाप्त होगा और अगला महीना शुरू होगा, तब वह अपने राज्य में होगा, उन लोगों से बदला लेने के लिए, चाहे वे कोई भी हों, जिन्होंने उसकी पत्नी और कुलीन पुत्र का अपमान करने का साहस किया।
और फिर, यूमेअस, तुमने इस प्रकार उत्तर दिया:
“बूढ़े, मैं तुम्हें वह इनाम नहीं दूंगा,
क्योंकि यूलिसिस फिर कभी अपने महल में नहीं लौटेगा। शांति से अपनी शराब पियो,
और चलो हम अन्य बातों पर ध्यान दें।
मुझे इसकी याद मत दिलाओ; मेरा हृदय
भारी हो जाता है जब मैं अपने आदरणीय स्वामी का नाम सुनता हूँ। लेकिन शपथ को बिना खाए छोड़ दो, और यूलिसिस आए, जैसा कि हम
दिल से चाहते हैं—मैं और पेनेलोप,
और बूढ़े लेर्टेस, और देवतुल्य युवक

टेलीमाकस। और फिर, मैं टेलीमाकस के लिए निरंतर शोक में डूबा हुआ हूँ, जो मेरे स्वामी का पुत्र है, जिसे देवताओं ने किसी युवा पौधे की तरह भरपूर वृद्धि दी थी, और जिससे मुझे आशा थी कि वह अपने पिता से कम योग्य नहीं होगा, और रूप और बुद्धि में असाधारण प्रतिभा का धनी होगा। किसी देवता ने, शायद किसी मनुष्य ने, उसके मन का संतुलन बिगाड़ दिया है, और वह अपने पिता का समाचार लेने के लिए दिव्य पाइलोस चला गया है। इस बीच यहाँ अभिमानी प्रेमी उसके लौटने पर घात लगाकर बैठे हैं, जो पूरी तरह से हमारे द्वीप के महान आर्सेसियस का वंश नष्ट हो जाए, और उसका नाम फिर कभी न सुना जाए। हम उसके बारे में और बात न करें, चाहे उसका भाग्य गिरना हो या भाग जाना; लेकिन हे, शनि का पुत्र उसे अपनी भुजाओं से बचाए! और अब, हे बूढ़े, कृपया मुझे अपने भाग्य के बारे में बताओ; मुझे सच बताओ, ताकि मैं जान सकूँ कि तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो, तुम्हारा शहर कहाँ है, तुम्हारे माता-पिता कौन थे, किस जहाज ने तुम्हें हमारे तट पर उतारा, और कैसे रीति-रिवाजों ने तुम्हें इथाका तक पहुँचाया, और वे किस जाति के होने का दावा करते हैं; क्योंकि मैं यह अच्छी तरह से मान सकता हूँ कि तुम इथाका पैदल नहीं आए हो।
बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया:
“मैं सब कुछ सच-सच बताऊंगा। फिर भी, यदि यहाँ कई दिनों के लिए भोजन और शराब का भंडार होता,
और हम तुम्हारे आश्रम में आराम से दावत कर पाते, जबकि दूसरे काम करते, तो भी मैं पूरे एक साल में उन विपत्तियों का वर्णन मुश्किल से कर पाता, जिन्हें मैंने सहा है, और उन अनेक परिश्रमों का वर्णन भी नहीं कर पाता, जिन्हें देवताओं ने मुझ पर डाला है।
मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं उस वंश का हूँ जो विशाल क्रीट में निवास करता है, एक धनी व्यक्ति का पुत्र, जिसके महल में उसकी पत्नी की संतान के रूप में कई अन्य पुत्र पैदा हुए और पले-बढ़े; परन्तु मुझे उसने अपनी रखैल बनाकर जन्म दिया। फिर भी कैस्टर हिलासिडेस, जिससे मैं उत्पन्न हुआ, मुझे अन्य सभी के समान ही सम्मान देता था; और वह स्वयं क्रीट के लोगों के बीच अपने धन, समृद्ध जीवन और वीर पुत्रों के कारण देवता के समान सम्मानित था। परन्तु भाग्य और मृत्यु ने उसे घेर लिया और उसे अपने साथ ले गए। प्लूटो के राज्य में, और उसके उदार पुत्रों ने उसकी विशाल संपत्ति को लॉटरी निकालकर बाँट लिया। मुझे बहुत कम हिस्सा मिला; उन्होंने मुझे एक घर दिया, लेकिन

चालाकी ने कई लोगों का बहुत नुकसान किया था, ने मीठी बातों से मुझे अपने साथ फोनीशिया चलने के लिए राजी कर लिया, जहाँ उसका घर और उसकी संपत्ति थी। मैं उसके साथ पूरे एक साल रहा; और जब उसके महीने और दिन समाप्त हुए और एक नया साल शुरू हुआ, तो उसने मुझे लीबिया जाने के लिए एक जहाज में बिठा दिया। उसने एक कपटपूर्ण साजिश रची थी, जहाज के आधे माल को मेरा बनाकर, मुझे वहाँ लुभाने और बेचने के लिए। एक बड़ी कीमत पर। मैं विवश होकर जहाज पर सवार हुआ, लेकिन मन में शंकाएँ थीं। साफ आसमान के नीचे, उत्तर से आती अनुकूल हवाओं के साथ, हम क्रेते द्वीप के पार, मध्य समुद्र के ऊपर से गुजरे। जब हमने द्वीप को पीछे छोड़ दिया और कोई भूमि नहीं देखी, केवल आकाश और समुद्र दिखाई दिया, तो शनि ने हमारे विशाल जहाज पर एक काला बादल छाने का आदेश दिया। नीचे समुद्र गहरा हो गया। ऊपर देवता ने बार-बार गर्जना की और हमारे जहाज पर एक बिजली का झटका मारा, जिससे जहाज बिजली की तरह हिल गया और कांप उठा, और पानी से भर गया। गंधक के धुएँ से भरा हुआ। डेक से नाविक सिर के बल गिर पड़े और लहरों पर ऐसे उछलने लगे जैसे हमारी नाव के चारों ओर मक्खियाँ हों, जिन्हें भगवान ने उन्हें वापस लौटने से मना किया था। लेकिन बृहस्पति ने मुझे, घबराए हुए हालत में, हमारी काली नाव का अटूट मस्तूल दे दिया, ताकि मैं उसकी मदद से बच सकूँ। मैंने अपनी बाहों को उसके चारों ओर लपेट लिया और तेज़ हवाओं ने मुझे बहा दिया। नौ दिनों तक वे मुझे बहा ले गईं और दसवीं अँधेरी रात को एक ज़बरदस्त लहर मुझे बहा ले गई। मैं थिस्प्रोटी के तट पर लुढ़क गया। वहाँ थिस्प्रोटी के वीर राजा ने मुझे आश्रय दिया और भोजन कराया; क्योंकि उनके प्रिय पुत्र ने मुझे ठंड और परिश्रम से क्षीण पाया और मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठाया और अपने पिता के घर ले गया, और मुझे उचित वस्त्र, एक कुर्ता और एक लबादा दिया।
“मैंने यूलिसिस के बारे में सुना। फ़ीडोन ने बताया कि कैसे उसने उसे अपने घर वापसी के सफर पर एक अतिथि और मित्र के रूप में स्वागत किया। फिर उसने यूलिसिस द्वारा एकत्रित धन-संपत्ति दिखाई, पीतल और सोना, और दिव्य रूप से निर्मित इस्पात। वह भंडार दस पीढ़ियों तक एक और परिवार का पेट भरने के लिए पर्याप्त था। लेकिन फ़ीडोन ने बताया कि मुखिया स्वयं उस समय डोडोना में था; क्योंकि वह बृहस्पति से सलाह लेने के लिए ऊंचे ओक के पेड़ के पास गया था, कि क्या उसे लंबे वर्षों की अनुपस्थिति के बाद समृद्ध इथाका में खुलेआम उतरना चाहिए या नहीं। भेष बदलकर। राजा ने अपने महल में देवताओं को

बीच, कभी शहर नहीं जाता, सिवाय इसके कि शायद बुद्धिमान पेनेलोप मुझे वहाँ बुलाए, जब कोई विदेश से समाचार लेकर आए।
तब जो अपने अनुपस्थित स्वामी के लिए शोक करते हैं,
और जो उसकी संपत्ति को बर्बाद करते हैं, दोनों राजा के बारे में पूछते हैं। मुझे यह कभी भी शोभा नहीं देता। जब से एक एटोलियन ने मीठी-मीठी बातें करके मुझे धोखा दिया, तब से मैं खुशखबरी माँग रहा हूँ। उसने एक आदमी को मार डाला था और कई देशों में भटकते हुए मेरे घर आया था। मैंने उसका सहर्ष स्वागत किया। उसने कहा कि उसने मेरे स्वामी को इडोमेनियस के साथ क्रीटवासियों के बीच देखा था, जहाँ वह एक भयंकर तूफान से क्षतिग्रस्त अपनी नावों की मरम्मत कर रहा था। गर्मियों में वह यहाँ आएगा, या शरद ऋतु में, भरपूर धन लेकर आएगा, और अपने बहादुर साथियों को भी साथ लाएगा। इसलिए, हे वृद्ध पीड़ित, किसी देवता से मत पूछो।
मुझे यहाँ ले आया है, मेरे दुःख को दूर करने के लिए
ऐसी कहानियों से जो सुखद विचारों को वापस ला सकें,
क्योंकि मैं तुम्हारी सेवा इनके लिए नहीं करता
और तुमसे प्रेम नहीं करता, बल्कि बृहस्पति के प्रति श्रद्धा के कारण— अजनबी के मित्र के प्रति—और तुम्हारे प्रति दया के कारण।
बुद्धिमान यूलिसिस ने फिर कहा:
“तेरे हृदय में धीमी विश्वास की भावना है, क्योंकि मेरी शपथ भी तुझे न तो राजी करती है और न ही प्रभावित। अब हम एक वाचा बाँधते हैं, और ओलंपस पर निवास करने वाले देवताओं को साक्षी बनाते हैं, कि जब तेरा स्वामी इस स्थान पर आएगा, तो तू मुझे एक कुर्ता और एक लबादा प्रदान करेगा, और मुझे उचित वस्त्र पहनाकर डुलिचियम भेज देगा, जहाँ मैं जाना चाहता हूँ। परन्तु यदि वह मेरी भविष्यवाणी के अनुसार न आए, फिर अपने सेवकों को आदेश दो कि वे मुझे एक ऊँची चट्टान से नीचे फेंक दें, ताकि कोई भी भिखारी तुम्हें झूठी कहानियों से धोखा देने की हिम्मत न करे।
उस नेक सूअर चराने वाले ने उसे उत्तर दिया और कहा: “यदि मैं तुम्हें अपनी कुटिया में स्वागत करके और तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था करके तुम्हारा प्राण छीन लूँ, तो मेरा सम्मान बहुत बढ़ जाएगा और मुझे मनुष्यों में अपनी योग्यता के लिए बहुत प्रशंसा मिलेगी; तब मैं शनि के पुत्र से निडर होकर

प्रार्थना कर सकता हूँ। परन्तु देखो, भोजन का समय हो गया है और शीघ्र ही मेरे साथी भीतर आ जाएँगे और वे यहाँ एक भव्य भोज तैयार करेंगे।”
इस प्रकार दोनों ने परामर्श किया। अब सूअर आए, और उनके चरवाहे भी। उन्होंने झुंड को उनके बाड़े में बंद कर दिया, और उनके प्रवेश करते ही चीखों का शोर मच गया। तब सूअर चराने वाले ने अपने साथियों को पुकारा: “सबसे अच्छे सूअर लाओ, और हम दूर से आए और मेरे मेहमान के लिए भेंट चढ़ाएंगे। और हम दावत भी करेंगे, क्योंकि हमने इस सफेद दांत वाले झुंड की देखभाल में लंबे समय तक परिश्रम किया है, और दूसरे लोग बिना किसी दंड के हमारे पाले हुए जानवरों को बर्बाद कर देते हैं।”
ऐसा कहकर वह लकड़ी काटने लगा; उसने तेज धार वाले लोहे से लकड़ी काटी; बाकी लोगों ने एक मोटा-ताज़ा मांस चुना और उसे चूल्हे पर रख दिया। सूअर चराने वाला भी देवताओं के प्रति उचित रीति-रिवाजों के प्रति लापरवाह नहीं था— उसकी भक्ति ऐसी थी। उसने सबसे पहले सफेद दांतों वाले उस जानवर के माथे के बाल काटे और उन्हें आग में फेंक दिया, और सभी देवताओं से बुद्धिमान यूलिसिस और उसकी सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना की। इसके बाद, उसने ओक के तने के एक टुकड़े से, जिसे उसने अभी-अभी चीरा था, सूअर पर प्रहार किया, और उसकी जान निकल गई। फिर उन्होंने उसका गला काट दिया, और उसे झुलसाकर, उसके अंगों को जल्दी से अलग कर दिया, जबकि सूअर चराने वाले ने बलि के लिए, उसकी चर्बी पर, उसके अंगों के कच्चे हिस्से रखे, और अन्य हिस्सों को आटे से छिड़ककर आग में डाल दिया; शेष को उन्होंने ठीक से काटकर सींक पर लगा दिया, और सावधानी से भूनकर, वापस खींचकर, तख्ते पर ढेर कर दिया। और अब चरवाहा उठा और उसने पूरे भोजन को बाँटना शुरू किया, क्योंकि वह मेज़बान के कर्तव्य को भलीभांति जानता था। उसने सात भाग बनाए; एक भाग उसने अप्सराओं को अर्पित किया, एक भाग माया के पुत्र हेमीज़ को, और दोनों भागों के लिए प्रार्थना की; शेष भाग उसने मेहमानों के सामने रखा, परन्तु यूलिसिस का आदर करते हुए, उसे सफेद दाँतों वाले बलि के बड़े सींग दिए। राजा, बुद्धिमान यूलिसिस, बहुत प्रसन्न हुआ और बोला:—
“यूमेअस, तुम बृहस्पति के प्रिय सदा बने रहो
जहाँ तक मेरी बात है, क्योंकि तुम अपने उपकारों से
मुझ जैसे व्यक्ति का उदारतापूर्वक सम्मान करते हो।”

और हे यूमेअस, तुमने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे आदरणीय अजनबी, खाओ और जो हमारे सामने है उसका आनंद लो। ईश्वर अपनी इच्छा से देता है या रोकता है; उसकी शक्ति सर्वोपरि है।”
उसने बात की, और शाश्वत देवताओं के लिए पहले बच्चे जलाए, और गहरे लाल रंग की शराब उंडेल दी, और किलेबंद शहरों को लूटने वाले यूलिसिस को, जो मेज के पास बैठा था, प्याला दिया। इसी बीच मेसाउलियस प्रत्येक के लिए रोटी लाया— एक सेवक जिसे यूमेअस ने, जब उसका स्वामी दूर था, अपने लिए रख लिया था, पेनेलोप या बूढ़े लेर्टेस के आदेश के बिना; उसने उसे टैफियन जनजाति से अपने सामान से खरीदा था। अब मेहमानों ने अपने हाथ बढ़ाए और तैयार दावत में हिस्सा लिया;
और जब उनकी प्यास और भूख शांत हो गई
मेसाउलियस ने रोटी और सब कुछ ले लिया,
भोजन और शराब से तृप्त होकर, आराम करने के लिए लेट जाओ।
फिर अंधेरा छा गया, चाँद नहीं निकला; और बृहस्पति ने पूरी रात बारिश बरसाई, और तेज़ पश्चिमी हवा चली। अब सूअर चराने वाले की परीक्षा लेने के लिए, कि क्या वह अपने मेहमान की इतनी दयालुता से सेवा करने के बावजूद उसे अपना लबादा देगा, या किसी और को ऐसा करने के लिए कहेगा, यूलिसिस बोला:— “यूमेअस, तुम और तुम्हारे सभी साथी ध्यान से सुनो, जब मैं घमंड भरी बातें कह रहा हूँ। शराब मुझे मूर्ख बना देती है, यह बुद्धिमानों को भी गाने और मूर्खतापूर्ण हँसी हँसने पर मजबूर कर सकती है, और नाचने पर भी, और अक्सर यह होठों पर ऐसे शब्द ले आती है जिन्हें न कहना ही बेहतर होता। लेकिन जब से मैंने बकबक शुरू की है, मैं अपने विचार नहीं रोक पाऊँगा। काश मैं उतना ही जवान और पूरी ताकत में होता जितना तब था जब मैंने ट्रॉय की दीवारों के पास एक घात में हिस्सा लिया था। नेता यूलिसिस और एट्रेस का पुत्र मेनेलास थे, साथ में मैं खुद
तीसरा, क्योंकि वे यही चाहते थे। जब हम
शहर और ऊँची दीवारों पर पहुँचे, तो हम
नरकटों और घनी झाड़ियों के बीच एक दलदली जगह में लेट गए, अपने सारे कवच पहने हुए।
वह एक खराब रात थी, और उत्तरी हवा
कड़वी ठंड लेकर बह रही थी, ठंडी बर्फ गिर रही थी और

पाले की तरह सफेद जम गई थी; हमारी ढालों पर बर्फ जम गई थी।
बाकी लोगों के पास लबादे और कुर्ते थे, और वे
आराम से सो गए, उनके कंधे उनकी ढालों से ढके हुए थे।
केवल मैं ही, जब स्क्वाड्रन में शामिल हुआ, तो मैंने अपना लबादा नासमझी से छोड़ दिया था, क्योंकि मेरे पास मैंने इतनी भीषण ठंड के बारे में सोचा भी नहीं था। मैं केवल अपनी ढाल और कढ़ाईदार कमरबंद के साथ गई थी। जब रात अपने अंतिम पहरों में थी और तारे अस्त होने की ओर बढ़ रहे थे, तब मैंने अपने पास खड़े यूलिसिस से कहा, अपनी कोहनी उसकी बगल में घुसाते हुए, और उसने सहर्ष सुना:
“ ‘लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान! यूलिसिस, मैं जीवितों में अधिक समय तक नहीं रहूँगा; क्योंकि मैं ठंड से मर रहा हूँ। मेरे पास कोई लबादा नहीं है; किसी देवता ने मेरे विचार को गुमराह किया, इसलिए मैं केवल एक वस्त्र लाया और कुछ नहीं, और अब मैं देखता हूँ कि मेरी कोई सहायता नहीं है।’
मैंने कहा, और तुरंत ही उसके मन में यह रणनीति सूझ गई—सभा और युद्ध में उसकी तत्परता ऐसी थी—और उसने धीमी आवाज़ में मुझसे कहा: ‘अब चुप रहो, और अचेयनों में से किसी को भी सुनने मत दो!’ और अपनी कोहनी पर झुककर उसने इस प्रकार कहा:—
“ ‘मेरे मित्रों, मेरी बात सुनो: स्वर्ग से एक स्वप्न आया है
मेरे स्वप्न में। हम अपने जहाजों से दूर लेटे हैं;
और अब कोई जल्दी से हमारे यहाँ से यह संदेश एट्रीयस के पुत्र, लोगों के चरवाहे, एगामेम्नन को दे, कि वह इस घात में बेड़े से और योद्धा भेजे।’ “उसने कहा, और थोआस तुरंत उठ खड़ा हुआ— एंड्रेमोन का पुत्र— और उसने अपना बैंगनी लबादा एक तरफ फेंक दिया, और बेड़े की ओर दौड़ पड़ा। मैंने खुशी-खुशी उसका छोड़ा हुआ वस्त्र ले लिया, और सुबह होने तक, जब तक वह अपने सुनहरे रथ में नहीं आई, लेटा रहा। अब मैं चाहता हूँ कि मैं फिर से जवान हो जाऊँ, और अपनी जवानी के पूरे जोश में, क्योंकि तब मुझे लगता है कि बाड़ों में सूअर चराने वालों में से कोई मेरे लिए एक लबादा ढूंढ लेता, मेरे प्रति प्रेम और आदर के कारण; लेकिन अब वे मुझे चिथड़े-गले कपड़ों में देखकर भी मुझे तुच्छ समझते हैं।”

और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया: “हे वृद्ध पुरुष! हमें तुम्हारे कथन में कोई दोष नहीं दिखता, और तुम्हारे सभी शब्दों में से एक भी अनुचित या अनुपयुक्त नहीं है। तुम्हें वस्त्रों की कमी नहीं होगी, और न ही किसी और चीज़ की, जिसकी कोई भी निर्धन याचना करने वाला आज रात हमसे आशा कर सकता है। सुबह होते ही अपने फटे-पुराने वस्त्र फिर से पहन लो; क्योंकि यहाँ हमारे पास बहुत से लबादे नहीं हैं, और न ही बहुत से वस्त्रों का आदान-प्रदान है— हममें से प्रत्येक के लिए केवल एक ही है। लेकिन जब हमारे यूलिसिस का पुत्र आएगा फिर वह तुम्हें एक लबादा और कुर्ता देगा, और तुम्हें वहाँ भेजेगा जहाँ तुम चाहो।
वह बोला और उठा, और अपने मेहमान के लिए चूल्हे के पास एक बिस्तर लगाया, और उस पर भेड़ों और बकरियों की खालें डाल दीं, और वहाँ यूलिसिस लेट गया, जिसके ऊपर सूअर चराने वाले ने एक मोटा बड़ा लबादा फैला दिया, जिसे वह अक्सर बचाव के लिए पहनता था जब सर्दियों का भयंकर तूफान आता था।
इस प्रकार यूलिसिस अपने पास के युवकों के साथ सो गया। अंदर एक पलंग, और अपने आश्रितों से दूर, चरवाहे को पसंद नहीं आया, जिसने पहले स्वयं को हथियारबंद किया, और फिर बाहर चला गया। यूलिसिस ने प्रसन्नतापूर्वक देखा कि दूर देशों में रहते हुए भी उसके सामान की इतनी निष्ठापूर्वक रखवाली की जा रही थी। यूमेअस ने अपने मजबूत कंधों पर एक तेज तलवार टांगी, और अपने चारों ओर एक मोटा, तूफान-रोधी लबादा लपेटा, और एक विशाल, लाड़-प्यार से पाली गई बकरी की खाल ली, और कुत्तों और मनुष्यों दोनों से बचाव के लिए एक नुकीला भाला लिया। इसलिए वह आगे बढ़ा
जहाँ सफेद दाँतों वाले सूअर लेटे थे,
एक चट्टान के नीचे झुंड में सो रहे थे,
जिसका खोखला भाग उन्हें तेज उत्तरी हवा से बचाता था।

पुस्तक XV
टेलेमाकस की वापसी
टेलेमाकस के सपने में पलास का प्रकट होना और उसे इथाका लौटने की चेतावनी देना—उसका लैकेडेमोन से प्रस्थान और पाइलोस में आगमन—पाइलोस में उसके द्वारा अपने जहाज पर लिया गया एक भविष्यवक्ता थियोक्लीमेनस—उसके द्वारा यूलिसिस को सुनाई गई यूमेअस की कहानी—टेलेमाकस का इथाका के तट पर आगमन— जहाज को शहर की ओर भेजा जाना, जबकि टेलेमाकस, थियोक्लीमेनस को अपने मित्र पिरायस की देखरेख में सौंपकर, यूमेअस के लॉज में जाता है।
तब पलास, लैकेडेमोन के शक्तिशाली राज्य की ओर शीघ्रता से बढ़ते हुए, महान यूलिसिस के प्रख्यात पुत्र को खोजने निकली, ताकि उस युवक को घर की याद दिला सके और उसे अपने लौटने के बारे में सोचने के लिए कह सके। उसने टेलीमाकस और नेस्टर के पुत्र को मेनेलाउस के प्रसिद्ध बरामदे में उनके पलंगों पर पाया। नेस्टर का पुत्र गहरी नींद में सो रहा था; परन्तु टेलीमाकस को सुखद नींद नहीं आई, क्योंकि उसके विचार पूरी शांत रात बेचैनी से उसके पिता पर टिके रहे। अब उसके पलंग के पास नीली आँखों वाली पल्लास खड़ी हुई और बोली:— “टेलेमाकस, अब यह ठीक नहीं है कि तुम अपने घर से भटक जाओ, और अपनी सारी संपत्ति और उन अभिमानी पुरुषों को छोड़ दो जो तुम्हारे महलों में भीड़ लगाते हैं। सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हारी सारी संपत्ति हड़प लें, सब कुछ आपस में बाँट लें, और तुम्हारी यह यात्रा व्यर्थ हो जाए। युद्ध में महान मेनेलास से विनती करो कि वह तुम्हें जल्दी घर भेज दे, ताकि तुम अपनी निर्दोष माता के साथ अपने महलों में मिल सको; क्योंकि अब उसके पिता और भाई उसे यूरिमाकस से विवाह करने की सलाह दे रहे हैं, जिसके गुण अन्य लोगों से कहीं अधिक हैं।” कई दूल्हों के अलावा, वह और भी अधिक दहेज की पेशकश करता है। तुम्हारी अनुमति के बिना महल से धन लेना कठिन नहीं होगा। एक पत्नी क्या-क्या कर सकती है, यह तुम जानते हो। उसे अपने विवाहित पुरुष की संपत्ति बढ़ाने में आनंद आता है। उसे अपने पूर्व बच्चों की कोई परवाह नहीं है, न ही उस पति की याद है जिसे उसने कुंवारी अवस्था में अपनाया था, और जो अब अपनी कब्र में है; वह इनके बारे में कभी बात नहीं करती। तो तुम लौट जाओ, और अपना सामान अपने घर की उन दासियों में से किसी एक को सौंप दो जो तुम्हें उचित लगे। विश्वास के लिए सबसे योग्य, जब तक कि देवता तुम्हारे लिए एक नेक पत्नी

न ला दें। एक और बात मैं तुम्हारे लिए कह रहा हूँ, और इसे याद रखना: बीहड़ सामोस और इथाका द्वीप के बीच की जलडमरूमध्य में, मुख्य दावेदार घात लगाए बैठे हैं, इस उम्मीद में कि वे तुम्हें घर वापसी की यात्रा में मार डालेंगे; लेकिन मुझे लगता है कि वे ऐसा नहीं कर सकते, इससे पहले कि धरती पर कई दावेदार मौजूद हों जो तुम्हारी संपत्ति लूट लें। अपनी वीर नाव को द्वीपों से दूर ले जाओ; केवल रात में ही यात्रा करो। कोई देवता, चाहे जो भी हो। जो भी तुम्हारी रक्षा करता रहे, वह तुम्हारे लिए शुभ हवा भेजेगा। जब तुम अपने जहाज से इथाका के निकटतम तट पर पहुँचो, तो उसे अपने सभी साथियों के साथ शहर की ओर जाने दो, और अपने सूअरों के रखवाले के पास जाओ, जिसका हृदय तुम्हारे प्रति वफादार है। उस रात उसके साथ रहो, और उसे शहर भेज दो, ताकि वह ज्ञानी पेनेलोप को यह खबर दे कि तुम पाइलोस से आ गए हो और सुरक्षित हो। इतना कहकर देवी ओलंपियन शिखर की ओर चल पड़ीं। टेलीमाकस ने अपनी एड़ी से छूकर नेस्टर के पुत्र को गहरी नींद से जगाया और उससे इस प्रकार कहा:— “उठो, नेस्टर के पुत्र, पेइसिस्ट्राटस, और
तेज़ गति वाले घोड़ों को लाओ और उन्हें रथ में जोतो,
और अब हम अपने रास्ते पर चलेंगे।”
और नेस्टर के पुत्र, पेइसिस्ट्राटस ने उत्तर दिया:
“टेलेमाकस, चाहे हमें कितनी भी जल्दी हो, अंधेरे में अपनी यात्रा शुरू करना ठीक नहीं है, और सुबह जल्द ही आ जाएगी।
तब तक प्रतीक्षा करो जब तक एट्रीयस का पुत्र मेनेलास, भाले में निपुण वीर, न आ जाए,
और अपने उपहार लाकर उन्हें हमारे रथ में रख दे,
और हमें स्नेह भरे शब्दों से विदा करे।
एक अतिथि अपने जीवन भर उस उदार मेज़बान को याद रखता है जो अपना मित्र बनता है।”
उसने बात की, और तुरंत ही सोने के रथ पर माँ प्रकट हुई। फिर मेनेलास आया, युद्ध में महान, अपने पलंग से उठकर सुनहरे बालों वाली हेलेन के पास। जब टेलीमाकस को राजा के आने का पता चला, तो वीर ने जल्दी से अपना कुर्ता अपने शानदार शरीर पर डाल लिया, और अपने चौड़े कंधों पर एक लबादा डाल लिया, जिसमें कई तहें थीं। फिर आगे बढ़ते हुए, महान यूलिसिस का पुत्र राजा से मिला और बोला:—

“हे बृहस्पति के प्रिय और लोगों के संप्रभु, एट्रीड्स मेनेलाउस, कृपया मुझे यहाँ से भेज दो, मैं प्रार्थना करता हूँ, मेरे जन्म के प्रिय देश में, क्योंकि मैं घर लौटने के लिए बहुत तरसता हूँ।”
और युद्ध में महान मेनेलास ने उत्तर दिया: “टेलेमाकस, मैं तुम्हें अधिक देर तक नहीं रोकूंगा, क्योंकि तुम वापस जाने की बहुत इच्छा रखते हो। मैं उस व्यक्ति से अप्रसन्न हूं जो मेज़बान के रूप में अपने प्रेम का अत्यधिक प्रदर्शन करता है, क्योंकि वह अत्यधिक घृणा करेगा; बेहतर है कि मध्य मार्ग अपनाया जाए। अनिच्छुक अजनबी को दरवाजे से बाहर धकेलना और उसे तब तक रोकना जब तक वह जाना न चाहे, दोनों ही गलत हैं। जब तक वह हमारे साथ है, हमें उसका सम्मान करना चाहिए और जब वह चाहे, तो उसे जाने में सहायता करनी चाहिए। तब तक यहीं रहो जब तक मैं तुम्हारे लिए योग्य उपहार न लाऊं।” और उन्हें अपने रथ में रखो, ताकि तुम्हारी आँखें उन्हें देख सकें; और मैं आज्ञा दूँगा कि यहाँ महल में स्त्रियाँ अपने भंडार से भरपूर भोज परोसें। परन्तु यदि तुम अपने मार्ग से हटकर हेलास और आर्गोस के मध्य भाग से होकर जाना चाहो, तो मैं अपने घोड़ों को जोतकर तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हें भीड़ भरे नगर दिखाऊँगा; और वे हमें वहाँ से खाली हाथ नहीं भेजेंगे, बल्कि उपहार लाएँगे जिन्हें हम ले जा सकें—शायद तिपाई या पीतल का बना हुआ कड़ाहा। शायद खच्चरों की एक जोड़ी या सोने का प्याला।"
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने बारी-बारी से कहा:
“एट्रीड्स मेनेलास, बृहस्पति के प्रिय
और लोगों के संप्रभु, मैं अपने घर लौटना चाहता हूँ; क्योंकि वहाँ
मेरी संपत्ति की देखभाल करने वाला कोई नहीं बचा है,
और मुझे जाना ही होगा, कहीं ऐसा न हो कि व्यर्थ में अपने पिता की खोज करते हुए मैं मर जाऊँ, या अपने महल के कमरों से कोई अनमोल खजाना खो दूँ।
वीर मेनेलास ने यह सुना और अपनी पत्नी और दासियों को आदेश दिया कि वे बिना विलंब किए भीतर रखे भंडार से एक तैयार भोज परोसें। फिर बोएथियस का पुत्र एटियोनियस अपनी सुबह की नींद से जागा, क्योंकि उसका निवास स्थान बहुत निकट था। राजा ने उसे आग जलाने और मांस भूनने का आदेश दिया, और उसने आज्ञा का पालन किया। फिर मेनेलास अकेले नहीं, बल्कि हेलेन और मेगापेंथेस के साथ सुगंधित खजाने में उतरा। जब वे खजाने के पास पहुँचे, तो एट्रीड्स ने एक दोहरा प्याला उठाया और अपने युवा पुत्र मेगापेंथेस को वहाँ से एक चाँदी का

पात्र लाने को कहा, जबकि हेलेन उन संदूकों के पास खड़ी थी जहाँ उसके हाथों से बुने हुए कढ़ाईदार वस्त्र रखे थे। उस तेजस्वी महिला ने उनमें से एक वस्त्र उठाया और उसे बाहर लाया, जो कढ़ाई में सबसे सुंदर और सबसे बड़ा था। वह वस्त्र तारे की तरह चमक रहा था और अन्य वस्त्रों के नीचे पड़ा था। फिर महल के गलियारों से गुजरते हुए, उन्हें टेलीमाकस मिला, और इस प्रकार सुनहरे बालों वाले मेनेलास ने कहा:—
“तेलेमाचस, हे गर्जन के देवता बृहस्पति, जूनो के पति, तुम्हें तुम्हारी इच्छा के अनुसार लौटने की कृपा प्रदान करें! मैं तुम्हें अपने घर के सभी खजानों में से सबसे सुंदर और कीमती वस्तु भेंट करता हूँ। मैं तुम्हें चांदी का एक प्याला भेंट करता हूँ, जिसके होंठ सोने से जड़े हैं; यह वल्कन की रचना है। सिदोनियों के राजा, वीर फ़ेदिमस ने इसे मुझे तब दिया था जब एक बार उनके महल ने मुझे शरण दी थी। उन्होंने इसे मुझे विदाई के समय दिया था, और अब मैं इसे तुम्हारा चाहता हूँ।”
एट्राइड्स ने बात की और उसके हाथों में दो प्याले दे दिए। इसके बाद मेगापेंथेस ने उसके सामने चांदी से बना चमकीला पात्र रख दिया। रोज़ी हेलेन ने अपना वस्त्र ऊपर उठाते हुए पास आकर उससे कहा:—
“हे प्रिय पुत्र, मैं तुम्हारे लिए एक उपहार भी लाया हूँ, हेलेन की रचना, जिसे तुम उसकी स्मृति में संभाल कर रखना, उस दिन तक जब तुम्हारा विवाह हो जाए और तुम्हारी दुल्हन इसे पहने। इस बीच इसे अपने महल में, अपनी प्रिय माता की देखरेख में रखना; और तुम शीघ्र ही सुखपूर्वक अपने सुंदर महल और अपने जन्मस्थान पर पहुँच जाओ।”
उसने ऐसा कहते हुए उसके हाथों में वस्त्र रख दिया। उसने उसे ग्रहण किया और प्रसन्न हुआ। पेइसिस्ट्राटस यह देखकर विस्मित हो गया और उसने उपहारों को रथ में रख दिया। फिर सुनहरे बालों वाले राजा ने उन्हें महल में ले जाकर सिंहासनों और पलंगों पर बैठाया, जहाँ एक युवती एक सुंदर सुनहरे कलश में पानी लाई और एक चाँदी के पात्र से उनके हाथों में पानी डाला। उसके पास ही एक सुंदर ढंग से सजी हुई मेज लगाई गई थी। महल की संरक्षिका उनके लिए रोटी और कई लज़ीज़ व्यंजन लाई, जो घर के भंडारों से लाए गए थे। फिर बोएथियस का पुत्र मेज के पास आया और मांस काटने लगा, और प्रत्येक को एक-एक हिस्सा दिया, जबकि गौरवशाली मेनेलाउस के पुत्र ने शराब परोसी। अतिथियों ने अपने हाथ बढ़ाए और अपने सामने तैयार भोजन में हिस्सा लिया। जब प्यास और भूख की

पुकारें शांत हुईं, तो टेलीमाकस और नेस्टर के प्रसिद्ध पुत्र ने घोड़ों को लाया और उन्हें जोता, और शानदार रथ में सवार होकर गूंजते हुए बरामदे से निकल गए। एट्रीड्स मेनेलाउस, सुनहरे बालों वाला, उनके साथ चला गया, और अपने हाथ में उदार शराब से भरा एक सुनहरा प्याला लिए, उसने देवताओं को उनकी यात्रा के लिए भेंट अर्पित की। घोड़ों के आगे खड़ा होकर, उसने पहले प्याले से पिया, और फिर मेहमानों से कहा:
“अब तुम सबको अलविदा, नौजवानों, और जब तुम लोगों के चरवाहे नेस्टर के पास पहुँचो, तो मेरी ओर से उसे नमस्कार कहना; क्योंकि उसने मेरे प्रति पिता समान दयालुता दिखाई, जब यूनान के पुत्र ट्रॉय के राज्य में युद्ध कर रहे थे।”
तब बारी-बारी से विवेकशील टेलीमाकस ने कहा:
“निःसंदेह मैं उसे बताऊँगा,
जैसे ही मैं उसके पास पहुँचूँगा, वह सब जो तूने,
बृहस्पति के पालक पुत्र, मुझे कहने को कहा है;
और काश मैं यूलिसिस को उसके महल में, जब मैं फिर से
इथाका आऊँगा, बता पाता कि तूने मेरा यहाँ कितना स्वागत किया है, और मैं तेरे दरबार से कितना समृद्ध और बहुमूल्य खजाना लेकर गया हूँ।”
जैसे ही उसने यह कहा, दाहिनी ओर एक चील प्रकट हुई, जो उड़ते हुए एक बड़े सफेद हंस को अपने साथ ले जा रही थी, जिसे महल के प्रांगण में पालतू झुंड से पकड़ा गया था; और पुरुष और महिलाएं उसके पीछे दौड़ पड़े, और उसके पीछे चिल्लाने लगे। युवकों के घोड़ों के आगे, और अभी भी दाहिनी ओर, पक्षी उड़ता चला गया। वे उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए, और हर दिल खुश हो गया। बाकी लोगों से नेस्टर के पुत्र पेइसिस्ट्राटस ने कहा:—
“अब मुझे बताओ, मेनेलास, बृहस्पति के प्रिय, हे लोगों के राजकुमार! क्या यह अपशगुन भेजने वाले देवता का संकेत हमारे लिए है या तुम्हारे लिए?”
उसने बोलना शुरू किया; और मार्स के प्रिय मेनेलास ने रुककर सोचा कि उसे सही उत्तर कैसे दिया जाए, तभी लंबे वस्त्र पहने हेलेन ने बीच में हस्तक्षेप किया:—
“मेरी बात सुनो, और मैं भविष्यवाणी करूँगा
जैसा कि देवता मुझे प्रेरित करते हैं, और जैसा कि मैं विश्वास करता हूँ वह घटना घटित होगी। जैसे यह चील

जंगली पहाड़ियों से, अपने जन्मस्थान और निवास स्थान से,
आई और हमारे महलों के पास पाले गए जलपक्षी को पकड़कर ले गई, वैसे ही यूलिसिस आएगा,
बहुत कठिनाइयों और लंबी यात्राओं के बाद,
अपने घर, बदला लेने के लिए: शायद
पहले से ही घर पर है, और सभी दावेदारों के बुरे अंत के बारे में सोच रहा है।”
तब चतुर टेलीमाकस ने बारी-बारी से कहा:
“जूनो के पति, गर्जन के देवता बृहस्पति,
ऐसा ही आदेश दें, और मैं वहाँ
आपसे एक देवता के समान प्रतिज्ञा करूँगा।”
उसने बात की और घोड़ों को चाबुक से छुआ;
और वे तेज़ी से शहर से होते हुए आगे बढ़े
और मैदान की ओर, और सारा दिन वे अपनी गर्दनों पर जुआ हिलाते रहे। सूरज डूब गया:
जब वे फेरे और डायोड्स के घर की ओर आए तो सारी सड़कें अंधेरे में डूबी हुई थीं,
जिसके पिता ओरसिलोचस थे, और वह अल्फेयस की संतान था। उस रात वे वहीं सोए; उनके मेज़बान ने उदारतापूर्वक उनका स्वागत किया। लेकिन जब भोर की पुत्री, गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, तो उन्होंने घोड़ों को जोता और भव्य रथ पर सवार होकर गूंजते हुए बरामदे के नीचे से निकल पड़े। नेस्टर के पुत्र ने चाबुक चलाया; घोड़े अनिच्छा से नहीं दौड़े और जल्दी ही पाइलोस के ऊंचे किले तक पहुँच गए। वहाँ टेलीमाकस ने अपने साथी से इस प्रकार कहा:
“हे नेस्टर के पुत्र, क्या तुम मेरी बात मानोगे? हमें इस बात पर गर्व है कि हम मित्र हैं क्योंकि हमारे पिता मित्र थे; इसके अलावा, हमारी उम्र भी बराबर है, और इस तरह यात्रा करने से हमारी मित्रता और भी मजबूत हुई है। हे बृहस्पति के पालक पुत्र, मुझे उस स्थान से आगे मत ले जाना जहाँ मेरा जहाज़ खड़ा है, कहीं ऐसा न हो कि मेरी इच्छा के विरुद्ध, वृद्ध नेस्टर मुझे दयावश यहाँ रोक लें, जबकि मुझे घर जल्दी जाना है।”
उसने बात की, और फिर नेस्टर के पुत्र ने विचार किया कि उसके मित्र की इच्छा को सर्वोत्तम तरीके से कैसे पूरा किया जा सकता है। और गहन विचार-विमर्श के

बाद यह सबसे बुद्धिमानीपूर्ण प्रतीत हुआ: उसने रथ को जहाज और किनारे की ओर मोड़ा, और मेनेलास द्वारा दिए गए सुंदर उपहारों, वस्त्रों और सोने को निकालकर, उसने उन्हें जहाज के पिछले हिस्से में रख दिया, और इस प्रकार टेलीमाकस से उत्साहपूर्वक कहा:
“जल्दी से जहाज पर सवार हो जाओ, और अपने सभी दल को बुला लो, इससे पहले कि मैं अपने घर पहुँचूँ और बूढ़े राजा को बता दूँ। मैं जानता हूँ कि उनका स्वभाव कितना उग्र है; वे तुम्हें जाने नहीं देंगे, लेकिन जल्दी से यहाँ आकर तुम्हें पाइलोस में रोके रखने के बाद, मुझे यकीन है, वे तुम्हारे बिना वापस नहीं जाएँगे; उनका क्रोध बहुत तीव्र होगा।”
उसने बात की और अपने लहराते बालों वाले घोड़ों को पाइलियन शहर की ओर मोड़ दिया और जल्दी ही अपने घर पहुँच गया। इसी बीच टेलीमाकस ने अपने साथियों से बात करते हुए उन्हें इस प्रकार प्रेरित किया:
“मेरे मित्रों, हमारे जहाज में सभी चीजें तैयार कर लो
और डेक पर चढ़ जाओ, क्योंकि अब हमें रवाना होना है।”
उसने बात की, उन्होंने ध्यान से सुना और आज्ञा मानी, और कूदकर जहाज पर चढ़ गए और बेंचों पर बैठ गए। जब वह इस प्रकार प्रार्थना करते हुए और पल्लास को शराब अर्पित करते हुए अपने प्रस्थान की जल्दी कर रहा था, तभी एक अजनबी आया, एक द्रष्टा, एक भगोड़ा, आर्गोस से, जहाँ उसने एक आदमी को मार डाला था। मेलैम्पस उसका पूर्वज था, जो कुछ समय तक सुंदर भेड़ों की माँ, पाइलोस में रहा— धनी, और पाइलियनों के बीच एक आलीशान घर में रहता था। इसके बाद वह अपने घर से भागकर और शक्तिशाली नीलियस से बचकर दूसरे लोगों के साथ मिल गया, नीलियस जीवित पुरुषों में सबसे अभिमानी था, जिसने उसकी अपार संपत्ति छीन ली और एक वर्ष तक उसे बलपूर्वक अपने कब्जे में रखा। इस बीच मेलैम्पस फिलाकस के घर में बंधा पड़ा रहा और नीलियस की बेटी और उसकी अपनी बुद्धि, जो कि पहुँच से बाहर एरिनिस के कारण विकृत हो गई थी, दोनों के कारण अत्यधिक पीड़ा झेल रहा था। फिर भी वह मृत्यु से बच निकला, और चरते हुए झुंडों को फ़िलास और पाइलोस ले गया, और नेलियस पर किए गए अपने क्रूर अन्याय का बदला लिया, उसके बच्चे को अपने भाई के लिए साथी बनाने के लिए ले गया। फिर वह घोड़ों के लिए प्रसिद्ध आर्गोस राज्य में आया; क्योंकि वहाँ यह निर्धारित किया गया था कि वह निवास करेगा और आर्गिव जाति के कई लोगों पर शासन करेगा। और वहाँ उसने एक पत्नी से विवाह किया और एक घर बनाया— एक भव्य इमारत; और

वहाँ उसके दो वीर पुरुष, एंटीफ़ेट्स और मैंटियस पैदा हुए। एंटीफेट्स एक पुत्र, वीर ओ'इक्लियस का पिता था, और उसी से एम्फिओराउस का जन्म हुआ, जिसकी वाणी राष्ट्रों को प्रज्वलित करती है। एजिस धारण करने वाले बृहस्पति और फोएबस उससे अत्यधिक प्रेम करते थे; फिर भी वह वृद्धावस्था की दहलीज तक नहीं पहुँच सका, परन्तु अपनी रिश्वतखोर पत्नी के विश्वासघात के कारण थेब्स में शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। उसके दो पुत्र, अल्कमियन और एम्फिलोकस थे। क्लिटस और पॉलीफाइड्स मंटियस के पुत्र थे। लेकिन अरोरा, जो स्वर्ण रथ को भरती है, क्लिटस को उसकी महान सुंदरता के कारण स्वर्ग ले गई, जहाँ वह अमर लोगों के बीच निवास करेगा, जबकि अपोलो ने महान मन वाले पॉलीफाइड्स को जीवित मनुष्यों में पहला भविष्यवक्ता बनने का वरदान दिया, क्योंकि अब एम्फीआराउस नहीं रहा। उसके पिता ने उसे नाराज कर दिया था, और वह हाइपेरेसिया चला गया, जहाँ वह रहता था, और वहाँ उसने सभी को वह प्रकट किया जो अभी होना बाकी था।
अब उसका पुत्र पास आया; उसका नाम थियोक्लीमेनस था; उसने राजकुमार टेलीमाकस को देखा, जो तेज गति से चलने वाले काले जहाज के पास खड़ा था, और उसने जल चढ़ाते हुए प्रार्थना की; और उसने उससे मधुर शब्दों में कहा:—
“मेरे मित्र, जिसे मैं इस नाव के किनारे पा रहा हूँ, जो एक पवित्र भेंट चढ़ा रहा है, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि उस भेंट और देवता की कसम खाकर, और अपने जीवन की कसम खाकर, और उन सभी के जीवन की कसम खाकर जो तुम्हारा अनुसरण करते हैं, मुझे सच बताओ, और जो कुछ भी मैं पूछता हूँ, उसमें से कुछ भी मत छुपाओ— तुम कौन हो, किस वंश के हो, तुम्हारा शहर कहाँ है, और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं।”
तब बारी-बारी से विवेकशील टेलीमाकस ने कहा:
“अजनबी, मैं तुम्हारे हर प्रश्न का उत्तर देता हूँ।
मैं वंश से इथाका का पुत्र हूँ,
मेरे पिता का नाम यूलिसिस था,
लेकिन उनकी मृत्यु दुखद हुई;
वे कई वर्षों से अनुपस्थित हैं, और मैं
अपने साथियों और इस काले जहाज के साथ,
अपने पिता के भाग्य की खबर लेने आया हूँ।”

तब देवतुल्य थियोक्लीमेनस ने कहा: “मैं भी तुम्हारी ही तरह घर से दूर हूँ; क्योंकि मैंने अपने ही गोत्र के एक व्यक्ति को मार डाला है, और उसके कई भाई और कई मित्र थे, जो घोड़ों के लिए प्रसिद्ध आर्गोस में रहते थे। उन अचेयनों की शक्ति बहुत अधिक है, और मैं उनसे भाग रहा हूँ, और मृत्यु के काले भाग्य से, ताकि अब से मैं मनुष्यों के बीच भटकता रहूँ। हे प्रभु, मुझे अपनी नाव में शरण दो! मैं, एक भगोड़ा, तेरी दया की याचना करता हूँ, कहीं वे मुझे पकड़ न लें और मार न डालें; वे निश्चित रूप से मेरा पीछा कर रहे हैं।”
और इस प्रकार बुद्धिमान टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“यदि तुम मेरे जहाज पर आना चाहते हो,
तो मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा। तो हमारे साथ आओ,
और जो कुछ हमारे पास है उसमें मित्रवत भाग लो।”
ऐसा कहकर उसने अपना पीतल का भाला उठाया, और उसे अच्छे जहाज के डेक पर रख दिया, और स्वयं जहाज पर चढ़ गया, और जहाज के पिछले हिस्से में अपना स्थान लेकर, थियोक्लीमेनस को अपने बगल में बैठा दिया। फिर नाविकों ने रस्सियाँ खोल दीं, और टेलीमाकस ने समुद्र में जाने की तैयारी का आदेश दिया। उन्होंने सुना और उत्सुकता से आज्ञा का पालन किया; उन्होंने मस्तूल उठाया, जो एक चीड़ के पेड़ का तना था—और उसे उसके गहरे सॉकेट में खड़ा करके, रस्सियों से बाँध दिया, और अपनी मज़बूती से मुड़ी हुई पट्टियों से जहाज के सफेद पाल फहरा दिए। नीली आँखों वाली पल्लास ने अनुकूल और ताज़ा बहने वाली हवा भेजी, जिसने आकाश को बहाकर गैली को खारे समुद्र की लहरों से तेज़ी से आगे बढ़ाया। वे क्रुनी और फिर नदियों से सिंचित सुखद चालसिस पहुँचे। अब सूरज डूब गया; रात ने उनके रास्ते को घेर लिया, लेकिन बृहस्पति से आती अनुकूल हवा उन्हें फेरे की ओर ले गई, और एलिस के पवित्र तट की ओर, जहाँ एपियन जाति का शासन है, और फिर उन द्वीपों के बीच, जिनकी चट्टानी चोटियाँ पानी से उठती हैं। यहाँ टेलेमाकस
सोच-विचार कर रहा था कि उसका भाग्य क्या हो सकता है—
घात लगाकर मारे जाना या बच निकलना।
इस बीच यूलिसिस और सूअर चराने वाला झोपड़ी के अंदर बैठकर भोजन कर रहे थे; बाकी लोग भोजन कर रहे थे, और जब प्यास और भूख की पुकार थम गई, तो यूलिसिस ने सूअर चराने वाले से यह जानने के लिए बात की कि क्या वह और दया दिखाने और रुकने का अनुरोध करने को तैयार है, या उसे शहर भेज देगा।

“यूमेअस, तुम और बाकी सब ध्यान से सुनो। कल मेरी इच्छा है कि मैं शहर जाऊं, ताकि मैं भीख मांग सकूं और तुम पर और तुम्हारे साथियों पर कोई बोझ न बनूं। मुझे सलाह दो और रास्ता दिखाने के लिए एक भरोसेमंद मार्गदर्शक भेजो। मैं वहां गलियों में घूमूंगा, क्योंकि मुझे ऐसा करना ही होगा। शायद वहां कोई मुझे एक प्याला शराब और रोटी दे दे। और जब मुझे महान यूलिसिस का घर मिलेगा, तो मैं बुद्धिमान पेनेलोप को अपनी खबर बताऊंगा। नहीं, मैं तो घमंडी लोगों के दल में भी शामिल हो जाऊंगा।” ऐसे लोग जो शायद मुझे भोजन करा सकें, क्योंकि उनके भोजों में भोजन की कोई कमी नहीं होती, और मैं उनकी हर इच्छा पूरी करूँगी। क्योंकि मैं तुम्हें बता दूँ, और तुम ध्यान से सुनो, ऐसा कोई पुरुष नहीं है जो मुझसे मुकाबला कर सके—जैसे आग जलाए रखना, ईंधन से सूखी लकड़ी काटना, मांस काटना और भूनना, और शराब परोसना—जो भी काम गरीब लोग अमीरों की सेवा में करते हैं।
और हे यूमासस, सूअरों के रखवाले, तूने क्रोधपूर्वक उत्तर दिया: “हाय! तेरे हृदय में ऐसा विचार कैसे आ सकता है? हे अजनबी! तू अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होगा यदि तेरा उद्देश्य उन प्रेमियों के समूह में जाना है, जिनका दुस्साहस और उपद्रव आकाश के लोहे के गुंबद तक पहुँचता है। तेरे जैसे सेवक उनकी सेवा नहीं करते, बल्कि सुंदर युवक लबादे और वस्त्र धारण किए, चिकने सिर और शांत चेहरे वाले सेवारत हैं। ये पॉलिश की हुई मेजों पर रोटी और मांस से लदी हुई सेवा करते हैं।” शराब। तुम हमारे बीच संतुष्ट रहो, इस बात का यकीन रखो कि यहाँ कोई भी तुम्हारी उपस्थिति से ऊब नहीं रहा है, न मैं और न ही मेरे साथी। जब वह आएगा, यूलिसिस का प्रिय पुत्र तुम्हारे लिए आवश्यक वस्त्र—एक लबादा और एक कुर्ता—उपहार देगा और तुम्हें तुम्हारी इच्छा अनुसार भेजेगा।
महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप सर्वशक्तिमान पिता बृहस्पति को उतने ही प्रिय हों जितने आप मुझे हैं, क्योंकि आपकी कृपा से मुझे अपनी थका देने वाली यात्राओं के बीच विश्राम मिलता है। भटकते जीवन से बुरा कुछ नहीं है। बेघर लोगों को भूखे पेट के कारण अनुचित चिंताएँ होती हैं; उनके लिए कठिनाई और दुःख ही सब कुछ है। परन्तु चूंकि आप चाहते हैं कि मैं रुकूँ और अपने युवा स्वामी की प्रतीक्षा करूँ, तो मुझे अपने सरदार यूलिसिस की माता और उसके पिता के बारे में बताइए, जिन्हें उसने छोड़ दिया था।”

बुढ़ापे की दहलीज पर, अगर अभी भी
वे जीवित हैं, और अभी भी सूर्य को देख सकते हैं;
या वे मर चुके हैं, और प्लूटो के क्षेत्र में चले गए हैं?
फिर बारी-बारी से सूअर चराने वाले मुखिया ने कहा:
“मैं तुम्हें सही और सच जवाब दूंगा, हे अजनबी! लेर्टेस अभी भी जीवित है, लेकिन वह लगातार बृहस्पति से प्रार्थना करता है कि उसकी मृत्यु अपने ही घर में हो; क्योंकि वह अपने लंबे समय से अनुपस्थित बेटे और अपनी उत्तम पत्नी, अपनी जवानी की दुल्हन, के लिए बहुत विलाप करता है, जिसकी मृत्यु ने उसे तीव्र दुःख और समय से पहले बुढ़ापा दे दिया है। उसकी मृत्यु एक दुखद मौत से हुई—अपने खोए हुए, गौरवशाली बेटे के लिए असहनीय दुःख से। यहाँ कोई भी, मेरा कोई मित्र नहीं, न ही कोई जिसने मुझ पर कोई कृपा की हो, ऐसी मृत्यु से न मरे।” मृत्यु! जब तक वह जीवित थी, उसका दुख कितना भी गहरा क्यों न हो, मुझे उससे बात करना और उसके शब्द सुनना अच्छा लगता था; क्योंकि उसने मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी, लंबी पोशाक वाली सीतिमेना के साथ पाला था। उसी के साथ मेरा पालन-पोषण हुआ, और मुझे भी उसी से कम सम्मान नहीं मिला। जब हम जवानी के सुहावने वर्षों में पहुँचे, तो उन्होंने राजकुमारी को सामोस भेज दिया, और उन्हें ढेर सारे उपहार मिले; लेकिन उसकी माँ ने मुझे कीमती वस्त्र, एक कुर्ता और एक लबादा, और मेरे लिए चप्पलें दीं, और मुझे विदा कर दिया। खेतों में, और मुझे और भी अधिक प्यार करने लगा। यह सब अब समाप्त हो गया है, फिर भी मुझे कहना होगा कि देवताओं ने मेरे काम में सफलता प्रदान की है। इससे मुझे खाने-पीने का साधन मिलता है, और एक योग्य अतिथि को दावत देने का भी; लेकिन रानी से मुझे कभी कोई बात नहीं सुनने को मिली, जब से वह बुराई उसके घर पर आई
- उन अधर्मी लोगों के समूह पर। नौकर अपनी मालकिन के सामने बोलने और उनकी इच्छा जानने में बहुत प्रसन्न होते थे, और खाने-पीने और अपने घरों में उपहार ले जाने में भी, क्योंकि उपहार नौकरों को प्रसन्न करते हैं। दिल।" फिर बुद्धिमान यूलिसिस ने कहा: “सूअर चराने वाले यूमेअस, तुम जब बच्चे थे, तो निःसंदेह संसार में भटकते रहे, अपने रिश्तेदारों और जन्मभूमि से दूर। अब मुझे बताओ, क्या वह विशाल नगर जहाँ तुम्हारे पिता और माता रहते थे, उजाड़ दिया गया था? या तुम्हें भेड़ों और मवेशियों के बीच अकेला छोड़ दिया गया था, और शत्रुतापूर्ण लोगों द्वारा ले जाया गया था, जो जहाजों में आए और तुम्हें इन संपत्तियों के स्वामी को उचित मूल्य पर बेच दिया?”

और फिर चरवाहे ने दोबारा कहा:
“चूंकि तू मुझसे पूछ रहा है, अजनबी, मेरी बातें सुनो
चुपचाप; आराम से बैठो और अपनी शराब पियो।
ये रातें बहुत लंबी हैं; सोने के लिए काफी समय है
और बातचीत से अपना मनोरंजन करने के लिए भी समय है। समय से पहले लेटना ठीक नहीं है
और बहुत ज्यादा सोना हानिकारक है। जो कोई भी यहाँ तीव्र इच्छा महसूस करे, वह एकांत में जाकर सो जाए,
और सुबह जल्दी उठकर अपना उपवास तोड़े,
और मेरे मालिक के सूअरों की देखभाल करे। हम अंदर ही रहें, और पिएं और दावत करें, और समय बिताओ
खुशी से, जो हमने सहा है उसे बताते हुए,
हममें से प्रत्येक; क्योंकि परलोक में
जिसने बहुत कष्ट सहा है और दूर-दूर तक भटका है
वह अपने दुःखों में भी आनंद पा सकता है।
लेकिन मुझे वह बताने दो जो तुमने मुझसे पूछा है: ओर्टिगिया के पार सीरिया नाम का एक द्वीप है; तुमने इसके बारे में अवश्य सुना होगा। सूर्य इसके ऊपर अपना मार्ग तय करता है। यह बड़ा नहीं है, लेकिन उपजाऊ है, चरागाह के लिए उपयुक्त है, और भेड़-बकरियों से भरपूर है, और इसमें शराब और गेहूँ दोनों प्रचुर मात्रा में हैं। वहाँ कभी अकाल नहीं पड़ता, न ही कोई भयंकर बीमारी मनुष्यों को जकड़ती है; लेकिन जब मनुष्य बूढ़े हो जाते हैं, तो चांदी के धनुष वाला अपोलो डायना के साथ आता है, अपने मौन बाण चलाता है, और उन्हें मार डालता है। वहाँ दो शहर हैं, और वे अपने बीच के द्वीप को साझा करते हैं। वहाँ मेरे पिता शासन किया,
देवता तुल्य क्टेसियस, ओर्मेनस का पुत्र,
और दोनों नगरों ने उसे अपना राजा माना।
“उस समुद्री यात्रा करने वाली जाति, फ़ीनिशिया के लोगों का एक दल हमारे द्वीप पर आया। वे चतुर लोग थे और अपने काले जहाज में ढेर सारे गहने लाए। मेरे पिता के घर में एक फ़ीनिशियाई स्त्री थी, लंबी और सुंदर, और कढ़ाई में कुशल। जब वह उनके जहाज पर धोबिन का काम करने आई, तो उन चालाक पुरुषों ने उसे बहकाया। उनमें से एक ने उसका प्रेम प्राप्त कर लिया— क्योंकि प्रेम

अक्सर कमजोर स्त्रियों को गुमराह कर देता है, यहाँ तक कि सबसे समझदार स्त्रियों को भी। उसके प्रेमी ने पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आई है। उसने इशारा किया...
वह भव्य भवन जिसमें मेरे पिता रहते थे।
“ ‘पीतल से समृद्ध सिदोन में मेरा जन्म हुआ—
मैं धनी आर्यबास की पुत्री थी;
और एक बार, जब मैं खेतों से आ रही थी,
तो ताफियन समुद्री डाकुओं ने मुझे पकड़ लिया और ले गए,
और मुझे इस द्वीप पर लाकर यहाँ बेच दिया,
उस आदमी के घर पर; उसने मेरे लिए बहुत सारा सोना दिया।’
तब उसके प्रेमी ने कहा: “क्या तुम हमारे साथ वापस नहीं चलोगी, ताकि तुम अपने माता-पिता और उनके सुंदर घर को फिर से देख सको? क्योंकि वे अभी जीवित हैं, और अफवाह है कि वे धनी हैं।”
इस पर महिला ने उत्तर दिया: ‘मैं सहमत हूँ
बशर्ते कि पहले तुम शपथ लो—हे नाविकों—
और मुझे सुरक्षित घर पहुँचाने का वचन दो।’
“उसने कहा, और उन्होंने बात मान ली, और जब विधिवत शपथ ली गई, तो उस महिला ने इस प्रकार कहा:—
“अब चुप रहो; रास्ते में या फव्वारे पर मिलते समय कोई भी मुझसे बात न करे, कहीं ऐसा न हो कि कोई घर के बूढ़े आदमी को बता दे, और वह किसी धोखे का शक करे और मुझे बांधकर तुम्हारी हत्या की साजिश रच दे। अपने शब्दों को अपने सीने में ही रखो; जल्दी करो और सामान खरीद लो, और जब जहाज सभी जरूरी चीजों से भर जाए, तो एक दूत को महल में मेरे पास शीघ्रता से भेजो; और मैं अपने साथ जितना भी सोना मुझे मिले, और कुछ और लेकर आऊंगी जिससे मैं अपना किराया दे सकूं। मैं युवा वारिस की नर्स हूँ।” वह भला आदमी जो उन महलों में रहता है—
अपनी उम्र के हिसाब से एक होशियार लड़का, जो अक्सर मेरे साथ बाहर जाता है — और मैं उसे जहाज तक ले जाऊँगा,
और वह किसी भी विदेशी भूमि में, जहाँ तुम उसे ले जाओगे, एक उदार कीमत लाएगा।’
“उस स्त्री ने कहा, और वह हमारे सुंदर निवास स्थान के लिए रवाना हो गई। फोनीशियन दल बारह महीने के अंत तक वहीं रहा, और उन्होंने अपने जहाज को कई

चीजों से भर दिया, और जब उसका विशाल ढांचा पूरी तरह से भर गया, तो उन्होंने उस स्त्री को बताने के लिए एक दूत भेजा। वह एक चतुर व्यक्ति था, जो मेरे पिता के घर आया, और अपने साथ अंबर मोतियों से जड़ा एक सोने का हार लाया। महल की दासियों और दयालु रानी, मेरी माँ ने उसे अपने हाथों में लिया, और उसे निहारा, और उसकी कीमत पर चर्चा की। इसी बीच, संदेशवाहक ने संकेत दिया, और जल्द ही
जहाज की ओर प्रस्थान किया। उस महिला ने
मेरा हाथ पकड़ा और मुझे आगे ले गई। हॉल के भीतर
उसने मेजों पर तैयार रखे हुए मेरे पिता के मेहमानों, उनके साथियों के लिए प्याले देखे;
लेकिन वे अनुपस्थित थे, और अभी भी एक बड़ी सभा के बीच
परिषद में थे। उसने
तीन प्याले अपनी छाती में छिपा लिए, और चोरी करके ले गई। मैं बिना सोचे समझे उसके पीछे चल दिया। सूरज
डूब गया, और अंधेरा रास्तों पर छा गया।
हम तेज़ी से चले, और प्रसिद्ध बंदरगाह
और तेज़ गति से चलने वाले जहाज पर पहुँचे। उन्होंने हम दोनों को
अपने साथ ले लिया। बोर्ड पर सवार होकर हम चल पड़े। अपने समुद्री मार्ग पर जहाज चलता रहा, और बृहस्पति ने अनुकूल हवा प्रदान की। छह दिन तक हम दिन-रात यात्रा करते रहे; लेकिन जब शनि के देवता बृहस्पति ने सातवां दिन लाया, तो धनुर्धर रानी डायना ने उस स्त्री पर प्रहार किया, और अचानक शोर के साथ वह सिर के बल जहाज के निचले हिस्से में जा गिरी, जैसे कोई समुद्री चिड़िया गोता लगाती है। लेकिन नाविकों ने उसे मछलियों और समुद्री बछड़ों के लिए बाहर फेंक दिया। मैं अकेला और दुखी रह गया। हवाओं और लहरों ने हमारे जहाज को इथाका तक पहुँचाया; और वहाँ लेर्टेस ने मुझे खरीद लिया, और इस प्रकार मैंने सबसे पहले उस भूमि को देखा जिसमें मैं निवास करता हूँ।
और फिर महान यूलिसिस ने कहा:
“यूमेअस, तेरे अन्याय और कष्टों की दुखद कहानी मुझे बहुत विचलित करती है; फिर भी बृहस्पति ने तेरे बुरे भाग्य में यह भलाई दी है,
कि तेरे सभी कष्टों के बाद, तू एक अच्छे स्वामी के साथ ठहरा है, जो तुझे भरपूर भोजन और पेय प्रदान करता है; तू यहाँ एक सुखद जीवन व्यतीत कर रहा है,

जबकि मैं तेरे पास लंबे समय तक और अनेक देशों में भटकने के बाद लौट आया हूँ।”
वे आपस में बातें करते रहे। ज्यादा देर तक वे नींद में नहीं सोए, क्योंकि जल्द ही सुबह हो गई, सोने के रथ पर विराजमान। किनारे पर, टेलीमाकस के साथियों ने पाल खोल दिए, मस्तूल उतार दिया और चप्पू से जहाज को उसकी जगह पर ले आए। उन्होंने लंगर डाले और रस्सियों को कसकर बांध दिया, और समुद्र तट पर चले गए, जहाँ उन्होंने सुबह का भोजन तैयार किया और बैंगनी शराब मिलाई। फिर, जब प्यास और भूख की पुकार थम गई, तो समझदार टेलीमाकस ने दल से कहा:—
“काले जहाज से शहर चलो। मैं पहले खेतों का दौरा करूँगा, अपने चरवाहों से मिलूँगा, और शाम को शहर आऊँगा। कल मैं विदाई भोज दूँगा, जिसमें स्वादिष्ट मांस और भरपूर शराब होगी।”
तब देवतुल्य थियोक्लीमेनस ने कहा:
“हे मेरे पुत्र, मैं कहाँ जाऊँ? बीहड़ इथाका के सभी सरदारों में से मैं किस घर में शरण लूँ? शायद तेरे पास,
तेरे अपने महल में जहाँ तेरी माता निवास करती है।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया: “मैं तुमसे किसी और समय पूछता कि तुम हमारे घर को अपना घर बना लो, क्योंकि तब तुम्हारा हार्दिक स्वागत होता। अब पूछना ठीक नहीं होगा, क्योंकि मैं वहाँ नहीं रहूँगा, और न ही मेरी माँ तुम्हें देख पाएगी—क्योंकि वह अक्सर दूल्हों के समूह के सामने नहीं आती, बल्कि एक ऊपरी कमरे में, उनसे अलग, अपने करघे पर ताश बुनती है। मैं एक और व्यक्ति का नाम लेता हूँ, यूरिमाकस, जो ऋषि पॉलीबस का प्रख्यात पुत्र है, तुम्हारा मेज़बान होगा। वह रानी से विवाह करने और यूलिसिस के पद को ग्रहण करने के लिए अत्यंत उत्सुक है। आकाश में निवास करने वाले ओलंपियन बृहस्पति उस घातक दिन को जानते हैं जो रानी के विवाह से पहले ही उन सभी दावेदारों पर आ सकता है।
जब वह इस प्रकार बोल रहा था, तभी दाईं ओर से एक बाज़ उड़ता हुआ आया, अपोलो का दूत। उसके पंजों में एक कबूतर था, जिसे उसने नोच डाला और उसके पंख टेलीमाकस और नाव के बीच बिखेर दिए। जब थियोक्लीमेनस ने यह देखा, तो उसने युवक को अलग बुलाया और उसका हाथ पकड़कर कहा:—
“हे टेलीमाकस, जो पक्षी हमारे पास से दाहिनी ओर से गुजरा, वह किसी देवता के मार्गदर्शन के बिना नहीं उड़ा। जब मैंने उसे देखा, तो मैं शगुन को

भलीभांति समझ गया। इथाका में तुम्हारे घर से अधिक राजसी भाग्य वाला कोई घर नहीं है, और इसकी शक्ति सदा प्रबल रहेगी।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“हे अजनबी, तेरी बात पूरी हो;
तब तू मुझे शीघ्र ही अपना मित्र जान लेगा,
और तुझे इतने उदार उपहार मिलेंगे कि जो भी तुझसे मिलेगा वह तेरे साथ आनन्दित होगा।”
फिर पिरियस की ओर मुड़कर उसने अपने उस वफादार अनुयायी से इस प्रकार कहा: “पिरियस, क्लिटियस के पुत्र, तू ही वह पहला व्यक्ति था जिसने मेरे आदेश पर मेरे साथ पाइलोस जाने का मार्ग अपनाया, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि इस अजनबी को अपने घर ले जा, और वहाँ उसकी देखभाल कर, और मेरे आने तक उसका आदर कर।”
भाले चलाने में माहिर पिरियस ने उत्तर दिया:
“टेलेमाकस, चाहे तुम कितने भी समय तक यहाँ रहो,
यह व्यक्ति मेरा अतिथि होगा, और मेरे घर में तुम्हें कभी भी आतिथ्य सत्कार की कमी नहीं होगी।
उसने बात की, और डेक पर चढ़ गया, और अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे जहाज में प्रवेश करें और बंधनों को ढीला कर दें। वे जल्दी से एक साथ आए, जहाज पर चढ़े और बेंचों पर बैठ गए, जबकि टेलीमाकस ने अपने पैरों में सुंदर सैंडल बांधे, और डेक पर पड़े अपने विशाल भाले को, जिसकी पीतल की धार तेज थी, उठा लिया। आदमियों ने रस्सियों को खोला, गैली को आगे धकेला, और महान यूलिसिस के पुत्र के आदेशानुसार शहर की ओर चल पड़े। इस बीच युवा सरदार के फुर्तीले कदमों ने उसे तब तक आगे बढ़ाया जब तक वह उस झोपड़ी तक नहीं पहुँच गया जहाँ उसके सूअरों के बड़े झुंड चरते थे, और अपने स्वामी की संपत्ति का ध्यान रखते हुए, योग्य सूअर चराने वाला अपने काम के बगल में सो गया।

पुस्तक सोलह
यूलिसिस ने टेलीमाकस को अपने आप को खोजते हुए दिखाया
यूमेअस द्वारा टेलीमाकस का स्वागत, जिसे पेनेलोप को उसके बेटे के आगमन की सूचना देने के लिए भेजा गया था - यूलिसिस और टेलीमाकस का साक्षात्कार, जिसमें पल्लास के आदेश पर यूलिसिस खुद को प्रकट करता है - टेलीमाकस की प्रतीक्षा में बैठे निराश प्रेमियों की वापसी।
इसी बीच यूलिसिस और वह नेक हिरणी
सूअर चराने वाले ने झोपड़ी में, भोर होते ही,
आग जलाई, खाना तैयार किया और चरवाहों को सूअरों को खेत में ले जाने के लिए भेजा।
भौंकने के आदी कुत्ते, चापलूसी करते हुए चारों ओर आ गए,
और टेलीमाकस के पास आने पर भौंके नहीं।
यूलिसिस ने आते कदमों की आहट सुनी,
और दुबके हुए कुत्तों को देखा, और अचानक
यूमेअस से इस प्रकार जोशीले शब्दों में बोला:—
“यूमेअस, निःसंदेह तुम्हारा कोई मित्र, या कोई परिचित व्यक्ति, पास ही है। कुत्तों के भौंकने की कोई आवाज नहीं है; वे उसके चारों ओर चापलूसी कर रहे हैं, और मुझे पैरों की आहट सुनाई दे रही है।”
उसके बोलने के तुरंत बाद ही, बरामदे में उसका प्रिय पुत्र खड़ा था। चरवाहा चौंककर उठा, अपने हाथों से उन बर्तनों को गिरा दिया जिनमें उसने कीमती शराब मिलाई थी, और अपने स्वामी से मिलने के लिए दौड़ पड़ा; उसके माथे पर चुंबन किया; उसकी चमकती आँखों और दोनों हाथों को चूमा, और उसके चेहरे पर बहुत आँसू थे। जैसे एक पिता अपने प्रिय पुत्र को, जो दसवें वर्ष में दूर देश से लौटकर आया है—अपने इकलौते पुत्र को, जो उसके बुढ़ापे का पुत्र है, जिसके लिए उसने लंबे समय तक कष्ट और दुख सहे हैं—अपनी बाहों में भर लेता है, वैसे ही सूअर चराने वाला टेलीमाकस से लिपट गया और उसे बार-बार चूमता रहा, मानो मृत्यु से बच निकला हो, और गर्म आँसू बहाते हुए, पंखों वाले शब्दों में उससे इस प्रकार बोला:
“हे टेलीमाकस, तुम आ गए! यह प्रकाश मुझे पहले से कहीं अधिक मधुर लग रहा है। जब तुम पाइलोस के लिए रवाना हुए थे, तब मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि

तुम्हें फिर कभी देख पाऊँगी। अब अंदर आओ, मेरे प्रिय बालक, और मेरा हृदय आनंदित हो कि तुम एक बार फिर यहाँ हो, इतनी दूर से नए-नए आए हो। क्योंकि तुम चरवाहों और खेतों में अक्सर नहीं जाते, बल्कि शहर में ही रहते हो— तुम्हारी यही इच्छा है— दिन-प्रतिदिन प्रेमियों के समूह की फिजूलखर्ची को देखते हुए।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“ऐसा ही हो, पिता जी; मैं आपके लिए ही आया हूँ
आपको इन आँखों से देखने और आपकी बातें सुनने के लिए
और मुझे बताइए कि क्या मेरी माता अभी भी महल में रहती हैं; या क्या किसी प्रेमी ने रानी को अपनी दुल्हन बनाकर ले गया है, और क्या महान यूलिसिस का पलंग बिना बिछे पड़ा है, और उस पर भद्दे जाले जमा हो रहे हैं?”
फिर मुख्य सूअर चराने वाले ने बारी-बारी से कहा:
“यह बिल्कुल सच है कि स्थिर मन से
रानी अभी भी तुम्हारे महल के कक्षों में निवास करती है,
और अपने दुख भरे दिन आँसुओं में बिताती है।”
ऐसा कहकर उसने अपना पीतल का भाला उठाया, और पत्थर की दहलीज पार करके राजकुमार कुटिया में प्रवेश कर गया। यूलिसिस ने अपना स्थान उसे सौंप दिया; टेलीमाकस ने मना किया।
“नहीं, अजनबी, बैठो; हमें कहीं और हमारे इस लॉज में बैठने की जगह मिल जाएगी, और जो इसे प्रदान करेगा वह पहले से ही यहाँ मौजूद है।”
उसने बात की; यूलिसिस मुड़ा और अपनी जगह पर फिर से बैठ गया; सूअर चराने वाले ने टहनियों का ढेर बनाया और उसे खालों से ढक दिया, जिस पर यूलिसिस का प्रिय पुत्र बैठ गया। फिर वह भुने हुए मांस के बचे हुए व्यंजन लाया, जो कल के भोज का हिस्सा थे, और डिब्बों में रोटी भर दी, और एक लकड़ी के कटोरे में बढ़िया शराब मिलाई। वह यूलिसिस के ठीक सामने बैठ गया। सभी ने अपने हाथ बढ़ाए और मेज पर रखे मांस को आपस में बाँट लिया; और जब प्यास और भूख की पुकार थम गई, तब टेलीमाकस ने सूअर चराने वाले से कहा:—
“हे पिता, यह अजनबी कहाँ से आया है, और इसे नाविकों द्वारा इथाका के तट पर कैसे लाया गया है? और इसे लाने वाले कौन हैं? क्योंकि मुझे लगता है कि यह हमारे द्वीप पर पैदल नहीं आया है।”

और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया:
“मैं सभी को सच्चा उत्तर दूंगा। वह दावा करता है कि वह क्रेते के विशाल द्वीप का पुत्र है,
और कहता है कि अपनी यात्राओं में वह दुनिया के कई शहरों से गुजरा है, क्योंकि किसी देवता ने ऐसा ही आदेश दिया था; और अब, थेस्प्रोटियन गैली से भागकर, उसने मेरी कुटिया में शरण ली है। मैं उसे तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ; तुम उसके साथ जैसा चाहो वैसा व्यवहार करो। वह तुम्हारा याचक है, और तुमसे विनती करता है।”
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा: “यूमेअस, तुमने ऐसे शब्द कहे हैं जो मेरे हृदय को पीड़ा से छलनी कर देते हैं; क्योंकि मैं अपने घर में किसी अजनबी का स्वागत कैसे कर सकता हूँ? मैं एक युवक हूँ जिसने आज तक किसी अपमान करने वाले को सबक सिखाने के लिए अपनी भुजाओं पर भरोसा नहीं किया है। और मेरी माँ के मन में अभी भी यह तय नहीं है कि वह मेरे साथ घर की मालकिन बनकर रहे, अपने पति के बिस्तर के प्रति अपना आदर बनाए रखे, और लोगों की बात माने, या फिर दुल्हन बनकर मेरे पीछे आए। मेरे महलों में अचियाई दावेदारों में से, जो सबसे योग्य माना जाता है, और जो सबसे कीमती उपहार लाता है, उसे मैं चुनता हूँ। अब, तुम्हारे इस अतिथि के लिए, क्योंकि उसने तुम्हारे घर में शरण ली है, मैं उसे एक लबादा और कुर्ता देता हूँ, जो उनके प्रकार के अनुरूप हो, एक दोधारी तलवार और उसके पैरों के लिए चप्पलें। और मैं उसे उस तट पर भेज दूँगा जहाँ वह जाना चाहे। फिर भी, यदि तुम चाहो, तो उसे अपने घर में ठहराओ, और मैं वस्त्र और भोजन भेज दूँगा, ताकि वह तुम्हारे या तुम्हारे साथियों पर बोझ न बने। मैं दूल्हों के समूह में यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि वह जाए। वे लोग हद से ज़्यादा उद्दंड हैं; वे उसका उपहास करेंगे, और मुझे बहुत दुख होगा। सबसे साहसी व्यक्ति भी इतने लोगों के सामने व्यर्थ ही टिक पाएगा, और उनकी शक्ति मुझसे कहीं अधिक है।
तब महान पीड़ित यूलिसिस बोले: “हे मित्र—चूंकि मुझे बोलने की स्वतंत्रता है— मेरा हृदय अत्यंत आहत होता है जब मैं सुनता हूँ कि तुम्हारे महलों में वे लोग तुम्हारे जैसे युवक के साथ क्या अन्याय करते हैं। परन्तु मुझे अनुमति दो कि मैं पूछ सकूँ कि क्या तुम स्वेच्छा से समर्पण करते हो, या क्या तुम्हारे लोग किसी देवता की पूजा करके तुमसे खुलेआम घृणा करते हैं? क्या तुम अपने भाइयों को दोष देते हो? क्योंकि मनुष्य भाइयों पर भरोसा

करते हैं, यहाँ तक कि विकट संघर्ष में भी। काश मैं फिर से युवा हो पाता, और अपनी इच्छाशक्ति के साथ, या काश मैं बन पाता यूलिसिस का पुत्र,
या यदि वह सरदार स्वयं अंततः
अपनी सभी भटकनों से लौट आया हो—और अभी भी उसकी वापसी की आशा है
— तो शायद कोई दूसरा मेरा सिर काट दे
यदि मैं तुरंत
लेर्टियाडेस के घर में प्रवेश न करूँ
और उन सभी के लिए मुसीबत न बनूँ।
लेकिन यदि वे मुझे इस प्रकार अकेले ही हरा दें
इतनी बड़ी संख्या से लड़ते हुए, तो मैं
अपने ही महल में मारे जाना पसंद करूँगा
बजाय इसके कि हर दिन ऐसे शर्मनाक कृत्यों को देखूँ—
अपमानित अतिथि, दासियाँ जिन्हें उन सुंदर महल कक्षों से घसीटा गया
शराब के पीपों थके-हारे,
और पेटू लोग आलस्य से, फिजूलखर्ची से दावतें कर रहे हैं,
और दूसरे लोग उनके लिए अंतहीन परिश्रम कर रहे हैं।"
तब विवेकशील टेलीमाकस ने फिर कहा: “अजनबी, तुम्हें सत्यनिष्ठा से उत्तर दिया जाएगा। इसलिए जान लो, लोग मुझसे बिल्कुल भी क्रोधित नहीं हैं, और न ही मेरे कोई भाई हैं जिन पर मैं आरोप लगा सकूँ, यद्यपि विकट संघर्ष में लोग अपने भाई की सहायता पर भरोसा करते हैं। शनि के देवता बृहस्पति ने हमारे वंश को एक ही मुखिया तक सीमित कर दिया है। राजा आर्सेसियस का एक ही पुत्र था, लेर्टेस, और उसी से इकलौता पुत्र यूलिसिस उत्पन्न हुआ; और यूलिसिस ने मुझे यहाँ छोड़ दिया, अपने वंश का इकलौता वंशज, और उसे मुझसे कोई प्रसन्नता नहीं थी। हमारे महल भरे हुए हैं। दुश्मनों के साथ, द्वीपों के प्रमुख लोग — डुलिचियम, सामोस और ज़ैकिंथस अंधकारमय जंगलों से घिरे, और बीहड़ इथाका — इतने सारे लोग मेरी माँ को रिझाने की कोशिश करते हैं और हमारी संपत्ति को नष्ट कर देते हैं। वह उनके घृणित प्रस्ताव को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं करती, और न ही सहमति देती है और इसे समाप्त करती है। वे मेरी संपत्ति को बर्बाद करते रहते हैं, और जल्द ही मुझे भी मार डालेंगे; लेकिन अंतिम परिणाम देवताओं के हाथ में है।—और अब तुम जल्दी जाओ, यूमेअस, पिता, पेनेलोप के पास, और कहो कि मैं सुरक्षित हूँ, और अभी-अभी लौट आई हूँ।

पाइलोस से। मैं कुटिया में ही रहूँगा।
और फिर जैसे ही तुम रानी को अकेले में बता दो, वापस आ जाना। किसी भी यूनानी को कुछ भी पता न चले; क्योंकि वे मुझे हानि पहुँचाने की साजिश रच रहे हैं। तब, यूमेअस, तुमने इस प्रकार उत्तर दिया: “बस करो, मैं सब समझ गया, तुम्हारे शब्द उसी से कहे गए हैं जो उन्हें समझता है। लेकिन, मैं प्रार्थना करता हूँ, मुझे मार्गदर्शन दो कि क्या मुझे अपने रास्ते में दुखी लाएर्टेस को संदेश पहुँचाना चाहिए। यूलिसिस के लिए शोक करते हुए उसने खेतों के कामों की देखरेख की, और काम करने वालों के साथ अपनी भूख के अनुसार खाया-पिया। लेकिन जब से तुमने पाइलियन तट की यात्रा की है, लोग कहते हैं कि वह अपना दैनिक भोजन नहीं करता, जैसा वह पहले करता था, न ही काम की देखरेख करता है, बल्कि बैठकर शोक मनाता है।” और आहें भरता है और तड़पता रहता है, जब तक कि उसके अंग हड्डियों तक सिकुड़ न जाएं।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा: “यह दुख की बात है, लेकिन हमें उसे कुछ समय के लिए उसके शोक में अकेला छोड़ना होगा। यदि सब कुछ हमारी इच्छा के अनुसार हो पाता, तो मैं सबसे पहले अपने पिता की सुरक्षित वापसी की कामना करता। परन्तु तुम, अपना संदेश देने के बाद, जल्दी से यहाँ वापस आना, और खेतों में भटकते हुए उसके पास मत जाना; परन्तु मेरी माँ तुरंत अपने घर की मुखिया को चुपके से भेज दे, ताकि वह वृद्ध व्यक्ति को यह समाचार दे दे।” उसने सूअर चराने वाले को जल्दी चलने का आदेश दिया, जिसने अपनी चप्पलें उठाईं, उन्हें बांधा और शहर की ओर चल पड़ा। पल्लास की नज़र से बचकर यूमेअस झोपड़ी से निकला। वह एक सुंदर और राजसी स्त्री के रूप में आई, जो गृहस्थी के कामों में निपुण और श्रेष्ठ थी। वह द्वार के पास, ठीक सामने खड़ी थी। यूलिसिस ने उसे देखा; टेलीमाकस ने उसे नहीं देखा; देवता हमेशा सबके सामने प्रकट नहीं होते। यूलिसिस और जंगली कुत्तों ने उसे देखा; कुत्ते भौंके नहीं, बल्कि कराहते हुए उससे दूर भाग गए और अंदर बने अस्तबलों में चले गए। उसने अपनी भौंहों से इशारा किया; यूलिसिस उसका अर्थ समझ गया और आगे आया, और आंगन की बड़ी दीवार पार करके पल्लास के पास खड़ा हो गया, जिसने उससे इस प्रकार कहा:—
“लेर्टेस के पुत्र, हे कुलीन और बुद्धिमान, अपने पुत्र से बात करो; उससे सच्चाई छुपाओ मत, ताकि उस नीच विवाह-प्रबंधकों के समूह का अंत करने के लिए

तुम राज नगर में न जा सको। मैं भी अधिक समय तक अनुपस्थित नहीं रहूँगा; मैं आक्रमण के लिए तैयार हूँ।”
देवी ने ऐसा कहा। सोने की छड़ी निकालकर उसने सरदार को छुआ। उस स्पर्श के नीचे उसकी छाती एक नए सफेद वस्त्र और कुर्ते से ढक गई। इससे उसके शरीर को नई शक्ति मिली; उसका सांवला रंग फिर से लौट आया, उसके गाल भर गए और ठुड्डी पर दाढ़ी घनी हो गई। यह सब करके वह गायब हो गई। यूलिसिस फिर से कुटिया में आया; उसका बेटा देखकर चकित और भयभीत हो गया, और अपनी आँखें फेर लीं, मानो किसी देवता के सामने हो, और सरदार ने पंखों वाले शब्दों में ऐसा कहा:— “हे अजनबी, तू पहले जैसा नहीं रहा; तेरा वस्त्र और रूप दोनों ही बदले हुए हैं; तू निश्चय ही उन देवताओं में से एक है जिनका निवास स्थान विशाल स्वर्ग है। हम पर कृपा कर, हमें तेरे लिए ऐसे बलिदान लाने दे जिन्हें तू स्वीकार करे, और सोने की नक्काशीदार भेंट भी; दया कर।”
महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“मैं कोई देवता नहीं हूँ; मैं देवताओं के समान कैसे हूँ?
मैं तुम्हारा पिता हूँ, जिसके लिए तुम्हारी आहें भरी जाती हैं, तुम्हारे दुख सहे जाते हैं और तुम्हारे अन्याय सहन किए जाते हैं।”
उसने अपने बेटे से बात की और उसे चूमा, और उसकी पलकों से लंबे समय से रुके हुए आँसू धरती पर बह निकले। तब टेलीमाकस, जो यह सोच भी नहीं पा रहा था कि वह अजनबी उसका पिता है, ने इस प्रकार उत्तर दिया:
नहीं, तुम मेरे पिता नहीं हो, तुम यूलिसिस नहीं हो; बल्कि किसी देवता ने मुझे धोखा देने की कोशिश की है, ताकि मेरा दुःख और भी तीव्र हो जाए; क्योंकि कोई भी नश्वर मनुष्य वह नहीं करेगा जो किया गया है, जब तक कि कोई देवता आकर उसकी सहायता न करे और उसे अपनी इच्छा से जवान या बूढ़ा न बना दे; क्योंकि कुछ क्षण पहले तुम एक बूढ़े और फटेहाल व्यक्ति थे, और अब तुम विशाल आकाश के देवताओं के समान हो।
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे टेलीमाकस, इस कुटिया में असीम आश्चर्य और विस्मय के साथ अपने पिता का अभिवादन करना उचित नहीं है। यह जान लो कि मेरे सिवा कोई और यूलिसिस यहाँ कभी प्रवेश नहीं करेगा। मैं, जो स्वयं वह हूँ, बहुत कष्ट सह चुका हूँ और दूर-दूर तक भटक चुका हूँ, और बीसवें वर्ष में अपनी मातृभूमि पर लौट आया हूँ। आज तुमने शिकार की रानी पल्लास द्वारा रचित एक अद्भुत रचना देखी है, जो मुझे अपनी इच्छा के अनुसार

बना देती है, उसकी शक्ति इतनी प्रबल है कि कभी-कभी मैं भिखारी जैसा प्रतीत होता हूँ।” और बदले में
एक सुंदर वस्त्र पहने हुए युवक। देवता
जिनका निवास स्वर्ग में है, वे आसानी से
एक नश्वर मनुष्य को ऊंचा उठा सकते हैं, या उसे नीचा दिखा सकते हैं।
उसने बात की और उसे बिठा दिया। टेलीमाकस ने अपने गौरवशाली पिता के चारों ओर अपनी बाहें फैला दीं और आँसुओं की बौछार कर दी। दोनों के मन में रोने की तीव्र इच्छा जागृत हुई; वे ज़ोर-ज़ोर से रोए—और उनकी चीखें चीलों या नुकीले पंजों वाले गिद्धों से भी कहीं अधिक तेज़ थीं, जिनके बच्चों को हिरणियाँ अभी पंखहीन ही चुरा ले गई थीं। उनके आँसू अभी भी भरपूर बह रहे थे; सूरज डूब जाता और वे रोते ही रह जाते, अगर टेलीमाकस ने अंत में न पूछा होता:

—

“प्रिय पिता, मुझे बताइए कि वे नाविक किस पोत में आए थे जो आपको यहाँ लाए थे। वे किस जाति के होने का दावा करते हैं? क्योंकि मुझे यकीन है कि आप यहाँ पैदल चलकर नहीं आए होंगे।”
महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “मेरे पुत्र, तुम्हारा उत्तर सत्यपूर्वक दिया जाएगा। मुझे यहाँ लाने वाले नाविकों की जाति, फ़ेएशियन, मुझे यहाँ लाए। वे अपने द्वीप पर आने वाले अजनबियों को यहाँ से विदा करते हैं और मुझे अपनी एक तेज़ नाव में बिठाकर समुद्र पार ले जाते हैं। वे मुझे इथाका में सुला देते हैं। उन्होंने मुझे बहुत सारे उपहार दिए— पीतल और सोना, और बुने हुए वस्त्र; देवताओं की सलाह से, ये खोखली चट्टानों में छिपे हुए हैं, और मैं पल्लास की आज्ञा का पालन करते हुए यहाँ आया हूँ।” मैं तुमसे परामर्श करना चाहता हूँ कि हम अपने शत्रुओं का नाश कैसे करें। अब मुझे बताओ कि कितने दावेदार हैं; मुझे यह भी बताओ कि वे कितने हैं और वे कौन हैं, ताकि मैं सावधानीपूर्वक निर्णय ले सकूँ कि क्या हम उन पर अकेले ही हमला करें— या हमें सहयोगियों की तलाश करनी होगी।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा: “हे पिता, मैंने जीवन भर आपकी महान प्रसिद्धि के बारे में सुना है—आपकी भुजा कितनी शक्तिशाली है, आपके परामर्श कितने बुद्धिमान हैं। आपने बड़ी-बड़ी बातें कही हैं, और मैं चकित हूँ। यह संभव नहीं है कि केवल दो ही वीर पुरुषों की भीड़ के सामने खड़े हों। ये केवल दस नहीं हैं—ये दावेदार—न ही दुगुने, बल्कि बहुत अधिक हैं;

तो सुनो, इनकी संख्या। दुलिचियम से बावन आते हैं, जो अपनी जवानी के चरम पर हैं, जिनके साथ छह सेवक हैं। सामोस दुगुने भेजता है।” बारह और बीस अन्य अचियन सरदार ज़ैकिंथस से आते हैं। इथाका से बारह; द्वीप के सबसे कुलीन ये हैं—जिनके साथ मेदोन दूत आता है—एक कवि जिसका गीत दिव्य है—और दो कुशल सेवक भोज परोसने में। यदि हम महल के कक्षों में इन सभी पर आक्रमण करें, तो मुझे डर है कि तुम्हारे सभी अन्याय का बदला तुम्हारे लिए अत्यंत कड़वा और कष्टदायक होगा। अब, यदि तुम्हारा विचार किसी सहयोगी की ओर मुड़ जाए, तो उस व्यक्ति के बारे में सोचो जो स्वेच्छा से हमारे लिए लड़ेगा।
फिर महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने कहा:
“तो मैं तुझसे कहता हूँ; सुन और ध्यान दे।
सोचो कि क्या पल्लास और उसके पिता, बृहस्पति,
हमारे लिए पर्याप्त नहीं हैं? क्या हमें और सहयोगियों की आवश्यकता है?” और फिर विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“निस्संदेह, जिन दो का तुमने नाम लिया है
वे सहयोगी के रूप में शक्तिशाली हैं; क्योंकि यद्यपि वे बादलों के बीच ऊँचाई पर बैठे हैं, फिर भी वे मानवजाति और जीवित देवताओं दोनों पर शासन करते हैं
।”
एक बार फिर महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने कहा: “वे भयंकर संघर्ष से ज्यादा देर तक नहीं बच पाएंगे, जब मेरे महलों में युद्ध की शक्ति का परीक्षण होगा, मेरे और विवाह के प्रस्ताव देने वाले दल के बीच। अब सुबह जल्दी अपने घर जाओ, और वहाँ विवाह के प्रस्ताव देने वालों के बीच मिल जाओ। जहाँ तक मेरी बात है, सूअर चराने वाला मुझे बाद में यहाँ से शहर ले जाएगा, एक दयनीय भिखारी की तरह, और बहुत बूढ़ा। अगर वे मेरे अपने महल में मेरा उपहास करें, तो अपने वफादार हृदय से इसे सहन करो, चाहे मैं कितना भी कष्ट सहूँ; चाहे वे मेरे पैर पकड़ लें और मुझे घसीटकर ले जाएँ।” द्वार,
या मुझ पर हथियारों से प्रहार करो, देखो
और सहन करो; फिर भी कोमल शब्दों में उनकी मूर्खता की निंदा करो
। वे निंदा पर ध्यान नहीं देंगे;
उनके विनाश का दिन निकट है।
और मैं तुम्हें यह आगे बताता हूँ, और सुनिश्चित करो

और निर्दोषों को मुक्त किया जा सकता है। जहाँ तक पुरुषों का सवाल है, मैं अभी खेत-खेत जाकर पूछताछ नहीं करूँगा;
यह बाद में किया जा सकता है, यदि वास्तव में
तुम्हें ढाल धारण करने वाले बृहस्पति से कोई संकेत मिले।”
वे आपस में बातें करते रहे। वह उत्तम जहाज़ जो टेलेमाकस और उसके सभी मित्रों को पाइलोस से लेकर आया था, इस बीच इथाका की ओर अपने मार्ग पर चलता रहा। वहाँ, गहरे बंदरगाह में प्रवेश करते ही, नाविकों ने काले जहाज़ को किनारे पर खींच लिया; और फिर तैयार सेवकों ने शस्त्र ले लिए, और क्लिटियस के घर में बहुमूल्य उपहार पहुँचा दिए। जहाज से एक दूत राजा के महल की ओर गया और ज्ञानी पेनेलोप को यह सूचना दी कि उसका पुत्र आ गया है और खेतों में है, और उसके आदेश पर जहाज शहर पहुँच गया है, ताकि रानी को उसकी सुरक्षा के लिए डर न लगे और वह रोने न लगे। दूत और कुलीन सूअर चराने वाला मिले और रानी को एक ही संदेश दिया। देवतुल्य राजा के महल में प्रवेश करके, दासियों के बीच खड़े होकर दूत ने कहा:
“हे देवी, तुम्हारा प्रिय पुत्र आ गया है।” लेकिन सुअर चराने वाला रानी के ठीक बगल में खड़ा था, और उसने रानी को वह सब कुछ बताया जो उसके प्रिय पुत्र ने उसे कहने को कहा था; और इस प्रकार अपना काम पूरा करके महल और उसके दरबार से चला गया।
तब सभी दावेदार व्याकुल और दुखी हो गए, और महल से निकलकर, प्रांगण को घेरने वाली विशाल दीवार के बाहर, फाटकों के सामने बैठ गए, और वहाँ पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने भीड़ को संबोधित किया:—
“देखो, मेरे मित्रों, टेलीमाकस ने एक अद्भुत कार्य किया है; यह यात्रा, जिसके बारे में हमने सोचा था कि वह नहीं कर सकता, उसने कर ली है। अब चलो हम एक जहाज़, जो हमें सबसे अच्छा मिले, रवाना करें और उसमें मछुआरों को बिठाकर उसे अपने मित्रों को खोजने और उनकी वापसी में शीघ्रता लाने के लिए भेजें।” उसके बोलने के तुरंत बाद ही एम्फिनोमस ने मुड़कर देखा कि एक नाव बंदरगाह के गहरे पानी में प्रवेश कर रही है, जिसमें एक दल पाल समेटे हुए और चप्पू चला रहा है। वह प्रसन्न होकर हँसा और उन सभी दावेदारों से कहा:—
“संदेश भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे पहले से ही यहाँ हैं। शायद किसी देवता ने उन्हें यह जानकारी दी है, या शायद उन्होंने राजकुमार के जहाज को देखा होगा, लेकिन उसे पकड़ नहीं सके।”

उसने बात की; वे उठे और जल्दी से तट की ओर बढ़े, और जल्दी से नाव को किनारे पर खींच लाए। तैयार सेवकों ने हथियार हटा दिए; फिर वे सब परिषद में एकत्रित हुए, और किसी को भी उनसे मिलने नहीं दिया— सिवाय प्रेम प्रस्ताव के दल के — न जवान, न बूढ़ा। यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोअस ने आगे बढ़कर उनसे इस प्रकार कहा:—
“देवता इस व्यक्ति को बुराई से कितनी विचित्रता से बचाते हैं! दिन भर एक के बाद एक जासूस ऊँची-ऊँची चोटियों पर बैठकर पहरा देते रहे, और जब सूरज डूब गया तो हम ज़मीन पर कभी नहीं सोए, बल्कि अपने वीर जहाज़ में सवार होकर पवित्र सुबह की प्रतीक्षा करते रहे, और टेलीमाकस के लिए लगातार घात लगाकर बैठे रहे, ताकि उसे पकड़कर मार डालें। फिर भी देखो, किसी देवता ने उसे घर वापस ला दिया है। और अब हम टेलीमाकस को पूरी तरह से खत्म करने की योजना बना रहे हैं, ताकि उसे कोई रास्ता न मिले; क्योंकि मुझे यकीन है कि जब तक वह जीवित रहेगा, उसका अंत निश्चित है।” हमारा लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता।
युवा सलाह और युक्ति में चतुर होते हैं,
और अब हमारे पास पहले की तरह जनता का समर्थन नहीं है। आइए हम जल्दी से कार्रवाई करें,
इससे पहले कि वह यूनानियों की सभा बुला सके।
वह बिना देरी किए ऐसा करेगा, और वहाँ
क्रोध में उठकर उन्हें बताएगा कि हमने कैसे उसकी हिंसा से मृत्यु की योजना बनाई थी, और असफल रहे; और जो लोग सुनेंगे वे निश्चित रूप से इस साजिश को स्वीकार नहीं करेंगे। वे हमें हमारे देश से निकालकर अजनबियों की भूमि पर भेज सकते हैं। आइए हम सबसे पहले प्रहार करें,
और उसे खेतों में या रास्ते में मार डालो, और उसकी संपत्ति अपने पास लेकर, उसकी संपत्ति को बराबर बाँट लो। फिर हम यह महल उसकी माँ को दे दें, और उस आदमी को भी जिससे उसकी शादी होगी, चाहे वह कोई भी हो। या यदि यह योजना तुम्हें पसंद न आए, और तुम चाहो कि वह जीवित रहे, और अपने पिता की सुंदर संपत्ति को अपने पास रखे, तो हम महल में जाकर उसकी संपत्ति को मौज-मस्ती में बर्बाद न करें, बल्कि उदारतापूर्वक उपहार देकर अपने-अपने घर से ही उसे रिझाएँ; और जो सबसे उदारता से देता है, और जिसे भाग्य सबसे अधिक पसंद करता है, उसे ही यह महल दे दें। "कृपा करके, उस महिला को अपनी दुल्हन बना लो।"

वह बोला, और सब चुप हो गए। राजसी निसस का प्रख्यात पुत्र, एम्फिनोमस उठा। एरेटियास का पोता, वही था जिसने डुलिचियम के खेतों से, घास से भरे और अनाज से समृद्ध, विवाह के प्रस्तावकों का नेतृत्व किया। पेनेलोप को उसके शब्द सबसे अधिक पसंद आए, क्योंकि उसका विचार उदार था, और उदार इरादे से उसने इस प्रकार कहा:—
नहीं, मित्रों, टेलीमाकस को मारने की सलाह मेरी नहीं है। किसी शाही व्यक्ति की जान लेना एक भयानक कार्य है। इसलिए पहले हमें देवताओं की इच्छा जान लेनी चाहिए। क्योंकि यदि शक्तिशाली बृहस्पति की वाणी इसकी स्वीकृति दे, तो मैं स्वयं यह कार्य करूँगा, या किसी और को करने का आदेश दूँगा; परन्तु यदि वे सहमत न हों, तो मेरा सुझाव है कि ऐसा न करें।
उसने बात की और सबने सहमति जताई। वे तुरंत उठे और महल में प्रवेश करके चमकते सिंहासनों पर बैठ गए। इसी बीच पेनेलोप ने अभिमानी दूल्हों के सामने पेश होने का निश्चय कर लिया था, क्योंकि उसके कमरे में उसके बेटे की हत्या की साजिश की खबर पहुँच गई थी; दूत मेडोन ने यह सब सुन लिया था और उसे सब कुछ बता दिया था। इसलिए वह अपनी दासियों के साथ महल में गई। वह तेजस्वी महिला दूल्हों के जुलूस के पास आई और भव्य इमारत के एक स्तंभ के बगल में खड़ी हो गई, और अपने गालों पर एक नाजुक घूंघट ओढ़े हुए, बोलने लगी और एंटिनोस को इस प्रकार फटकारा:—
“एंटिनोस, हे दुष्टता के षड्यंत्रकारी, हे उद्दंड! अफवाह है कि तू इथाकावासियों में अपनी उम्र के सभी लोगों से बुद्धि और वाणी में श्रेष्ठ है। फिर भी तू कभी ऐसा नहीं था। तू इतना क्रूर है, फिर भी मेरे टेलीमाकस की मृत्यु क्यों चाहता है, और उन प्रार्थना करने वालों का तिरस्कार क्यों करता है जिनकी प्रार्थना का बृहस्पति साक्षी है? यह एक अपवित्र कार्य है जब मनुष्य अपने साथी मनुष्यों के विरुद्ध दुष्टता की योजना बनाते हैं। क्या तू भूल गया है कि एक बार तेरा पिता हमारे पास एक भगोड़ा बनकर आया था, भय से लोग क्रोधित थे क्योंकि वह टैफियन समुद्री डाकुओं के समूह में शामिल हो गया था और हमारे सहयोगी थेस्प्रोटियनों को लूट लिया था। लोग उसे मार डालना चाहते थे, उसका दिल निकाल लेना चाहते थे और उसकी अपार संपत्ति लूट लेना चाहते थे; यूलिसिस ने उनके क्रोध को शांत किया और उन्हें रोके रखा, चाहे वे कितने भी उग्र क्यों न हों। अब तुम उसकी संपत्ति को अत्यंत शर्मनाक तरीके से बर्बाद कर रहे हो, उसकी पत्नी को रिझा रहे हो, उसके बेटे

को मार रहे हो और मेरे दुखों को बढ़ा रहे हो। अब रुक जाओ, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, और बाकी लोगों को भी रुकने के लिए मनाओ।
पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने उत्तर दिया: “हे इकारियस की पुत्री, ज्ञानी पेनेलोप, हिम्मत रखो; ऐसा कोई विचार तुम्हारे मन में न आए। पृथ्वी पर कोई पुरुष नहीं है, और न ही होगा, जो तुम्हारे पुत्र टेलीमाकस पर हिंसक हाथ उठाएगा, जब तक मैं जीवित हूँ, और फिर भी दृष्टि का वरदान बरकरार रखेगा। मैं कहता हूँ, और मैं इसे पूरा करूँगा—उसका काला रक्त बहेगा और मेरे भाले को भिगो देगा। राज्यों को नष्ट करने वाला यूलिसिस अक्सर मुझे अपने घुटनों पर बिठाता था, और भुना हुआ मांस मेरे हाथों में रख देता था।” और मुझे लाल शराब दो। इसलिए मैं समस्त मानवजाति में टेलीमाकस को सबसे प्रिय मानता हूँ, और मैं उससे कहता हूँ कि वह किसी भी दावेदार से मृत्यु का भय न रखे। यदि वह देवताओं द्वारा भेजी गई हो, तो वह बच नहीं पाएगा।
उसने उसे शांत करने के लिए ऐसा कहा, जबकि वह उसके बेटे की हत्या की योजना बना रहा था। रानी सुंदर ऊपरी कमरों में गई और वहाँ अपने प्रिय पति यूलिसिस के लिए तब तक रोई, जब तक कि नीली आँखों वाली पल्लास ने उसकी पलकों पर नींद का मरहम नहीं डाल दिया।
शाम को यूलिसिस और उसके बेटे के पास कुलीन सूअर चराने वाला गया, जबकि वे व्यस्तता से रात का खाना तैयार कर रहे थे, एक साल के सूअर को मारकर। तभी पलास यूलिसिस के पास खड़ी हुई और उसने अपनी छड़ी निकालकर उसे छुआ, जिससे वह फिर से बूढ़ा हो गया और भिखारी के कपड़ों में लिपटा हुआ था, ताकि सूअर चराने वाला, एक नज़र में अपने स्वामी को पहचानकर, इस ज्ञान को अपने भीतर छिपा न रखे, बल्कि जल्दी से बाहर जाकर पवित्र पेनेलोप को यह रहस्य बता दे। तब टेलेमाकस ने सूअर चराने वाले से कहा: “महान यूमेअस, आपका स्वागत है; नगर में क्या खबरें हैं? क्या वे उदार पुरुष, वे दावेदार, अपनी घात छोड़कर लौट आए हैं? या वे अभी भी मेरे गुजरने का इंतजार कर रहे हैं?”
और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया: “सचमुच, मैंने इस बारे में कभी पूछने का सोचा ही नहीं, शहर से गुजरते हुए। मेरी एकमात्र चिंता यही थी कि जैसे ही मैं अपना संदेश दे दूं, जितनी जल्दी हो सके वापस लौट आऊं। मुझे एक दूत मिला, तुम्हारे साथियों द्वारा भेजा गया एक संदेशवाहक, जिसने सबसे पहले तुम्हारी माँ को तुम्हारी सुरक्षित वापसी की सूचना दी। फिर भी यह बात मैं जानता हूँ, क्योंकि मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है। शहर के बाहर,

जहाँ हर्मेस की पहाड़ी है, मैंने एक शानदार नाव को बंदरगाह में प्रवेश करते देखा, जिसमें कई लोग सवार थे। यह ढालों और दोधारी भालों से भरा हुआ था; मुझे लगा कि वे ही थे, फिर भी मैं बता नहीं सकता।
उसने बात की; वीर टेलीमाकस ने अपने पिता की ओर मुस्कुराते हुए देखा, जिस पर भले यूमेअस का कोई निशान नहीं था। जब उनका काम पूरा हो गया और मेज बिछ गई, तो उन्होंने दावत की। किसी को भी अपने हिस्से का भोजन मिलने में कोई कमी नहीं हुई। प्यास और भूख मिटने के बाद, वे आराम करने के लिए लेट गए और नींद का उपहार प्राप्त किया।

पुस्तक सत्रह
यूलिसिस की अपने महल में वापसी
टेलेमाकस और पेनेलोप की मुलाकात, यूमेअस द्वारा यूलिसिस को महल में ले जाया जाना, जहां उसकी मुलाकात आर्गस नामक कुत्ते से होती है, जो उसे देखकर मर जाता है - यूलिसिस का शादी के प्रस्ताव देने वालों के बीच प्रवेश - एंटिनोअस द्वारा यूलिसिस पर हमला - पेनेलोप द्वारा यूलिसिस को बुलवाया जाना।
अब जब गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई— भोर की पुत्री—टेलीमाकस, महान यूलिसिस का प्रिय पुत्र, ने अपने पैरों के नीचे सुडौल सैंडल बांधे, और अपने हाथ में ठीक से फिट होने वाला विशाल भाला उठाया, और शहर की ओर जाने के लिए तैयार होते हुए, सूअर चराने वाले से इस प्रकार कहा:—
“पिताजी, मैं शहर जाने की जल्दी में हूँ, ताकि वहाँ मेरी माँ मुझे देख सकें; क्योंकि मुझे लगता है कि जब तक उनकी नज़र मुझ पर नहीं टिकेगी, तब तक वे शोक, भय और रोना बंद नहीं करेंगी। मैं तुम्हें हमारे इस दुर्भाग्यशाली अतिथि को शहर ले जाने का दायित्व सौंपता हूँ, ताकि वह वहाँ भीख माँग सके। जो चाहे उसे खाना-पीना दे सकता है। मैं सभी को भोजन नहीं दे सकता, और मेरी चिंताएँ भी बहुत हैं। अगर उसे इस बात से बुरा लगा, तो उसके लिए और भी बुरा होगा। मुझे अपने मन की बात कहना अच्छा लगता है।”
और इस प्रकार बुद्धिमान यूलिसिस ने कहा: “मेरे मित्र, मैं यहाँ समय बर्बाद नहीं करना चाहता। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए गाँव की बजाय शहर में भीख माँगना बेहतर है। शहर में, जो चाहेगा, दान देगा; परन्तु यहाँ, यदि मैं अस्तबलों के आसपास ही रहा, तो मेरी उम्र अब इतनी नहीं रही कि मैं स्वामी की सारी आज्ञाएँ पूरी कर सकूँ। तुम जाओ; यह आदमी तुम्हारे आदेश पर मुझे यहाँ से ले जाएगा, जैसे ही मैं आग के पास गर्म हो जाऊँगा, और हवा सुहावनी हो जाएगी। यह सुबह की कड़ाके की ठंड समाप्त हो जाएगी।” मुझे, और जिस रास्ते के बारे में आप कहते हैं, वह लंबा है।"
उसने अपनी बात समाप्त की; टेलेमाकस अपने आश्रम से शीघ्रता से निकला, मन ही मन उन सभी दावेदारों को नष्ट करने का निश्चय कर रहा था। अपने आलीशान घर पहुँचकर, उसने अपना भाला एक स्तंभ के सहारे टिकाया, और पत्थर की दहलीज पार करके अंदर प्रवेश किया। सबसे पहले यूरिक्लेया, जो उसकी धाय थी, ने उसे

देखा, जब उसने सुंदर सिंहासनों को खालों से सजाया, और रोती आँखों से उसकी ओर दौड़ी; और दृढ़ निश्चयी यूलिसिस के घर की अन्य दासियाँ उसके चारों ओर जमा हो गईं। उन्होंने उसका हार्दिक स्वागत किया, उसके माथे और कंधों पर चुंबन किया। अपने बगल वाले कक्ष से पवित्र पेनेलोप, डायना की तरह ही सुंदरता में, या सुनहरी वीनस की तरह, आई, और रोते हुए अपने बेटे को बाहों में भर लिया, और उसके माथे और दोनों आँखों पर चुंबन किया, और आँसुओं के बीच बोली:—
“मेरी आँखों की रोशनी! हे मेरे टेलीमाकस! क्या तुम आ गए हो? मैंने तुम्हें देखने की कभी उम्मीद नहीं की थी, जब मैंने सुना था कि तुम पाइलोस के लिए चुपके से रवाना हुए हो—और मुझे जानते हुए—अनिच्छुक—इस उम्मीद में कि वहाँ तुम्हें अपने पिता की कोई खबर मिलेगी। अब मुझे बताओ जो कुछ हुआ है, जो कुछ तुमने देखा है।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“नहीं, माँ, मेरे दुःखों को फिर से मत जगाओ,
और न ही मेरे हृदय को क्रोधित करो। मैं अभी-अभी
एक क्रूर मृत्यु से बच निकला हूँ। लेकिन जाओ और स्नान करो,
और नए वस्त्र पहनो, और जब तुम अपनी दासियों के साथ अपने कक्ष में आओ, तो सभी देवताओं से यह प्रतिज्ञा करो कि तुम चुने हुए बलि के बलिदान को जलाओगी
जब बृहस्पति हमारे अन्याय का बदला ले लेगा।
अब मुझे बाजार जाना होगा
उस व्यक्ति की तलाश में जो मेरे साथ अतिथि बनकर आया था
पाइलोस से। उसे, मैंने अपने सभी वफादार दल के साथ,
को इस बंदरगाह पर अपने से पहले भेजा, और
पिरायस को आदेश दिया कि वह उसे अपने निवास स्थान पर ले जाए,
ताकि मेरे आने तक उसे वहाँ ठहराया और सम्मानित किया जा सके।
उसने बात की, और उसके शब्द अनसुने नहीं रहे। राजकुमारी ने स्नान किया और नए वस्त्र पहने, और सभी देवताओं से प्रतिज्ञा की कि जब बृहस्पति दुष्टों को दंडित करेगा, तो वह चुने हुए बलि चढ़ाएगी। जब वह प्रार्थना कर रही थी, टेलीमाकस अपने भाले के साथ आगे बढ़ा। दो फुर्तीले कुत्ते उसके पीछे-पीछे चले। मिनर्वा ने उसके रूप और चेहरे पर एक दिव्य सौंदर्य बिखेरा, और जब वह

आया तो सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। उसके चारों ओर मीठी-मीठी बातों से प्रेम करने वाले लोग उमड़ पड़े, फिर भी अपने मन में शरारत की योजना बना रहे थे। वह जल्दी से उनकी सभा से मुड़ा और उस स्थान पर बैठ गया जहाँ मेंटर, एंटिफस और हैलिथर्स बैठे थे—ये सभी उसके पिता के मित्र थे और शुरू से ही उसके भी मित्र थे। जब वे उससे पूछ रहे थे कि उसने क्या-क्या देखा है, तभी प्रसिद्ध भालाधारी पीरियस आया, जो अजनबी को अपने साथ बाज़ार ले जा रहा था। टेलीमाकस ने देर नहीं की और अपने मेहमान से मिलने आ गया, और तब पीरियस ने कहा:—
“टेलेमाकस, जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ अपनी सेविकाओं को भेजो; मैं तुम्हें तुरंत वे उपहार भेजना चाहता हूँ जो मेनेलास ने दिए थे।”
“तब चतुर टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“हे पिरायस, हम अभी तक नहीं जानते कि क्या होगा; और यदि दावेदार चुपके से महल में मेरी हत्या कर दें और विरासत को आपस में बाँट लें, तो मैं चाहूँगा कि तुम, उनके बजाय, उपहार पाओ; परन्तु यदि उनका वही हश्र हो जो मैंने योजना बनाई है, और उनका नाश हो जाए, तो तुम सहर्ष खजाने लाओगे, जिसे मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।”
राजकुमार ने ऐसा कहा और अपने अतिथि, उस अभागे व्यक्ति को महल में ले गया। जब वे उस भव्य भवन में पहुँचे, तो दोनों ने अपने लबादे बेंचों पर रख दिए और चमकते हुए स्नानागारों की ओर चल दिए। वहाँ दासियों ने उनकी सेवा की और तेल से उनके अंगों को चिकना किया, और प्रत्येक को उनके हाथों से एक-एक कुर्ता और ऊनी लबादा दिया। फिर वे स्नानागारों से बाहर निकले और अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। एक युवती आई और उसने सोने के बने एक सुंदर सुराही से उनके हाथों के लिए चांदी के पात्र में पानी डाला, और उनके बैठने की जगह के पास एक पॉलिश की हुई मेज बिछाई; और उस पर घर की मुखिया ने रोटी और अपने भंडार में मौजूद कई व्यंजन रखे। रानी सामने, एक स्तंभ के पास बैठी थी, और एक पतली तकली घुमा रही थी, जबकि पुत्र और अतिथि ने अपने हाथ बढ़ाकर तैयार भोजन साझा किया। और जब भूख और प्यास की पुकारें शांत हो गईं, तब ज्ञानी पेनेलोप ने कहा:—
“टेलेमाकस, जब मैं फिर से अपने कमरे में जाऊँगी, तो मैं उस पलंग पर लेट जाऊँगी जो यूलिसिस के एट्रेस के बेटों के साथ ट्रॉय जाने के बाद से मेरे लिए शोक का पलंग बन गया है, जो मेरे आँसुओं से भीगा हुआ है। और अब तुमने यह

प्रकट करना उचित नहीं समझा है, इससे पहले कि अभिमानी दावेदार फिर से इन कक्षों में उमड़ पड़ें, कि तुमने अपनी यात्रा में उसके लौटने के बारे में क्या सुना है।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“तो, माँ, मैं तुम्हें सब कुछ सच-सच बताऊँगा।
हम पाइलोस गए और वहाँ नेस्टर को देखा,
जो लोगों का चरवाहा था। उसने बड़े प्यार से मुझे अपने आलीशान घर में स्वागत किया, जैसे कोई
विदेश से लौटे हुए अपने बेटे का स्वागत करता है। मुझे राजा और उसके प्रतिष्ठित पुत्रों दोनों से ऐसा ही स्वागत मिला।
लेकिन उसने कहा कि उसने किसी जीवित व्यक्ति से सुना है कि लंबे समय तक जीवित रहने वाले सरदार यूलिसिस के बारे में कोई खबर नहीं है, कि वह अभी जीवित है या मर गया है। इसलिए उसने मुझे अपने घोड़ों के साथ भेजा। और रथ एट्रेस के पुत्र, योद्धा मेनेलास के दरबार में गया। वहाँ मैंने आर्गिव हेलेन को देखा, जिसके कारण यूनानियों और ट्रोजनों ने, देवताओं की इच्छा से, इतना कष्ट सहा। वीर राजा ने पूछा, मेरी किस इच्छा ने मुझे पवित्र लैसेडसेमोन नगर में लाया है? मैंने उत्तर दिया, और उसे सब कुछ सही-सही बताया, और सब कुछ क्रम से। तब उसने मुझे उत्तर दिया और कहा:—
“तो फिर! ये पुरुष, भले ही युद्धप्रिय न हों, एक वीर पुरुष के बिस्तर पर आसीन होने की आकांक्षा रखते हैं, जैसे जब एक हिरण अपने दो नवजात शिशुओं को, जो अभी-अभी पैदा हुए हों, एक शक्तिशाली शेर की मांद में सोए हुए छोड़ जाता है, और पहाड़ों की ढलानों और घास के मैदानों में चरने के लिए भटकता है, तभी अचानक शेर वापस आता है और दोनों का क्रूर अंत कर देता है, ठीक वैसे ही यूलिसिस भी इन दावेदारों पर अचानक विपत्ति लाएगा। काश, पिता बृहस्पति, पल्लास और अपोलो की इच्छा होती कि वह मुखिया, अपनी शक्ति के साथ लौट आए, जैसा कि वह कभी था, एक सुगठित शरीर में।” लेस्बोस में, एक कुश्ती-मैच में, वह फिलोमेलिड्स से लड़ने के लिए उठा,
और उसे बुरी तरह पटक दिया, और सभी यूनानी
खुश हुए—काश वह तब जैसा था वैसा ही आ पाता!
तब तो शादी के प्रस्ताव रखने वाले अल्पकालिक ही रह जाते, और उन्हें
एक कड़वी शादी की दावत का स्वाद चखना पड़ता। लेकिन अब,

जिस विषय पर तुमने पूछताछ की है, मैं उससे
मुँह मोड़कर दूसरी बातें नहीं करूँगा,
और न ही धोखा दूँगा। जो कुछ मुझे बताया गया है
गहरे सागर के प्राचीन देवता द्वारा, जिनके वचन सत्य हैं,
मैं तुमसे एक भी शब्द नहीं छिपाऊँगा।
उसने तुम्हारे पिता को देखा उसने कहा, “एक द्वीप, जो दुखों के व्याकुल होने का शिकार है, और अनिच्छुक रूप से अप्सरा कैलिप्सो के महल में कैद है। वह अपने जन्म देश नहीं जा सकता; वहाँ कोई जहाज नहीं हैं जिनमें चप्पू हों और न ही कोई चालक दल हो जो उसे विशाल समुद्र पार ले जा सके।”
“इस प्रकार, भाले चलाने में निपुण मेनेलाउस, एट्रियस के पुत्र ने कहा। और अब अपना कार्य पूरा करके मैं लौट आया। देवताओं ने अनुकूल हवाएँ दीं और मुझे शीघ्रता से घर पहुँचा दिया।”
उसने अपनी बात समाप्त की, और रानी अत्यंत भावुक हो गई।
तब देवतुल्य थियोक्लीमेनस ने कहा:—
“हे लार्टेस के पुत्र की कृपालु संगिनी, राजा मेनेलास सब कुछ नहीं जानते थे। अब सुनो, मैं क्या कहूँ—क्योंकि मैं भविष्यवाणी करूँगा, और सत्य, और तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। देवताओं में सबसे शक्तिशाली बृहस्पति, और यह तुम्हारा आतिथ्य भोज, और यह महान यूलिसिस का चूल्हा, जहाँ मुझे शरण मिलती है, मेरे साक्षी हों कि अब यूलिसिस अपने देश में वापस आ गया है, और गलत कामों का अवलोकन करते हुए बैठा या चल रहा है, और प्रतिशोध की योजना बना रहा है, जो अभी सभी दावेदारों पर आने वाला है; शगुन
जिसे मैंने तब देखा जब मैं उस शानदार नाव में बैठा था
और मैंने इसे टेलीमाकस को बताया।"
और इस प्रकार ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया:
“हे अजनबी! तेरी यह बात पूरी हो!
तब तुझे ऐसी कृतज्ञता और ऐसे पुरस्कार प्राप्त होंगे
कि जो भी तुझे नमस्कार करेगा, वह तेरे साथ आनन्दित होगा।”
वे आपस में बातें कर रहे थे। यूलिसिस के महल के सामने खड़े होकर, मुक़दमेबाज़ मुक़दमेबाज़ और भाले फेंकते हुए चिकने फ़र्श पर मजे से खड़े थे, जहाँ उनकी धृष्टता अक्सर देखी जाती थी। लेकिन जब भोजन का समय निकट आया, और चरवाहों द्वारा हांके गए मवेशी खेतों से आए, तो मेदोन—जो सभी दूतों

में उन्हें सबसे प्रिय था, और जो भोज में उनके बीच बैठा था—ने उनसे इस प्रकार कहा:
“युवकों! चूंकि अब आप यहाँ अपना मनोरंजन कर चुके हैं,
अंदर आओ, और शाम का भोजन तैयार करने में मदद करो;
उचित समय पर भोज बुरा नहीं है।”
उसने कहा; सभी दावेदारों ने ध्यान से सुना और आज्ञा का पालन किया, और उठकर महलों में आए, और अपने लबादे बेंचों और सिंहासनों पर रख दिए, और अच्छी तरह से पाली गई भेड़ों और कमजोर बकरियों का वध किया, और एक लाड़ले बलि के घोड़े, और एक बंधे हुए बैल को दावत की तैयारी में बलि चढ़ाया। इसी बीच यूलिसिस और वह कुलीन हिरनी, जो सूअर चराने वाला था, शहर की ओर अपनी सैर शुरू करने के लिए जल्दी से चल पड़े, और इस प्रकार मुख्य सूअर चराने वाले ने कहा:—
“चूंकि, अजनबी, आज तुम्हारी इच्छा है कि तुम शहर जाओ, जैसा कि मेरे स्वामी ने आदेश दिया है— हालांकि मैं तुम्हें अस्तबलों का रक्षक बनाए रखना ज़्यादा पसंद करता हूँ, फिर भी मुझे अपने स्वामी से बहुत डर लगता है, और मुझे यकीन है कि वह डांटेंगे, और स्वामी की फटकार बहुत कठोर होती है— चलो चलते हैं; दिन ढल चुका है, और शाम की हवा ठंडी होगी।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “बस करो; मैं जानता हूँ; तुम्हारी बातें एक ऐसे व्यक्ति ने सुनी हैं जो उन्हें समझता है। तो चलो चलते हैं। तुम रास्ता दिखाओ; और यदि तुम्हारे पास लकड़ी से बनी कोई लाठी हो जिस पर सहारा लिया जा सके, तो मुझे दे दो, क्योंकि जैसा तुमने कहा है, हमारा रास्ता फिसलन भरा है।”
वह बोला, और अपने कंधों पर एक थैला फेंक दिया,
पुराना, फटा हुआ, और एक मुड़ी हुई डोरी से लटका हुआ।
यूमेअस ने उसे वह लाठी दी जो उसने माँगी थी, और दोनों
आगे बढ़ गए; कुत्ते और चरवाहे
झोपड़ी की रखवाली के लिए रुक गए। सूअर चराने वाला अपने मालिक को
शहर की ओर ले गया, जो देखने में एक मैला-कुचैला भिखारी लग रहा था, बूढ़ा, लाठी के सहारे खड़ा था, और गंदे चिथड़ों में लिपटा हुआ था। वहाँ ऊबड़-खाबड़ रास्ते से, जैसे ही वे कस्बे के पास पहुँचे, उन्हें एक झरना दिखाई दिया जो मनुष्य द्वारा निर्मित था और जिससे सुखद जलधाराएँ बह रही

थीं, जहाँ से नागरिक जल भरते थे। इथाकस और नेरिटस ने पॉलीक्टर के साथ मिलकर इसकी स्थापना की थी, और नम मिट्टी पर पलने वाले एल्डर वृक्षों का एक झुरमुट इसके चारों ओर उग आया था। बर्फीली ठंडी धारा एक ऊँची चट्टान से बह रही थी, जिसके शिखर पर एक वेदी थी, जहाँ से गुजरने वाले लोग पूजा करते थे और अप्सराओं के लिए अपनी भेंट चढ़ाते थे। वहाँ डोलियस के पुत्र मेलेंथियस की मुलाकात उन दोनों से हुई, जब वह शहर की ओर जा रहा था, जब वह सभी झुंडों में से सबसे उत्तम बकरियों को ले जा रहा था, ताकि वह उन लोगों के लिए एक भोज का आयोजन कर सके जो शादी के प्रस्ताव देने वाले थे; उसके साथ दो चरवाहे भी थे, जो झुंड के पीछे-पीछे चल रहे थे। जैसे ही उसने यूमेअस और उसके मेहमान को देखा, उसने उन पर कठोर और हिंसक शब्दों से हमला किया, जिससे यूलिसिस का क्रोध भड़क उठा।
“देखो, वह नीच आदमी नीचों को इधर-उधर ले जा रहा है!
इस तरह कोई न कोई देवता हमेशा एक जैसे को एक साथ मिलाता है।
हे निकम्मे सूअर चराने वाले! तू कहाँ ले जाना चाहता है
इस भूखे, भिखारी को, इस दावतों के दुश्मन को, जो कई दरवाजों के खंभों पर अपने कंधे रगड़ता है, रोटी के टुकड़े मांगता है,
कभी तिपाई या कड़ाही नहीं। क्या तू इस अभागे को मेरे पास छोड़ दे, मेरे बाड़ों की रखवाली करने के लिए, और बाड़ों की सफाई करने के लिए, और बकरियों के बच्चों के लिए ताजी टहनियाँ लाने के लिए,
वह मट्ठा पीकर मोटी जांघें पा सकता है।
लेकिन उसने कुछ अच्छा नहीं सीखा है, और वह वह काम करने से इनकार करता है; उसे अपने उस अतृप्त पेट के साथ इधर-उधर घूमना और भीख मांगकर उसे भरना ज्यादा पसंद है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि अगर वह कभी महान सरदार यूलिसिस के महल में आया तो उसके साथ क्या होगा। मेहमान बनकर बैठे लोगों के हाथों से उसके चारों ओर कई पायदान फेंके जाएँगे और वे उसे बुरी तरह पीटेंगे।
उसने बोलते हुए अपनी मूर्खता में अपनी एड़ी नायक की जांघ पर मार दी। इस प्रहार से यूलिसिस अपने मार्ग से नहीं डिगा, न ही वह ज़रा भी विचलित हुआ, बल्कि सोचने लगा कि क्या वह अपने अच्छे डंडे से उस साथी की जान ले ले, या उसे हवा में उठाकर उसका सिर ज़मीन पर पटक दे। फिर भी उसने अपमान सहन किया और अपने क्रोध को रोका। सूअर चराने वाले ने बोलते हुए अपराधी को फटकारा और हाथ उठाकर प्रार्थना की:

“जपृथ्वी की अप्सराएँ, बृहस्पति की पुत्री!
यदि कभी यूलिसिस ने बलि में तुम्हारे लिए मेमनों और बकरियों की जांघें जलाई हों, जिन पर चर्बी लगी हो, तो कृपा करके मेरी प्रार्थना स्वीकार करो, कि किसी देवता के मार्गदर्शन में, मुखिया
लौट आए। तब तुम्हारे अशिष्ट घमंड समाप्त हो जाएँगे।
मेलेंथियस, जिसे तुम शहर में भटकते हुए जगह-जगह बोलते हो।
विश्वासघाती चरवाहे एक नाशवान झुंड बनाते हैं।”
बकरियों के रखवाले मेलेंथियस ने उत्तर दिया: “यह कुत्ता कितना चंचल और चालाक है, यह देखकर आश्चर्य होता है! लेकिन मैं उसे इथाका से दूर एक अच्छे काले जहाज पर ले जाऊंगा और वहाँ उसे अच्छे दाम पर बेच दूंगा। काश, चांदी के धनुष वाले अपोलो महल में ही टेलीमाकस को मार डालते, या काश, वे दावेदार भी, ठीक वैसे ही जैसे यूलिसिस को उसके घर लाने वाला दिन कभी नहीं आएगा!”
उसने कुछ कहा और उन्हें वहीं छोड़ दिया। वे धीरे-धीरे उसके पीछे चले। मेलेंथियस ने जल्दी की और जल्द ही राजा के महल के द्वार पर पहुँच गया, और अंदर जाकर यूरिमाकस के ठीक सामने बैठ गया, जिसका वह प्रिय था। वहाँ मौजूद सेवक मांस लाए, और घर की मुखिया रोटी लाई, और दोनों उनके सामने परोसे गए। इसी बीच यूलिसिस अपने कुलीन सूअर चराने वाले के साथ महल के पास रुक गया, क्योंकि उनके चारों ओर वीणा की मधुर ध्वनि गूंज रही थी। ठीक उसी समय जब गायक फेमियस ने अपना गीत गाना शुरू किया, तभी यूलिसिस ने सूअर चराने वाले का हाथ पकड़ा और कहा:—
“यूमेअस, यह वही भव्य भवन होना चाहिए जिसमें यूलिसिस रहता था, क्योंकि यह आस-पास के लोगों के बीच आसानी से जाना जाता है। यहाँ एक के ऊपर एक कमरे हैं; इसके प्रांगण के चारों ओर दीवारें और बुर्ज हैं, और तह वाले दरवाजे प्रवेश द्वार को मजबूती से बंद कर देते हैं; कोई भी इसकी मजबूती को कम नहीं आंक सकता। और मैं देख रहा हूँ कि कई मेहमान अंदर भोज कर रहे हैं; चर्बी का धुआँ उठ रहा है, और मधुर वीणा की ध्वनि सुनाई दे रही है; देवताओं ने भोज के साथ इसका संगीत प्रदान किया है।”
और फिर, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया: “तुम सही कहते हो, और अन्य बातों में भी तुम विचार करने में मंद नहीं हो। अब चलो विचार करें कि हमें क्या करना चाहिए। यदि तुम चाहो, तो पहले तुम उन भव्य कमरों में प्रवेश करो, जबकि मैं बाहर रहूँ; या, यदि तुम्हें अच्छा लगे, तो मैं पहले प्रवेश करूँ, जबकि तुम

बाहर रहो; फिर भी देर मत करो, कहीं ऐसा न हो कि कोई तुम्हें देखकर तुम्हें मार डाले, या तुम्हें यहाँ से भगा दे। मैं तुमसे विनती करता हूँ, इस पर विचार करो।”
महान पीड़ा भोगने वाले यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “बस करो; मैं जानता हूँ; तुम्हारे शब्द एक ऐसे व्यक्ति ने सुने हैं जो उन्हें समझता है। तो मेरे आगे जाओ, और मुझे यहीं छोड़ दो। मैं मार-पीट और कोड़ों का आदी हूँ, और मेरा स्वभाव धैर्यवान है, क्योंकि मैंने समुद्र में और युद्धों में बहुत कष्ट सहे हैं; और मैं इसे भी सहने के लिए तैयार हूँ। लेकिन पेट की भूख असहनीय है, और इसे रोका नहीं जा सकता; और यह मनुष्य जाति पर अनेक विपत्तियाँ लाती है; यह युद्ध के लिए तैयार होकर बंजर गहरे समुद्र को पार करने वाले बेड़ों को तैयार करती है।” और शत्रु राज्यों में मृत्यु और विपत्ति लाएंगे।
दोनों ने इस प्रकार बातें कीं। पास ही एक कुत्ता लेटा हुआ था, और उसने अपना सिर उठाया और अपने कान खड़े किए। यह आर्गस था, जिसे बहुत सहनशील व्यक्ति यूलिसिस ने बहुत पहले बसाया था, लेकिन ट्रॉय के पवित्र शहर के लिए रवाना होने से पहले उसे बिना आजमाए छोड़ दिया था। युवक अक्सर उसे जंगली बकरियों, हिरणों और खरगोशों के उत्सुक शिकार में ले जाते थे; लेकिन अब, उसका स्वामी दूर था, वह उपेक्षित पड़ा था, अस्तबल के दरवाज़े के ठीक सामने, खच्चरों और बैलों के गोबर के ढेर के बीच, जो ऊँचे-ऊँचे ढेरों में जमा था और जिसे विशाल खेतों में ले जाया जाता था, जिसका स्वामी यूलिसिस था। वहाँ आर्गस पड़ा था, कीड़ों से भरा हुआ। जैसे ही उसने यूलिसिस को पास आते देखा, उसने अपनी पूंछ हिलाई और अपने कान नीचे कर लिए, लेकिन पाया कि वह अपने स्वामी के पास नहीं आ सकता। यह देखकर, यूलिसिस ने एक आँसू पोंछा, जो अच्छे चरवाहे की नज़र से छिपा था, जिससे उसने इस प्रकार पूछा:—
“यूमेअस, मैं इस कुत्ते को देखकर आश्चर्यचकित हूँ, जो गोबर के ढेर पर लेटा है, रूप से सुंदर है, लेकिन क्या वह शिकार में उतना ही फुर्तीला है जितना कि उसका सुंदर आकार है, यह मैं नहीं कह सकता। शायद वह बेकार है, जैसा कि अक्सर पालतू कुत्ते होते हैं, जिनके मालिक उन्हें दिखावे के लिए रखते हैं।”
और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया:
“यह कुत्ता उस व्यक्ति का है जो दूर मर गया।

यदि उसके पास वह शारीरिक शक्ति होती जो कभी शिकार के कारनामों के लिए उसके पास थी जब यूलिसिस ट्रॉय के लिए रवाना हुआ और उसे छोड़कर चला गया, तो तुम उसकी फुर्ती और ताकत दोनों को देखकर चकित हो जाते। कोई भी जानवर
घने जंगल की गहराई में, जिसे उसने कभी देखा था,
या यहाँ तक कि पैरों के निशान से भी, बच नहीं सकता था।
और अब वह पीड़ित है, क्योंकि उसका स्वामी
अपनी भूमि से दूर मर गया है। अब लापरवाह स्त्रियाँ उस प्राणी की ज़रूरतों पर ध्यान नहीं देतीं;
क्योंकि, जब स्वामी अब पास नहीं है,
सेवक अपने निर्धारित कार्यों से हट जाते हैं,
और जिस दिन कोई गुलाम बन जाता है,
गर्जना करने वाला, बृहस्पति, उसकी आधी कीमत छीन लेता है।
वह बोला, और उस सुंदर निवास में प्रवेश करके,
उस स्थान से गुजरा जहाँ प्रतिष्ठित दावेदार बैठे थे,
जबकि आर्गस नदी पर मृत्यु की काली रात
अचानक छा गई जैसे ही उसने
यूलिसिस को देखा, जो अब बीस वर्षों से अनुपस्थित था।
देवता तुल्य टेलीमाकस, हॉल से आते हुए सूअर चराने वाले को देखने वाला पहला व्यक्ति था,
और सिर हिलाकर उसे पुकारा। सूअर चराने वाले ने अपने चारों ओर देखा, और एक आसन देखा जिस पर
दावत का मांस काटने वाला बैठा करता था,
मांस बाँटते हुए। वह उसे वहाँ से ले गया और टेलीमाकस के सामने, उसकी मेज पर रख दिया। फिर उसने उसे बिठाया, और तभी दूत आया, जो उसके लिए दावत का एक हिस्सा लाया और उसे भरे हुए पात्र से रोटी दी। उसके तुरंत बाद यूलिसिस आया, जो देखने में एक बूढ़ा और दयनीय भिखारी लग रहा था, लाठी के सहारे खड़ा था और गंदी घास में लिपटा हुआ था। उसने उसे राख से सने दहलीज पर, दरवाजे के ठीक भीतर बिठा दिया, और सरू की लकड़ी के एक डंडे से टिक गया, जिसे किसी कारीगर ने कुशलतापूर्वक रेखा से तराशा और चिकना किया था। टेलीमाकस ने सूअर चराने वाले को बुलाया, उसे आने को कहा, और सुंदर डिब्बे में रखी एक रोटी, और जितना मांस उसके दोनों हाथों में आ सकता था, ले लिया।

“इसे उस अजनबी तक पहुँचा दो; उससे कहो कि वह
यहाँ मौजूद हर भिखारी से भीख मांगे।
किसी भी भिखारी को अपनी ज़रूरत में शर्म नहीं करनी चाहिए।”
उसने कहा, हिरणी ने आज्ञा मानी, और यूलिसिस के पास आकर उससे मधुर शब्दों में कहा:—
“ये टेलेमाकस की ओर से हैं, जो तुम्हें हर चाहने वाले से भीख मांगने के लिए कहता है, क्योंकि वह कहता है कि किसी भी भिखारी को अपनी ज़रूरत में शर्म नहीं करनी चाहिए।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“सर्वशक्तिमान बृहस्पति, टेलीमाकस को
मनुष्यों के बीच एक सुखी व्यक्ति बनाएँ,
और जीवन में उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी करें!”
उसने बात की और उपहार को दोनों हाथों में लेकर, अपने फटे हुए थैले पर, अपने पैरों के पास रख दिया। फिर, जब कवि गा रहा था, उसने भोजन किया, और जैसे ही उसने भोजन किया, कवि ने अपना दिव्य पाठ समाप्त कर दिया। फिर हॉल में बहुत शोरगुल मच गया, लेकिन पल्लास आई और यूलिसिस को उठने और वहाँ मौजूद हर दावेदार से रोटी मांगने के लिए प्रेरित किया, ताकि वह अच्छे और बुरे में फर्क कर सके, हालाँकि किसी को भी बख्शा नहीं जाना था। दाएँ से बाएँ
वह अपने रास्ते पर चला और हर आदमी से भीख माँगी,
हाथ फैलाकर, मानो वह बहुत समय से भिखारी रहा हो। और उन्होंने उस पर दया की और उसे दिया,
और आश्चर्य से उसकी ओर देखा, और एक दूसरे से पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आया है।
तब बकरियों के रखवाले मेलेंथियस ने कहा:—
“हे महान रानी के चाहने वालों, ध्यान से सुनो।
इस अजनबी को मैंने एक बार देखा है।
उसे चरवाहा लाया था; लेकिन मैं उसे नहीं पहचानती,
और वह किस जाति का है, यह मैं नहीं बता सकती।”
उसने कहा; एंटिनोस ने सूअर चराने वाले को इस प्रकार फटकारा: “तू इसे क्यों लाया है, तू तो स्वयं को इतना प्रसिद्ध जानता है? क्या हमारे पास पर्याप्त आवारा नहीं हैं? पर्याप्त

बलवान भिखारियों के, जो हर दावत के दुश्मन हैं।
या यह कोई मामूली बात है कि वे
यहाँ तेरे स्वामी की संपत्ति को बर्बाद करने के लिए जमा होते हैं,
और इसलिए तू इस आदमी के साथ यहाँ है?”
और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया: “एंटीनोअस, चाहे तुम्हारा पद कितना भी ऊँचा हो, तुमने अनुचित बात कही है। कौन सा व्यक्ति किसी अजनबी को अपने घर बुलाने जाता है, जब तक कि वह अजनबी उन लोगों में से न हो जिनका कर्तव्य जनता की सेवा करना हो, चाहे वह द्रष्टा हो, या परजीवी, या वास्तुकार हो, या स्वर्ग से प्रेरित कवि हो, जिसका गीत प्रसन्नता से सुना जाता हो? इन सभी को उन सभी भोजों में बुलाया जाता है जहाँ मनुष्य पाए जाते हैं; परन्तु कोई भी गरीबों को बुलाकर उनके साधनों पर जीवन यापन नहीं करता। हे एंटीनोअस, तुम, सभी प्रेमियों में से, क्या तुम यूलिसिस के सेवकों, विशेषकर मुझ पर, अत्यंत कठोरता से व्यवहार करते हो? मैं इस पर ध्यान नहीं देता जब तक बुद्धिमान पेनेलोप अपने देवतुल्य पुत्र के साथ महल में निवास करती है।
तब विवेकशील टेलीमाकस ने हस्तक्षेप करते हुए कहा:
“नहीं, कृपया उससे शब्दों का झगड़ा न करें।
एंटिनोअस कड़वे शब्दों में आनंद लेता है,
और गाली-गलौज करता है, और दूसरों में भी गाली-गलौज भड़काता है।” फिर वह मुड़ा और इस प्रकार जोशीले शब्दों में एंटिनोस बोला: “सचमुच तुम मेरी उतनी ही परवाह करते हो जितनी एक पिता अपने बेटे की करता है, मुझे किसी अजनबी को अपने दरवाजे से हिंसक शब्दों से भगाने के लिए कह रहे हो—भगवान न करे ऐसा हो। अब कुछ लो और उसे दे दो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है, बल्कि मैं इसकी सलाह देता हूँ। मेरी माँ को नाराज़ करने से मत डरो, या उस देवतुल्य मुखिया, यूलिसिस के घर के किसी भी सदस्य को नाराज़ करने से मत डरो। लेकिन तुमने इस बारे में सोचा ही नहीं। तुम्हारे लिए दावत करना और कुछ न देना ही सबसे अच्छा है।”
इस प्रकार एंटिनोअस ने उत्तर दिया: “हे बड़े-बड़े और शेखी बघारने वाले! टेलीमाकस, यदि अन्य सभी दावेदार मेरी तरह ही अपना योगदान दें, तो भी वह अगले तीन महीनों तक इन कक्षों में दिखाई नहीं देगा।”

ऐसा कहते हुए, उसने तख्ते के नीचे से एक स्टूल निकाला, जिस पर उसने अपने सुंदर पैर रखे। बाकी सभी ने यूलिसिस को कुछ न कुछ दिया, यहाँ तक कि उसका थैला मांस और रोटी से भर गया। फिर जब वह दहलीज पर वापस गया, वहाँ यूनानियों द्वारा दिए गए भोजन का आनंद लेने के लिए, वह एंटिनोअस के पास रुका और उससे इस प्रकार बोला:
“मित्र, तुम भी कुछ दान करो। तुम यूनानियों में निम्न श्रेणी के नहीं लगते, बल्कि सर्वोच्च श्रेणी के लगते हो। तुम्हारा रूप राजसी है; इसलिए यह तुम्हारे लिए उचित होगा कि तुम बाकियों से अधिक उदारतापूर्वक दान करो, और मैं तुम्हारी प्रशंसा सारी पृथ्वी पर करूँगा। मेरा भी एक समय सुखमय था, क्योंकि मैं एक ऐसे महल में रहता था जो वस्तुओं से भरा हुआ था, और मैं अक्सर भटकने वालों को, चाहे वे कोई भी हों, जो भी मेरी तलाश में आते थे, और चाहे उन्हें किसी भी आवश्यकता हो, दान देता था। मेरे पास बहुत से सेवक थे, और हर उस चीज़ का विशाल भंडार था जिससे मनुष्य आराम से जीवन यापन करते हैं। धनी माना जाता था। शनि के देवता—
उनकी यही इच्छा थी—ने मुझे नीचा दिखाया; क्योंकि, उनके द्वारा प्रेरित होकर, मैं समुद्री डाकुओं के एक भटकते हुए गिरोह में शामिल हो गया, और अपनी बर्बादी की ओर मिस्र के तट की एक लंबी यात्रा पर निकल पड़ा। उस देश की नदी में मैंने अपने अच्छे जहाजों को खड़ा किया, और अपने आदमियों को उनके साथ रहने और उनकी अच्छी तरह से निगरानी करने का आदेश दिया। मैंने ऊँचाइयों पर पहरेदार तैनात किए। फिर भी अपनी ताकत पर भरोसा करते हुए, और लालच में आकर, मेरे साथियों ने मिस्रियों के सुंदर खेतों को लूट लिया, उन्हें मार डाला, और भाग गए। उनकी पत्नियाँ और बच्चे। यह अफवाह जल्द ही शहर तक पहुँच गई; लोगों ने खतरे की घंटी सुनी और इकट्ठा हो गए। भोर होते ही सारा विशाल मैदान घुड़सवारों और पैदल सैनिकों से भर गया, और पीतल की तरह चमक रहा था, जबकि गर्जन के देवता बृहस्पति ने हमारे बीच एक घातक भय फैला दिया, जहाँ किसी ने भी शत्रु का सामना करने का साहस नहीं किया। चारों ओर मृत्यु थी। मिस्रियों ने तलवार से कई लोगों को काट डाला, और कुछ को वे जीवित ही गुलामी में अपने लिए काम करने के लिए ले गए। मुझे मेरे बंदी बनाने वालों ने एक अजनबी के हाथों में सौंप दिया, जो अपने रास्ते पर था। साइप्रस, जहाँ एक शक्तिशाली राजा, जसुस के पुत्र डेमेटोर का शासन था। अंततः मैं वहाँ से अनेक कठिनाइयों को सहते हुए इस द्वीप पर आया।

एंटिनोअस ने ऊँची आवाज़ में कहा: “किस देवता ने इस उपद्रव को भोज में बाधा डालने के लिए भेजा है? अपने आप को मध्य कक्ष में ले जाओ, अपनी मेज से दूर, अन्यथा तुम्हें एक ऐसा मिस्र और साइप्रस देखने को मिलेगा जो तुम्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा। तुम एक निर्भीक और निर्लज्ज भिखारी हो। तुम सबकी बारी-बारी से भीख मांगते हो, और वे मूर्खतापूर्वक देते हैं, न तो कंजूसी करते हैं और न ही विचार करते हैं; हर कोई अच्छी तरह से संपन्न है, और जो उसका नहीं है उसे भी स्वेच्छा से देता है।”
तब ऋषि यूलिसिस ने जाते हुए कहा: “यह विचित्र है; तेरा मन तेरे रूप से मेल नहीं खाता। तू अपने ही घर में किसी याचक को नमक तक नहीं देता—तू जो यहाँ बैठकर दूसरों की मेज पर भोजन करता है, अपनी भरी हुई थाली से मुझे रोटी भी नहीं दे सकता।”
उसने बोलना शुरू किया। एंटिनोअस का क्रोध और भी बढ़ गया, और उसने भौंहें चढ़ाकर तीखे शब्दों में उसका उत्तर दिया:
“बदतमीज़ शब्दों के सौदागर! मुझे तो बिलकुल भी नहीं लगता कि तुम इस महल को बिना दंड दिए छोड़ जाओगे।”
उसने बात की और अपने हाथ में रखी चौकी उठाई, और यूलिसिस के दाहिने कंधे के निचले हिस्से पर प्रहार किया। वह एक चट्टान की तरह खड़ा रहा, एंटिनोअस के प्रहार के बावजूद अविचलित रहा, लेकिन प्रतिशोध के बारे में सोचते हुए चुपचाप अपना सिर हिलाया। फिर लौटकर वह दहलीज पर बैठ गया, जहाँ उसने अपना भरा हुआ थैला रखा, और इस प्रकार दूल्हों के दल से कहा:
“हे महान रानी के चाहने वालों, मेरी बात सुनो।
कोई भी व्यक्ति अपने लिए लड़ते हुए— अपने बैलों या सफेद ऊन वाली भेड़ों के लिए— जो चोटें खाई हों, उनके लिए न तो दुख होता है और न ही आक्रोश। लेकिन इस व्यक्ति,
एंटिनोस ने मुझे इसलिए मारा क्योंकि
मेरा पेट खाली है; भूख मनुष्यों पर बड़ी विपत्तियाँ लाती है। यदि कोई देवता या क्रोधी देवियाँ हों जो गरीबों का बदला लेती हों, तो एंटिनोस को उसकी शादी से पहले ही मृत्यु आ जाए!”
उसने अपनी बात समाप्त की। फिर यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोअस ने कहा: “अजनबी, चुपचाप खाओ; चुपचाप बैठो, नहीं तो यहाँ से चले जाओ; नहीं तो हमारे जवान जो

तुम्हारी बातें सुनेंगे, वे तुम्हें पैरों या हाथों से पकड़कर बाहर घसीटेंगे और वहीं तुम्हारी खाल उतार देंगे।”
उसने बोलना शुरू किया, और बाकी लोग बहुत क्रोधित हो गए,
और उन अभिमानी युवकों में से एक ने बोलना शुरू किया:—
“एंटिनोअस, तुमने उस अभागे यात्री को मारना गलत किया। पागल! क्या होता अगर वह स्वर्ग से उतरकर देवता होता! देवता दूर-दूर से अजनबी बनकर आते हैं, और हमारे शहरों में अनेक रूपों में घूमते हैं, ताकि मनुष्यों के अच्छे-बुरे कर्मों का हिसाब रख सकें।”
इस प्रकार प्रेम प्रस्तावकों ने कहा, परन्तु उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। टेलीमाकस, जिसने प्रहार देखा, क्रोध और दुःख से उसका हृदय भर आया, परन्तु उसकी पलकों से एक भी आँसू नहीं बहा; वह मौन में अपना सिर हिलाता रहा, इस अन्याय का बदला लेने के बारे में सोचता रहा। इसी बीच ज्ञानी पेनेलोप ने अपने महल में परास्त हुए अजनबी के बारे में सुना, और अपनी सहेलियों से इस प्रकार कहा:—
“काश, धनुष चलाने में महारथी अपोलो तुम्हें भी मार गिराता!” तब गृहस्थी की मुखिया यूरिनोमे ने बारी-बारी से कहा:
“काश, हमारी प्रार्थनाएँ सुन ली जातीं, तो इनमें से एक भी
उस सुनहरी सुबह को फिर से न देख पाता!”
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “माँ, वे सब घृणित हैं; हर कोई बुराई की साजिश रचता है, लेकिन एंटिनोस सबसे अधिक; और वह काली मृत्यु के समान है, जिससे घृणा की जानी चाहिए। एक बेसहारा अजनबी इन गलियारों से गुजरता है, मजबूरी में, और हर किसी से भीख मांगता है, और बाकी सब उसे दे देते हैं, और उसका थैला भर देते हैं; एंटिनोस एक पायदान फेंक देता है, और उस प्रहार से भीख मांगने वाले व्यक्ति के कंधे पर चोट लग जाती है।”
वे रानी के कक्ष में, अपने साथ मौजूद स्त्रियों के दल के बीच, आपस में बातें कर रहे थे, जबकि इसी बीच यूलिसिस ने शाम का भोजन किया। फिर रानी ने कुलीन सूअर चराने वाले को बुलाया और उससे इस प्रकार कहा:—
“मेरे आदरणीय मित्र यूमेअस, जाओ और उस अजनबी को यहाँ ले आओ। मैं उससे बात करना चाहता हूँ, और पूछना चाहता हूँ कि क्या उसने कहीं यूलिसिस के बारे में कुछ देखा या सुना है; क्योंकि वह ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने अनेक देशों की यात्रा की हो।”

और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उत्तर दिया: “हे रानी, काश ये यूनानी चुप रहते, तो यह अजनबी तुम्हारे सामने सांत्वना भरे शब्द बोल पाता। तीन रातों तक वह मेरे साथ रहा, तीन दिनों तक मैंने अपनी कुटिया को उसका घर बनाया—क्योंकि सबसे पहले वह अपने जहाज से भागकर मेरे पास आया—और जब वह मुझसे विदा हुआ, तब तक उसने अपने सारे कष्टों के बारे में नहीं बताया था। जैसे कोई श्रोता किसी ऐसे गायक को देखता है जिसे देवताओं ने सभी हृदयों को प्रसन्न करने वाली कविताएँ गाने की शिक्षा दी है, और सुनता है, और बिना रुके सुनने की इच्छा रखता है।” अंत;
तो, जब अजनबी मेरी छत के नीचे बैठा था,
उसने मुझे मोहित कर लिया। उसने कहा, वह तुम्हारे यूलिसिस का पैतृक मित्र था,
और उसका घर
क्रीट था, जहाँ मिनोस का वंशज अभी भी रहता है।
वह क्रीट से आया था, और तब से उसने बहुत कष्ट सहा था,
उसे जगह-जगह भटकाया गया था। और उसने सुना था
कि यूलिसिस अभी भी जीवित है—
उसने पुष्टि की—थेस्प्रोटियन राज्य के पास एक समृद्ध क्षेत्र में, और उसने तैयारी की थी
अपने मूल द्वीप में बहुत धन लाने की।
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “जाओ, उसे यहाँ बुलाओ, ताकि वह मेरे सामने अपनी कहानी सुना सके। ये लोग, जैसा उन्हें अच्छा लगे, हमारे द्वारों पर या हमारे महलों में बैठकर अपना मनोरंजन करें, क्योंकि वे निर्धन हैं। उनके घरों में उनकी संपत्ति व्यर्थ नहीं पड़ी है, और उनकी रोटी और शराब केवल उनके नौकरों के लिए है, जबकि वे स्वयं प्रतिदिन हमारे महल में आते हैं, और हमारे बैल, भेड़ और बकरियों को मारकर दावत करते हैं, और गाढ़ी लाल शराब खूब पीते हैं, और यह सब फिजूलखर्ची से करते हैं। कोई भी व्यक्ति यहां, यूलिसिस की तरह, इस विपत्ति को हमारे निवास से भगाने के लिए। यदि वह अपने देश लौटता है, तो वह और उसका बेटा उन लोगों से तुरंत बदला लेंगे जिन्होंने उसके साथ अन्याय किया है।

उसने अपनी बात समाप्त की। अचानक टेलीमाकस ने ज़ोर से छींका, जिससे सारा महल गूंज उठा; और यह सुनकर पेनेलोप हंसते हुए, यूमेअस से मधुर शब्दों में बोली:
“जाओ, अजनबी को बुलाओ। क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा कि मेरे बेटे ने छींक मारी है, मानो मेरी बात की पुष्टि हो गई हो। अब भी वो नियति अधूरी नहीं रहेगी जो दूल्हों का इंतज़ार कर रही है; अब कोई भी मौत और भाग्य से नहीं बच पाएगा। मैं यह भी कहना चाहती हूँ, और इसे याद रखना; अगर उसकी बातें सच हों, तो मैं उसे सुंदर वस्त्र, एक कुर्ता और एक लबादा दूँगी।”
उसने कहा, सूअर चराने वाला गया, और यूलिसिस के पास पहुँचकर उससे मधुर शब्दों में कहा:—
“अजनबी और पिता, ज्ञानी पेनेलोप, राजकुमार की माता ने तुम्हें बुलवाया है। यद्यपि वह दुखी है, फिर भी वह यह जानना चाहती है कि तुम उसके पति के बारे में क्या कह सकते हो; और यदि वह पाए कि तुम्हारी सारी बातें सत्य हैं, तो वह तुम्हें एक कुर्ता और एक लबादा देगी, जिनकी तुम्हें बहुत आवश्यकता है। तुम्हारे भोजन के लिए, जो कुछ भी तुम्हारी भूख मिटाएगा, वह तुम्हें लोगों में मिल जाएगा; मांगो, और हर कोई देगा।”
अत्यंत सहनशील यूलिसिस ने उत्तर दिया: “यूमेअस, मैं ईमानदारी से वह सब कुछ बताऊंगा जो मैं ऋषि पेनेलोप, इकारियस की पुत्री, को जानता हूँ। मैं उसके पति को भली-भांति जानता था, और हम दोनों ने एक जैसी विपत्तियाँ झेली हैं। परन्तु मैं इस निर्दयी प्रेम-यात्रियों के समूह से बहुत भयभीत हूँ, जिनके हिंसक कृत्य और हिंसा लोहे के आकाश तक पहुँचते हैं। अभी भी, जब उस व्यक्ति ने मुझे गुजरते समय एक दर्दनाक प्रहार किया, जबकि मैंने कोई नुकसान नहीं किया था, तब भी किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया, यहाँ तक कि टेलीमाकस ने भी नहीं। इसलिए, अब, मैं प्रार्थना करता हूँ, पेनेलोप से निवेदन है कि वह सूर्यास्त तक अपने कमरों में प्रतीक्षा करने की कृपा करेगी, यद्यपि उसकी मेरी कहानी सुनने की प्रबल इच्छा है। अपने पति और उसकी वापसी के बारे में वह पूछताछ कर सकती है, जबकि मैं धधकती हुई चूल्हे के पास बैठा रहूंगा; क्योंकि मेरे वस्त्र बहुत कम हैं, जैसा कि तुम जानती हो, उस दिन से जब मैं पहली बार तुम्हारे द्वार पर याचक बनकर आया था।
उसने कहा; सूअर चराने वाला चला गया, और जैसे ही उसने पेनेलोप की दहलीज पार की, उसने कहा:—

“क्या तुम उसे नहीं लाओगे, यूमेअस? उस घुमक्कड़ की दुविधा क्या हो सकती है? क्या उसे यहाँ किसी का डर है? या क्या वह किसी महल में विस्मय से भरा हुआ है? एक शर्मीला भिखारी होना सबसे कठिन है।”
और इस प्रकार, यूमेअस, तुमने उसे उत्तर दिया:
“वह ठीक ही कह रहा है, और ठीक वैसे ही जैसे कोई सोचेगा
जो उपद्रवी लोगों के साथ टकराव से बचता है।
वह प्रार्थना करता है कि तुम सूर्यास्त तक प्रतीक्षा करो;
और हे रानी, तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम उससे अकेले में बात करो और उसके शब्द सुनो।”
तब विवेकशील पेनेलोप ने फिर कहा:
“जो कोई भी अजनबी हो, वह मूर्ख नहीं लगता; क्योंकि मनुष्यों में कहीं भी ऐसे अन्याय और अत्याचार नहीं किए गए हैं जैसे इनके द्वारा किए गए हैं।” उसने कहा, और अच्छे सूअर चराने वाले ने उस महिला को सब कुछ बताकर, शादी के प्रस्ताव रखने वाले लोगों की भीड़ में जाकर, टेलीमाकस के पास पहुँचकर, उसके बगल में सिर झुका लिया ताकि कोई और न सुन सके, और उससे मधुर शब्दों में कहा:—
“मैं जा रहा हूँ, मेरे मित्र, सूअरों की देखभाल करने और वहाँ जो कुछ भी है, उसकी रक्षा करने, जो तुम्हारा और मेरा भरण-पोषण है, उसकी रक्षा करने। यहाँ जो कुछ भी है, उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारी है। अपनी सुरक्षा को सर्वोपरि रखना और सतर्क रहना— क्योंकि बहुत से अचेयन इसकी साज़िश रच रहे हैं, जिन्हें यहोवा नष्ट कर दे, इससे पहले कि हम उनके शिकार बन जाएँ!”
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने बारी-बारी से कहा:
“ऐसा ही हो, पिता जी, और जब आप भोजन कर लें, तो
चले जाइए, लेकिन सुबह होते ही आना, और बलिदान के लिए
उत्तम बलि लेकर आना। यहाँ सभी चीजों की देखभाल
देवताओं और मेरे हाथ में है।”
उसने बात की; चरवाहे ने उसे फिर से उसकी पॉलिश की हुई सीट पर बैठा दिया, और भोजन और शराब से उसकी भूख और प्यास बुझाई। फिर वह अपने झुंड के पास चला गया, और महल और उसके सामने का आंगन उत्सव मनाने वालों से भरा हुआ था, जो गीत गा रहे थे, और नाच में शामिल हो रहे थे; क्योंकि अब शाम हो चुकी थी।

पुस्तक XVIII
यूलिसिस और आइरिस का युद्ध
भिखारी इरुस द्वारा यूलिसिस का अपमान—विवाह को बढ़ावा देने वाले दावेदारों का मनोरंजन—इरस के साथ युद्ध में यूलिसिस की विजय—दावतों से उपहार प्राप्त करने के लिए पेनेलोप की चाल और उसकी सफलता—यूरिमाकस द्वारा यूलिसिस का अपमान—उसका जवाब—यूरिमाकस द्वारा यूलिसिस पर फेंके गए पायदान से प्याला लाने वाले को चोट लगी।
इथाका नगर में एक साधारण भिखारी आया, जो अक्सर भीख मांगता था। वह अपने लालच, पेटूपन और शराबखोरी के लिए प्रसिद्ध था, लेकिन देखने में शक्तिशाली होने के बावजूद उसमें ताकत और साहस की कमी थी। उसकी माँ ने जन्म के समय उसका नाम अर्नेयस रखा था, लेकिन युवक उसे इरस कहते थे, क्योंकि आदेश मिलने पर वह संदेशवाहक बनकर काम पर जाया करता था। अब आकर, उसने सोचा
कि वह यूलिसिस को उसके घर से निकाल देगा,
और उस पर चिल्लाया, और उग्र शब्दों में कहा:—
“यहाँ से चले जाओ! बूढ़े, तुरंत बरामदा छोड़ दो, नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें पैर से पकड़कर घसीट कर ले जाया जाए। क्या तुम नहीं देखते कि हमारे चारों ओर सब मुझे तुम्हें बाहर घसीटने का इशारा कर रहे हैं? मुझे ऐसा करने में शर्म आ रही है। उठो और जाओ, वरना कहीं हाथापाई न हो जाए।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने भौंहें चढ़ाकर कहा: “अभागे! मैं जो कुछ भी करता या कहता हूँ, उससे तुझे कोई हानि नहीं पहुँचती। मैं तुझसे ईर्ष्या नहीं करता, चाहे दूसरों का दान कितना भी बड़ा क्यों न हो; और यह दहलीज हम दोनों के लिए पर्याप्त है। तुझे दूसरों से ईर्ष्या भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि तू मेरी ही तरह एक पथभ्रष्ट प्रतीत होता है। देवता जहाँ चाहें, धन प्रदान करते हैं। परन्तु मुझे लड़ाई के लिए चुनौती मत दे, कहीं ऐसा न हो कि मेरी वृद्धावस्था में तू मेरा क्रोध भड़का दे, और मैं तेरा सीना और होंठ खून से लथपथ कर दूँ। कल का दिन होगा।” आज का दिन मेरे लिए शांत है, क्योंकि मुझे विश्वास है कि तुम, आने वाले समय में, कभी भी लेर्टेस के बेटे के महल में प्रवेश नहीं करोगे।
भिखारी इरुस ने क्रोधित होकर उत्तर दिया: “हे देवताओं! यह पेटू बड़बड़ाता है, जैसे कोई बूढ़ी औरत चिमनी के किनारे बैठी हो। फिर भी मैं इसे नुकसान

पहुंचा सकता हूँ, इसे दोनों तरफ से मारकर, और इसके गालों से दांत तोड़कर, जैसे लोग गेहूँ खाने वाले सूअरों के साथ करते हैं। अब कमर कस लो, इन लोगों को हमें लड़ते हुए देखने दो। तुम मुझसे लड़ने की हिम्मत कैसे कर सकते हो?” इस प्रकार वे चमकीले द्वार के पास और ऊँचे फाटकों के सामने खड़े होकर भयंकर रूप से झगड़ रहे थे। बलवान एंटिनोउस ने यह सब सुना और दिल खोलकर हँसते हुए आगे की बात कही:
“देखो, मित्रों, यह वह है जो हमें पहले कभी नहीं मिला। देखो, यह सुखद मनोरंजन जो देवताओं ने हमारे लिए प्रदान किया है। ये लोग—यहाँ अजनबी, और इरस—आपस में झगड़ रहे हैं और आपस में मारपीट करने वाले हैं। चलो हम वहीं खड़े होकर लड़ाई शुरू होने का इंतज़ार करें।”
उसने बोलना शुरू किया। सब हंसते हुए उठ खड़े हुए और फटेहाल भिखारियों के चारों ओर जमा हो गए, जबकि यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोअस ने इन शब्दों में बाकी लोगों को संबोधित किया:
“हे महान दावेदारों, मेरी बात सुनो। आग के पास दो बकरियों के पेट रखे हैं, जो हमारे शाम के भोजन की तैयारी कर रहे हैं, और दोनों चर्बी और खून से भरे हैं। जो कोई इस लड़ाई में श्रेष्ठ सिद्ध होगा, और जीत हासिल करेगा, वह इनमें से एक को अपनी पसंद से ले जाएगा, और उसके बाद हमेशा हमारे साथ भोजन करेगा, और उसके सिवा कोई भी हमसे भीख नहीं मांगेगा।”
उसने अपनी बात समाप्त की। सभी ने उसकी बातों का समर्थन किया, और इस प्रकार यूलिसिस ने चतुराई से बात को घुमाते हुए कहा:—
“हे मित्रों, यह उचित नहीं है कि मुझ जैसा इतना वृद्ध और विपत्तियों से टूटा हुआ व्यक्ति किसी युवा से लड़े; परन्तु भूख मुझे विवश कर रही है, और मैं मार से पराजित हो सकता हूँ। परन्तु अब तुम सब एक गंभीर शपथ लो कि तुममें से कोई भी, इरुस का पक्ष लेने के लिए, दुष्टतापूर्वक अपना शक्तिशाली हाथ मुझे मारने के लिए नहीं उठाएगा, और इस प्रकार मेरे शत्रु को मेरे पतन में सहायता नहीं करेगा।”
उसने बोलना शुरू किया; सभी दूल्हों ने सहमति जताते हुए शपथ ली, और जब सभी ने विधिवत शपथ ले ली, तब उच्च कुल के राजकुमार टेलीमाकस ने बोलना शुरू किया:—
“हे अजनबी, यदि तेरा साहसी हृदय उसे यहाँ से भगाने के लिए प्रेरित हो, तो अचेयनों में से किसी से मत डर। जो कोई तुझ पर प्रहार करेगा, उसे अनेकों से

लड़ना होगा। मैं यहाँ सेना का सदस्य हूँ। एंटिनोअस और यूरिमाकस, हे बुद्धिमान और राजाओ, इस बात में मुझसे सहमत हो।”
उसने बात की, और सबने सहमति जताई। यूलिसिस ने अपने फटे-पुराने वस्त्र कमर पर बांधे और अपनी सुडौल जांघें दिखाईं। उसके चौड़े कंधे, मर्दाना सीना और मजबूत भुजाएँ बिना कपड़ों के दिखाई दीं। मिनर्वा उसके पास खड़ी थी और अपने विशाल अंगों से लोगों के चरवाहे को शक्ति प्रदान कर रही थी। सभी दावेदार उत्सुकता से उसे निहार रहे थे और इस दृश्य पर आश्चर्यचकित थे। प्रत्येक ने अपने पड़ोसी की ओर मुड़कर कहा:
“बेचारे इरुस ने अपने ऊपर एक बुरा भाग्य मोल ले लिया है, क्योंकि उसके शत्रु ने अपने फटे-पुराने कपड़ों के नीचे कितनी मजबूत जांघें दिखाई हैं!” वे बातें करते रहे, और इरुस का हृदय डूब गया; फिर भी उसके साथ मौजूद सेवक उसे डर से जबरदस्ती आगे खींच रहे थे, उसके शरीर के हर अंग की मांसपेशियां कांप रही थीं। तब एंटिनोस बोला और उसे इस प्रकार फटकारा:
“अब, हे घमंडी, तू जीने के योग्य नहीं है, बल्कि जन्म लेने के भी योग्य नहीं है, यदि तू उससे डरता है और उसके जैसे वृद्ध व्यक्ति से मिलने पर कांपता है, जो अपने द्वारा सहे गए कष्टों से इतना टूटा हुआ है। अब मैं तुझे बताता हूँ कि क्या होगा, यदि वह स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करे और विजय प्राप्त करे। मैं तुझे एपिरस जाने वाले एक जहाज पर सवार करवाऊँगा, और उसके राजा, एचेटस, जो सभी मनुष्यों का शत्रु है, के पास भेजूँगा। वह तेरी नाक और कान तेज लोहे से काट डालेगा और तेरे लहू के टुकड़े कर देगा।” उन्हें कुत्तों द्वारा नोचने के लिए छोड़ दिया जाएगा।
उसने बात की, और इरुस का पूरा शरीर और भी अधिक भय से कांप उठा, फिर भी वे उसे घसीटते हुए बीच में ले गए। दोनों योद्धाओं ने अपनी भुजाएँ उठा लीं। देवतुल्य, अत्यंत सहनशील पुरुष, यूलिसिस, यह विचार कर रहा था कि क्या वह अपने शत्रु पर इस प्रकार प्रहार करे कि गिरते ही उसकी प्राण शक्ति निकल जाए, या केवल इतना प्रहार करे कि वह धरती पर गिर पड़े। इस प्रकार विचार करते हुए, उसे हल्का प्रहार ही सबसे बुद्धिमानी भरा लगा, कहीं ऐसा न हो कि यूनानियों को पता चल जाए कि प्रहार किसने किया है। जब दोनों के हाथ इस प्रकार ऊपर उठे, तो इरुस ने उसके दाहिने कंधे पर प्रहार किया, जबकि यूलिसिस ने इरुस के कान के नीचे वार किया और उसकी हड्डी तोड़ दी, जिससे उसके मुंह से लाल खून निकल आया। वह धूल में गिर पड़ा, चीखा और अपने दांत पीसे, और अपने

पैरों से ज़मीन पर पटका। सभी प्रेमियों ने अपने हाथ ऊपर उठाकर हँसना शुरू कर दिया, जब तक कि उनकी साँस फूलने लगी। तभी यूलिसिस ने उनके पैर पकड़ लिए और उन्हें दहलीज पार करके आंगन में ले गया। फिर बरामदे के दरवाज़े तक पहुँचाया और वहाँ दीवार के पास, उन्हें दीवार से टिका दिया, उनके हाथों में एक छड़ी थमा दी और जोशीले शब्दों में कहा:
“वहाँ बैठो, और कुत्तों और सूअरों को भगाओ,
परन्तु हे अभागे प्राणी, परदेसी और भिखारी जनजाति पर शासन करने की मत सोचो,
अन्यथा तेरे साथ इससे भी बुरा हो सकता है।”
उसने बात की और अपने कंधों पर से वह थैला फेंक दिया जो दरारों से भरा हुआ था और एक मुड़ी हुई डोरी से बंधा हुआ था; फिर वह दहलीज पर बैठने के लिए मुड़ा, जबकि दूल्हों का समूह हँसी के ठहाकों के साथ महल में वापस चला गया और उससे विनम्रतापूर्वक इस प्रकार कहा:—
“अजनबी, बृहस्पति और अन्य सभी देवता तुम्हारी हर इच्छा पूरी करें, और जो कुछ भी तुम्हें प्रसन्न करे, वह प्रदान करें! तुमने इस भिखारी के लोगों के बीच चक्कर लगाने का अंत कर दिया है। हम उसे तुरंत एपिरस और उसके राजा एचेटस के पास भेज देंगे, जो हर जीवित व्यक्ति का शत्रु है।”
इस प्रकार दावेदारों ने बातें कीं, और इस शगुन ने यूलिसिस को प्रसन्न कर दिया। इसी बीच एंटिनोअस ने विजेता के सामने विशाल तोंद रखी, जो रक्त और चर्बी से भरी हुई थी, और एम्फिनोमस ने पात्र से दो रोटियाँ निकालीं, और एक सोने का प्याला उठाकर उसे पिलाया, और कहा:—
“प्रणाम हो, अतिथि और पिता! आपके दिन मंगलमय हों
आगे से, भले ही अभी बहुत सारे दुखों से घिरे हों!”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “एम्फिनोमस, तुम अत्यंत विवेकशील प्रतीत होते हो, और तुम्हारे पिता, जिनके बारे में मैंने एक प्रशंसनीय ख्याति सुनी है, अच्छे और धनी डुलिचियन निसस हैं। जैसा कि मुझे बताया गया है, तुम उनके पुत्र हो, और तुम देखने में एक कुशल वक्ता प्रतीत होते हो। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, और तुम्हें मेरी बात ध्यान से सुनने और समझने के लिए कहता हूँ, पृथ्वी द्वारा पोषित कोई भी प्राणी, जिसे उसकी हवा में सांस लेने और उसके चेहरे पर चलने की शक्ति मिलती है, मनुष्य से अधिक परिस्थितियों का शिकार नहीं हो सकता। क्योंकि जब तक देवता स्वास्थ्य

प्रदान करते हैं, तब तक वह बलवान रहता है। अंगों के बारे में,
वह सोचता है कि आने वाले दिनों में कोई बुराई उसे नहीं घेर लेगी। जब धन्य देवता
उसे कष्टों से दंडित करते हैं, तो वह उन्हें
अधीरता और चिड़चिड़े मन से सहन करता है।
मनुष्य का यही मिजाज होता है, जब तक वह
पृथ्वी पर रहता है; यह बदलता रहता है जैसे-जैसे सर्वशक्तिमान पिता
सूर्य का प्रकाश देते हैं या उसे रोकते हैं। मैं एक समय
अपने साथी मनुष्यों में भाग्यशाली माना जाता था,
और मैंने कई अन्यायपूर्ण काम किए;
क्योंकि अपनी शक्ति और अपने पिता की सामर्थ्य में,
और अपने भाइयों के शौर्य में, मैंने
मेरा भरोसा। इसलिए, कोई भी व्यक्ति किसी भी बात में अन्याय करने का साहस न करे, बल्कि देवताओं द्वारा दी गई हर भलाई का शांतिपूर्वक आनंद उठाए। फिर भी ये दावेदार घोर अन्याय के दोषी हैं, संपत्ति को बर्बाद कर रहे हैं और उस व्यक्ति की पत्नी का अपमान कर रहे हैं जो, जैसा कि मैं समझता हूँ, अपने मित्रों और घर से लंबे समय तक दूर नहीं रहेगा, बल्कि पहले से ही पास है। हे भगवान, कोई देवता तुम्हें इस खतरे से बचाकर तुम्हारे घर ले जाए! और जब वह अपने देश लौटेगा, तो तुम उससे न मिलो। क्योंकि जब वह एक बार फिर इस छत के नीचे आएगा और दावेदारों को यहाँ पाएगा, उनका बिछड़ना बिना रक्तपात के नहीं होगा।
उसने बात की, और एक भाग उड़ेलकर शराब पी ली, और प्याला राजकुमार को दे दिया, जो सभागार पार करके दुख से अपना सिर हिला रहा था, क्योंकि अब उसके हृदय में आने वाली विपत्ति का पूर्वाभास हो चुका था। इस कारण वह अपनी मृत्यु से नहीं बच पाया। मिनर्वा ने उसके लिए एक जाल बिछाया, ताकि वह टेलीमाकस की बलवान भुजा के नीचे गिर जाए। वह गया और उस आसन पर बैठ गया जिससे वह अभी उठा था।
तब नीली आँखों वाली पल्लास ने इकारियस की बुद्धिमान पुत्री पेनेलोप को, शादी के प्रस्ताव देने वालों के सामने आने के लिए प्रेरित किया, ताकि उनके नीच इरादे पूरी तरह से उजागर हो सकें और वह अपने पति और पुत्र से अधिक

सम्मान प्राप्त कर सके। इसलिए उसने बनावटी हंसी हंसते हुए बोलना शुरू किया:—
“यूरिनोमे, मैं अंततः प्रकट होना चाहती हूँ, हालाँकि अभी तक नहीं, उन दूल्हों के समूह के सामने, जो मुझसे घृणा करते हैं। मैं वहाँ अपने बेटे को समयोचित चेतावनी देना चाहती हूँ, और उसे सलाह देना चाहती हूँ कि वह दूल्हों के बीच बहुत अधिक विश्वास न करे, जो वाणी में तो मीठे हैं, परन्तु हृदय में उसके प्रति द्वेष रखते हैं।”
घर की मुखिया यूरिनोमे ने कहा: “निश्चित रूप से, मेरे बच्चे, तुम सही कह रहे हो। अब जाओ, और अपने बेटे को समझाओ, और कुछ भी मत छुपाओ। पहले स्नान करो, और जाने से पहले अपने गालों पर तेल लगाओ, और उन्हें आँसुओं से सना हुआ मत दिखाओ। अंतहीन शोक करना अच्छा नहीं है। क्योंकि अब तुम्हारा बेटा बड़ा हो गया है, और तुम उसे आखिरकार देख रहे हो। तुमने उसके जन्म के समय देवताओं से जो प्रार्थना की थी, वह यही है कि वह दाढ़ी वाला आदमी बने।”
फिर ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया: “यद्यपि तुम मेरे लिए चिंतित हो, हे यूरीनोमे, मुझे स्नान करने या अपने गालों पर तेल लगाने के लिए राजी मत करो। ओलंपस में निवास करने वाले देवताओं ने अपनी सुंदरता खो दी जब मेरे पति अपने विशाल जहाजों में रवाना हुए; परन्तु एंटिनो को बुलाओ और उसके साथ हिप्पोडामिया को भी बुलाओ, ताकि वे दोनों मेरे साथ हॉल में खड़ी हो सकें। मैं अकेले पुरुषों के बीच नहीं जाऊंगी, क्योंकि मुझे बहुत शर्म आएगी।” उसने कहा, वृद्ध स्त्री संदेश देने और स्त्रियों को वापस लाने के लिए चली गई। नीली आँखों वाली पल्लास को अभी और भी चिंताएँ थीं, उसने इकारियस की पुत्री को सुखदायक नींद दी, जब वह अपने पलंग पर लेटी हुई थी, उसके अंग विश्राम में शिथिल थे। महिमावान देवी ने दिव्य अनुग्रह का दहेज दिया, ताकि अचेयन सरदार उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाएँ। उसने अपने सुंदर चेहरे को दिव्य सौंदर्य से जगमगा दिया, जैसे रानी सिथेरिया नृत्य की भूलभुलैया में ग्रेस के साथ शामिल होते समय धारण करती है। फिर उसने उसे ऊंचे कद और भव्यता का बना दिया, और नवनिर्मित हाथीदांत से भी अधिक सुंदर। यह सब करने के बाद, उस कृपालु शक्ति ने अपना स्थान त्याग दिया, जबकि महल से सफेद बाजूबंद दासियाँ आईं और आते ही बड़बड़ाने लगीं। उनकी मधुर नींद उस आवाज से टूट गई। उसने अपने हाथों को अपने गालों पर फेरा और इस प्रकार बोली:—

“मेरी दयनीय स्थिति में, अभी-अभी मुझे एक मीठी नींद ने जकड़ लिया। काश, इसी क्षण, पवित्र डायना मुझे इतनी कोमल मृत्यु दे देती, ताकि मेरे दिन अब और न गुज़रें, एक ऐसे पति के खोने के शोक में, जो अतुलनीय, यूनानियों में सबसे श्रेष्ठ था।”
वह बोली और शाही कुटिया से नीचे उतरी, फिर भी अकेली नहीं; दो युवतियाँ उसके साथ थीं। और जब स्त्री जाति की वह परम पूजनीय स्त्री दूल्हों के पास पहुँची, तो वह उस भव्य हॉल के द्वार पर रुक गई, और अपने गालों पर अपना चमकीला घूंघट गिरा दिया, जबकि दोनों ओर एक-एक शालीन युवती खड़ी थी। सभी दूल्हों के घुटने कांपने लगे और वे प्रेम से व्याकुल हो गए, और सभी ने उसे पाने की इच्छा की। तब रानी ने अपने प्रिय पुत्र टेलीमाकस से कहा: “टेलेमाकस, तुम्हारा निर्णय दृढ़ नहीं है, न ही तुम सही ढंग से सोचते हो। जब तुम बालक थे, तब तुम्हारी सोच अधिक बुद्धिमान थी। अब जब तुम बड़े हो गए हो, और युवावस्था के करीब हो, ताकि दूर से आने वाला कोई भी व्यक्ति तुम्हारे उत्तम गुणों और कद-काठी को देखकर कह सके कि तुम एक अत्यंत भाग्यशाली पिता के पुत्र हो, फिर भी तुम पहले की तरह सोच-विचार और विवेक से निर्णय नहीं कर सकते, क्योंकि यह कैसा घिनौना काम है जो यहाँ भी किया गया है! तुमने एक अजनबी अतिथि को अभद्र तरीके से प्रताड़ित होने दिया है। यह कैसे हो सकता है? यदि कोई जो हमारे घर में मेहमान बनकर बैठता है, अगर तुम इस तरह से अपमानित होते हो, तो निश्चित रूप से यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी शर्म और पुरुषों के बीच घोर बदनामी लाएगा।
इस पर विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया: “माँ, मुझे इस बात का बुरा नहीं लगा कि तुम नाराज़ हो गई हो। लेकिन कई बातों में मेरी स्पष्ट समझ है, और मैं अच्छे और बुरे का आकलन कर सकता हूँ। मैं अब तक बच्चा था, फिर भी अब भी मैं हमेशा समझदारी भरा रास्ता नहीं देख पाता। ये लोग मुझे भ्रमित कर देते हैं, क्योंकि वे साथ-साथ बैठकर मेरे खिलाफ साजिश रचते हैं, और यहाँ मेरा कोई मददगार नहीं है। जब इरस और अजनबी ने लड़ाई की, तो उस संघर्ष का वैसा परिणाम नहीं निकला जैसा कि चाहने वालों ने चाहा था। अजनबी विजयी हुआ। काश, पिता ज़्यूस, पल्लास और अपोलो को, कि यहाँ मौजूद दावेदारों का दल, इन हॉलों में या प्रांगणों में, सिर हिलाते हुए बैठा रहे, मानो वे वहीं गिर पड़े हों, और उनके अंग शक्तिहीन हों, जैसे इरस द्वार के पास बैठा है और सिर हिला रहा है, जैसे कोई शराब के नशे में चूर हो, और न ही वह अपने पैरों पर खड़ा हो

सकता है, और न ही अपने निवास स्थान पर जा सकता है, यदि उसका घर है भी, तो उसके अंग इतने कमजोर हैं।
कुछ देर तक दोनों ने बातें कीं; फिर यूरीमाकस ने बीच में आकर रानी से इस प्रकार कहा:—
“इकारियस की ऋषि पुत्री! यदि इयासियन आर्गोस में निवास करने वाले सभी लोग एक बार तुम्हें देख लें, तो कल ही तुमसे कहीं अधिक बड़ी संख्या में चाहने वाले तुम्हारे महलों में आकर दावत करेंगे, क्योंकि तुम मन, रूप और चेहरे से समस्त स्त्री जाति से इतनी श्रेष्ठ हो।”
इस पर ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया: “यूरिमाकस, अमर देवताओं ने मुझसे वो सुंदरता और चेहरा छीन लिया जो कभी मेरा था, जब आर्गोस के पुत्र ट्रॉय के लिए रवाना हुए, और उनके साथ मेरे मंगेतर यूलिसिस भी गए। अगर वो लौटकर मेरे घर की ज़िम्मेदारी फिर से संभाल लें, तो मेरी महिमा और भी बढ़ जाएगी, और मुझे और भी सम्मान मिलेगा। मैं अब दुखी हूँ, देवताओं ने मुझ पर इतने दुख डाल दिए हैं। जब वो अपने देश से निकले, तो उन्होंने मेरी दाहिनी कलाई पकड़ी और मुझसे कहा: ‘चिंता मत करो, प्रिय।’ पत्नी, मुझे विश्वास है कि सभी सुसज्जित यूनानी ट्रॉय से सुरक्षित लौट आएंगे। कहते हैं कि ट्रोजन पुरुष युद्ध में वीर हैं, भाला चलाने और तीर उड़ाने में निपुण हैं, और उन तेज घोड़ों को नियंत्रित करने में कुशल हैं जिनके द्वारा युद्धक्षेत्रों का रक्तपात शीघ्रता से समाप्त होता है; इसलिए, क्या ईश्वर मुझे वापस लाएगा, या मैं ट्रॉय में मारा जाऊँगा, यह मैं नहीं जानता। यहाँ सब कुछ संभालो। मैं अपने पिता और माता को इन कक्षों में तुम्हारे साथ छोड़ रहा हूँ। उनके प्रति अभी की तरह ही, बल्कि अभी से भी अधिक दयालु रहना, क्योंकि मैं यहाँ नहीं रहूँगा। जब तू मेरे बेटे को दाढ़ी वाले आदमी के रूप में देखेगी, तो अपने लिए अपनी पसंद का पति चुन लेगी और अपना घर छोड़ देगी।’ ये उसके शब्द थे, और वे पूरे हुए। वह रात आएगी जिसमें मुझे इस घृणित विवाह को सहना होगा, मैं कितनी दुखी हूँ, जिसे बृहस्पति की इच्छा सभी सांत्वनाओं से वंचित करती है, और यह कड़वा विचार मेरे हृदय और आत्मा पर सदा भार डालता रहेगा। पुराने समय में ऐसा नहीं था; जब दूल्हे किसी कुलीन पत्नी को रिझाने आते थे, तो किसी धनी घराने का बच्चा, उसकी मुस्कान के लिए प्रतिस्पर्धा करता था, वे बैल और मोटे भेड़ लेकर आए थे, युवती की सहेलियों के साथ दावत करने और

उदारतापूर्वक उपहार देने के लिए, लेकिन उन्होंने उस धन को बर्बाद नहीं किया जो उनका नहीं था।
उसने कहा, यूलिसिस यह देखकर प्रसन्न हुआ कि वह इस प्रकार हर किसी से उपहार प्राप्त करने का प्रयास कर रही थी, मीठे और चालाक शब्दों से। फिर भी उसके विचार अन्य योजनाओं में लगे हुए थे। यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोस ने रानी को इस प्रकार उत्तर दिया:—
“हे इकारियस की बुद्धिमान पुत्री, कृपा करके यूनानियों द्वारा लाए गए उपहारों को स्वीकार कर लो—और किसी उपहार को अस्वीकार करना उचित नहीं है— परन्तु यह सुनिश्चित कर लो कि हम यहाँ से न तो अपनी जागीरों में जाएँ और न ही कहीं और, जब तक तुम यहाँ की सबसे उत्तम अचेयन स्त्री का विवाह न करा दो।” इस प्रकार एंटिनोस ने कहा। सभी ने उसके शब्दों का समर्थन किया, और प्रत्येक ने अपने उपहार के लिए एक दूत भेजा। एंटिनोस का दूत उसके लिए एक बहुरंगी, सुंदर और विशाल वस्त्र लाया, जिसमें बारह सोने के हुक लगे थे, जिनमें से प्रत्येक में एक सुंदर छेद था। यूरीमाकस को एक सोने का हार मिला, जो बहुत ही सुंदर ढंग से बनाया गया था, और जिसमें अंबर के मोती जड़े थे, जो मानो सूर्य की रोशनी से चमक रहे थे। यूरीडामस के लिए एक जोड़ी झुमके आए, जिनमें से प्रत्येक में तीन रत्न जड़े थे, जो बहुत ही सुंदर और आकर्षक थे। दो सेवक उन्हें लेकर आए। पिसांडर के घर से— राजकुमार पॉलीक्टर के पुत्र— एक दुर्लभ सुंदरता का हार लाया गया। इस प्रकार प्रत्येक ने एक अलग लेकिन उपयुक्त उपहार दिया। और फिर वह सबसे प्रतिष्ठित महिला अपनी दासियों के साथ ऊपरी कमरों में वापस चली गई, जो कीमती उपहार लेकर आई थीं, जबकि नीचे, दूल्हों ने उन्हें नृत्य और गीत में मग्न कर दिया, शाम होने तक वे आनंदित रहे। शाम ढलने लगी और उनका मनोरंजन रुक गया। फिर वे महल को रोशन करने के लिए तीन चूल्हे लाए और उन्हें अच्छी तरह से सूखी, कठोर और नई कटी हुई लकड़ियों से भर दिया। उन्होंने जलती हुई मशालें मिला दीं। महान पीड़ित यूलिसिस की दासियों ने बारी-बारी से आग को हवा दी। नायक ने उनसे कहा:— “हे लंबे समय से अनुपस्थित राजा की दासियों,
अपनी उच्च कुल की स्वामिनी के पास जाओ;
वहाँ चरखा चलाओ, उनके एकांत क्षणों को बिताने के लिए; वहाँ अपने हाथों से ऊन को कंघी करो,
और मैं देखूँगी कि उनमें प्रकाश आ जाए।

भले ही वे सुबह होने तक उनकी उज्ज्वल रथ यात्रा में ठहरती रहें, वे मेरे धैर्य को नहीं तोड़ सकतीं। मैं सहन करने की अभ्यस्त हूँ।”
उसने ऐसा कहा, और युवतियों ने, जैसे ही उन्होंने सुना, एक-दूसरे को व्यंग्यात्मक निगाहों से देखा और हँस पड़ीं, और गुलाबी गालों वाली मेलान्थो ने उस पर बेशर्मी से ताना मारा। वह डोलियस की पुत्री थी, लेकिन पेनेलोप ने उस युवती को अपनी बेटी की तरह पाला था, और उसे प्रसन्न करने के लिए बहुत सी चीजें दी थीं; फिर भी पेनेलोप के दुखों की मेलान्थो को जरा भी परवाह नहीं थी। यूरिमाकस ने उस लड़की को अपनी प्रेमिका बना लिया था। उसने कहा, और यूलिसिस को अभद्र शब्दों में फटकारा:—
“अजीबोगरीब दुष्ट! तेरा दिमाग खराब हो गया है, क्योंकि तू न तो किसी लोहारखाने में सोता है, न ही किसी सार्वजनिक आश्रय में, बल्कि इस मंडली में बिना किसी रोक-टोक या सम्मान के बकबक करता रहता है। या तो शराब ने तेरे होश उड़ा दिए हैं, या शायद तेरा स्वभाव तुझे बेकार की बकबक करने के लिए उकसा रहा है। क्या तुझे इरुस पर विजय पाने का घमंड है, बेचारे आवारा? सावधान रहो, कहीं इरुस से भी अधिक बलवान कोई तुझे पकड़कर घर से बाहर न निकाल दे। सिर पर चोट के निशान और खून से लथपथ चेहरा।
ऋषि यूलिसिस ने उस पर भौंहें चढ़ाते हुए कहा:
“अक्खड़, टेलीमाकस मुझसे तुम्हारे कहे हुए ये घिनौने शब्द सुनेगा,
और वह आकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा।”
उसने बोलना शुरू किया; उसकी बातों से भयभीत युवतियाँ हॉल से भाग निकलीं और भय से काँपने लगीं, कहीं उसकी धमकी सच न हो जाए। इस बीच वह जलती हुई चूल्हों के पास खड़ा रहा और आग को हवा देता रहा, और दूल्हों की भीड़ को देखते हुए अपने मन में उन योजनाओं के बारे में सोचने लगा जो निश्चित रूप से पूरी होंगी।
लेकिन पल्लास ने अभी तक उन दावेदारों को निंदात्मक भाषण बंद करने नहीं दिया, जो लेर्टेस के बेटे की आत्मा को और भी आहत कर रहे थे। पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने उसका उपहास करना शुरू कर दिया और उसने बाकी लोगों को हंसाने के लिए इस प्रकार कहा:
“हे महान रानी के चाहने वालों, मेरी बात सुनो। मैं अपने मन में आने वाले विचार को व्यक्त कर रहा हूँ। किसी देवता के मार्गदर्शन में, निस्संदेह, यह व्यक्ति महल में आया है; क्योंकि मशालों की जो रोशनी हमें दिखाई दे रही है,

वह उसके गंजे सिर के मुकुट से निकलती प्रतीत होती है, एक ऐसा सिर जिस पर एक भी बाल नहीं है।”
इस प्रकार यूरिमाकस ने कहा, और फिर दीवारों वाले नगरों को नष्ट करने वाले यूलिसिस ने कहा:—
“अजनबी, यदि मैं तुझे स्वीकार कर लूँ, तो क्या तू मेरी जागीर के दूर-दराज के हिस्सों में मेरी सेवा करेगा? वहाँ तुझे उचित मजदूरी मिलेगी, और तू पत्थरों के ढेर इकट्ठा करेगा, और ऊँचे पेड़ लगाएगा, और मैं तुझे साल भर भोजन दूँगा, और तुझे कपड़े और चप्पल दूँगा। परन्तु तू निःसंदेह आलसी आदतों का आदी है, और कभी भी स्वेच्छा से काम नहीं करता, बल्कि शहर में घूमकर भीख माँगना पसंद करता है, अपनी लालची भूख मिटाने के लिए।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:— “यूरीमाकस, यदि हम काम में बराबरी पर होते
बसंत ऋतु में एक-दूसरे के विरुद्ध
जब दिन लंबे होते हैं, और हम दोनों घास काट रहे होते,
और मेरे हाथ में एक घुमावदार दरांती होती और तुम्हारे हाथ में
दूसरी, तो हम रात होने तक, उपवास करते हुए, भरपूर घास के बीच संघर्ष जारी रख सकते;
या यदि बैलों का एक जोड़ा होता,
अपनी तरह के सबसे मजबूत, चिकने, बड़े, अच्छी तरह से पोषित,
समान उम्र के, और काम करने की समान शक्ति वाले
और दोनों बलवान होते, और यदि खेत अगर मेरे पास चार एकड़ ज़मीन होती, और ऐसी मिट्टी होती जिसमें हल आसानी से चल पाता—तब तुम देखते कि मेरी क्यारी कितनी समतल होती। या फिर अगर शनि का पुत्र आज ही युद्ध भेज दे, और मेरे पास केवल एक ढाल, दो भाले और पीतल का हेलमेट हो, तो तुम मुझे सबसे आगे बढ़ते हुए देखोगे, और मेरी भूख पर कोई आपत्ति नहीं करोगे। लेकिन तुम घमंडी और निर्दयी हो; तुम अपनी ही नज़रों में तुम महान और शक्तिशाली हो, क्योंकि तुम कुछ ही लोगों के साथ संगति करते हो, और वे भी सर्वश्रेष्ठ पुरुष नहीं हैं। फिर भी, यदि यूलिसिस अपने देश में आ जाए, तो ये द्वार जो इतने चौड़े प्रतीत होते हैं, अचानक तुम्हारे भागने के लिए संकरे हो जाएँगे।
उसने बोलना शुरू किया। यूरिमाकस और भी क्रोधित हो गया, और उस पर भौंहें चढ़ाकर गुस्से भरे शब्दों में बोला:—

“अहंकारी! मैं तुझे सबक सिखाऊँगा। तू बड़ा दुस्साहसी है, और हम सबके बीच बेशर्मी से बकबक करता है। शायद शराब तेरे मूर्ख दिमाग पर चढ़ गई है, या तू हमेशा से ऐसा ही है, और हमेशा बेशर्मी से बकवास करने का आदी है। क्या तुझे इरुस पर विजय प्राप्त करने का घमंड है, हे बेचारे आवारा?”
ऐसा कहकर उसने हवा में एक पायदान लहराया; लेकिन यूलिसिस, यूरिमाकस के क्रोध से बचने के लिए, डुलिचियन राजकुमार, एम्फिनोमस के घुटनों के सामने बैठ गया। पायदान उड़ गया और प्याला उठाने वाले के दाहिने हाथ पर लगा। प्याला बजता हुआ नीचे गिर गया; उसे उठाने वाला धूल में पड़ा रहा। फिर उन अंधेरे कक्षों में, दावेदार शोर मचाते हुए उठ खड़े हुए। उनमें से एक ने अपने बगल में बैठे दूसरे की ओर देखा और कहा:—
“काश, यह आवारा यहाँ आने से पहले ही मर गया होता। तब यह सारी गड़बड़ कभी नहीं होती। हम एक भिखारी के खातिर झगड़ रहे हैं, और अब से दावत से कोई आनंद नहीं मिलेगा; हमारी हालत बद से बदतर होती जाएगी।”
तब टेलेमाकस वैभवशाली स्वर में उठे और बोले: “हे अभागे लोगो, तुम होश में नहीं हो, तुम शांति से खा-पी नहीं सकते। किसी देवता ने निस्संदेह तुम्हारे मन में उन्माद उत्पन्न कर दिया है। अब जब तुममें से प्रत्येक ने भरपेट भोजन कर लिया है, तो जब भी उसे इच्छा हो, सो जाओ। मैं किसी को भगाता नहीं।” उसने बोलना शुरू किया; सभी दावेदारों ने सुना और अपने होंठ दबा लिए, और टेलीमाकस पर आश्चर्यचकित हुए, जिसने इतने दृढ़ निश्चय से बात की। फिर निसस एरेटियाडेस के पुत्र एम्फिनोमस ने आगे बढ़कर दावेदारों की भीड़ को संबोधित किया और कहा:—
“हे मित्रों! यहाँ कोई भी तीक्ष्ण शब्दों से उस बात को नकारने की कोशिश न करे जो इतनी न्यायसंगत रूप से कही गई है, न ही अजनबी को परेशान करे, न ही महल में मौजूद किसी भी सेवक को हानि पहुँचाए, जो महान सरदार यूलिसिस के अधीन हैं। अब जो अतिथियों के लिए शराब लाता है, वह प्याले भरने लगे, ताकि देवताओं को उनका हिस्सा अर्पित करके हम सोने के लिए चले जाएँ। यहाँ मौजूद अजनबी मुझे महल के भीतर छोड़ दे, और उसे टेलीमाकस की देखभाल का जिम्मा सौंप दे, जिसके पास वह आया है।”
उसने अपनी बात समाप्त की। सभी प्रसन्न हुए, और फिर मुटलस, दुलिचियम तट का वीर और दूत, और राजकुमार एम्फिनोमस का अनुयायी, ने शराब का एक घड़ा मिलाया, और प्रत्येक के पास जाकर उसे बाँटा। उन्होंने धन्य देवताओं को पहले एक भाग

□□□□□□ □□□□, □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□, □□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

पुस्तक XIX
यूलिसिस को यूरिक्लेया द्वारा मान्यता प्राप्त हुई
यूलिसिस और उसके बेटे द्वारा हॉल से हथियारों को हटाना—पेनेलोप और यूलिसिस का साक्षात्कार, जिसमें यूलिसिस उसे बताता है कि उसने उसके पति को क्रीट में देखा है, उसके व्यक्तित्व और पहनावे का वर्णन करता है, और पुष्टि करता है कि एक महीने के भीतर वह इथाका में होगा—यूरिक्लेया द्वारा यूलिसिस को स्नान कराना, जो उसे उसके पैर पर एक निशान से पहचानती है— निशान लगने के तरीके का वर्णन।
अब देवतुल्य सरदार यूलिसिस अपने महल में पल्लास की सहायता से सभी प्रेमियों के समूह को नष्ट करने की योजना बना रहे थे, और उन्होंने अपने पुत्र से बड़े-बड़े शब्दों में कहा:
“अब समय आ गया है, टेलेमाकस, कि तुम यहाँ रखे हुए हथियारों को ले लो और उन्हें भीतरी कमरों में छिपा दो। फिर, यदि दावेदार कारण पूछें, तो उन्हें लुभावने शब्दों में उत्तर दो: ‘मैंने उन्हें ऐसी जगह रखा है जहाँ धुआँ नहीं पहुँचता।’ क्योंकि अब भी वे वे हथियार नहीं लगते जो यूलिसिस ने ट्रॉय जाते समय छोड़े थे, आग की लपटों से इतने कलंकित हो गए हैं; और एक और कारण मेरे मन में है, किसी देवता की प्रेरणा, कि तुम, शराब के नशे में चूर होकर और किसी विवाद की गर्मी में, एक दूसरे को मारो और घायल करो।” दूसरे, और अपमान
भोज और तुम्हारा प्रेमप्रसंग; क्योंकि इस्पात का दृश्य
पुरुषों को हिंसा की ओर खींचता है।
उसने अपनी बात समाप्त की, और टेलीमाकस ने अपने पिता के शब्दों का पालन करते हुए, अपनी धाय माँ, वृद्ध यूरिक्लेया को बुलाकर उससे कहा:—
“जाओ, नर्स, और देखो कि सभी स्त्रियाँ अपने-अपने कमरों में बंद हैं, जबकि हमारे भीतरी कमरे में मैंने अपने पिता की सुंदर भुजाएँ रखी हैं, जो लंबे समय से उपेक्षित और धुएँ से मैली हो गई हैं, जब वे अनुपस्थित थे। मैं तब एक बच्ची थी, लेकिन अब मैं उन्हें आग की लपटों से बचाऊँगी।”
और इस प्रकार नर्स, डेम यूरिक्लेया ने कहा:
“काश, मेरी बच्ची, तुम यहाँ अपनी उचित बुद्धि का प्रयोग करो और अपने घर और अपनी संपत्ति की जिम्मेदारी संभालो। लेकिन तुम्हारे साथ मशाल लेकर कौन

जाएगा, क्योंकि तुम्हारी इन दासियों में से किसी को भी तुम्हारा मार्ग रोशन करने की अनुमति नहीं है?”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“यह अजनबी। यहाँ कोई भी व्यक्ति आलसी नहीं रह सकता
जो मेरी रोटी खाता है, भले ही वह दूर देश से आया हो।”
उसने बात की, और उसके शब्द व्यर्थ नहीं गए। नर्स ने उस भव्य भवन के सभी द्वार बंद कर दिए। यूलिसिस और उसका गौरवशाली पुत्र जल्दी से हेलमेट, ढाल और नुकीले भाले लेकर भागे, जबकि पल्लास ने उनके पास एक सुनहरा दीपक रखा हुआ था, जिससे एक सुंदर और स्पष्ट प्रकाश निकल रहा था। तब टेलीमाकस ने अपने पिता से कहा:—
“हे पिता! मेरी आँखें एक अद्भुत दृश्य देख रही हैं। महल की सारी दीवारें, हर सुंदर कोना, देवदार की लकड़ियों से बनी सीढ़ियाँ, ऊँचे स्तंभ, सब मेरी आँखों के सामने आग की लपटों की तरह चमक रहे हैं। यहाँ अवश्य ही कोई देवता विराजमान है, उनमें से कोई एक जो विशाल आकाश में निवास करता है।” बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “चुप रहो; अपने विचारों को व्यक्त मत करो, न ही किसी विषय में पूछो। ओलंपस पर रहने वालों का यही नियम है। अब तुम अपने पलंग पर आराम करने के लिए चली जाओ, मैं यहीं रहता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारी माँ और उसकी दासियों को अपने बारे में पूछने के लिए प्रेरित करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि वह बहुत कुछ पूछेगी।”
उसने कहा; टेलीमाकस मशाल की रोशनी में वहाँ से अपने कक्ष में चला गया, जहाँ वह आराम करने के लिए अक्सर लेटता था जब उसे हल्की नींद आती थी। वहाँ वह पवित्र सुबह की प्रतीक्षा में लेट गया, जबकि यूलिसिस, महल के भीतर रहकर, मिनर्वा की सहायता से सभी दावेदारों की मृत्यु के बारे में विचार करता रहा।
ऋषि पेनेलोप अब अपने कुटिया से बाहर निकलीं; डायना या सुनहरी वीनस की तरह रानी आईं। चूल्हे के पास उन्होंने उनके लिए वह सिंहासन रखा जिस पर वे अक्सर बैठती थीं, जो हाथीदांत और चांदी से जड़ा हुआ था, जिसे पुराने समय में कारीगर इकमालियस ने बनाया था। उन्होंने सिंहासन के पास एक चौकी रखी, जिस पर एक बड़ा ऊनी कपड़ा बिछाया गया था। इस पर ऋषि पेनेलोप बैठ गईं। उनकी सफेद बाजू वाली दासियों का समूह उनके साथ आया; उन्होंने भरपूर दावत को साफ किया और मेजें और उन प्यालों को ले गईं जिनसे उन अभिमानी पुरुषों ने पिया

था; उन्होंने जलती हुई मशालें जमीन पर रख दीं, और उनके चारों ओर रोशनी और गर्मी के लिए नई ईंधन का ढेर लगा दिया। और अब मेलान्थो ने एक बार फिर असभ्य शब्दों में यूलिसिस से कहा:
“अजनबी, क्या तू सदा के लिए एक मुसीबत बना रहेगा, रात में घर में ताक-झांक करते हुए, स्त्रियों पर नज़र रखने के लिए? हे नीच, इस महल से निकल जा! बाहर जाकर भरपेट खा ले, नहीं तो अचानक ही मार और जलती हुई मशालों से बेदखल होकर चला जाएगा।”
ऋषि यूलिसिस ने उस पर भौंहें चढ़ाकर कहा: “उग्र प्राणी! मुझ पर इतनी कठोर निंदा क्यों कर रही हो? क्या इसलिए कि मैं मैली और फटे-पुराने कपड़ों में हूँ, और अभाव के कारण भीख माँगने को विवश हूँ? गरीबों और भटकते लोगों का यही हाल होता है। मैं भी कभी धनी था, अपने साथियों के बीच एक समृद्ध घर में रहता था, और अक्सर भटकने वालों को दान देता था, चाहे वे कोई भी हों और किसी भी ज़रूरत में हों; और मेरे पास बहुत से नौकर थे, और उन चीजों का बड़ा भंडार था जिनसे मनुष्य आराम का जीवन जीते हैं और जिन्हें कहा जाता है।” धनवान। लेकिन शनि के पुत्र बृहस्पति ने इसका अंत कर दिया, क्योंकि इससे देवता प्रसन्न हुए। इसलिए, हे स्त्री, सोचो कि तुम वह सुंदरता खो सकती हो जो अब यहाँ की सेविकाओं के बीच तुम्हारा गौरव है; तुम्हारी स्वामिनी क्रोधित हो सकती है और तुम्हारा जीवन कठिन बना सकती है; या यूलिसिस वापस आ सकता है— और इसकी आशा है। या यदि वह मर गया है और फिर कभी वापस नहीं आएगा, तो उसका पुत्र टेलीमाकस अभी भी शेष है, जो अपोलो की कृपा से अब पुरुष है, और इन कक्षों में कोई भी स्त्री नहीं है। वह शरारत करने की सोच सकता है, फिर भी उसकी नजरों से बच सकता है, क्योंकि वह अब लड़का नहीं रहा।
उसने बात की; समझदार पेनेलोप ने सुना, और अपनी दासी को बुलाकर उसे इस प्रकार फटकारा:—
“हे दुस्साहसी और निर्लज्ज! मैंने तेरे आचरण पर ध्यान दिया है; तूने एक ऐसा अपराध किया है जिसके लिए तुझे दंड भुगतना चाहिए। तू भली-भांति जानता है, क्योंकि तूने मुझे यह कहते सुना है कि मैं इन कक्षों में उपस्थित अजनबी से पूछना चाहता हूँ कि क्या वह मेरे यूलिसिस के बारे में कुछ जानता है, जिसके लिए मैं शोक मना रहा हूँ।”
तब रानी ने गृहस्थी की मुखिया की ओर मुड़कर यूरिनोमे से इस प्रकार कहा:

“अब एक आसन लाओ, यूरिनोमे, और उस पर एक ऊन बिछा दो, जहाँ अजनबी अतिथि आराम से बैठ सके, और मेरी बातें सुन सके, और मुझे उत्तर दे, क्योंकि मुझे बहुत कुछ पूछना है।”
वह बोली; प्राचीन दासी शीघ्रता से एक पॉलिश किया हुआ आसन लाई और उस पर ऊन बिछा दिया। अत्यंत धीरज रखने वाले सरदार यूलिसिस बैठ गए, और इस प्रकार ज्ञानी पेनेलोप ने बोलना शुरू किया:—
“सबसे पहले मैं तुमसे पूछूंगा कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो, तुम्हारा जन्मस्थान कहाँ है और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं?”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे देवी, इस असीम पृथ्वी पर कोई भी तुम्हारी निंदा नहीं कर सकता। तुम्हारी प्रसिद्धि स्वर्ग तक पहुँच चुकी है। यह किसी उत्कृष्ट राजा की प्रसिद्धि के समान है, जिसका प्रभुत्व अनेक शक्तिशाली पुरुषों पर है, और जो अपने राज्य में न्याय का पालन करता है। काली मिट्टी से गेहूँ और जौ की फसल होती है; वृक्ष फलों से लदे हैं; मैदान उत्तम पशुओं से भरे हैं, समुद्र मछलियों से भरा है, और उसके बुद्धिमान शासन में लोग समृद्ध होते हैं। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ, अन्य बातों के बारे में, जब मैं तेरे महल की छत के नीचे हूँ, तो अपने वंश और घर के बारे में मत पूछ, कहीं ऐसा न हो कि तू मेरे मन में दुखद यादें जगा दे। मैं दुःख का आदमी हूँ, और किसी दूसरे के घर में बैठकर विलाप करना और आँसू बहाना मुझे शोभा नहीं देता। इसके अलावा, उपजे दुःख में डूब जाना उग्र हो जाता है। तेरी दासियाँ दोष देंगी, और शायद तू भी, और तू मेरे आँसुओं को शराब के नशे में चूर व्यक्ति के भावुक आँसू कहेगी।
तब ऋषि पेनेलोप ने फिर कहा:
“अजनबी, ऐसी सुंदरता और रूप-रंग
जो कभी मेरे पास था, जिसे अमर लोग भी ले गए थे,
जब अर्गिव योद्धा ट्रॉय के लिए रवाना हुए थे,
और मेरा यूलिसिस उनके साथ था। क्या वह अब
मेरे घर पर पहले की तरह शासन करने के लिए लौट सकता है, मेरी प्रसिद्धि और भी व्यापक और उज्ज्वल होती। लेकिन अब मैं एक दयनीय जीवन जी रही हूँ, इतना महान और कई बुराइयाँ हैं जो किसी देवता ने
मुझ पर डाली हैं। क्योंकि जो सरदार

द्वीपों पर शासन करते हैं—डुलिचियम, और
सामोस के मैदानों पर, और ज़ैकिंथस घने जंगलों से घिरा है,
और धूप से भरे इथाका में शासन करने वाले—
मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे रिझाते हैं, और मेरी संपत्ति को नष्ट कर देते हैं। इसलिए मुझे अजनबियों और याचकों, और सार्वजनिक कल्याण के सेवकों, दूतों के समूह के लिए कोई परवाह नहीं है,
लेकिन यूलिसिस के लिए तड़पते हुए, मैं अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ। शादी के प्रस्ताव रखने वाले विवाह के लिए दबाव डालते हैं,
और मैं चतुराई से इसे टाल देती हूँ। एक बार किसी देवता ने मुझे अपने कमरों में एक विस्तृत जाल,
चौड़ा और सूक्ष्म बनावट वाला, शुरू करने के लिए प्रेरित किया।
और फिर मैंने कहा: 'युवक, जो मुझे परेशान कर रहे हैं यूलिसिस के अब न रहने पर, विवाह के लिए मुझे और आग्रह न करो जब तक मैं इसे पूरा न कर लूँ— ताकि ये धागे व्यर्थ न बुने जाएँ— बूढ़े लेर्टेस के लिए यह कफ़न, जब क्रूर भाग्य और मृत्यु की लंबी नींद अंततः इस नायक को अपने शिकंजे में ले लेगी; अन्यथा यूनानी महिलाओं की भीड़ में मैं ही दोषी ठहराई जाऊँगी, अगर कोई ऐसी महिला जिसकी अपार संपत्ति इतनी प्रसिद्ध थी, बिना अंतिम संस्कार के वस्त्र के मर जाए।’ मैंने कहा, और आसानी से उनके मन पर मेरी बात का प्रभाव पड़ा, और मैंने कफ़न बुनना शुरू किया। मैंने जाल बिछाया था, लेकिन हर शाम मशाल की रोशनी में उसे फिर से सुलझाया। तीन साल तक मैंने उन्हें इसी तरह चकमा दिया; लेकिन जब चौथा साल आया, और अपने साथ घंटों और बदलते चांदों का सिलसिला लेकर आया, और कई दिन बीत गए, तो वे मुझ पर टूट पड़े, और मेरी दासियों की गलती से, एक लापरवाह दल के कारण, उन्होंने मुझे मेरे धोखे में पकड़ लिया, और मुझे खूब डांटा। इसलिए, हालांकि मैं अनिच्छुक थी, मुझे अपना काम समाप्त करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और अब मैं शादी से बच नहीं सकती, और न ही कोई शरण बची है। मेरे माता-पिता दोनों मुझे पति चुनने के लिए गंभीरता से आग्रह करते हैं, और मेरा बेटा दुखी है। देखो, वह अपने धन को लुटा रहा है, और वह एक पुरुष है और अपने घर का भला कर सकता है; बृहस्पति ने उसे ऐसा सम्मान दिया है। अब, मैं प्रार्थना करता हूँ, अपनी वंशावली बताओ, क्योंकि तुम न तो पुराने शानदार बलूत के पेड़ से निकले हो, न ही किसी चट्टान से।

बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया: “हे लेर्टेस के पुत्र की राजसी संगिनी! क्या तुम अब भी मेरे वंश के बारे में पूछोगी? मैं तब बता दूँगा, परन्तु तुम मेरे हृदय में नए दुःख जगा रही हो। ऐसा ही हमेशा होता है उस व्यक्ति के साथ जो मेरी तरह लंबे समय से घर से दूर है, अनेक लोकों में भटकता है और बहुत कष्ट सहता है; परन्तु क्योंकि तुम यह जानना चाहती हो, तो तुम्हें सुनना होगा।”
क्रीट एक ऐसा क्षेत्र है जो गहरे काले सागर के बीचोंबीच स्थित है, एक सुंदर और उपजाऊ भूमि, जो जल से घिरी हुई है। यहाँ असंख्य, बल्कि अनगिनत लोग रहते हैं, और इसके नब्बे शहर हैं। इस द्वीप के निवासी विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं। इनमें से कुछ अचियन हैं, और कुछ क्रीट के मूल निवासी हैं, जो एक वीर वंश हैं; यहाँ सिडोनियन, तीन जनजातियों के डोरियन, और गर्वित पेलसगियन निवास करते हैं। इनकी महान राजधानी नोसस है, जहाँ सम्राट मिनोस निवास करते थे, जो हर नौ वर्षों के अंत में सर्वशक्तिमान बृहस्पति के साथ मेरा विवाह संपन्न हुआ; और उनके पुत्र मेरे वीर पिता ड्यूकालियन का जन्म हुआ, जिन्होंने मुझे और क्रीट के राजा इडोमेनियस को जन्म दिया। इडोमेनियस अपने एट्रीयस के पुत्रों के साथ अपनी नुकीली नावों में इलियम के लिए रवाना हुए। मेरा नाम— एक प्रसिद्ध नाम— एथॉन है। क्रीट में ही मैंने यूलिसिस को देखा, जिन्होंने मुझसे अतिथि के रूप में स्वागत प्राप्त किया। एक तेज हवा ने उन्हें मालेया और इलियम की ओर जाने वाले मार्ग से भगा दिया था और उन्हें क्रीट ले आई थी। मैंने उसे खतरनाक बंदरगाह एमनीसस में ठहराया, जो इलिथिया की गुफा के पास था, जहाँ उसका बेड़ा बड़ी मुश्किल से तूफान से बच पाया। फिर वह शहर आया और राजा इडोमेनियस के बारे में पूछताछ की, जो उसके अनुसार उसका प्रिय और सम्मानित अतिथि था; लेकिन वह दस दिन पहले, शायद ग्यारह दिन पहले, अपनी चोंचदार नावों में ट्रॉय के लिए रवाना हो गया था। मैंने यूलिसिस को वहाँ के महल में ले जाकर, बड़े उत्साह से राजा का स्वागत किया, क्योंकि शाही निवास में भरपूर भोजन उपलब्ध था। मैंने उसे सार्वजनिक भंडारों से भोजन भी दिया। और जो लोग उसके पीछे आए, वे आसपास के देश से गाढ़ी लाल शराब और बलि के लिए बैल लाए, ताकि उनके हृदय में किसी चीज की कमी न रहे। बारह दिन तक महान यूनानी हमारे साथ रहे। एक तेज उत्तरी हवा, जिसने उन्हें किनारे पर सीधे खड़े रहने भी नहीं दिया, उनका सामना कर रही थी। किसी शत्रुतापूर्ण

शक्ति ने उसे चलने का आदेश दिया था; लेकिन तेरहवें दिन उसका प्रकोप शांत हो गया और बेड़ा समुद्र में उतर गया।
इस प्रकार वह कहानियाँ गढ़ता रहा, जो सत्य जैसी प्रतीत होती थीं। वह सुनती रही, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, मानो पहाड़ों की ऊँचाई पर पश्चिम की हवा से पिघलती बर्फ, पूर्व की हवा की साँस महसूस करती है, और पानी में बदल जाती है, और तेज़ बहती धाराएँ भर जाती हैं; पेनेलोप के सुंदर गाल भी आँसुओं में घुलते हुए प्रतीत हुए—उसके लिए बहाए गए आँसू, जो उस समय भी उसके बगल में बैठा था। उसने अपनी रोती हुई पत्नी को देखा, और मन ही मन उस पर दया की; फिर भी उसकी आँखें लोहे या सींग की तरह थीं, और पलकें नहीं हिल रही थीं; उसने चतुराई से अपने आँसू बहने से रोके रखे। जब रानी का रोना बंद हो गया, तो उसने उससे कहा:—
“अब, अजनबी, मुझे यह साबित करने दो कि क्या सचमुच तुमने, जैसा कि तुमने अभी कहा है, मेरे पति और उनके साथ आए हुए नेक मित्रों को अपने घर में स्वागत किया था। उनके वस्त्रों का वर्णन करो; वे और उनके साथ आए मित्र कैसे दिखते थे?”
बुद्धिमान यूलिसिस ने उसे उत्तर दिया: “हे देवी, तुम्हें उत्तर देना कठिन है, मैं बहुत समय से घर से दूर हूँ। अब बीस वर्ष हो गए हैं जब वह वहाँ था और द्वीप छोड़कर चला गया, लेकिन, जैसा कि मेरी स्मृति कहती है, मैं वैसा ही बोलूँगा।” यूलिसिस ने एक ऊनी बैंगनी चोगा पहना था, जो दोहरी जालीदार था; उसका कुंडा सोने का था, जिसमें दो बंधन थे, और सामने एक दुर्लभ डिज़ाइन बना हुआ था—एक शिकारी कुत्ता, जिसने अपने अगले पंजों में एक चित्तीदार हिरण के बच्चे को पकड़ रखा था, जो उसके खुले मुँह के सामने छटपटा रहा था। हालाँकि आकृतियाँ सोने के बने उस वस्त्र की हम सब प्रशंसा करते थे। वह शिकारी कुत्ता अपने शिकार की गर्दन तोड़ने पर तुला था, और वह हिरणी छटपटाते हुए अपने फुर्तीले पैरों से खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। नायक की छाती और कमर पर मैंने एक चमकदार कुर्ता देखा, जो सूखे प्याज की पतली परत की तरह मुलायम और धूप की तरह चमकीला था। कई महिलाएं उसे आश्चर्य से देख रही थीं। लेकिन इस पर विचार कीजिए; मुझे नहीं पता कि वह इसी वस्त्र में अपना घर छोड़कर गया था या फिर यात्रा के दौरान किसी साथी ने उसे ये वस्त्र दिए थे, या शायद किसी मित्रवत मेज़बान ने, क्योंकि वह बहुत प्रिय था। कई लोगों में से, यूनानियों में उसके जैसा कोई नहीं था। मैंने उसे अपनी

ओर से एक पीतल की तलवार दी, और एक सुंदर बैंगनी रंग का, दोहरी जाली वाला चोगा, इसके अलावा एक कुर्ता जो उसके पैरों तक पहुँचता था, और उचित सम्मान के साथ उसे उसके अच्छे जहाज में विदा किया। उसके साथ एक दूत आता-जाता था, जो उससे कुछ बड़ा था; मैं उसका वर्णन करता हूँ—कुबड़ा, सांवली त्वचा वाला, और घुंघराले बालों वाला, उसका नाम यूरीबेट्स था। यूलिसिस ने उसे अपने साथियों से ऊपर सम्मान दिया, क्योंकि वे सब एक जैसे सोचते थे।
वह चुप हो गया; रानी और भी गहरे शोक में डूब गई, क्योंकि उसे वे सभी संकेत अच्छी तरह याद थे जिनका उसने उल्लेख किया था; और जब रोने का वह तीव्र प्रवाह थम गया, तो उसने फिर से कहा:—
“अजनबी, अब तक इन कक्षों में तुम्हारी उपस्थिति ने केवल मेरी दया को ही जगाया है; अब से तुम प्रिय और सम्मानित हो। मैंने ही तुम्हें वे वस्त्र दिए थे जिनके बारे में तुमने मुझे बताया था; इन्हीं हाथों ने उन्हें मेरे कक्ष में तह किया था। मैंने ही वह चमकीला कमरबंद पहनाया था जो उसका आभूषण था, और अब मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, वह अपनी प्यारी भूमि और घर लौट रहा है; भाग्य इतना क्रूर था कि वह उसे यहाँ से ले गया, इलियम, अपने विशाल जहाज में, एक ऐसा शहर जिसका नाम कभी नहीं लिया जा सकता।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे लेर्टेस के पुत्र की कृपालु संगिनी! जिसे तुमने खो दिया है, उसके लिए तुम्हारा शोक तुम्हारी सुंदरता को और अधिक क्षीण न करे, और तुम्हारे हृदय को नष्ट न करे। फिर भी मैं तुम्हें बिल्कुल दोष नहीं देता; क्योंकि कोई भी पत्नी, जिसे उसने कुंवारी रहते हुए स्वयं को समर्पित किया था, और जिसके बच्चे हुए थे, उसे खोने पर शोक मनाएगी, भले ही वह यूलिसिस से कमतर हो, जो कि प्रसिद्धि के अनुसार, देवताओं के समान है। लेकिन शोक करना बंद करो, और सुनो मैं क्या कहूँ, और मैं सत्य बोलूँगा। मैंने सुना है कि तुमसे छिपा हुआ है, लेकिन हाल ही में जीवित यूलिसिस से, जो अपने घर लौट रहा था, थेस्प्रोटियनों के समृद्ध राज्य में, जहाँ से वह अपने साथ बहुत सारा और दुर्लभ खजाना लाया था, जो उसने वहाँ के लोगों से इकट्ठा किया था। उसने अपने प्रिय मित्रों को खो दिया, और अपने अच्छे जहाज को भी; त्रिनाक्रिया से आते समय गहरे काले सागर ने उन्हें निगल लिया, क्योंकि उसके दल ने वहाँ सूर्य के बैलों का वध कर दिया था। सूर्य और बृहस्पति क्रोधित थे; इसलिए उसके सभी साथी लहरों वाले समुद्र में डूब गए; लेकिन वह अपनी नाव के पतवार पर हवा के सहारे टिका रहा।

वह तट की ओर गया जहाँ फ़ेएशियन लोग रहते थे, जो देवताओं के रिश्तेदार थे। उन्होंने उसका स्वागत किया और उसे देवता के समान सम्मान दिया। उन्होंने उसे बहुत सी वस्तुएँ दीं और उसे उसके पैतृक द्वीप पर सुरक्षित पहुँचाना चाहते थे। यूलिसिस को दूर तक यात्रा करना और धन इकट्ठा करना बुद्धिमानी समझा गया, क्योंकि यूलिसिस धन कमाने की कलाओं को भली-भांति जानता था। थेस्प्रोशियनों के राजा फ़ीडोन ने ऐसा कहा था। और, अपने महल में, उसने मुझसे शपथ ली—
जैसे स्वर्ग के देवताओं के लिए उसने शराब डाली—
कि उसी समय एक गैली को पानी में उतारा गया था, और उसमें पहले से ही नाविक मौजूद थे, जो यूलिसिस को घर ले जाने वाले थे।
लेकिन उसने मुझे पहले विदा किया, क्योंकि उस समय थेस्प्रोटियनों की एक नाव बंदरगाह से रवाना हुई,
डुलिचियम के अनाज के खेतों के लिए। मेरे जाने से पहले उसने यूलिसिस के खजाने दिखाए जो राजा के महल में रखे थे—ऐसे खजाने जो किसी अन्य सरदार के परिवार को दसवीं पीढ़ी तक खिलाने के काम आ सकते थे। डोडोना में वह धन था, इसलिए राजा ने बृहस्पति के ऊंचे ओक वृक्ष पर देवता से सलाह मांगते हुए घोषणा की कि वह अपनी प्रिय जन्मभूमि पर कैसे लौटें, जो इतने लंबे समय से भटक रही है—चाहे खुलेआम—या छिपकर। इसलिए वह सुरक्षित है, और जल्द ही हमारे पास होगा; क्योंकि वह अपने सभी मित्रों और मातृभूमि से लंबे समय तक दूर नहीं रह सकता। मैं इस पर शपथ लेता हूँ; सबसे महान और श्रेष्ठ देवता बृहस्पति साक्षी हों, और यह नेक राजकुमार यूलिसिस का चूल्हा, जहाँ मैं हूँ। बैठो, ताकि जो भी शब्द मैंने तुमसे कहे हैं, वे सब पूरे हों। एक वर्ष के भीतर यूलिसिस लौट आएगा, जैसे ही यह महीना बीतता है और अगला महीना शुरू होता है।
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “हे अजनबी अतिथि, काश ऐसा ही होता, जैसा तुमने कहा है; तब तुम्हें मेरी ओर से इतना धन्यवाद और उदारता मिलती कि तुमसे मिलने वाला हर कोई तुम्हारे साथ प्रसन्न होता। फिर भी, यह विचार मेरे मन में बना हुआ है, और वास्तव में ऐसा ही होना चाहिए, कि यूलिसिस अब कभी वापस नहीं लौटेगा, और न ही तुम्हें यहाँ से कोई विदा करने वाला मिलेगा; क्योंकि अब यूलिसिस जैसा कोई स्वामी शासन नहीं करता— और वह कितना महान व्यक्ति था!—इन दीवारों के भीतर, आदरणीय अतिथि का स्वागत या विदाई करने

के लिए। लेकिन अब, तुम हे कन्याओं, अजनबी को स्नान करने दो, और उसके पलंग को कंबलों, ऊनी लबादों, और सुंदर पर्दों से सजा दो, ताकि वह सुबह तक उसके सुनहरे रथ में आराम से लेट सके। पास आओ; फिर सुबह होते ही उसे स्नान कराओ और तेल लगाओ, ताकि वह टेलीमाकस के बगल में बैठकर अपना सुबह का भोजन कर सके। जो अजनबी को परेशान करने की हिम्मत करेगा, उसका बुरा हाल होगा; चाहे वह कितना भी क्रोधित हो, यहाँ उसका कोई स्थान या पद नहीं होगा। और हे अजनबी, तुम यह कैसे जानोगे कि मैं मन और ज्ञान में श्रेष्ठ हूँ? अन्य सभी स्त्रियों, यदि मैं तुम्हें यहाँ भोजों में गंदे और घटिया वस्त्रों में बैठने दूँ तो? मनुष्य का जीवन अल्प है, और जो कोई क्रूर हृदय रखता है, क्रूर कार्य करता है, उस पर मनुष्य जीते जी देवताओं से विपत्ति लाते हैं, और मरने पर उसका उपहास करते हैं। परन्तु जो कोई उदार हृदय का है और उदार उद्देश्य रखता है, उसके अतिथि उसकी प्रशंसा का प्रचार करते हैं, और अनगिनत लोग उसे भला कहते हैं।
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे लेर्टेस के पुत्र की कृपालु संगिनी! ऐसे लबादे और भव्य आवरण मुझे भाते नहीं, क्योंकि मैं अपनी लंबी चप्पू वाली नाव में क्रेते की बर्फीली चोटियों को पीछे छोड़ आया हूँ। मैं अब भी लेटा रहूँगा, जैसा कि मैं कई रातों की नींद हराम करके लेटा रहता हूँ, एक साधारण पलंग पर पवित्र सुबह की प्रतीक्षा में, उसके सोने के रथ पर। मुझे यह पैर धोना पसंद नहीं है। यहाँ कोई भी कन्या जो तुम्हारी सेवा करती है, मेरे पैर को नहीं छू सकती; लेकिन अगर उनमें कोई वृद्ध और वफादार महिला हो, जो उसने अपने जीवन में बहुत कष्ट सहे हैं।
जिस प्रकार मैंने कष्ट सहे हैं, वह मेरे चरणों को स्पर्श कर सकती है।
और इस प्रकार ज्ञानी पेनेलोप ने उत्तर दिया: “प्रिय अतिथि—क्योंकि इन कक्षों में कभी कोई अजनबी इतना विवेकशील या मुझसे इतना प्रिय नहीं आया है, जितना तुम बुद्धिमानी से बोल रहे हो, और अच्छा— मेरी एक वृद्ध विवेकशील महिला हैं, जिनकी देखभाल में मेरे दुर्भाग्यशाली पति का पालन-पोषण हुआ। उन्होंने उस शिशु को तब गोद लिया जब उसकी माँ ने उसे जन्म दिया था, और वह, यद्यपि उनकी शक्ति कम है, तुम्हारे पैर धोएँगी। उठो, विवेकशील यूरिक्लेया, तुम उसके पैर धोओगी जिसकी आयु तुम्हारे स्वामी के समान ही होगी; निस्संदेह अब ऐसा ही है।”

यूलिसिस, जिसके पैर और हाथ इतने झुर्रीदार हैं।
क्योंकि दुर्भाग्य जल्दी ही मनुष्य को बूढ़ा बना देता है।
वह बोली; बूढ़ी दासी ने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा छुपा लिया, और फूट-फूटकर आंसू बहाते हुए, रानी को इस प्रकार दुखी भाव से उत्तर दिया:— “मेरे पुत्र, मेरा हृदय तेरे लिए दुखी है; फिर भी मैं कुछ नहीं कर सकता। क्या ऐसा हो सकता है कि बृहस्पति तुझसे सबसे अधिक घृणा करता हो? यद्यपि तू स्वयं देवताओं का इतना आदर करता है? पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य ने इतने मोटे पशुओं की जांघें नहीं जलाईं और इतने बड़े पैमाने पर बलि नहीं दी जितनी तूने गर्जन करने वाले बृहस्पति के लिए प्रार्थना की, इस प्रार्थना के साथ कि तू शांत वृद्धावस्था प्राप्त करे और अपने गौरवशाली पुत्र का पालन-पोषण करे; फिर भी देवता ने तुझे तेरे लौटने से हमेशा के लिए रोक दिया है। शायद अब भी किसी दूर देश में स्थित किसी शाही घराने की स्त्रियाँ, जहाँ वह प्रवेश कर चुका हो, तुझसे लौट सकती हैं।” भूमि
उसका उपहास करो जैसे ये दुष्ट प्राणी तुम्हारा उपहास करते हैं
हे अजनबी, जो उनके उपहासों और अपमानों से बचने के लिए उन्हें अपने पैर धोने नहीं देते। ऋषि पेनेलोप आज्ञा देती हैं,
और मैं अनिच्छुक नहीं हूँ। मैं तुम्हारे पैर धोऊँगी, अपने लिए भी और तुम्हारे लिए भी;
क्योंकि तुम्हें देखकर मैं बहुत भावुक हो गई हूँ।
मेरी बात सुनो: संकट में पड़े अजनबियों में से बहुत से यहाँ आए हैं, फिर भी मैंने किसी को नहीं देखा है जो रूप, वाणी और पैरों में हमारे अनुपस्थित स्वामी से इतनी समानता रखता हो। तू।"
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे वृद्ध स्त्री, ऐसा ही कहा गया है उन सभी लोगों ने जिन्होंने मुझे और उसे देखा है। वे सभी कहते हैं कि हम दोनों एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं; इस बारे में तुमने ठीक कहा है।”
उसने बात की; उसने पैरों को धोने के लिए डिज़ाइन किया गया एक चमकदार फूलदान लिया और उसमें भरपूर मात्रा में ठंडा पानी डाला, फिर गर्म पानी डाला। चूल्हे के सामने बैठे यूलिसिस एक अंधेरी जगह पर चले गए, क्योंकि उनके मन में यह विचार आया कि कहीं वह उनके अंगों को छूते समय उन पर कोई निशान न देख ले, और इस तरह उनका रहस्य उजागर हो जाएगा। वह आई और उसने उनके पैरों को

धोया, और निशान पाया। यह वह जगह थी जहाँ एक जंगली सूअर ने अपने सफेद दाँत से उसके अंग को घायल कर दिया था, जैसे एक बार वह परनासस की यात्रा पर गया, जहाँ उसने ऑटोलिकस और उसके बेटों से मुलाकात की, जो उसकी माँ के महान पिता थे, जो शिल्प और शपथ में सभी पुरुषों से श्रेष्ठ थे, यह उपहार उसे हेमीज़ द्वारा दिया गया था; क्योंकि ऑटोलिकस ने कृतज्ञतापूर्वक मेमनों और बकरियों की जांघें भेंट कीं, और देवता सदा उसके साथ रहे। एक बार ऑटोलिकस इथाका के समृद्ध राज्य में आया, और उसने अपनी बेटी को नवजात शिशु के साथ पाया; वहाँ यूरीक्लिया ने शिशु को, जिसने अभी-अभी भोजन किया था, अपनी गोद में बिठाया और कहा:—
“इस प्यारे बच्चे, ऑटोलिकस को एक नाम दो—
तेरी बेटी का बेटा, जिसे अनेक प्रार्थनाओं का वरदान प्राप्त है।”
और इस प्रकार ऑटोलिकस ने उत्तर दिया: “पुत्री और दामाद, उसका नाम वही हो जो मैं रखूंगा। उसके द्वीप पर आने पर मुझे बहुतों की घृणा सहनी पड़ेगी— पुरुषों और स्त्रियों दोनों की—जो उपजाऊ धरती पर बिखरे हुए हैं; इसलिए उसका नाम यूलिसिस रखो, और जब वह वयस्क होकर परनासस में बने उन भव्य महलों में आए, जहाँ उसकी माता रहती थी और मेरी संपत्ति है, तो मैं उसे एक हिस्सा दूंगा और उसे प्रसन्नतापूर्वक घर भेजूंगा।”
और इसलिए यूलिसिस प्रतिज्ञा किए गए राजसी उपहार प्राप्त करने के लिए गया। ऑटोलिकस और उसके सभी पुत्रों ने उसका स्नेहपूर्ण शब्दों और हाथ मिलाकर स्वागत किया। वहाँ उसकी माँ एम्फिथिया ने उसे अपनी बाहों में लिया और उसके माथे और दोनों सुंदर आँखों को चूमा। फिर ऑटोलिकस ने अपने कुलीन पुत्रों को भोज तैयार करने के लिए बुलाया और उन्होंने आज्ञा का पालन किया। वे पाँच साल के एक बैल को लाए और उसे मारकर, उसकी खाल उतारी और उसे साफ किया, उसके जोड़ अलग किए, और मांस को काटकर सींकों पर लगाया, उसे सावधानी से भूना, और हर एक को उसका हिस्सा दिया। इस प्रकार, सूर्यास्त तक वे दिनभर भर दावत करते रहे, और सभी तृप्त हो गए। जब सूरज डूब गया और धरती पर अंधेरा छा गया, तो वे लेट गए और नींद का आनंद लिया। लेकिन जब गुलाबी उंगलियों वाली सुबह प्रकट हुई, भोर से जन्मी, ऑटोलिकस के बच्चे, अपने कुत्तों के साथ, अपने महान अतिथि, यूलिसिस के साथ शिकार करने निकले। वे उस ऊंचे पर्वत, परनासस, जो जंगलों से ढका था, की खड़ी ढलानों पर चढ़े और जल्द ही उसकी हवादार ऊंचाइयों पर पहुंच गए। गहरे सागर की कोमल बहती धारा से नया उगा सूरज, अब खेतों पर

चमक रहा था। शिकारी एक घाटी में पहुंचे; उनके आगे कुत्ते शिकार का पीछा कर रहे थे; ऑटोलिकस के बच्चे पीछे-पीछे चल रहे थे। उदार युवक यूलिसिस, अपने हाथ में एक विशाल भाला लिए, कुत्तों के झुंड के करीब आते हुए आगे बढ़ा। वहाँ एक विशाल जंगली सूअर घनी झाड़ियों में लेटा हुआ था, जहाँ नम हवाएँ नहीं पहुँचती थीं, न ही उसकी चमक में सूरज की किरणें उस झाड़ी को भेद पाती थीं, न ही बारिश की बूँदें घनी होने के कारण अंदर आ पाती थीं। ज़मीन सूखे पत्तों के ढेर से भरी हुई थी। उसके चारों ओर से कुत्तों और आदमियों के तेज़ी से पास आने की आवाज़ें आ रही थीं। अपनी मांद से वह उछल पड़ा और गर्दन के बाल सीधे खड़े करके, चमकती आँखों से उनका सामना किया। यूलिसिस दूसरों से आगे बढ़कर, अपने मजबूत हाथ में भारी भाला ऊँचा उठाकर, प्रहार करने के इरादे से दौड़ा। सूअर ने पहले वार किया; उसने बगल से वार किया और अपने दुश्मन के घुटने के ऊपर गहरा घाव कर दिया, मांस को चीर दिया, लेकिन हड्डी को नहीं छुआ। यूलिसिस ने अपने चमकीले भाले से सूअर के दाहिने कंधे पर वार किया और हथियार को आर-पार कर दिया। वह चीखते-चिल्लाते धूल में गिर पड़ा, और उसकी जान निकल गई। फिर अपने मेहमान के चारों ओर ऑटोलिकस के दयालु बच्चे आए और बड़े ध्यान से घाव पर पट्टी बाँधी, और मंत्रों से उस निर्दोष युवक के काले खून को रोका, और उसे अपने पिता के घर ले गए। जब ऑटोलिकस और उसके बेटों ने उसे पूरी तरह ठीक होते देखा, तो उन्होंने उसे उपहारों से लाद दिया, और उसकी खुशी मनाते हुए, उसे प्रसन्नतापूर्वक इथाका वापस भेज दिया।
वहाँ उसके पिता और उसकी दयालु माता
बारी-बारी से प्रसन्न हुए और उससे उस निशान के बारे में पूछा,
और यह कैसे हुआ, और उसने सब कुछ बताया—
कैसे एक खूंखार सूअर के सफेद दांत से
यह घाव परनासियन ऊंचाइयों पर लगा,
जब वह उसके पिता के बेटों के साथ शिकार कर रहा था।
वृद्ध स्त्री ने जैसे ही पैर को अपने हाथों में लिया, स्पर्श से ही उसे निशान का एहसास हुआ, और पैर को छोड़ते ही वह फूलदान से टकरा गया। पीतल की ज़ोरदार आवाज़ हुई, फूलदान उलट गया, और पानी बह निकला। एक पल में उसके हृदय में खुशी और दुःख की लहर दौड़ गई। उसकी आँखों में आँसू भर आए, और उसकी स्पष्ट आवाज़ भर्रा गई। उसने यूलिसिस की ठुड्डी को छुआ और कहा:—

“प्यारे बच्चे! तुम सचमुच यूलिसिस हो।
जब तक मैंने तुम्हारे घाव को छुआ नहीं था, तब तक मैं तुम्हें पहचान नहीं पाया था।”
ऐसा कहते हुए, उसने अपनी आँखें पेनेलोप की ओर घुमाईं, मानो उसे यह बताने ही वाली थी कि उसका स्वामी महल में है; लेकिन रानी ने नहीं देखा, और जो कुछ भी हुआ वह उसकी नज़र से छिपा रहा, क्योंकि पल्लास ने अपना ध्यान दूसरी ओर मोड़ दिया। इसी बीच, यूलिसिस ने नर्स के गले पर अपना दाहिना हाथ रखा, और दूसरे हाथ से उस बूढ़ी औरत को अपने पास खींच लिया, और कहा:—
“हे नर्स, क्या तू मुझे बर्बाद कर देगी, जिसने बहुत समय पहले तेरे स्तनों से दूध पिया था, और जो अब बीस वर्षों के कष्ट सहने के बाद अपनी भूमि पर लौट आया है? अब, चूंकि तूने सत्य जान लिया है—निस्संदेह किसी देवता की प्रेरणा से—चुप रह, कहीं ऐसा न हो कि घर में अन्य लोग भी इसे जान लें। अन्यथा—मैं तुझे यह कहता हूँ, और अपना वचन पूरा करूँगा—यदि ईश्वर ने चाहा कि मैं अभिमानी दूल्हों के समूह पर विजय प्राप्त कर लूँ, तो हे नर्स, मैं तुझे भी नहीं बख्शूँगा, जब इन कक्षों में अन्य युवतियाँ मर जाएँगी।” तब बुद्धिमान यूरिक्लेया ने कहा: “हे मेरे पुत्र, तेरे मुख से क्या शब्द निकले हैं? क्योंकि तू मेरी दृढ़ इच्छाशक्ति को भली-भांति जानता है; यह कभी नहीं डगमगाती। मैं ठोस चट्टान या इस्पात की तरह अपने विश्वास पर अडिग रहती हूँ। यह बात मैं तुझे बता दूँ, और मैं तुझसे विनती करती हूँ कि मेरी बातों को याद रख। यदि ईश्वर की कृपा से तू अभिमानी दूल्हों के समूह पर विजय प्राप्त कर ले, तो मैं उन दासियों के नाम बताऊँगी जो तेरे घर को कलंकित करती हैं, और निर्दोषों की ओर इशारा करूँगी।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“हे नर्स, इनका नाम क्यों लेना? इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं स्वयं इन्हें देखूंगा और इन्हें जान लूंगा। तुम
चुप रहो और इस मामले को देवताओं पर छोड़ दो।”
उसने बात की; बूढ़ी औरत दूसरी बार नहाने का पानी लाने के लिए वहाँ से चली गई, क्योंकि पहला पानी ज़मीन पर गिर गया था। जब उसने उसके पैर धो दिए और तेल से उन्हें चिकना कर दिया, तो यूलिसिस फिर से चूल्हे के पास बैठ गया, ताकि गर्मी ले सके और अपने फटे-पुराने कपड़ों से निशान को छुपा सके। और इस प्रकार ज्ञानी पेनेलोप ने बोलना शुरू किया:—

“अजनबी, मैं अब और अधिक देर तक पूछताछ नहीं करूँगी; सुखद विश्राम का समय निकट है उन लोगों के लिए जो दुखी होते हुए भी नींद का सुकून पा सकते हैं। फिर भी मेरे लिए कोई देवता असीम दुःख नियुक्त करता है। सारा दिन दुःखों और आहों में, मेरा सहारा महल में अपनी दासियों को उनके कार्यों में देखना है; परन्तु जब शाम होती है, और सब विश्राम करने लगते हैं, मैं अपने पलंग पर लेट जाती हूँ, और गहरे और तीखे दुःख मेरे हृदय में नई पीड़ा जगा देते हैं। जैसे जब, ताज़ी बसंत में, सांवली बुलबुल, पांडारस की पुत्री, घने पत्तों के बीच, जंगलों में मधुर गीत गाती है, और बार-बार धुन बदलते हुए, अनेक स्वरों वाली अपनी आवाज़ बिखेरती है, अपने प्रिय इटिलस के लिए विलाप करती है, जो शाही ज़ेथोस से उसका पुत्र था, जिसे उसने अनजाने में मारा था; इतनी तेज़ी से मेरा मन एक विचार से दूसरे विचार में भटकता रहता है। मैं सोचती हूँ कि क्या मुझे अपने पुत्र के पास रहना चाहिए, और जो कुछ यहाँ मेरा है, मेरा दहेज, मेरी दासियाँ और ऊँची छत वाले महल, उसे वैसे ही संभाल कर रखना चाहिए जैसे कोई अभी भी अपने पति के पलंग का आदर करता है। जनता की आवाज़ सुनो,
या अचियाई सरदारों में से किसी एक का अनुसरण करो,
जो सबसे श्रेष्ठ प्रस्तावक है, और वह
जो बिना किसी कंजूसी के विवाह उपहार देता है।
मेरे बेटे के बचपन के दिन, जब वह अभी बच्चा था,
दिमाग से अपरिपक्व था, मुझे शादी करने की अनुमति नहीं दी,
और अपने पिता का घर छोड़ने की; लेकिन वह बड़ा हो गया है,
और जवानी की दहलीज पर है। वह चाहता है
कि मैं महल छोड़ दूं, क्योंकि उसका क्रोध
उन लोगों के खिलाफ बहुत अधिक है जो उसकी संपत्ति बर्बाद करते हैं।
सुनो, और अब मेरे एक सपने की व्याख्या करो:
इन प्रांगणों के भीतर बीस हंस हैं जो खाते हैं पानी से मक्का निकाला, और मैं उन्हें देखकर प्रसन्न और आनंदित हुआ। एक पहाड़ से एक नुकीली चोंच वाला चील आया, उनकी गर्दनें तोड़ दीं, और उनके शव महल में बिखेर दिए, और फिर स्वर्ग की हवा में उड़ गया। मैं रोया और विलाप किया, हालाँकि यह एक सपना था; और मेरे चारों ओर सुनहरे बालों वाली यूनानी युवतियाँ आईं, और विलाप करने लगीं कि शिकारी पक्षी ने मेरे हंसों को मार डाला है। फिर चील वापस

आया, और उभरी हुई छत पर बैठ गया, और मुझसे इस प्रकार बोला। एक मानवीय आवाज:

—

“ ‘हे प्रसिद्ध इकारियस की पुत्री! तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो; यह कोई स्वप्न नहीं, बल्कि एक सच्चा दर्शन है, और यह अवश्य पूर्ण होगा। हंस उनके प्रेम-प्रसंगों के समूह का प्रतीक हैं, और मैं, जो कभी एक बाज था, तुम्हारा पति बनकर आया हूँ, अब उन्हें पूरी तरह से समाप्त करने के लिए।’
“उसने बात की; मेरी नींद टूट गई, और मैंने देखा,
और महल में मौजूद हंसों को अभी भी
अपनी नांद पर पहले की तरह चरते हुए देखा।”
और इस प्रकार बुद्धिमान यूलिसिस ने कहा: “हे देवी, जो स्वप्न तुम्हें नींद में आया, उसका कोई दूसरा अर्थ नहीं निकाला जा सकता। यूलिसिस ने स्वयं तुम्हें उसके पूर्ण होने का मार्ग बताया है। मृत्यु निकट है, और कोई भी अपने भाग्य से नहीं बच पाएगा।”
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “हे अजनबी, कुछ सपने अर्थहीन और व्यर्थ होते हैं, और कभी पूरे नहीं हो सकते। दो द्वार हैं, एक हाथीदांत का और दूसरा सींग का। हाथीदांत से बने द्वारों से आने वाले सपने ऐसे वादे करते हैं जो कभी पूरे नहीं होते; परन्तु जो सपने चमकीले सींग के द्वारों से होकर आते हैं, वे सदा सत्य होते हैं। फिर भी मैं आशा नहीं कर सकती कि मेरा यह विचित्र सपना उन्हीं द्वारों से आया होगा, यद्यपि यदि ऐसा होता तो मैं और मेरा पुत्र दोनों प्रसन्न होते। मैं बस इतना ही कहना चाहती हूँ।” और मेरी बात ध्यान से सुनो। कल हमारे लिए वह घृणित सुबह लेकर आएगा जो मुझे मेरे घर से दूर ले जाएगी, यूलिसिस के महल से। अब मैं एक प्रतियोगिता का प्रस्ताव रखूँगा। महल के प्रांगण में यूलिसिस ने बारह खंभे एक कतार में गाड़ दिए, जैसे किसी नाव को सहारा देने वाले खंभे; हर खंभे पर एक छल्ला था; वह दूर खड़ा रहा और उसने उन सभी के बीच से एक तीर चलाया। मैं इस प्रतियोगिता का प्रस्ताव सभी दावेदारों के सामने रखूँगा। जो आसानी से धनुष चलाएगा और बारह छल्लों के बीच से तीर चलाएगा, मैं उसका पीछा महल से करूँगा जहाँ मैंने अपना युवावस्था का वैवाहिक जीवन व्यतीत किया—एक सुंदर घर, धन-संपन्न; एक ऐसा घर जिसे मैं लंबे समय तक याद रखूंगा, यहां तक कि अपने रात्रि के सपनों में भी।

बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“हे लेर्टेस के पुत्र की कृपालु संगिनी!
इस प्रतियोगिता में देरी न होने दें; चतुराई में माहिर यूलिसिस यहाँ आ जाएगा, इससे पहले कि, नायक के चमकीले धनुष से छेड़छाड़ करके,
दावेदार धनुष की डोरी को खींचकर,
लोहे के छल्लों को भेदकर तीर चला दें।”
और इस प्रकार ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया:
“अजनबी, यदि तुम यहाँ महल में बैठे हुए भी मेरा इस प्रकार सत्कार करते रहोगे, तो मेरी पलकों पर नींद नहीं आएगी; और फिर भी मनुष्य जाति अनिद्रा से पीड़ित नहीं हो सकती,
ऐसा देवताओं ने निर्धारित किया है, जिन्होंने इस उपजाऊ पृथ्वी पर मनुष्य के लिए उसका भाग्य निर्धारित किया है।
मैं ऊपरी कमरों में जाती हूँ, उस पलंग पर अपना स्थान ग्रहण करने के लिए जो मेरे लिए दुःख और आँसुओं का स्थान बन गया है, जब से मेरा यूलिसिस ट्रॉय चला गया है,
वह घातक नगर जिसका नाम फिर कभी नहीं लिया जाएगा। और मैं लेट जाऊँगा; परन्तु तुम यहीं रहो, और ज़मीन को अपना बिस्तर बना लो, या इन युवतियों से अपने लिए पलंग बिछवा लो।
पेनेलोप ने इस प्रकार बोलकर अपने शाही कुटिया में चली गई, लेकिन अकेली नहीं; उसकी दासियाँ भी उसके साथ गईं। जब वे अंदर पहुँचीं, तो वह अपने प्रिय पति के लिए रोने लगी, अंततः नीली आँखों वाली पल्लास ने कृपापूर्वक उसकी बंद होती पलकों पर नींद का मरहम छिड़क दिया।

पुस्तक XX
द लास्ट बैंक्वेट ऑफ द सूटर्स
नौकरानियों का अव्यवस्थित आचरण—यूलिसिस की शुभ संकेत के लिए प्रार्थना — उसकी पूर्ति—महल में प्रेमियों के भोज की तैयारी—भोज—टेसीपस द्वारा यूलिसिस का अपमान, जिसे टेलेमाकस ने फटकारा—थियोक्लीमेनस द्वारा देखे गए विचित्र चमत्कार, जो हॉल छोड़कर चला जाता है।
कुलीन सरदार यूलिसिस बरामदे में आराम करने के लिए लेट गया। उसके नीचे एक बिना तराशे बैल की खाल थी, और उसके ऊपर उन भेड़ों की खालें थीं जिन्हें अचेयन लोग दैनिक बलिदान के लिए मारते थे। यूरिनोमे ने उसके ऊपर एक लबादा बिछा रखा था। वह वहीं जागता रहा और सोचता रहा कि वह कैसे उन सभी दावेदारों को हराएगा। इसी बीच, खुशी और हंसी की आवाजों के साथ, स्त्रियाँ उन दावेदारों की बाहों में जाने के लिए बाहर आईं। यूलिसिस, क्रोध से व्याकुल होकर, सोचने लगा कि क्या उसे उठकर उन सबको मृत्युदंड दे देना चाहिए, या उनकी शर्मिंदगी को एक और रात, आखिरी रात के लिए, कुछ समय की मोहलत दे देनी चाहिए। उसका हृदय प्रचंड था। जैसे कोई शिकारी कुत्ता अपने बच्चों के चारों ओर घूमते हुए गुर्राता है, जब वह किसी अजनबी को देखता है और उस पर हमला करने के लिए उत्सुक होता है, वैसे ही उसका हृदय भीतर ही भीतर गुर्रा रहा था, और उस निर्लज्ज समूह के प्रति उसका धैर्य इतना उग्र था। उसने अपनी छाती पीटी, और इस प्रकार अपने हृदय को धिक्कारा:—
“हिम्मत रखो, हे हृदय! तू इससे भी बदतर हालात झेल चुका है। जब अदम्य शक्ति वाले भयानक साइक्लोप्स ने तेरे बहादुर साथियों को निगल लिया, तब भी तू सहन कर सका, और चतुराई से उस गुफा से निकल निकला जिसमें तुझे मरना ही था।”
इस प्रकार उसने अपने हृदय को वश में किया, और शांत होकर, उसका हृदय वश में हो गया; परन्तु नायक करवटें बदलता रहा। जैसे कोई भयंकर धधकती आग के सामने चर्बी और खून से भरे बैल के पेट को बार-बार घुमाता है और चाहता है कि यह काम हो जाए, वैसे ही सरदार भी करवटें बदलता रहा, यह सोचते हुए कि कैसे निर्लज्ज दूल्हों की भीड़ पर अपना नियंत्रण स्थापित करे—वह अकेला था, और वे इतने सारे। इसी बीच, स्त्री रूप में पल्लास स्वर्ग से नीचे उतरी, और उसके पलंग के पास खड़ी होकर बोली:—

“हे मनुष्य के पुत्रों में सबसे अभागे, क्या तू अब भी नींद से वंचित है? यही तेरा निवास स्थान है, और यहाँ तेरी पत्नी और एक पुत्र है, जिसे पाकर कोई भी मनुष्य ईर्ष्या करेगा।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हे देवी, तुमने जो कुछ भी कहा है, वह बिल्कुल सही है। यह बात मुझे परेशान कर रही है— इन निर्लज्ज पुरुषों को कैसे पकड़ूँ, जब मैं अकेला हूँ और वे महल में भरे पड़े हैं। एक और विचार है— और वह भी कहीं अधिक शक्तिशाली— यदि तुम्हारी और बृहस्पति की सहायता से मैं इन विवाह प्रस्तावकों को मार डालूँ, तो मैं स्वयं उसके बाद कैसे सुरक्षित रहूँगा? कृपया इस पर विचार करो।”
और इस प्रकार नीली आँखों वाली पल्लास ने कहा: “हे दुर्बल आत्मा! मुझसे कमतर मित्र पर, नश्वर जन्म वाले और कम दूरदर्शी मित्र पर भरोसा किया जा सकता है; परन्तु मैं देवी हूँ, और हर खतरे में तेरे जीवन की रक्षा करती हूँ। मैं स्पष्ट रूप से कहती हूँ, यदि पचास सशस्त्र दल हमारे चारों ओर इकट्ठा हो जाएँ, जो तेरा जीवन लेने के लिए उत्सुक हों, तो तू उन्हें, उनके झुंडों और लाड़-प्यार से भरी भेड़ों को बिना नुकसान पहुँचाए भगा सकता है। परन्तु सो जा। सारी रात जागकर पहरा देना सबसे अच्छा है।” अस्वस्थ। फिर भी, तुम्हें अपनी परेशानियों से एक सुखद परिणाम अवश्य मिलेगा।
उसने कहा, और उसकी पलकों पर नींद की छाया डालते हुए, वह तेजस्वी देवी ऊपर की ओर चल पड़ी, ओलंपस की ओर, जब उसने देखा कि नींद ने उसे जकड़ लिया है, उसे सारी चिंताएँ भुला दी हैं और उसके हर अंग को शिथिल कर दिया है। उसकी वफादार पत्नी अभी भी जाग रही थी, और सीधी बैठी अपने कोमल पलंग पर रो रही थी, और बहुत आँसू बहाने के बाद, उस तेजस्वी महिला ने डायना से इस प्रकार प्रार्थना की:
“हे महान देवी! डायना, बृहस्पति की संतान! काश तुम मेरे हृदय में ऐसा बाण भेज दो जो मेरी जान ले ले, या फिर कोई तूफान मुझे पकड़कर हवा के रास्तों से फेंक दे, और मुझे सागर की अशांत धाराओं में डाल दे, जैसे एक बार तूफान ने आकर पंडारस की बेटियों को बहा दिया था। देवताओं ने उनके माता-पिता को मार डाला था, और वे अपने महल में अनाथों की तरह अकेली रहती थीं, जहाँ उन्हें धन्य वीनस ने दूध, शहद और मीठी शराब पिलाकर पाला-पोसा, जबकि जूनो ने उन्हें बेजोड़ सुंदरता और बुद्धि प्रदान की। समस्त नारी जाति,
और पवित्र डायना, रूप की गरिमा,

और गेहूँ का आटा बनाने में लगी थीं— मनुष्य की शक्ति से। बाकी सब सो रहे थे; उनका काम पूरा हो चुका था; केवल एक स्त्री, जो वहाँ मौजूद अन्य सभी से कमज़ोर थी, काम करती रही। वह एक क्षण के लिए रुकी, घूमते हुए पत्थर को रोक दिया, और राजा के लिए एक शगुन के रूप में ये शब्द कहे:
“हे पिता बृहस्पति, देवताओं और मनुष्यों के राजा!
तूने अभी-अभी तारों भरे आकाश से गर्जना की है,
और फिर भी कोई बादल नहीं है। यहाँ किसी के लिए
यह एक अपशगुन है। हे मेरे लिए,
मेरी इस एक विनती को पूरा कर, मैं अत्यंत असहाय हूँ!
इस महल में उपस्थित सभी दूल्हों को आज अपना अंतिम और सुखद भोज करने दो— ये पुरुष जो निरंतर परिश्रम से मेरे अंगों को थका देते हैं,
उनके लिए अनाज पीसते-पीसते उनकी शक्ति छीन लेते हैं,
उन्हें एक बार यहाँ भोज करने दो, और फिर कभी नहीं।”
वह बोली; स्त्री के शब्दों का अपशगुन
और बृहस्पति की गर्जना यूलिसिस को बहुत भा गई;
और अब उसने सोचा कि उसे दोषियों से बदला लेना चाहिए। यूलिसिस के उस सुंदर महल की अन्य दासियाँ
जाग उठीं
और एक साथ आईं, और चूल्हे पर एक स्थिर आग जलाई। टेलेमाकस
देवता की तरह अपने पलंग से उठा,
अपने वस्त्र पहने, अपनी तीक्ष्ण तलवार
अपने कंधे पर टांगी, अपने सुंदर पैरों में सुडौल सैंडल बांधे, अपना विशाल भाला
उठाया, जिसकी नोक तेज पीतल की थी, और दहलीज पर पहुँचकर रुक गया,
और यूरिक्लेया से इस प्रकार बोला:—
प्रिय नर्स, क्या तुमने अपने अतिथि को सम्मानपूर्वक भोजन और आवास प्रदान किया है, या तुमने उसे बिना तुम्हारी देखरेख के कहीं और ठहरने की व्यवस्था करने दी है? मेरी माँ विवेकशील है, इसलिए वह अपने अतिथियों में से सबसे कम सम्मान का भी ध्यान रखती है, और श्रेष्ठ व्यक्ति को अनादरपूर्वक विदा करती है।

उसके साथ दो बकरी चराने वाले भी आए थे। गूंजते हुए बरामदे में उसने अपनी बकरियों को बाँधा। उसने वहाँ उल्व्सेस को देखा और उसे अपशब्दों से ताना मारा:
“अजनबी, क्या तू अब भी यहीं है, महल का विपत्ति,
और भीख मांग रहा है, और क्या तू कभी नहीं जाएगा?
मुझे लगता है कि यह झगड़ा तब तक खत्म नहीं होगा,
जब तक तू मेरी मुट्ठी का स्वाद चख न ले
यहाँ लगातार भीख मांगना ठीक नहीं है; यूनानियों के पास दूसरे त्यौहार होते हैं।”
उसने बोलना शुरू किया; यूलिसिस ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि चुपचाप अपना सिर हिलाया और भयानक बातों की योजना बनाने लगा।
अब फिलोएटियस, जो एक कुशल चरवाहा था, आया, और उसने दावेदारों के भोज के लिए एक ऐसी बछिया को लाया जिसने कभी दूध नहीं दिया था, और बकरियों को, झुंड की मोटी-ताज़ी बकरियाँ; वे उस नाव से आए, जिसे उन लोगों द्वारा लाया गया था जिनका काम एक किनारे से दूसरे किनारे तक आने-जाने वाले को ले जाना था। उसने अपने जानवरों को बरामदे में बाँध दिया, और जाकर सूअर चराने वाले के पास खड़ा होकर बोला:—
“हे सूअर चराने वाले, यह अजनबी कौन है जो अभी-अभी हमारे इस महल में आया है? किसके माता-पिता की संतान है, किस वंश का है और कहाँ का है? देखने में दुखी लगता है, फिर भी साक्षात राजा जैसा है। उन मनुष्यों का भाग्य अवश्य ही दुखद होगा जो पृथ्वी पर इधर-उधर भटकते हैं, जब देवता राजाओं को भी कष्ट देते हैं।”
उसने बात की, और अपना हाथ आगे बढ़ाकर यूलिसिस का अभिवादन करते हुए, बुलंद स्वर में कहा:—
“अजनबी और पिता, नमस्कार! और आशा है कि आने वाले वर्षों में तुम कम से कम सुखी रहोगे, यद्यपि अब तुम अनेक दुखों से घिरे हो। फिर भी, हे सर्वपिता बृहस्पति! तुम सभी देवताओं में सबसे कठोर हो, यहाँ तक कि उन देवताओं को भी नहीं छोड़ते जो तुमसे उत्पन्न हुए हैं, बल्कि उन्हें दुःख और पीड़ा देते हो। इस अजनबी को देखकर मेरे माथे पर पसीना आ जाता है, और मेरी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं जब मेरे मन में यूलिसिस की छवि लौट आती है, जो अब, मुझे लगता है, तुम्हारे जैसे फटे-पुराने कपड़ों में भटक रहा होगा।” मनुष्यों के

निवासों के बीच, यदि वह वास्तव में अभी भी जीवित है और सूर्य के मधुर प्रकाश को देखता है। लेकिन यदि वह मर चुका है, और प्लूटो के निवास में है, तो मुझे उसके लिए खेद है! निर्दोष मुखिया, जिसने मुझे बचपन में सेफलेन के खेतों में अपने सभी बैलों की देखभाल का जिम्मा सौंपा था; और अब वे असंख्य हैं; चौड़े माथे वाली मवेशियों की नस्ल मेरे अलावा किसी और की देखरेख में इतनी अधिक संख्या में कभी नहीं बढ़ती। अब दूसरे मालिक मुझे अपने बैल लाने के लिए कहते हैं। अपने भोज। वे उसके बेटे, महल के उत्तराधिकारी, पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते; वे देवताओं के प्रतिशोध से भी ज़रा कम डरते हैं; वे राजा की संपत्ति, जो इतने वर्षों से अनसुनी है, आपस में बाँटने के लिए तरसते हैं। लेकिन यह विचार बार-बार मेरे मन में आता है: जब तक बेटा जीवित है, मवेशियों को किसी दूसरे देश में ले जाना गलत होगा, जहाँ परदेसी रहते हैं; फिर भी इससे भी बुरा यह है कि मैं यहीं रुकूँ और दूसरे के बैलों की देखभाल करूँ, और इस लूट का बोझ उठाऊँ। और मैं बहुत पहले ही किसी उदार राजा के पास भाग गया होता, क्योंकि यह बंजर भूमि है। यह सहन करने योग्य नहीं है, लेकिन मैं अब भी अपने पीड़ित स्वामी के बारे में सोचती हूँ, और आशा करती हूँ कि वह लौटकर इन दावेदारों को यहाँ से भगा देंगे।
बुद्धिमान यूलिसिस ने उत्तर देते हुए कहा: “हे चरवाहे, क्योंकि तुम दुष्ट प्रवृत्ति के प्रतीत नहीं होते, न ही नासमझ, और मैं तुममें एक सुविचारित बुद्धि देखता हूँ, इसलिए मैं कहता हूँ, और अपनी गंभीर शपथ लेता हूँ— देवताओं में प्रथम बृहस्पति साक्षी रहे, और यह आतिथ्य सत्कारपूर्ण भोजन और भले यूलिसिस का चूल्हा, जिसने यहाँ मेरा स्वागत किया है—जब तक तुम इन कक्षों में हो, यूलिसिस निश्चित रूप से लौट आएगा, और यदि तुम देखना चाहो, तो तुम्हारी आँखें मारे गए उन प्रेमियों को देखेंगी, जो यहाँ स्वामी की भूमिका निभा रहे हैं।”
और इस प्रकार झुंडों के स्वामी ने उत्तर दिया:
“अजनबी, बृहस्पति तुम्हारे वचनों को पूरा करे!
तब तुम देखोगे कि मेरी भुजा में कितनी शक्ति है।”
यूमेअस ने सभी देवताओं से प्रार्थना की, कि अब बुद्धिमान यूलिसिस लौट आए। वे आपस में बातें करते रहे, जबकि अलग-अलग खड़े होकर, दावेदारों ने टेलीमाकस को मौत की सजा सुनाई, और उसकी जान लेने की योजना बनाई। तभी बाईं ओर से एक

पक्षी—एक चील—ऊपर उड़ता हुआ आया; उसके पंजों में एक डरपोक कबूतर था। और फिर एम्फिनोमस ने बाकी बातें कहीं:—
“हे मित्रों, टेलीमाकस को मारने की यह योजना विफल होनी ही चाहिए। अब हम भोज में चलें।”
अम्फिनोमस ने ऐसा कहा, और सबने उसकी बात पर ध्यान दिया और दिव्य यूलिसिस के महलों की ओर दौड़ पड़े, जहाँ उन्होंने अपने लबादे बेंचों और सिंहासनों पर रख दिए, और उत्तम भेड़ों, बूढ़ी बकरियों, सूअरों और झुंड से एक बछिया को मारकर, उनकी आंतों को भूनकर, प्रत्येक को एक-एक हिस्सा बाँट दिया। फिर उन्होंने बड़े कटोरे में शराब मिलाई। सूअर चराने वाला सबके लिए एक-एक प्याला लाया। फिलोएटियस, जो सेवकों में प्रमुख था, ने सुंदर पात्रों से प्रत्येक को रोटी दी। मेलेंथियस ने शराब परोसी। फिर सबने हाथ बढ़ाकर तैयार भोज में भाग लिया। एक बुद्धिमान योजना के तहत, टेलीमाकस ने पत्थर की दहलीज के पास, एक छोटी मेज के बगल में, एक साधारण सी सीट पर यूलिसिस को बिठाया, लेकिन उस मजबूत स्तंभों वाली इमारत की दीवारों के भीतर। उसने उसे वहाँ आंत का एक हिस्सा दिया, और उसके लिए सोने के प्याले में शराब उंडेली, और कहा:—
“यहाँ बैठो, और बाकियों के साथ अपनी शराब पियो, और इन अपमानों और हमलों से तुम्हारी रक्षा करना मेरा कर्तव्य होगा। क्योंकि यह घर सबका साझा स्वामित्व नहीं है; इसे सबसे पहले यूलिसिस ने प्राप्त किया था, और मेरे लिए — और तुम, हे दावेदारों, अपनी ज़ुबानों को ताने मारने से और हाथों को बल प्रयोग करने से रोको, अन्यथा क्रोध और कलह उत्पन्न हो जाएगी।”
उसने बोलना शुरू किया; जैसे ही दावेदारों ने उसे सुना, उन्होंने अपने होंठ दबा लिए, टेलीमाकस पर आश्चर्य करते हुए, जिसने इतने साहसी शब्द कहे। तब यूपेइथेस के पुत्र एंटिनोस ने अपने साथियों से इस प्रकार कहा:—
“हे यूनानियों, चाहे ये भाषण कितने भी कठोर क्यों न हों, आइए हम टेलेमाकस के इन भाषणों को सहन करें। वह बड़ी-बड़ी धमकियाँ देता है, लेकिन यदि शनिदेव ने अनुमति दी होती, तो हम इससे पहले, और इन्हीं सभाघरों में, अपने इस उद्दंड वक्ता को शांत कर देते।”
ऐसा प्रस्तावक ने कहा, लेकिन टेलीमाकस ने उसकी बात अनसुनी कर दी। फिर शहर में देवताओं के लिए एक पवित्र बलिदान लेकर दूत आए। लंबे बालों वाले लोग धनुर्धर देवता फोएबस के छायादार उपवन में उमड़ पड़े।

जब मांस भुनकर सीखों से उतारा गया और प्रत्येक को उसका हिस्सा दिया गया, तो उन्होंने खूब उत्सव मनाया। भोज में सेवा करने वाले पुरुषों ने यूलिसिस को, जहाँ वह बैठा था, अपने बराबर का हिस्सा दिया, क्योंकि उसके प्रिय पुत्र टेलीमाकस ने ऐसा ही आदेश दिया था।
फिर भी क्या पल्लास ने अभिमानी दूल्हों के दल को चुभने वाले ताने मारने से नहीं रोका, ताकि लेर्टेस के पुत्र की आत्मा को और भी गहरा आघात पहुँचे? उन दूल्हों में से एक नीच विचार वाला दुष्ट था; उसका नाम टेसिपस था और वह सामोस में रहता था। अपने पिता की संपत्ति पर भरोसा करते हुए, उसने लंबे समय से अनुपस्थित राजा यूलिसिस की पत्नी को रिझाने का प्रयास किया। उसने अपने अभिमानी साथियों से कहा:—
“हे महान दावेदारों, मेरी बात ध्यान से सुनो। इस अजनबी को भी बराबर का हिस्सा मिला है, जैसा कि उचित है; क्योंकि ऐसे भोज में, चाहे कोई भी अतिथि हो, जो टेलीमाकस के इस सुंदर महल में आए हैं, उन्हें अनदेखा करना न तो न्यायसंगत होगा और न ही उचित। मैं भी उसे आतिथ्य सत्कार का उपहार दूंगा, और वह बदले में इसे स्नानघर के रखवाले को, या यूलिसिस के घर में सेवा करने वाले किसी अन्य नौकर को दे सकता है।”
ऐसा कहते हुए, उसने अपने बलवान दाहिने हाथ से एक बैल का पैर फेंका, जिसे उसने पास ही रखे एक डिब्बे से निकाला था। यूलिसिस ने धीरे से अपना सिर झुकाया और वार से बचते हुए गंभीर मुस्कान दी। वह वस्तु ठोस दीवार से टकराई, और फिर टेलीमाकस ने उस दावेदार को इस प्रकार फटकारा:—
“सीटेसिपस, अच्छा हुआ कि तुम जान बचाकर भागे, तुमने अजनबी को नहीं मारा, जो खुद वार से पीछे हट गया; नहीं तो मैं तुम्हें अपने तीखे भाले से छेद देता। शादी की दावत के बजाय, तुम्हारे पिता यहाँ तुम्हारी अंतिम संस्कार की रस्में मनाते। अब से कोई भी इन हॉल में मेरी नज़रों में अभद्रता न करे, क्योंकि अब मेरी बुद्धि सही-गलत का भेद करने के लिए परिपक्व हो चुकी है। मैं हाल ही में बच्चा था, और अब यह सहना ही काफी है कि तुम हमारी भेड़ें मारो, हमारी शराब पियो, और हमारी रोटी खाओ—आखिर एक आदमी क्या कर सकता है? इतने सारे लोगों के खिलाफ? अन्याय और घृणा के इस तुच्छ युद्ध को बंद करो; लेकिन अगर तुम मेरी जान लेना चाहते हो, तो ठीक है; ऐसा करना बेहतर होगा। और मैं हिंसा से मरना पसंद करूँगा, बजाय इसके कि इन सबसे कायरतापूर्ण कृत्यों

को देखूँ— मेहमानों को भगा दिया जाए, और महिला नौकरानियों को इन सुंदर कमरों से क्रूर हमलावरों द्वारा घसीटा जाए।
उसने अपनी बात समाप्त की, और सभा में सभी लोग मौन बैठे रहे
जब तक कि दामास्टोर के पुत्र एगेलॉस ने बोलना शुरू नहीं किया:—
“हे मित्रों! यहाँ कोई भी व्यक्ति आलोचनात्मक शब्दों से उस बात का खंडन न करे जो इतनी सही कही गई है, और न ही उस अजनबी का अपमान करे, और न ही उन लोगों में से किसी का जो देवतुल्य मुखिया यूलिसिस के महल में उसकी सेवा करते हैं। मैं यह बात टेलीमाकस और उसकी माता से प्रेमपूर्वक कहना चाहता हूँ; आशा है कि यह उन दोनों को प्रसन्न करे! जब तक तुम्हारे हृदयों में यह आशा थी कि बुद्धिमान यूलिसिस लौट आएगा, तब तक रानी पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता था कि वह अविवाहित रही और महल में उससे प्रेम करने आए लोगों का विरोध किया। ऐसा करना बेहतर था, क्या वह फिर से घर आ गया था? लेकिन अब यह स्पष्ट है कि वह अब कभी नहीं आएगा। तो जाओ, टेलीमाकस, और अपनी माँ के पास बैठकर, उससे कहो कि वह अपने सबसे श्रेष्ठ प्रेमी से, और उस व्यक्ति से, जो सबसे कीमती उपहार लाता है, विवाह कर ले; और तुम अपने पिता की संपत्ति पर शांति से अधिकार रखो, और अपनी इच्छा अनुसार खाओ-पियो, जब तक कि वह कोई दूसरा घर न ढूंढ ले।
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“नहीं, एगेलॉस, मैं बृहस्पति की कसम खाता हूँ,
और अपने पिता के कष्टों की कसम खाता हूँ, जो मर चुके हैं,
या अभी भी इथाका से बहुत दूर भटक रहे हैं,
कि मैं अपनी माँ के चुनाव और विवाह में कोई देरी नहीं करूँगा। मैं सहमत हूँ कि वह जिसकी चाहे, उसकी पत्नी बने,
और जो सबसे अधिक प्रस्ताव दे। लेकिन मुझे उसकी इच्छा के विरुद्ध,
और अपवित्र बातों से उसे बाहर धकेलने में बहुत शर्म आएगी; भगवान न करे!” उसने यहीं पर अपनी बात समाप्त की, और पल्लास ने बोलते ही,
सभी दावेदारों को अथाह हंसी में डुबो दिया। वे वहाँ भटकते मन से बैठे थे; उन्होंने खून से सने निवाले निगले; उनकी आँखें आँसुओं से भरी थीं; उनके हृदय में विपत्ति का भय मंडरा रहा था।
तब देवतुल्य थियोक्लीमेनस ने कहा:—

“दुखी मनुष्यों! यह कैसी विपत्ति है जो तुम पर आ पड़ी है? तुम्हारा माथा और चेहरा, और तुम्हारे अंग अंधकार में डूबे हैं, और आहें उठ रही हैं, और तुम्हारे गालों पर आँसू हैं। खंभों के बीच की दीवारें और सभी सुंदर कंगनी खून से लथपथ हैं, बरामदा भरा है, ये हॉल भरे हुए हैं, परछाइयों से, जो अंधकार के बीच एरेबस की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। सूर्य आकाश से गायब हो गया है, और भयानक अंधकार सब कुछ ढक रहा है।”
उसने बोलना शुरू किया और वे ज़ोर से हँसे। पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने उत्तर में कहा:—
“अजनबी व्यर्थ की बातें कर रहा है; वह किसी दूर देश से आया है। हे नौजवानों, उसे द्वार से अंदर ले चलो और उसे बाज़ार भेज दो, क्योंकि यहाँ सब कुछ उसकी आँखों के लिए अंधकारमय है।”
तब देवतुल्य थियोक्लीमेनस ने कहा:
“यूरिमाकस, मैं तुमसे किसी मार्गदर्शक की अपेक्षा नहीं करता,
क्योंकि मेरे पास आँखें और कान हैं, और दो अच्छे पैर हैं,
और मेरे हृदय में उनके समान ही स्वस्थ मन है,
और इनकी सहायता से मैं अपना मार्ग स्वयं बनाऊंगा; क्योंकि मैं स्पष्ट रूप से एक आने वाली विपत्ति को देख रहा हूँ, जिससे यहाँ कोई भी दावेदार नहीं बच पाएगा—कोई भी नहीं जो इन महलों में महान सरदार यूलिसिस के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करता है, और निंदनीय योजनाओं में लीन रहता है।” उसने कहा, और उस आलीशान महल से जल्दी से निकलकर पीरियस आया, जिसके घर में उसका स्वागत हुआ। उसके जाते ही सभी दावेदार एक-दूसरे को देखने लगे, और टेलीमाकस को और चिढ़ाने के लिए उसके मेहमानों पर हंसने लगे। और फिर उनमें से एक उद्दंड युवक ने कहा:—
“तेलेमाकस, तुमसे बदतर मेहमान किसी के पास कभी नहीं आए। वह भटकता हुआ भिखारी कितना अभागा है, जो हमेशा रोटी और शराब के लिए तरसता रहता है, काम करने के लायक नहीं है, और उसमें कोई ताकत नहीं है; सचमुच, वह जिस धरती पर चलता है, उस पर एक बेकार बोझ है। दूसरा मेहमान पैगंबर बनने का नाटक करता है। अगर तुम मेरी सलाह मानो, जो मैं तुम्हारे भले के लिए दे रहा हूँ, तो उन्हें तुरंत कई चप्पू वाली नाव पर बिठा दो, और हम उन्हें यहाँ से सिसिली भेज देंगे; वे अच्छी कीमत लाएँगे।”

तो दावेदारों ने ऐसी बातें कीं, लेकिन उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और अपने पिता की ओर देखते हुए चुपचाप बैठा रहा, यह प्रतीक्षा करते हुए कि कब वह उस उद्दंड दल पर हाथ उठाएगा। इकारियस की बुद्धिमान पुत्री पेनेलोप एक भव्य आसन पर ठीक सामने बैठ गई और हॉल में बोलने वाले प्रत्येक व्यक्ति की बातें सुनने लगी। उन्होंने दोपहर का भोज हँसी-मज़ाक के साथ मनाया—यह एक शानदार और आनंदमय भोज था; मेजों को सजाने के लिए कई जानवरों की बलि दी गई थी; लेकिन कोई भी दावत
बाद वाली दावत से ज्यादा कड़वी नहीं हो सकती,
जिसमें देवी और वह वीर पुरुष
साजिशकर्ताओं के दोषी दल को जल्द ही विदा करेंगे।

पुस्तक XXI
यूलिसिस के धनुष का झुकना
पेनेलोप द्वारा अपने विवाह के लिए यूलिसिस के धनुष और बाणों से प्रतिस्पर्धा करने का प्रस्ताव - धनुष को मोड़ने के उनके निष्फल प्रयास - यूलिसिस द्वारा धनुष को प्राप्त करने का प्रबंधन, जिसे वह आसानी से मोड़ देता है, और इस उद्देश्य के लिए पंक्तिबद्ध बारह छल्लों के बीच से एक तीर चलाता है।
नीली आँखों की देवी पल्लास ने इकारियस की पुत्री, ऋषि पेनेलोप के मन में यह योजना जगाई— कि वह विवाह के इच्छुक पुरुषों के हाथों में धनुष और धूसर इस्पात की अंगूठियाँ थमा दे, और एक ऐसा खेल प्रस्तावित करे जो महल में नरसंहार का कारण बने। अतः वह हॉल से ऊपर की ऊँची सीढ़ी चढ़ी और अपने सुडौल हाथ में नक्काशीदार सुंदर चाबी ले ली; उसके कवच पीतल के बने थे और हैंडल हाथीदांत का था। शीघ्र ही वह अपनी दासियों के साथ सबसे दूर वाले कमरे में पहुँच गई। वहाँ यूलिसिस का खजाना पड़ा था—पीतल, सोना और दिव्य रूप से गढ़ा हुआ इस्पात। वहाँ उसका धनुष खुला पड़ा था; वहाँ उसका तरकश तीरों से भरा पड़ा था; उसमें कई घातक तीर थे, जो एक अजनबी का उपहार थे, जो उससे एक बार लेसेडेमोन में मिला था, जिसका नाम इफिटस था, यूरिटस का पुत्र, और उपस्थिति में देवताओं के समान। मेसेने में दोनों मिले, और ओर्सिलोचस के महल में, जो युद्धप्रिय था। वहाँ यूलिसिस आया था, आसपास के सभी क्षेत्रों से ऋण वसूलने के लिए। मेसेने से अपने जहाजों की ओर जाने वाले लुटेरे इथाका से तीन सौ भेड़ें और उनकी देखभाल करने वालों को भगा ले गए थे। यूलिसिस, जो अभी किशोर ही था, अपने पिता और अन्य सरदारों द्वारा भेजे गए एक दूत के रूप में उस लंबी यात्रा पर आया था। इफिटस अपने खोए हुए घोड़ों - बारह घोड़ियों और उनके साथ बारह हट्टे-कट्टे खच्चरों और उनके बच्चों की तलाश में आया था। इस यात्रा ने उसे मृत्यु का घाट उतार दिया। क्योंकि वह आया,
यात्रा करते हुए, हरक्यूलिस के निवास स्थान पर,
बृहस्पति के पराक्रमी वीर पुत्र,
अपने परिश्रमों के लिए प्रसिद्ध, जिसने अपने ही घर में,
अजनबी इफिटस का वध किया। निर्दयी!
जिसने देवताओं के प्रतिशोध का आदर नहीं किया,

और न ही अपने भोजन के प्रति अपने कर्तव्य का, जिस पर
उसने अपने अतिथि को रखा और बाद में उसका वध कर दिया,
और अपने अस्तबलों में सुंदर घोड़ियों को रखा। जब यह अतिथि अपने घोड़ों की तलाश कर रहा था, तभी उसकी मुलाकात यूलिसिस से हुई और उसने उसे वह धनुष भेंट किया, जिसे कभी शक्तिशाली यूरिटस धारण करता था। यूलिसिस ने अपने आलीशान महल में मरते हुए वह हथियार अपने पुत्र को दे दिया। यूलिसिस ने बदले में एक तीक्ष्ण तलवार और एक विशाल भाला दिया, जो उसके सौहार्दपूर्ण आतिथ्य का प्रतीक था। आतिथ्य की शुरुआत तो हुई, लेकिन तब तक जारी नहीं रही जब तक वे एक-दूसरे की मेज पर नहीं बैठ गए; क्योंकि बृहस्पति के पुत्र ने सबसे पहले उस व्यक्ति की जान ले ली जिसने धनुष दिया था, यूरिटस के देवतुल्य पुत्र की।

वह धनुष जिसे यूलिसिस, जब वह युद्ध में गया था
अपने काले गैली जहाजों में, कभी अपने साथ नहीं ले गया,
बल्कि उसे अपने महल में ही छोड़ दिया,
एक प्रिय मित्र की स्मृति में,
और केवल अपने ही राज्य में ले गया।
अब जब वह भव्य महिला कमरे में पहुँची, और ओक की लकड़ी से बनी दहलीज पर खड़ी हुई, जिसे कारीगर के कुशल हाथों ने चमकाया था, जिसने उस पर रस्सी बिछाई, उसके खंभे गाड़े और उसके चमकदार दरवाजे टांगे, तो उसने झट से अंगूठी को पकड़े हुए डोरी को ढीला कर दिया। चाबी डाली और सावधानीपूर्वक निशाना लगाकर कुंडी को जोर से बंद कर दिया। जैसे खेत में कोई बैल दहाड़ता है, वैसी ही ध्वनि के साथ सुंदर दरवाजे चाबी से टकराए और तुरंत खुल गए। वह ऊंचे तल पर चढ़ी, जहाँ सुगंधित वस्त्रों से भरा संदूक रखा था। रानी ने अपना हाथ बढ़ाकर, अपने चमकदार संदूक में लटके धनुष को नीचे उतारा, बैठ गई और संदूक को अपने घुटनों पर रखकर, धनुष को खींचकर, वह जोर-जोर से रोने लगी। जैसे ही आँसुओं का वह नया प्रवाह रुका, वह वापस हॉल में चली गई, और अपने साथ आए दूल्हों के उस गर्वित समूह के पास पहुँच गई, जिसके हाथ में बिना तार का धनुष और तरकश था, जिसमें कई घातक तीर पड़े थे। उसकी दासियाँ एक संदूक भी नीचे लाईं, जिसमें राजा द्वारा ऐसे खेलों के लिए प्रदान किया गया बहुत सारा पीतल और इस्पात रखा था। फिर वह तेजस्वी महिला, दूल्हों की उपस्थिति में, भव्य छत को सहारा देने वाले स्तंभों के पास खड़ी हो गई। उसने अपने

गालों के सामने एक चमकदार घूंघट रखा और उसके दोनों ओर एक-एक दासी विनम्रता से खड़ी होकर दूल्हों से इस प्रकार बोली:
“सुनो, हे महान दूल्हों! तुम जो इन महलों में भीड़ लगाए बैठे हो,
और दिन-रात खाते-पीते हो, जबकि मेरे पति बहुत समय से दूर हैं; इस सारी अधर्मिता का तुम्हारा एकमात्र बहाना यही है कि मैं दुल्हन बन जाऊं। तो आओ, अब एक प्रतियोगिता प्रस्तावित है। मैं तुम्हारे लिए वह शक्तिशाली धनुष लाई हूं जिसे महान यूलिसिस धारण करता था।
तुममें से जो भी इस धनुष को झुकाएगा और इन बारह छल्लों से होकर तीर चलाएगा, मैं उसके पीछे यहां से चली जाऊंगी और अपने बचपन के इस सुंदर निवास को छोड़ दूंगी,
इसकी सारी समृद्धि के साथ—हालांकि इसकी स्मृति, मुझे लगता है, यह मुझे सपनों में भी परेशान करेगा।
उसने कहा और सूअरों के स्वामी, हे भले यूमेअस को आदेश दिया कि वह सफ़ेद लोहे के धनुष और छल्ले, दूल्हों के दल के सामने रख दे। वह आँसुओं से भीगते हुए धनुष लेकर आया और उसे नीचे रख दिया। चरवाहा भी अपने स्वामी का धनुष देखकर रो पड़ा। एंटिनोअस ने ऊँची आवाज़ में दोनों को पुकारा और गुस्से से उन्हें डाँटा:
“हे मूर्ख देहाती, जो समय के आगे कभी नहीं देख सकते, क्यों उस महिला को आँसुओं से परेशान कर रहे हो जिसे अपने खोए हुए पति के लिए पहले से ही बहुत दुख है? चुपचाप बैठो और भोज में शामिल हो जाओ, या बाहर जाओ और धनुष छोड़ दो; यह हमारे लिए एक कठिन मुकाबला होगा, और जैसा कि मुझे लगता है, यह सुंदर धनुष आसानी से नहीं झुकेगा, क्योंकि निश्चित रूप से यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जैसा यूलिसिस था। मैंने उसे एक बार देखा था, जब वह बच्चा था, और मुझे वह अभी भी याद है।”
उसने बात की, फिर भी अपने मन में वह मानता था कि वह धनुष झुकाएगा और सभी छल्लों को भेदते हुए एक बाण चलाएगा। और फिर भी वह पहला व्यक्ति था जिसने स्टील का स्वाद चखा—महान सरदार यूलिसिस के हाथ से निकला एक तीर—जिसके साथ उसने उसके अपने महल में अन्याय किया था, और दूसरों को भी वैसा ही अन्याय करने के लिए प्रोत्साहित किया था। तब टेलीमाकस अपनी पवित्र शक्ति से उठा, और इस प्रकार शुरू हुआ:—

हाय! लगता है शनि के देवता बृहस्पति ने ही मुझे पागल कर दिया है। मेरी माँ बुद्धिमान होते हुए भी अपना घर छोड़ने और किसी और के पीछे जाने का वादा करती है, फिर भी मैं हँसता हूँ और अपने मूर्ख हृदय में प्रसन्न होता हूँ। तो आओ, क्योंकि ऐसी प्रतियोगिता प्रस्तावित है, हे दूल्हों! और ऐसी स्त्री के लिए भी। ग्रीस के सभी देशों में, आर्गोस, माइसेना, या पाइलोस के पवित्र तट, या स्वयं इथाका में, या मुख्य भूमि के अंधकारमय तट पर, ऐसा नहीं है। तुम इसे अच्छी तरह जानते हो; मैं अपनी माँ की प्रशंसा क्यों करूँ? तो आओ, सब लोग; अब देरी का कोई बहाना नहीं चलेगा, और धनुष को बिना आजमाए नहीं छोड़ेंगे, ताकि हम परिणाम देख सकें। मैं भी कोशिश करने को प्रेरित हूँ; और अगर मैं धनुष झुकाकर सभी छल्लों में तीर चला दूँ, तो मेरी दयालु माँ, मेरे बड़े दुख की बात है, अपना घर नहीं छोड़ेंगी, और किसी और के पीछे जाकर मुझे यहाँ नहीं छोड़ेंगी, हालाँकि मेरी वीरता अभी भी मुझे वे गौरवशाली पुरस्कार दिला सकती है जो मेरे पिता ने जीते थे।
वह बोला और उठकर अपने कंधों से बैंगनी चोगा उतारा और अपनी तीक्ष्ण तलवार एक तरफ रख दी; और सबसे पहले उसने लोहे के छल्लों को क्रम से लगाया, उनके लिए जमीन में एक लंबी खाई खोदी और उनके चारों ओर की मिट्टी को अच्छी तरह दबा दिया। सभी ने उसकी कुशलता की प्रशंसा की, क्योंकि उन्होंने पहले कभी ऐसा शिकार नहीं देखा था। फिर वह दहलीज पर खड़ा हुआ और धनुष चलाने का प्रयास किया; उसने तीन बार कोशिश की और तीनों बार असफल रहा, फिर भी उसे उम्मीद थी कि वह तीर चलाकर छल्लों को भेद पाएगा। चौथे प्रयास में वह धनुष उठा लेता, लेकिन पिता के इशारे पर उसने ऐसा नहीं किया, हालांकि वह प्रयास करने के लिए उत्सुक था। और फिर उस राजकुमार युवक ने दूल्हों से इस प्रकार कहा:
“खैर, यह तो अजीब बात है! शायद मैं आगे चलकर कायर और कमजोर साबित हो जाऊं, या शायद मैं अभी बहुत छोटा हूं, और अपने हाथ पर भरोसा नहीं कर सकता कि मैं उस आदमी के खिलाफ सही बचाव कर सकूं जिसने सबसे पहले मुझ पर हमला किया। तो आओ, तुम सब जिनकी ताकत मुझसे कहीं अधिक है, और धनुष चलाकर देखो, और इस लड़ाई को खत्म करो।”
उसने बात की, और धनुष को दीवार के चिकने और मजबूत पैनलों के सहारे टिकाकर, और तीर को धनुष के सुंदर वक्र पर रखकर, उसने फिर से उस सिंहासन पर अपना स्थान ग्रहण किया जिससे वह उठा था। फिर यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोस ने सभी दावेदारों की भीड़ से कहा:—

“मेरे मित्रों, एक-एक करके उठो, दाएं से बाएं।
वहीं से शुरू करो जहां से शराब डालने वाला शुरू करता है।”
एंटिनोस ने ऐसा कहा, और बाकी सबने सहमति जताई। फिर ओएनॉप्स का पुत्र लियोडेस सबसे पहले उठा। वह उनका भविष्यवक्ता था, और हमेशा विशाल कटोरे के पास बैठता था। बुरे कामों से घृणा से वह कांपता था, और सभी दावेदारों के प्रति बहुत क्रोधित था। उसने धनुष और बाण उठाया, और दहलीज पर जाकर खड़ा हो गया। उसने धनुष को आजमाया, लेकिन उसे झुका नहीं सका; इससे उसके हाथों में दर्द हुआ, क्योंकि वे कोमल थे, और ऐसे काम के लिए बिल्कुल भी अभ्यस्त नहीं थे। अंत में उसने कहा:
“हे मित्रों, मैं इसे नहीं झुकाता; किसी और हाथ को इसे आज़माना होगा। यह धनुष, इसी स्थान पर, कई राजकुमारों की सांसें छीन लेगा। और इस तरह मरना कहीं बेहतर है, बजाय इसके कि जीते जी उस उद्देश्य में असफल हो जाएं जिसके लिए हम इस स्थान पर आते हैं और प्रतिदिन एकत्रित होते हैं। कई ऐसे हैं जिनकी इच्छा और आशा यूलिसिस की संगिनी पेनेलोप से विवाह करने की प्रबल है; लेकिन जैसे ही वह इस वीर के धनुष को देखेगा और आज़माएगा, उसे विवाह उपहारों से लंबी पोशाक वाली स्त्रियों में से किसी और को पाने की कोशिश करनी चाहिए।” अचैया की पुत्रियाँ। उसे रानी को छोड़कर उस दूल्हे से विवाह करने के लिए छोड़ दिया जाए जो उसके लिए सबसे कीमती उपहार लाए, और जिसे भाग्य ने चुना हो।
उसने बात की, और धनुष को दीवार के चिकने और मजबूत पैनलों के सहारे टिका दिया, और तीर को धनुष के सुंदर वक्र पर टिका दिया, फिर वह उसी सिंहासन पर फिर से बैठ गया जिससे वह उठा था। तब एंटिनोस ने बात संभाली और उत्तर देते हुए उसे इस प्रकार फटकारा:
“हे लियोडेस, ये कैसे शब्द हैं जो तेरे होठों से निकले हैं? कठोर और डरावने शब्द—कि यह धनुष यहाँ अनेक राजकुमारों की साँसें छीन लेगा, और वह भी इसलिए कि तुझमें इसे झुकाने की शक्ति नहीं है? तेरी दयालु माता ने तुझे धनुष खींचने और बाण चलाने के लिए जन्म नहीं दिया, परन्तु अन्य कुलीन दूल्हों का दल यहाँ है, जिनके द्वारा यह धनुष अभी झुकाया जाएगा।”
तब बकरियों के रखवाले मेलेंथियस को एंटिनोअस ने यह आदेश दिया: “मेलेन्थियस, यहाँ महल में जल्दी से आग जलाओ, और उसके सामने एक आसन रखो। आसन पर एक ऊनी चादर रखो, और हमारे लिए भीतर से चर्बी का एक बड़ा टुकड़ा लाओ,

ताकि हम नौजवान उसे गर्म करके और मालिश करके धनुष को नरम कर सकें, रस्सी खींच सकें और लड़ाई खत्म कर सकें।”
उसने बात की; मेलेंथियस ने तुरंत एक धधकती आग जलाई, और उसके पास एक आसन रखा, और आसन पर एक ऊन रखा, और उसके भीतर से वसा का एक बड़ा लोथ निकाला, जिससे युवकों ने उसे गर्म करके धनुष पर लेप लगाया और कोशिश की, लेकिन उसे मोड़ नहीं सके, क्योंकि वह ऐसे करतब के लिए बहुत कमजोर था। एंटिनोअस अलग रहा, वह और देवतुल्य युवक यूरिमाचस, दो राजकुमार जो शक्ति में बाकियों से श्रेष्ठ थे।
इसी बीच यूलिसिस का चरवाहा महल से निकल गया, और उसके साथ सूअर चराने वाला भी चला गया, और उनके पीछे यूलिसिस भी। जब वे सब महल के द्वार और प्रांगण के बाहर आ गए, तब यूलिसिस ने उनसे बात की और विनम्रता से कहा:—
“हे चरवाहे और सूअर चराने वाले, क्या मैं तुमसे कुछ कहूँ, या इसे छुपा कर रखूँ? मेरा हृदय इसे कहने के लिए प्रेरित करता है। यदि यूलिसिस किसी देवता के नेतृत्व में अचानक आ जाए, तो उसे तुमसे क्या सहायता मिलेगी? क्या तुम उसका साथ दोगे, या अन्य दावेदारों का? खुलकर बोलो; और मुझे बताओ कि तुम्हारा हृदय क्या करने को कहता है।”
तब चरवाहों के रखवाले ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“हे पिता बृहस्पति! क्या तू मेरी इच्छा पूरी कर सकता है,
और किसी देवता को उसे यहाँ ले आने दे, तब
पता चलेगा कि इन हाथों में कितनी शक्ति है!”
इसलिए यूमेअस ने भी सभी देवताओं से प्रार्थना की कि बुद्धिमान यूलिसिस शीघ्र लौट आएं; और जब प्रधान देवता ने उनके हृदय के विचार और उद्देश्य को उसकी संपूर्ण सत्यता में जान लिया, तो उसने कहा:—
तो जान लो, मैं स्वयं वही हूँ, घर पर
बीसवें वर्ष में लौटकर,
और अनेक कष्टों के बाद, उस भूमि पर
जहाँ मेरा जन्म हुआ था। मैं जानता हूँ कि मैं आ गया हूँ
मेरे सभी सेवकों में से केवल तुम्हारा ही स्वागत है
क्योंकि मुझे किसी और की प्रार्थना नहीं सुनाई देती
मेरे लौटने की। तो सुनो, मैं आगे क्या करने का वचन देता हूँ
यदि कोई देवता मेरे लिए इन अभिमानी दावेदारों पर विजय प्राप्त कर ले, तो

मैं तुममें से प्रत्येक को एक पत्नी और भूमि दूँगा, और प्रत्येक के लिए मेरे पास एक घर बनाऊँगा
और तुम टेलेमाकस के मित्र और भाई बनोगे। इसके बाद से। और अब, ताकि आप निश्चित रूप से जान सकें
और मुझ पर भरोसा करें, मैं यहाँ एक निशान दिखाऊंगा—
एक निशान जो कभी एक जंगली सूअर के सफेद दांत ने बनाया था, जब बहुत पहले, पारनासियन पर्वत पर,
मैंने ऑटोलिकस के बेटों के साथ शिकार किया था।”
ऐसा कहकर उसने चौड़े घाव से अपने आवरण के कपड़े हटाए; उन्होंने देखा और उसे अच्छी तरह पहचान लिया, और रोने लगे, और यूलिसिस के चारों ओर अपनी बाहें डाल दीं, और उस आलिंगन में नायक के सिर और कंधों को चूमा, जबकि यूलिसिस ने भी उनके सिर और हाथों को चूमा। उनके रोने पर सूरज डूब जाता, अगर वह न होता। उसने कहा:—
“अब आँसू बहाओ, कहीं ऐसा न हो कि हॉल से कोई हमें देख ले और हमारे बारे में अंदर बता दे। अब चलो, अकेले नहीं— मैं पहले, और तुम उसके बाद, एक-एक करके, और यह संकेत हो: बाकी सब— घमंडी दावेदार— मुझे धनुष और तरकश देने से मना कर देंगे। जब तुम इसे लेकर आओ, मेरे नेक दोस्त यूमेअस, हॉल से होते हुए, इसे मेरे हाथों में रखो, और स्त्रियों को आदेश दो कि वे मजबूत दरवाजे बंद कर दें; और फिर अगर उनमें से कोई भी अंदर से पुरुषों की कराह या कोई और आवाज सुने, उसे बाहर न निकलने दो, बल्कि चुपचाप अपना काम जारी रखने दो। इस बीच, हे मेरे प्यारे फिलोएटियस, यह तुम्हारी जिम्मेदारी हो कि तुम एक चाबी से दरबार के द्वार बंद कर दो और जंजीर लगा दो।
इस प्रकार कहने के बाद, वह उस भव्य भवन में फिर से प्रवेश कर गया और उस आसन पर बैठ गया जिससे वह अभी उठा था, और उसके बाद, बारी-बारी से, उस देवतुल्य मुखिया के सेवक प्रवेश कर गए।
यूरिमाकस धनुष के साथ व्यस्त था, उसे आग के सामने घुमाकर और दोनों तरफ से गर्म कर रहा था। वह उसे इस तरह मोड़ नहीं पा रहा था। उसके घमंडी हृदय से एक गहरी आह निकली, और वह बहुत परेशान होकर उदास होकर बोला:—
हाय! यहाँ सचमुच बहुत बड़ा दुःख है मेरे लिए और सबके लिए। ऐसा नहीं है कि मैं दुल्हन के खोने का इतना शोक मना रहा हूँ, हालाँकि यह भी मुझे दुखी करता है—अभी भी अचेयन वंश की कई सुंदर महिलाएं बची हैं, इथाका के समुद्री तटों

और अन्य क्षेत्रों में—लेकिन अगर हम अपनी शक्ति में महान यूलिसिस से इतने कमज़ोर पाए गए कि हम उनके धनुष को झुका नहीं सकते, तो हमारे पुत्र इसे शर्म से सुनेंगे।
यूपेइथेस के पुत्र, एंटिनोअस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“ऐसा नहीं, यूरिमाकस, जैसा कि तुम स्वयं
जानते हो। आज लोगों द्वारा फोएबस का एक भव्य उत्सव मनाया जा रहा है। आज कौन धनुष उठाएगा? नहीं, इसे शांति से एक तरफ रख दो,
और सभी छल्लों को अभी की तरह रहने दो;
क्योंकि मुझे लगता है कि कोई भी व्यक्ति लार्टेस के पुत्र के महल में आने और उन्हें ले जाने का साहस नहीं करेगा। जो प्याला उठाए हुए है, वह शराब परोसना शुरू करे, ताकि देवताओं को कुछ अर्पित करने के बाद, हम धनुष को नीचे रख दें,
और भोर होते ही मेलेंथियस आए—बकरी चराने वाला—अपने झुंड से उत्तम बकरियों को लाए, ताकि हम उनकी जांघों को जलाकर धनुर्विद्या के देवता अपोलो को भेंट चढ़ा सकें। फिर हम दोबारा धनुष चलाएंगे और प्रतियोगिता समाप्त करेंगे।
एंटिनोस ने ऐसा कहा, और सबने सहमति जताई। फिर दूत आए, और उन्होंने दावेदारों के हाथों पर पानी डाला; युवकों ने दाहिनी ओर से शुरू करते हुए प्यालों में शराब भर दी, और प्रत्येक को उसका हिस्सा दिया; और जब सबने अपना-अपना हिस्सा डाल दिया, और प्रत्येक ने पी लिया, तो चतुर यूलिसिस ने धूर्तता से दावेदारों के समूह से कहा:—
“हे महान रानी के चाहने वालों, सुनो, मेरे हृदय में जो कुछ भी कहने की प्रेरणा है, मैं वही कहूँगी; परन्तु विशेष रूप से मैं यूरिमाकस से विनती करती हूँ, और एंटिनोस से, जिसने धनुष को त्यागकर देवताओं पर भरोसा करने की अच्छी सलाह दी है। कल फोबस जिसे चाहेगा उसे आवश्यक शक्ति प्रदान करेगा; परन्तु मुझे वह चमकीला धनुष लेने दो, और तुममें से यह जानने की कोशिश करने दो कि क्या इन कभी कोमल अंगों में निवास करने वाली शक्ति अब भी उनमें शेष है, या सौभाग्य से वह मुझसे दूर हो गई है।” भटकना और अभावों भरा जीवन। उसने बोलना शुरू किया, और सभी क्रोध से भर उठे, क्योंकि उन्हें डर था कि वह धनुष को झुका देगा, और इस प्रकार एंटिनोस ने क्रोध में कहा:—

“हे निकम्मे आवारा, बुद्धि की एक चिंगारी से भी रहित, क्या तू सबसे घमंडी लोगों के साथ बैठकर भोज में शामिल होकर संतुष्ट नहीं है, जहाँ भोज का कोई भी अंश तुझसे नहीं बचता, और वह सब कुछ सुनता है जो हम कह रहे हैं, जिसे किसी अन्य व्यक्ति, अजनबी और भिखारी को भी सुनने की अनुमति नहीं है! यह अच्छी शराब तुझे मूर्ख बना देती है, जैसे शराब अक्सर उन लोगों को मूर्ख बना देती है जो इसे लालच से पीते हैं, और उचित संयम नहीं बरतते। इसने एक बार विशाल आत्मा वाले पिरिथौस के महलों में प्रसिद्ध सेंटॉर यूरिटियन को पागल कर दिया था। वह आया था लैपिथाई लोगों के बीच, और जब शराब के नशे में चूर होकर वह पागल हो जाता था, तो उन्हीं महलों में उसने गैरकानूनी काम किए। वीर क्रोधित हो गए। वे उस पर टूट पड़े, उसे बरामदे से घसीटकर बाहर ले गए, और वहाँ उसकी नाक और कान काट दिए। वह अभी भी उन्माद में था, और अपने मन की व्याकुलता में अपना दंड सहते हुए चला गया, जिससे सेंटॉर और मनुष्यों के बीच युद्ध छिड़ गया; फिर भी निश्चित रूप से उसने शराब के नशे में चूर होकर खुद पर बुराई बुलाई थी। मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि अगर तुम पर ऐसी भयानक विपत्ति आएगी। तुम्हें यह धनुष झुकाना चाहिए,
और तुम यहाँ लोगों के बीच कृपा की आशा नहीं कर सकते। हम तुम्हें शीघ्र ही, एक काले जहाज में, राजा एचेटस के पास भेजेंगे,
जो मानव जाति का शत्रु है, जिससे
तुम बच नहीं पाओगे। इसलिए, शांति से अपनी शराब पियो, और युवाओं से झगड़ा मत करो।
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “सचमुच, एंटिनोअस, यह तुम्हें शोभा नहीं देता, और न ही उचित है कि तुम उन अजनबी मेहमानों को परेशान करो जो टेलेमाकस के महल में आए हैं। क्या तुम सोचते हो कि अगर यह अजनबी, अपनी भुजाओं की महान शक्ति पर गर्व करते हुए, उस शक्तिशाली धनुष को झुका ले जिसे कभी यूलिसिस ने धारण किया था, तो वह मुझे दुल्हन बनाकर यहाँ से ले जाएगा? उसके मन में इसकी कोई आशा नहीं है, और तुममें से कोई भी, जो यहाँ भोज में शामिल हो, उसे इस तरह का विचार परेशान न करने दे; यह असंभव है।”
तब रानी को, पॉलीबस के पुत्र यूरिमाकस ने उत्तर दिया: “हे इकारियस की बुद्धिमान पुत्री, हमें इस बात का भय नहीं है कि यह पुरुष तुम्हें यहाँ से दुल्हन के रूप में ले जाएगा; ऐसा संभव नहीं है। हम पुरुषों और स्त्रियों दोनों के वचनों से भयभीत हैं। अचेयन जाति का सबसे नीच व्यक्ति भी कहेगा:

‘ये पतित पुरुष हैं, जो एक गौरवशाली सरदार की पत्नी से विवाह करना चाहते हैं, जिनमें से एक भी उसके धनुष को खींच नहीं सकता; और अब एक भटकता हुआ भिखारी आता है, जो आसानी से धनुष खींचता है, और सभी छल्लों को भेदते हुए एक तीर भेजता है। वे इस प्रकार बोलेंगे,
और यह हमारे लिए शर्म का कारण होगा!
फिर ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया: “यूरिमाकस, यह संभव नहीं है कि वे लोग प्रशंसा के पात्र हों जो एक अत्यंत योग्य व्यक्ति के धन को लूटते हैं और उसके घर पर कलंक लगाते हैं। अजनबी का शरीर बलवान और सुगठित है; वह अपने कुलीन वंश का होने का दावा करता है। अब उसे धनुष उठाने दो, और हम परिणाम देखेंगे; लेकिन यह मैं प्रतिज्ञा करती हूँ, और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगी, यदि वह इसे झुका दे—यदि अपोलो उसे वह गौरव प्रदान करे—तो उसे मुझसे एक कुर्ता और एक लबादा, दोनों ही सुंदर वस्त्र मिलेंगे।” और एक तेज भाला, कुत्तों और मनुष्यों दोनों से बचाव के लिए, इसके अलावा एक दोधारी तलवार, और पैरों के लिए सैंडल, और मैं उसे वहाँ भेजने का वचन देता हूँ जहाँ वह जाना चाहता है।
तब बुद्धिमान टेलीमाकस ने फिर कहा: “माँ, पूरे अचैया में कोई भी ऐसा नहीं है जिसके पास मुझसे अधिक शक्ति हो, जो मुझे धनुष दे सके या मना कर सके। इथाका के ऊबड़-खाबड़ तट पर शासन करने वालों में से कोई भी, या उन द्वीपों में जहाँ एलिस अपनी घोड़ियों का पालन-पोषण करती है, मेरी इच्छा को विफल करने के लिए हस्तक्षेप नहीं कर सकता, यदि मैं उस अजनबी को धनुष दे दूँ और उसे अपने साथ ले जाने का आदेश दूँ। हे रानी, अपने कुटिया में लौट आओ; अपने घरेलू कामों, तकली और बुनाई पर ध्यान दो, और अपने युवतियाँ काम में तेज़ी लाती हैं। धनुष पुरुषों का है, और सबसे ज़्यादा मेरा; क्योंकि यहाँ, इन दीवारों के भीतर, अधिकार मेरा है।
रानी, चकित होकर, उसकी बातें सुनकर पीछे हट गई, लेकिन अपने बेटे के ज्ञानवर्धक वचनों को अपने हृदय में संजोए रखा। फिर अपनी कुटिया में, अपनी दासियों के बीच, वह अपने प्रिय स्वामी यूलिसिस के लिए तब तक रोती रही, जब तक नीली आँखों वाली पल्लास नहीं आई और उसकी पलकों पर नींद का मरहम नहीं लगाया।

इसी बीच, योग्य सूअर चराने वाला हाथ में धनुष लिए हुए था, और महल के सभी गलियारों में उसके चाहने वालों का दल उसे जोर-जोर से ताने मार रहा था, और उनमें से एक अभिमानी युवक ने कहा:—
“हे अनाड़ी सूअर चराने वाले, तू अपने टेढ़े धनुष के साथ कहाँ जा रहा है? तेरे अपने ही फुर्तीले कुत्ते जिन्हें तूने पाला है, तुझे जल्द ही खा जाएँगे, मनुष्यों से दूर और तेरे सूअरों के झुंड के बीच, अगर हमें फोएबस और अन्य अमर देवताओं की कृपा प्राप्त हो।”
उनके शब्द कुछ इस प्रकार थे; चरवाहा जहाँ खड़ा था, डर के मारे उसने धनुष नीचे रख दिया, क्योंकि हॉल में अनेक आवाज़ें उसे पुकार रही थीं। दूसरी ओर से टेलीमाकस धमकी भरे शब्दों में चिल्लाया:—
“नहीं, पिता, धनुष चलाते रहो, और हर किसी के आदेश पर रुकने की मत सोचो; कहीं ऐसा न हो कि मैं, यद्यपि तुमसे छोटा हूँ, तुम पर पत्थर फेंकूँ, और तुम्हें खेतों में भगा दूँ, क्योंकि मैं बल में तुमसे श्रेष्ठ हूँ। काश, मैं इन महलों में उपस्थित सभी दूल्हों से शस्त्र बल में श्रेष्ठ होता, तो मैं महल के द्वार से उन अनेकों को खदेड़ देता जो अब बुराई की योजना बना रहे हैं।” उसने बात की, और सभी ने दिल खोलकर हँसते हुए उसके शब्दों को सुना, और उनके कारण राजकुमार के प्रति अपना क्रोध कुछ देर के लिए शांत होने दिया। सूअर चराने वाला आगे बढ़ा, हॉल में, और बुद्धिमान यूलिसिस के पास पहुँचकर, उसने धनुष उसके हाथों में दे दिया; और फिर उसने नर्स, डेम यूरिक्लेया को एक तरफ बुलाया, और उससे इस प्रकार कहा:—
“ऋषि यूरिक्लेया, टेलीमाकस की ओर से
मैं तुम्हें आदेश देती हूँ कि तुम ठोस दरवाजों को मज़बूती से बंद कर दो, और फिर, यदि कोई दासी अंदर से किसी पुरुष की कराह या अन्य शोर सुने,
तो वह बाहर न निकले, बल्कि चुपचाप
अपने काम को जारी रखे और अपनी जगह पर बनी रहे।”
उसने बात की, और उसके शब्द व्यर्थ नहीं गए। उस महिला ने उस भव्य हॉल के दरवाज़े बंद कर दिए, जबकि फिलोएटियस चुपचाप बाहर निकला और ऊँची दीवारों वाले प्रांगण के द्वार बंद कर दिए। बाइब्लोस की नाव का एक तार बरामदे के नीचे पड़ा था—यह कभी एक गैली (नाव) के रूप में इस्तेमाल होता था—और इसी से चरवाहे ने द्वारों को बाँध दिया, और लौटकर उसी स्थान पर बैठ गया जहाँ से वह उठा था, लेकिन उसकी नज़र हमेशा अपने स्वामी पर टिकी रही। इस बीच,

यूलिसिस ने धनुष को थामे रखा और उसे घुमाते हुए, ध्यान से उसके हर तरफ का निरीक्षण किया और बारी-बारी से हर भाग को परखा, इस डर से कि कहीं दूर रहने के दौरान कीड़े धनुष के सींग को छेद न दें। इस पर, दावेदारों में से एक युवक ने अपने पड़ोसी की ओर मुड़कर कहा:—
“देखो, एक निरीक्षक और धनुषों का पारखी!
शायद उसके घर में ऐसा ही धनुष हो,
या फिर वह ऐसा ही एक धनुष बना लेगा। वह कैसे इधर-उधर भागता है
व्यस्त हाथों वाला वह व्यक्ति—
वह आवारा, धूर्ततापूर्ण चालों में माहिर!”
फिर एक और उद्दंड युवक ने कहा:
“ईश्वर करे कि वह हर बात में उतना ही भाग्यशाली हो जितना अब है, जब वह उस धनुष को झुकाने की कोशिश करेगा!”
उनकी बातें कुछ इस प्रकार थीं; परन्तु जब सतर्क सरदार ने संभलकर शक्तिशाली धनुष का चतुराई से निरीक्षण किया, तब, जैसे कोई गायक वीणा बजाने में निपुण हो, भेड़ की मुड़ी हुई आंतों से बनी डोरी को उसके नए बंधनों पर सहजता से फैलाता है, उसी सहजता से यूलिसिस ने उस शक्तिशाली धनुष को झुकाया। उसने अपने दाहिने हाथ से डोरी खींची; वह झनझनाई, वैसी ही स्पष्ट ध्वनि के साथ जैसे कोई अबाबील चीखती है। सभी दावेदार भयभीत हो गए और उनका चेहरा पीला पड़ गया। बृहस्पति ने आकाश से गर्जना करते हुए एक संकेत दिया। लंबे समय तक धैर्य रखने वाले सरदार यूलिसिस ने चतुर शनि के पुत्र द्वारा भेजे गए शुभ संकेत को सुनकर प्रसन्नता से कहा, "उसने एक पंखदार तीर उठाया, जो उसके सामने एक मेज पर रखा था; बाकी तीर अभी भी तरकश में थे; यूनानियों को अभी उन्हें महसूस करना बाकी था।" उसने इसे सावधानीपूर्वक धनुष के मध्य में रखा और अपनी ओर, ठीक उसी स्थान पर जहाँ वह बैठा था, डोरी और तीर का खांचा खींचा, और ठीक विपरीत दिशा में निशाना साधते हुए तीर छोड़ दिया। उसका एक भी तीर नहीं चूका। पहले से आखिरी तक
पीतल की नोक वाला तीर हर एक को भेद गया।
तब यूलिसिस ने टेलीमाकस से कहा:—
“तेलेमाचस, यहाँ बैठे अजनबी ने तुम्हारा अपमान नहीं किया है। न तो मैंने अंगूठियाँ खोई हैं, न ही धनुष को मोड़ने में मुझे कठिनाई हुई है; न ही मेरी मर्दाना ताकत कम हुई है, जैसा कि ये लोग, जो मुझे अपमानित करना चाहते हैं,

दावा करते हैं; और अब वह समय आ गया है जब हम अचाइयों के लिए रात्रिभोज तैयार करें, जब तक दिन बाकी है, और रात्रिभोज के बाद गीत और वीणा का आनंद लें, जो किसी भी दावत की शोभा बढ़ाते हैं।”
उसने बात की और अपने प्रिय पुत्र टेलीमाकस को सिर हिलाकर इशारा किया, जिसने अपनी तीक्ष्ण तलवार कमर में बाँधी और अपना भाला हाथ में लिया, और युद्ध के लिए चमकीले पीतल से लैस होकर आया और अपने पिता के आसन के पास खड़ा हो गया।

पुस्तक XXII
दूल्हों की मृत्यु
यूलिसिस के धनुष से निकले तीर से एंटिनोअस मारा गया, जिसने अब स्वयं को घोषित किया और नरसंहार शुरू कर दिया—टेलीमाकस द्वारा उसे, यूमेअस और फिलोएटियस को हथियार दिए गए—महोदय के लिए चरवाहे मेलेंथियस द्वारा सभी दावेदारों को हथियार दिए गए—पल्लास मेंटर के रूप में प्रकट हुईं—सभी दावेदारों की मृत्यु हो गई—मेडोन और फेमियस को बख्श दिया गया— विश्वासघाती सेविकाओं को फांसी दे दी गई।
तब यूलिसिस ने अपने फटे-पुराने वस्त्र उतार फेंके, और दहलीज पर कूदकर, धनुष और तरकश में तीर भरकर खड़ा हो गया। वीर ने अपने पैरों पर तीरों की बौछार कर दी और प्रेम प्रस्तावकों को पुकारा:—
“वह कठिन संघर्ष समाप्त हो गया है। अब मैं एक और लक्ष्य साधूँगा, जिसे अभी तक किसी ने नहीं भेदा है। अब मैं देखूँगा कि क्या मैं अपना लक्ष्य प्राप्त कर पाता हूँ, और फोएबस की सहायता से प्रसिद्धि प्राप्त करता हूँ।”
वह बोला; और मुड़कर, एंटिनोअस पर उसने अपना घातक बाण साधा—एंटिनोस, जिसने उस समय सोने का एक सुंदर दो कान वाला प्याला पकड़ा हुआ था, और शराब पीने ही वाला था। उसे घावों और मृत्यु का ज़रा भी आभास नहीं था; क्योंकि भला कौन, अपने साथियों के बीच भोज करते हुए, यह सोच सकता था कि कोई अकेला इतने सारे लोगों के विरुद्ध, चाहे कितना भी साहसी क्यों न हो, अपनी मृत्यु की योजना बनाएगा, और अपने ऊपर भाग्य का प्रकोप लाएगा? यूलिसिस ने तीर से एंटिनोअस के गले पर वार किया। तीर का सिरा उसकी कोमल गर्दन के पीछे से आर-पार हो गया, और वह एक तरफ़ ज़मीन पर गिर पड़ा; उसके हाथ से प्याला छूट गया; घायल व्यक्ति की नाक से गाढ़ा, गर्म खून बह निकला। उसने अपने पैरों से मेज को लात मारी और भोजन बिखर गया; रोटी और भुना हुआ मांस फर्श पर फेंक दिया गया, जो दूषित हो गया था। फिर गिरे हुए व्यक्ति को देखकर सभी दावेदार शोर मचाते हुए उठ खड़े हुए; वे सभी अपनी-अपनी सीटों से उठकर पूरे हॉल में फैल गए और विशाल दीवारों की ओर उत्सुकता से देखने लगे; वहाँ न तो कोई ढाल लटकी थी, न ही उनके लिए कोई मजबूत भाला। उन्होंने क्रोध भरे शब्दों में यूलिसिस को पुकारा:—

“अजनबी! इस विपत्ति में तूने मनुष्यों पर आक्रमण करने का साहस किया है; और अब तू किसी और संघर्ष में भाग नहीं लेगा। तेरा विनाश निकट है। तेरे हाथों ने इथाका के सबसे श्रेष्ठ युवक का वध किया है। इसके लिए गिद्ध तेरा मांस नोंच डालेंगे।”
तब सबने यही कहा; उन्हें लगा कि उसने जानबूझकर उस प्रेमी की हत्या नहीं की थी; और वे, अपनी अंधता के कारण, उस भयानक विपत्ति को भी नहीं देख पाए जो उस घड़ी उन सब पर मंडरा रही थी। फिर बुद्धिमान यूलिसिस ने भौंहें चढ़ाकर उनकी ओर देखा और कहा:—
“कुत्तों! तुमने सोचा था कि मैं इलियम के तट से कभी वापस नहीं आऊंगा, इसलिए तुमने यहाँ मेरी सारी संपत्ति हड़प ली, मेरी दासियों पर अत्याचार किया और मेरी पत्नी का पीछा किया जैसे प्रेमी करते हैं, जब तक मैं जीवित था। तुमने महान स्वर्ग में निवास करने वाले देवताओं से भयभीत नहीं हुए, और न ही भविष्य में मनुष्यों के हाथों से होने वाले प्रतिशोध से डरे; और अब तुम सब पर विनाश का साया मंडरा रहा है।”
उसने बोलना शुरू किया और सब भय से पीले पड़ गए, और हर कोई मृत्यु से बचने का कोई रास्ता ढूंढने लगा। केवल यूरिमाकस को बोलने की शक्ति मिली और उसने इस प्रकार उत्तर दिया:—
“यदि तुम सचमुच वही हो, इथाका के यूलिसिस, जो अब अपने पुराने घर लौट आए हो, तो तुमने अपने घर और खेतों में अचेयनों द्वारा किए गए अनेक अन्याय के बारे में ठीक ही कहा है। परन्तु वहाँ वह व्यक्ति मृत पड़ा है जो इन सब का कारण था। एंटिनोस ने ही सबसे पहले इस अन्याय की शुरुआत की थी। उसके विचार विवाह से अधिक किसी और उद्देश्य के थे—जिसे शनि के पुत्र ने उससे छीन लिया था— इथाका के सुंदर खेतों में खेती करने वालों पर शासन करना, पहले तुम्हारे पुत्र को मारकर। घात लगाकर हमला किया गया। लेकिन अब उसे अपने भाग्य का सामना करना पड़ा है।
तो फिर, अपने लोगों को बख्श दो। हम बाद में
सार्वजनिक रूप से इस बर्बादी की भरपाई करेंगे
तुम्हारे भोजन और शराब के महल में।
क्योंकि हममें से प्रत्येक तुम्हारे लिए बीस बैल लाएगा,
और पीतल और सोना, जब तक तुम्हारा हृदय
संतुष्ट न हो जाए। तब तक हम तुम्हारे क्रोध को दोष नहीं दे सकते।

बुद्धिमान यूलिसिस ने कठोर भाव से भौंहें चढ़ाकर कहा: “यूरिमाकस, यदि तू मुझे अपनी सारी संपत्ति, अपने पिता की सारी दौलत, और साथ में अन्य उपहार भी दे दे, तब भी मैं रक्तपात से नहीं रुकूँगा, जब तक कि मैं अपने हाथों से उन सभी लोगों से अपने अन्याय का बदला न ले लूँ। तो फिर, चाहे लड़ने का चुनाव कर लो या भागने का, जो भी मृत्यु और भाग्य से बचना चाहता है; फिर भी, मुझे लगता है, तुममें से कोई भी अब उस कड़वी नियति से नहीं बच पाएगा।”
उसने बोलना शुरू किया। देखते ही देखते उनके घुटने और सिर सुन्न पड़ गए, और इस प्रकार यूरिमाचस ने बाकी बातें बताईं:—
“हे मित्रों, यह व्यक्ति अपनी अदम्य भुजाओं से चैन नहीं लेने देगा, बल्कि हाथ में धनुष और तरकश लिए, जहाँ खड़ा है वहीं से अपने बाण बरसाएगा, जब तक कि हम सब मारे न जाएँ। इसलिए युद्ध के लिए तैयार हो जाओ, अपनी तलवारें निकाल लो, और उसकी घातक बाणों के विरुद्ध डटकर खड़े हो जाओ, और एक साथ मिलकर उस पर टूट पड़ो, और उसे दहलीज से बाहर निकाल दो। फिर, शहर में भागते हुए, हम खतरे की घंटी बजाएँ, और जल्द ही वह अपना आखिरी बाण चला देगा।”
वह बोला, और अपनी तेज धार वाली पीतल की दोधारी तलवार निकालकर, एक भयानक चीख के साथ उसकी ओर झपटा, ठीक वैसे ही जैसे महान यूलिसिस ने तीर चलाकर उस दावेदार की छाती पर, निप्पल के पास वार किया था। तेज धार वाला हथियार उसके जिगर में धंस गया; उसने तलवार को जमीन पर फेंक दिया, और मेज के चारों ओर चक्कर लगाते हुए गिर पड़ा; वह अपने साथ भोजन और दो प्याले भी जमीन पर ले आया, और अपने माथे से ज़मीन पर ज़ोर से टकराया, और बहुत पीड़ा में था। अपने दोनों पैरों से उसने उसके सिंहासन पर प्रहार किया और उसे हिला दिया, और उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। तभी एम्फ़िनोमस उस महान सरदार पर टूट पड़ा और उसे द्वार से हटाने के लिए अपनी तलवार खींच ली। टेलीमाकस ने उसे पकड़ लिया और उसके कंधों के बीच से एक पीतल का भाला घुसा दिया। भाला सीधे उसकी छाती में घुस गया और वह सिर के बल गिर पड़ा, उसका माथा ज़मीन पर पटक दिया गया। टेलेमाकस पीछे हट गया, और अपना लंबा भाला एम्फिनोमस में ही छोड़ दिया, कहीं ऐसा न हो कि जब वह उसे बाहर निकाले, तो अचेयनों में से कोई उस पर तलवार से हमला कर दे, और उसे मार डाले या काट डाले। जल्दी से वह अपने पिता के पास पहुँचा, और जल्दी से बोला:—
“अब, हे पिता, मैं तुम्हारे लिए एक ढाल, दो भाले और पीतल का बना एक हेलमेट लाऊंगा, जो कनपटी पर अच्छी तरह से फिट होगा। मैं स्वयं कवच पहनूंगा, और

सूअर चराने वाले और बैलों की देखभाल करने वाले को भी हथियार दूंगा; क्योंकि कवचधारी पुरुष ही सर्वोत्तम युद्ध करते हैं।”
और बुद्धिमान यूलिसिस ने उत्तर दिया: “तो उन्हें लाओ,
और जल्दी, जब तक मेरे पास यहाँ
अपनी रक्षा के लिए तीर हैं, कहीं ऐसा न हो कि जब मैं अकेला हूँ,
वे मुझे द्वार पर मेरे स्थान से हटा दें।”
उसने कहा। अपने पिता के वचन का पालन करते हुए, टेलीमाकस शीघ्र ही उस कमरे में पहुँच गया जहाँ शानदार शस्त्र रखे थे। उसने वहाँ से चार ढालें, आठ भाले और पीतल के चार हेलमेट लिए, जिनमें से प्रत्येक पर घोड़े के बालों का मुकुट था, और उन्हें बाहर ले जाकर तुरंत अपने पिता के पास खड़ा हो गया। लेकिन पहले उसने अपने अंगों को पीतल से ढक लिया; उसके अनुयायियों ने भी अपने चमकदार कवच पहन लिए और बुद्धिमान यूलिसिस के पास, जो चतुर युक्तियों में निपुण था, अपना स्थान ग्रहण कर लिया। जब उसके हाथ में अभी भी तीर तैयार थे, तब उसने प्रत्येक लक्ष्य पर एक-एक करके एक-एक दावेदार को मार गिराया; वे एक के बाद एक गिरे। लेकिन जब तीर समाप्त हो गए, तो धनुर्धारी राजा ने अपना उत्तम धनुष चमकती दीवार के पास, विशाल इमारत के एक स्तंभ के सहारे टिका दिया, और अपने कंधों पर एक चौगुनी ढाल डाल ली, और अपने योद्धा माथे पर एक सुंदर ढंग से बना हेलमेट पहना, जिस पर घोड़े के बालों का एक भारी मुकुट था जो ऊपर की ओर शान से लहरा रहा था, और पीतल की नोक वाले दो मजबूत भाले हाथ में ले लिए।
मजबूत दीवार में एक पिछला दरवाज़ा था, और इमारत की बाहरी दहलीज के पास, उससे एक संकरी गली में जाने का रास्ता था, जो अच्छी तरह से फिट होने वाले दरवाजों से बंद थी। यूलिसिस ने उस कुलीन सूअर चराने वाले को वहाँ अपना स्थान लेने का आदेश दिया। और उसे अच्छी तरह से पहरा देने को कहा, क्योंकि अब प्रवेश का यही एकमात्र रास्ता था। एगेलॉस ने अपने सभी साथियों को जोर से पुकारा और उनसे इस प्रकार कहा:—
“मित्रों! क्या आप में से कोई भी उस पिछले दरवाजे तक जाकर हमारी दुर्दशा लोगों को नहीं बताएगा? तब तो अफवाह फैल जाएगी, और शायद यह आदमी अपनी आखिरी गोली चला चुका होगा।”
बकरियों के रखवाले मेलेंथियस ने उत्तर दिया: “नहीं, हे महान एगेलॉस; यह महल के द्वार के बहुत पास है; गली का प्रवेश द्वार संकरा है, और एक अकेला

बहादुर आदमी हम सभी के विरुद्ध इसे बचा सकता है। मैं आप सभी को सुसज्जित करने के लिए कमरे से हथियार लाऊंगा; क्योंकि मुझे लगता है कि यूलिसिस और उसके बेटे ने अपने हथियार वहीं रखे थे, और कहीं नहीं।”
इस प्रकार बकरियों के रखवाले, मेलैंथियस, महल की सीढ़ियाँ चढ़कर यूलिसिस के कक्ष में पहुँचे। वहाँ से बारह ढालें, उतने ही भाले और उतने ही पीतल के हेलमेट, जिनमें से प्रत्येक पर घोड़े के बालों का भारी पंख लगा था, लेकर वे आए और उन्हें दावेदारों को सौंप दिया। तब नायक का हृदय धंस गया और उसके घुटने काँपने लगे, जब उसने दावेदारों को अपने कवच पहनते और अपने लंबे भाले उठाते देखा। इस विशाल कार्य ने उसे भयभीत कर दिया और उसने टेलीमाकस से उत्साहपूर्वक कहा:
“टेलेमाकस, यहाँ कोई महिला, या फिर मेलैंथियस, हमारे लिए लड़ाई को कठिन बना देता है।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“पिताजी, मुझसे इसमें गलती हुई। मैं ही इसका कारण था,
और कोई नहीं; मैंने ठोस दरवाजा
थोड़ा खुला छोड़ दिया था; जासूस मुझसे कहीं ज्यादा चालाक था।
अब, भले यूमेअस, कमरे का दरवाजा बंद कर दो,
और देखो कि क्या महल की किसी दासी ने ये हथियार लाए हैं, या क्या मैंने सही ढंग से डोलियस के पुत्र मेलेंथियस पर दोष सिद्ध किया है।”
वे आपस में बातें कर रहे थे, तभी मेलेंथियस चुपके से कमरे की ओर बढ़ते हुए सोचने लगा कि वह वहाँ से कुछ और चमकीले हथियार ले आए। उस नेक चरवाहे ने उसे जाते हुए देखा और जल्दी से पास आकर यूलिसिस ने कहा:—
“लार्टेस के पुत्र! महान कुल में जन्मे और बुद्धिमान! वह धूर्त, जिस पर हमें संदेह है, तुम्हारे कक्ष की ओर आ रहा है। कृपया मुझे स्पष्ट-स्पष्ट रूप से बताइए, क्या मैं उसका अंत कर दूँ, यदि मैं बलवान सिद्ध हो जाऊँ, या उस दुष्ट को तेरे समक्ष ला दूँ, ताकि वह उन सभी अधर्मों का बदला भुगते जो उसने इन कक्षों में तेरे विरुद्ध रचे हैं?”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “टेलीमाकस और मैं इस स्थान पर मौजूद सभी दावेदारों को, चाहे वे कितने भी उग्र क्यों न हों, रोके रखेंगे। तुम दोनों उसके हाथ और पैर पीछे की ओर कसकर बाँध दो, और उसे कमरे में ले आओ, जहाँ दरवाजा तुम्हारे पीछे से बंद हो। फिर उसे दोहरी रस्सी से बाँध दो, और

उसे छत के एक ऊँचे खंभे से कसकर बाँध दो, ताकि वहाँ झूलते हुए वह दीर्घायु हो और असहनीय पीड़ा सहे।”
उसने बात की; उन्होंने ध्यान से सुना और आज्ञा का पालन किया, और उसकी नज़र से बचकर उस कमरे में चले गए, जहाँ वह अंदर खड़ा होकर हथियारों की तलाश कर रहा था। प्रवेश द्वार के दोनों ओर, खंभों के पास, वे मेलेंथियस की प्रतीक्षा कर रहे थे। जल्द ही कमरे की दहलीज पर चरवाहा प्रकट हुआ, एक हाथ में सुंदर हेलमेट और दूसरे हाथ में एक चौड़ी प्राचीन ढाल लिए हुए, जो उम्र और फफूंदी से जर्जर हो चुकी थी। एक समय में, वीर लाएर्टेस ने इसे अपने युवावस्था में धारण किया था, लेकिन अब यह लंबे समय से अप्रयुक्त पड़ी थी, जिसके जोड़ फटे हुए थे।
वे झपटे और चरवाहे को पकड़ लिया, उसके बाल पकड़कर उसे घसीटते हुए कमरे में ले गए; और वहाँ उन्होंने उसे भय से व्याकुल होकर ज़मीन पर पटक दिया, और उसके हाथ-पैर एक मोटी रस्सी से उसकी पीठ के पीछे बाँध दिए, जैसा कि महान यूलिसिस, पुराने लेर्टेस के अत्यंत सहनशील पुत्र ने आदेश दिया था। फिर उन्होंने उसके चारों ओर एक दोहरी रस्सी लपेटी, और उसे एक ऊँचे खंभे के पास तक झुलाया, जब तक कि वे उसे छत की लकड़ियों के पास नहीं ले आए। और तब तूने, यूमेअस, उपहास भरे शब्दों में उससे कहा:—
“मेलांथियस, तुम वहाँ रात भर जागते रह सकते हो
एक कोमल पलंग पर, जो तुम्हारे लिए उपयुक्त स्थान है;
और जब भोर की माता आएँगी
अपने सुनहरे सिंहासन पर सागर की धाराओं से,
तो तुम उन्हें अवश्य देख पाओगे। तब तुम
अपनी बकरियों को यहाँ ला सकते हो, ताकि वे दूल्हों की दावत में शामिल हो सकें।”
उन्होंने उसे उस दयनीय स्थिति में छोड़ दिया, और अपना कवच पहनकर चमकीला दरवाजा बंद कर दिया, और चले गए, और छल-कपट में निपुण यूलिसिस के पास वीरता से खड़े थे। चार लोग उस दहलीज पर खड़े थे, जबकि उनके शत्रु भीतर अनेक और वीर थे। तभी बृहस्पति की पुत्री पल्लास, गुरु के समान रूप और वाणी से पास आई। यूलिसिस ने उसे देखा, प्रसन्न हुआ और बोला:—

“आओ, गुरु, उसकी सहायता करो जो
से प्रेम करता है और जिसने तुम्हारा मित्रत्व किया है, जो उम्र में तुम्हारा समतुल्य है।”
यूलिसिस ने ऐसा कहा, लेकिन उसे लगा कि वह सेनाओं को तितर-बितर करने वाली पल्लास से बात कर रहा है। हॉल में मौजूद दावेदारों की ओर से भयंकर चीखें सुनाई दीं, और सबसे पहले, दामास्टोर के पुत्र एगेलॉस ने इस प्रकार धिक्कारा:
“गुरु, यूलिसिस तुम्हें बहला-फुसलाकर अपने साथ शामिल होने और हम पर युद्ध करने के लिए न उकसाए, क्योंकि यही हमारा उद्देश्य है, और यह पूरा होगा: जब हमारे हाथों पिता और पुत्र मारे जाएँगे, तो तुम्हें भी इस प्रयास के लिए मृत्युदंड दिया जाएगा, और तुम्हारा सिर ही कुर्क किया जाएगा। जब हम अपने उत्तम हथियारों से तुम्हारा वध कर लेंगे, तो हम तुम्हारी सारी संपत्ति, तुम्हारे घर के अंदर या बाहर की सारी दौलत छीन लेंगे, और उसे यूलिसिस की संपत्ति में मिलाकर तुम्हारे भीतर छोड़ देंगे।” तेरे महलों में तेरा कोई पुत्र या पुत्री जीवित नहीं है, और न ही तेरी कोई गुणी पत्नी इथाका में निवास करती है।
उसने बात की और पल्लास के हृदय में नया क्रोध जगा दिया, और उसने यूलिसिस को इस प्रकार फटकारा:
“यूलिसिस, तुम शस्त्रशक्ति और साहस में वह नहीं रहे जो तुम तब थे जब तुमने नौ वर्षों तक बिना रुके ट्रॉय के पुरुषों के विरुद्ध युद्ध किया, हेलिन, जो बृहस्पति की संतान थी, के लिए। तुमने उस घातक संघर्ष में अनेकों को मार गिराया, और प्रियम का नगर, अपनी विशाल सड़कों के साथ, तुम्हारी सलाह से जीत लिया गया। यह कैसे हो सकता है कि यहाँ अपने ही क्षेत्र और अपने महल में आकर, तुम पाते हो कि तुम्हारे प्राचीन शौर्य ने उन लोगों के विरुद्ध संघर्ष में तुम्हारा साथ छोड़ दिया है? अब मेरे मित्र, मेरे पास आओ।”
और मेरे साथ खड़े रहो, और देखो मैं क्या करूँगा,
और स्वीकार करो कि अल्सीमस के पुत्र, मेंटर,
शत्रुओं के दबाव के बीच भी तुम्हारे प्रेम का प्रतिफल देता है।
उसने बात की, लेकिन यूलिसिस को अभी तक निश्चित विजय नहीं दी; क्योंकि वह यूलिसिस और उसके प्रतिद्वंद्वी पुत्र दोनों के साहस और शक्ति की और परीक्षा लेना चाहती थी। वह महल की विशाल छत पर चढ़ी और एक अबाबील के आकार

में बैठ गई। अब दमास्टोर का पुत्र एगेलॉस अपने मित्रों का उत्साहवर्धन कर रहा था; एम्फिमेडन, यूरिनोमस, डेमोप्टोलेमस, पॉलीक्टर का पुत्र पेइसेंडर और इन सबके साथ बुद्धिमान पॉलीबस भी थे। ये छह लोग वीरता में उन सभी दावेदारों से श्रेष्ठ थे जो बच गए थे, और वे अपने जीवन के लिए लड़ रहे थे। धनुष और तेज बाणों ने उनके साथियों को मार गिराया था। इस प्रकार एगेलॉस ने अपने साथियों से कहा:—
“हे मित्रों, अब इस व्यक्ति को अपना घातक हाथ रोकना ही पड़ेगा। देखो, मेंटर बहुत सारी खोखली शेखी बघारने के बाद उसका साथ छोड़ देता है, और वे चारों प्रवेश द्वार पर अकेले रह जाते हैं। अब अपने लंबे भालों से उस पर निशाना साधो—एक साथ नहीं, पहले छह अपने हथियार चलाएँ, और ईश्वर हमें यह वरदान दे कि हम यूलिसिस को मार गिराएँ और महान गौरव प्राप्त करें! उसके साथ खड़े अन्य लोगों की हमें कोई परवाह नहीं, अगर उनका नेता असफल हो जाए।”
उसने कहा; उन्होंने ध्यान से सुना। उन्होंने उत्सुकता से अपने भाले चलाए। पल्लास ने उनके निशाने को भटका दिया। एक भाला विशाल इमारत के एक खंभे से टकराया; एक भाला पैनल वाले दरवाजे से टकराया; एक राख का तीर, धातु से भारी, दीवार से टकराकर गूंज उठा।
और जब वे भीड़ से फेंके गए भालों के उस हमले से बच निकले, तो अत्यंत सहनशील व्यक्ति, यूलिसिस ने अपने साथियों से इस प्रकार कहा:—
“अब समय आ गया है, मेरे मित्रों, कि हम अपने भाले उन दूल्हों की भीड़ में भेजें, जो हमारे साथ पहले से किए गए अन्याय से संतुष्ट नहीं हैं, और हमारी जान लेना चाहते हैं।”
उसने कहा, और उन्होंने विपरीत दिशा में निशाना साधते हुए अपने भाले फेंके। यूलिसिस द्वारा फेंके गए हथियार ने डेमोप्टोलेमस को मार डाला; उसके पुत्र ने यूरियाडेस को मार गिराया; चरवाहे ने पेइसेंडर और सूअर चराने वाले एलाटस को मार डाला। ये सभी एक ही क्षण में गिर पड़े और ज़मीन पर धूल चाट गए। दावेदारों की भीड़ एक कोने में भाग गई; और उनके पीछे वे चारों दौड़े और मृतकों से अपने हथियार उठा लिए।
फिर से दावेदारों ने अपने भाले फेंके; फिर से पल्लास ने उनके निशाने को चूका दिया। एक भाला विशाल इमारत के एक खंभे से टकराया, और दूसरा पैनल वाले दरवाजे से; एक और राख का डंडा, धातु से भारी, दीवार से टकराया। फिर भी एम्फिमेडन के हथियार ने टेलीमाकस की कलाई पर हल्का सा प्रहार किया। पीतल

ने बस त्वचा को चीर दिया। टेसिपस ने अपने भाले से यूमेअस के कंधे को ढाल के ऊपर से हल्का सा छुआ; भाला उसके ऊपर से उड़ गया और जमीन पर गिर गया। तब जो लोग छल-कपट में पारंगत ऋषि यूलिसिस के साथ खड़े थे, उन्होंने एक बार फिर अपने तीखे भाले चलाए। किलेबंद नगरों को नष्ट करने वाले यूलिसिस ने यूरीडामस का वध किया; उसके पुत्र एम्फिमेडन को मार गिराया; सूअर चराने वाले ने पॉलीबस का जीवन ले लिया; चरवाहे ने सीटेसिपस को भाला मारकर उसकी छाती में छेद कर दिया, और उसे पुकार कर उसके पतन पर गर्व किया:
“हे पॉलीथर्सिस के पुत्र, जल्दी से निंदा करने वाले! अपनी मूर्खतापूर्ण अभिमान में आगे से बड़ी-बड़ी बातें करने से सावधान रहो; इसे देवताओं पर छोड़ दो, वे हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। देखो, मैं तुम्हें एक बैल का पैर भेंट करता हूँ, जो महान यूलिसिस ने एक बार तुम्हारे हाथों से इस हॉल से गुजरते समय ग्रहण किया था।”
सींग वाले झुंड के रखवाले ने इस प्रकार कहा।
इसी बीच, यूलिसिस ने दामास्टोर के पुत्र को मार डाला।
अपने लंबे भाले से, आमने-सामने की लड़ाई में।
इसके बाद टेलीमाकस ने एवेनोर के पुत्र,
लियोक्रिटस पर प्रहार किया। उसने पीतल का भाला
उसकी आंतों में घुसा दिया; हथियार उसके शरीर से होकर गुजरा
और वह मुंह के बल गिर पड़ा।
उसका माथा फर्श से टकराया। फिर पल्लास ने अपना घातक कवच ऊँचा उठाया। छत से

उसने उसे दिखाया, और उनके दिल भय से कांप उठे।
वे हॉल में ऐसे भागे जैसे गायों का झुंड भागता है, जब अचानक तेज मक्खी उनके बीच आ जाती है और उन्हें तितर-बितर कर देती है
बसंत ऋतु में, जब दिन लंबे होने लगते हैं।
इसी बीच, घुमावदार पंजों और चोंच वाले बाज़ों की तरह,
जो पहाड़ों की चोटियों से आकर छोटे पक्षियों पर झपट्टा मारते हैं और उन्हें भगा देते हैं
उन जालों के बीच खेतों के करीब जहाँ वे डरते हैं,
और पकड़कर मार डालते हैं, और न ही पक्षी विरोध कर सकते हैं
या उड़ सकते हैं, और शिकार की बहुतायत देखकर शिकारी खुश हो जाते हैं; इस

प्रकार चारों ने महल के हॉल से भागते हुए चारों दावेदारों पर दाएं-बाएं प्रहार किए, और तलवार से सिर कटने पर भयानक कराहें उठीं, और सारा फर्श खून से लथपथ हो गया। तब लियोडेस यूलिसिस की ओर दौड़ा, उसके घुटनों को थाम लिया, और मधुर शब्दों में उससे विनती की:
“हे यूलिसिस, मैं तुम्हारे सामने घुटने टेक कर तुम्हारे सामने आती हूँ। मेरा आदर करो और मुझे बख्श दो। मैंने तुम्हारे घर की स्त्रियों के बीच कभी कोई ऐसी बात न कही है और न ही कोई ऐसा काम किया है जिस पर मुझे दोषी ठहराया जा सके, और मैंने दूसरे दूल्हों के बुरे कामों को रोकने की कोशिश की है। उन्होंने मेरी सलाहों पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया और न ही बुरे कामों से खुद को रोका, और इसीलिए उन्होंने अपने ऊपर बुरा भाग्य बुला लिया है। लेकिन मैं, जिसने कुछ भी नहीं किया—मैं उनकी भविष्यवक्ता—क्या मुझे भी मरना होगा? फिर तो मनुष्यों में अच्छे कर्मों का कोई इनाम नहीं है।” बुद्धिमान यूलिसिस ने भौंहें चढ़ाकर कहा: “यदि सचमुच तुम उतने ही बुद्धिमान हो जितना तुम दावा करते हो, इन लोगों के बीच एक भविष्यवक्ता, तो महल की दीवारों के भीतर तुम्हारी प्रार्थना अक्सर यही रही होगी कि मेरे लौटने का शुभ दिन मुझसे दूर रहे, और मेरी पत्नी तुम्हारे साथ अपना भाग्य पाए और तुम्हें पुत्र जन्म दे, इसलिए तुम मृत्यु से नहीं बच पाओगे।”
उसने कहा, और अपने शक्तिशाली हाथ से पास पड़ी एक तलवार को छीन लिया, जो एगेलॉस के मारे जाने पर उसके हाथ से छूट गई थी, और ठीक गर्दन के बीचोंबीच वार किया, जबकि उसके होठों पर शब्द थे, और सिर गिर गया, और धूल में मिल गया। टेर्पियस का पुत्र फेमियस, जो गायन में कुशल था, अकेले ही मृत्यु के भयानक भाग्य से बच निकला। मजबूरीवश उसने अपने साथियों के बीच गीत गाए थे, और अब वह पिछले दरवाजे के पास खड़ा था, और अपने मधुर स्वर वाले वीणा को पकड़े हुए सोच रहा था कि क्या उसे हॉल छोड़कर महान हर्सियन जूपिटर की वेदी के सामने बैठना चाहिए, जहाँ लेर्टेस के साथ, यूलिसिस अक्सर बैलों की जांघें जलाता था, या क्या उसे याचक की तरह यूलिसिस के सामने घुटने टेकने चाहिए।
उसे यही सबसे बुद्धिमानीपूर्ण लगा—लार्टेस के पुत्र के पास जाकर उसके घुटनों को थाम लेना। उसने अपना मधुर वीणा फर्श पर, प्याले और चांदी जड़ित आसन के बीच रख दिया, और जाकर उस वीर के घुटनों को थाम लिया, और मधुर शब्दों में कहा:—

“हे यूलिसिस, मैं तुम्हारे सामने घुटने टेकता हूँ। मेरा आदर करो और मुझे बख्श दो। भविष्य में, यदि तुम एक ऐसे कवि को मार डालोगे जो देवताओं और मनुष्यों दोनों के लिए गाता है, तो यह तुम्हारे लिए बहुत दुख की बात होगी। मैंने यह कला स्वयं सीखी है; किसी देवता ने मेरे मन में हर प्रकार के गीत भर दिए हैं, और मैं तुम्हारे लिए एक देवता की तरह गा सकता हूँ। हे, इसलिए मेरी जान लेने की कोशिश मत करो! तुम्हारा प्रिय पुत्र टेलीमाकस गवाही देगा कि मैं स्वेच्छा से या धन के लालच में, प्रेम के लिए, उनके भोजों में उनके सामने गाने नहीं आया था। तेरा महल, लेकिन मुझे मजबूर होकर आना पड़ा संख्या के कारण और मुझसे अधिक शक्तिशाली पुरुषों द्वारा।"
वह चुप हो गया; शक्तिशाली टेलीमाकस ने सुना
और उसके पिता ने उसके पास ही यह कहा:—
“संयम रखो; निर्दोषों को तलवार से मत मारो;
और हे मेदोन, तुम भी बच गए,
जिसने हमारे महल में मेरी देखभाल की
मेरे पूरे बचपन में; यदि वह पहले ही फिलोएटियस द्वारा, या उसके द्वारा, जो सूअर चराता है, मारा न गया हो, या यदि वह तुमसे न मिला हो, जब तुम ओलों के बीच घूम रहे थे।”
उसने बात की, और बुद्धिमान मेदोन ने सुना,
वह एक सिंहासन के नीचे दुबका हुआ था,
एक बैल की खाल में लिपटा हुआ,
मृत्यु के काले अंधकार से बचने के लिए। वह उठा
जहाँ वह लेटा था, और जल्दी से खाल को एक तरफ फेंक दिया, और आगे बढ़कर युवा राजकुमार के घुटनों को पकड़ लिया,
और जोशीले शब्दों में बोला:—
“हे युवक, मुझे यहाँ देखो; मुझ पर दया करो; अपने पिता से कहो कि वह मुझे मारने के लिए अपनी तलवार न उठाए, क्योंकि वह प्रतिशोध के लिए उत्सुक है और उन लोगों से क्रोधित है जो उसकी संपत्ति लूटने के लिए इन महलों में घूमते हैं और तुम्हें उनकी मूर्खता का उपहास देते हैं।”
उसने कहा; ऋषि यूलिसिस मुस्कुराए और बोले: “निराश रहो, क्योंकि मेरा यह पुत्र तुम्हारी रक्षा करता है और तुम्हें बचाता है। अब तुम अच्छी तरह समझ सकते हो, और दूसरों को बता सकते हो, कि बुराई करने की तुलना में भलाई करना

कितना अधिक सुरक्षित है। तुम और वह प्रख्यात कवि, इस नरसंहार से निकलकर खुले प्रांगण में जाओ, और वहाँ बैठो, जबकि मैं यहाँ भीतर वह करता हूँ जो मुझे अभी करना है।”
उसने कहा; वे चले गए और हॉल से बाहर निकल गए,
और सर्वशक्तिमान जूपिटर की वेदी के पास
बैठे चारों ओर देख रहे थे, अभी भी मृत्यु के भय में।
इसी बीच, यूलिसिस ने चारों ओर गहरी नज़र से छानबीन की, यह देखने के लिए कि क्या सभी दावेदारों में से कोई एक भी जीवित बचा है, जो अपने भयानक भाग्य से छिपकर भाग रहा हो। उसने देखा कि सभी खून और धूल में लथपथ पड़े थे, जैसे समुद्र तट पर मछलियाँ, जिन्हें अनगिनत जालों से पकड़ने वालों ने गहरे समुद्र से निकाला था। रेत पर बिखरे पड़े, खारे समुद्र में लौटने के लिए तड़पते हुए, वे तब तक खारे समुद्र में पड़े रहे जब तक कि तेज़ धूप ने उनकी जान नहीं ले ली; इसी प्रकार दावेदार एक दूसरे पर ढेर हो गए। तब यूलिसिस ने वह शब्द लिया और टेलीमाकस से इस प्रकार कहा:—
“अब जाओ, टेलीमाकस, और नर्स, डेम यूरिक्लेया को यहाँ बुलाओ। मैं उससे कुछ ऐसा कहूँगा जो मेरे मन में आ रहा हो।”
मुखिया ने ऐसा कहा। टेलीमाकस ने उसकी बात मानी और दरवाजा खटखटाकर दाई को बुलाया।
“इधर आओ, हे वृद्ध महिला, जो महिलाओं के कार्यों की देखरेख करने का दायित्व संभालती हो; मेरे पिता तुम्हें बुला रहे हैं और तुमसे बात करना चाहते हैं।”
उसने कहा; और उसका शब्द व्यर्थ नहीं गया; उसने उन भव्य कमरों के द्वार खोल दिए, और जल्दी से अंदर आ गई। उसके आगे राजकुमार चल रहा था। मारे गए लोगों के शवों के बीच उन्हें यूलिसिस मिला, जो खून से लथपथ और धूल से सना हुआ था। जैसे कोई शेर, जो अभी-अभी चरागाह के एक बैल को खाकर भागा हो, खून से लथपथ छाती और गालों के साथ भयानक दृश्य प्रस्तुत करता है; यूलिसिस भी ऐसा ही प्रतीत हो रहा था, उसके पैर और हाथ मनुष्यों के खून में सने हुए थे। जब उसने लाशों और खून के तालाबों को देखा, और यह जाना कि महान कार्य पूरा हो चुका है, तो वह खुशी से चिल्ला उठी। यूलिसिस ने उसके उत्साह को रोका और जोशीले शब्दों में कहा:—

“हे देवी, मन में प्रसन्नता मनाओ, परन्तु शांत रहो, और चिल्लाओ मत। मृत्यु को प्राप्त हुए लोगों पर ज़ोर-ज़ोर से जयजयकार करना अपवित्र कार्य है। देवताओं की प्रसन्नता और उनके स्वयं के अपराध ने इन पर मृत्यु ला दी; क्योंकि उन्होंने अपने किसी भी साथी मनुष्य का आदर नहीं किया—चाहे वह अच्छा हो या बुरा—जो भी उनके पास आया, और इस प्रकार उन्होंने अपने ही सिर पर यह भयानक भाग्य लाद लिया। अब मुझे महल की स्त्रियों के नाम बताओ; मुझे बताओ कि कौन विश्वासघाती है और कौन निर्दोष।”
तब प्रिय नर्स ने उत्तर दिया: “मेरे पुत्र, मैं सत्य बताऊँगी। तुम्हारे महल में पचास दासियाँ रहती हैं, जिन्हें हमने काम करना, ऊन कंघी करना और घर की सेवा करना सिखाया है। इनमें से बारह दासियाँ लज्जा के मार्ग पर चल चुकी हैं। वे मेरी ओर ध्यान नहीं देतीं, न ही पेनेलोप की ओर। तुम्हारा पुत्र अभी-अभी वयस्क हुआ है, और रानी ने उसे कभी दासियों पर शासन करने नहीं दिया; परन्तु अब मैं उसके कमरे में—शाही कुटिया में—तुम्हारी पत्नी को सूचित कर दूँ, जिसे किसी देवता ने उपहार भेजा है...” नींद।"
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“उसे अभी मत जगाओ, बल्कि जाओ और उन सभी महिलाओं को बुलाओ जिन्होंने ये शर्मनाक काम किए हैं।
उसने कहा; महल की संरक्षिका उन महिलाओं को ढूंढने और उन्हें बुलाने के लिए महल में गई। इसी बीच, यूलिसिस ने टेलीमाकस, चरवाहे और सूअर चराने वाले को अपने पास बुलाया और उन्हें तीखे शब्दों में इस प्रकार आज्ञा दी:
“मृतकों को बाहर ले जाना शुरू करो, और स्त्रियों को अपनी सहायता के लिए बुलाओ; फिर पानी और सोखने वाले स्पंजों से सभी भव्य सिंहासनों और मेजों को साफ करो। जब तुम इस प्रकार हॉल को व्यवस्थित कर लो, तो दासियों को ले जाओ, और रसोई के तहखाने और ठोस बाहरी दीवार के बीच की जगह में अपनी लंबी तलवारों से उन पर तब तक प्रहार करो जब तक वे अपनी आत्मा त्याग न दें, और दूल्हों के दल के साथ गुप्त मुलाकातों की स्मृति हमेशा के लिए खो न दें।”
उसने बात की; स्त्रियाँ ज़ोर-ज़ोर से विलाप करते हुए आईं, बहुत आँसू बहाते हुए, और मृतकों को बाहर ले गईं, एक-दूसरे का सहारा लेते हुए, और उन्हें दीवार वाले आँगन के बरामदे के नीचे रख दिया। यूलिसिस ने आदेश दिया, और उन्होंने अपना काम जल्दी पूरा किया, क्योंकि सभी अनिच्छा से शवों को बाहर ले गए। फिर पानी लेकर, और हाथों में प्यासे स्पंज लेकर, उन्होंने भव्य

सिंहासनों और मेजों को साफ किया। फिर राजकुमार, टेलीमाकस ने फावड़ों से फर्श साफ किया, चरवाहे और सूअर चराने वाले ने उसकी मदद की, और स्त्रियों से कूड़ा बाहर निकलवाया। अब जब अंदर सब कुछ फिर से व्यवस्थित हो गया, तो वे दासियों को उस सुंदर ढेर से रसोई के तहखाने और ठोस बाहरी दीवार के बीच की जगह में ले गए, एक संकरी जगह जहाँ से निकलना असंभव था। और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने बोलना शुरू किया:
“मैं इन प्राणियों की जान शुद्ध मृत्यु से नहीं लूंगा—ये वे प्राणी हैं जिन्होंने इतने लंबे समय तक मेरी और मेरी माँ के सिर पर निंदा का ढेर लगाया है, और प्रेम-भरी टोली के साथ अनैतिक व्यवहार किया है।”
उसने बात की और एक जहाज की रस्सी को एक ऊंचे खंभे से बांध दिया; दूसरा सिरा उसने रसोई के तहखाने के चारों ओर लपेट दिया। उसने उसे इतना ऊंचा फैला दिया कि उस पर लटके किसी भी व्यक्ति के पैर जमीन को न छू सकें। जैसे जब चौड़े पंखों वाले थ्रश पक्षियों या जंगली कबूतरों का झुंड झाड़ियों में जाल में फंस जाता है, जब वे अपना ठिकाना ढूंढ रहे होते हैं, और वहां अवांछित कैद पाते हैं, तो उसी तरह महिलाओं को सिर झुकाकर, गर्दन में रस्सियां बांधकर लटका दिया गया, ताकि वे एक दयनीय मौत मरें। कुछ देर बाद, उनके ढीले पैर हवा में कांपे। वे मेलेंथियस को हॉल से बाहर ले गए और बरामदे से होते हुए, उसकी नाक और कान काट दिए, शर्म के अंगों को नोचकर निकाल दिया, कुत्तों के लिए खून से लथपथ भोजन बना दिया, और गुस्से में आकर पेड़ के तने से उसके हाथ-पैर काट डाले। फिर अपने हाथ-पैर धोकर वे हॉल में आए और यूलिसिस के पास गए; उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया था। फिर प्यारी नर्स से यूलिसिस ने कहा:— “हे महिला, गंधक लाओ, जो जहरीली हवा का इलाज है, और आग लाओ, ताकि मैं धुएँ से हॉल को शुद्ध कर सकूँ; और जाओ, और पेनेलोप को नीचे आने के लिए कहो, अपनी परिचारिकाओं के साथ, और आदेश दो कि घर की सभी दासियाँ आ जाएँ।”
और इस प्रकार, देवी यूरिक्लेया ने कहा:
“मेरे पुत्र, तुमने ठीक कहा है, लेकिन मुझे तुम्हारे लिए वस्त्र, एक कुर्ता और एक लबादा लाने दो,
और अपने चौड़े कंधों पर उन चिथड़ों के साथ अपने महल में खड़े मत रहो; यह तुम्हें शोभा नहीं देता।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“पहले इस हॉल में आग जला दी जाए।”

उसने कहा, और प्रिय नर्स यूरीक्लिया ने आज्ञा मानी और गंधक और आग ले आई। यूलिसिस ने शाही महल को धुएं से भर दिया। हॉल और दरबार दोनों। मैट्रन, यूलिसिस के भव्य महल से गुजरते हुए, सभी दासियों को ढूंढने और बुलाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ीं। और वे अपने हाथों में मशालें लिए बाहर आईं, और यूलिसिस के चारों ओर भीड़ लगाकर, खुशी से अभिवादन किया, उसके हाथ पकड़े, उसे गले लगाया, उसके हाथों, माथे और कंधों को चूमा। मुखिया को खुशी से रोने की इच्छा हुई; उसकी आँखें आँसुओं से भर उठीं; वह सिसकियाँ लेने लगा; वह उन सबको जानता था।

पुस्तक XXIII
वध के बाद यूलिसिस और पेनेलोप
पेनेलोप का हॉल में उतरना—यूलिसिस द्वारा दिए गए स्पष्ट संकेतों से यूलिसिस की पहचान के बारे में उसके संदेह दूर होना—उन संकेतों को हटाए जाने पर उसकी खुशी—यूलिसिस द्वारा अपने कारनामों का वर्णन—यूलिसिस का अपने बेटे, चरवाहे और सूअर चराने वाले के साथ गांव की ओर प्रस्थान। राजमहल तक वह महिला हर्षोल्लास भरे हृदय से रानी को यह बताने गई कि उसका प्रिय पति भीतर है। बिना लड़खड़ाए और फुर्तीले कदमों से वह गई और अपनी स्वामिनी के पास खड़ी होकर बोली:
“जागो, प्यारी पेनेलोप, और अपनी आँखों से वह देखो जिसके लिए तुम लंबे समय से तरस रही थी। यूलिसिस लौट आया है; तुम्हारा स्वामी यहाँ है, हालाँकि देर से आया है, और उसने उन अभिमानी दण्डार्थियों के समूह को मार डाला है, जिन्होंने उसके घर को कलंकित किया, उसकी संपत्ति लूट ली, और उसके बेटे का अपमान करने का साहस किया।”
और इस प्रकार विवेकशील पेनेलोप ने उत्तर दिया: “हे प्रिय नर्स, देवताओं ने तुम्हें पागल कर दिया है; क्योंकि उनके पास बुद्धिमान पुरुषों को मूर्ख बनाने की शक्ति है, और मूर्खों को बुद्धिमान बना सकते हैं, और उन्होंने तुम्हारे कभी स्वस्थ मन को विकृत कर दिया है। मेरे दुखों के बीच, तुम इस तरह मेरा उपहास कैसे कर सकती हो, ऐसी व्यर्थ कहानियों से? मुझे उस सुखद नींद से क्यों जगा रही हो जिसने मेरी पलकों को इतनी कोमलता से बंद कर दिया था? जब से यूलिसिस मुझे छोड़कर उस बुरे शहर में चला गया है, जिसका नाम कोई नहीं ले सकता, तब से मैं इतनी मीठी नींद कभी नहीं सोई। तो जाओ; नीचे के कमरों में लौट जाओ। क्या मेरी किसी भी महिला ने मुझे छोड़कर तूने ऐसा संदेश भेजा जिससे मेरी नींद खराब हो गई, मैं उसे गुस्से भरे शब्दों से वापस हॉल में भेज देता; तेरी उम्र ही तेरा बहाना है।
लेकिन प्यारी नर्स यूरीक्लिया ने जवाब दिया:
“नहीं, मेरे प्यारे बच्चे, मैं तुम्हारा मज़ाक नहीं उड़ा रही हूँ। बिलकुल सच है कि तुम्हारा यूलिसिस लौट आया है,
और जैसा मैंने कहा, वह यहाँ घर पर है।
वह अजनबी जिसका उन्होंने हॉल में उपहास किया था,

वही है; और टेलीमाकस को लंबे समय से पता था
कि वह यहाँ था, लेकिन उसने बुद्धिमानी से अपने पिता के रहस्य को सबसे छिपाए रखा,
जब तक कि वह उन हिंसक पुरुषों से उनके गुनाहों का बदला न ले ले।”
उसने अपनी बात समाप्त की, और उसकी मालकिन, अत्यधिक प्रसन्न होकर, अपने पलंग से उछल पड़ी, उस वृद्ध महिला को गले लगाया, और रोने लगी, और उससे मधुर शब्दों में बोली:—
“प्रिय नर्स, मुझे सच-सच बताओ, अगर वाकई यूलिसिस तुम्हारी कही बात मानकर लौट आया है, तो उसने उन घमंडी प्रेमियों को कैसे हराया?—अकेले उसने, और उन असंख्य लोगों को, जो हॉल में जमा थे।”
और इस प्रकार प्रिय नर्स ने उत्तर दिया: “मैंने इसे न तो देखा और न ही इसके बारे में जानती थी। मैंने केवल मृतकों के विलाप सुने, जबकि हम दासियाँ भयभीत होकर उस गुंबददार कक्ष के एक कोने में बैठी थीं; मजबूत दरवाजों ने हम सबको अंदर बंद कर दिया, जब तक कि अंत में तुम्हारे पुत्र ने, अपने पिता के द्वारा भेजे जाने पर, मुझे बाहर नहीं बुलाया। मैंने यूलिसिस को मृतकों के बीच खड़ा पाया जो एक दूसरे पर ढेर थे, ठोस फर्श पर हर जगह। तुम उसे वध के दागों से लथपथ शेर की तरह देखकर प्रसन्न होते।” अब सभी दूल्हों को महल के प्रांगण के द्वार के सामने लेटा दिया गया है, और उसने एक बड़ी आग जलाई है, जिससे महल धुएं से भर गया है। उसने मुझे तुम्हें बुलाने के लिए बुलाया है। मेरे पीछे आओ, ताकि तुम अपने दिलों को खुशी से भर सको—क्योंकि तुम दोनों ने बड़े दुख सहे हैं, और तुम्हारी लंबे समय से संजोई हुई आशा अब पूरी हो गई है। वह जीवित अपने प्यारे घर लौट आया है, और तुम्हें और अपने बेटे को अभी भी अपने महल में पाता है, और उसने उन दोषी लोगों से भयानक बदला लिया है जिन्होंने उसके घर में उसके साथ अन्याय किया है।
तब ज्ञानी पेनेलोप ने फिर कहा: “प्रिय नर्स, अत्यधिक प्रसन्न मत हो, और न ही जल्दबाजी में घमंड करो। यह तुम्हें भली-भांति ज्ञात है कि यदि वह फिर से इस छत के नीचे आएँ, तो सबका कितना स्वागत होगा, परन्तु मेरा और उस पुत्र का जिसे हमने उनका जन्म दिया। फिर भी तुम्हारी यह खबर सत्य नहीं है। किसी अमर ने उन अभिमानी दूल्हों को मार डाला होगा, जो उनके घोर अन्याय और अनेक अपराधों को देखकर क्रोधित थे; क्योंकि वे नश्वर मनुष्य का कोई आदर नहीं करते थे, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, जिससे भी वे मिलते थे; और इसलिए उनका

अंत बुरा हुआ। लेकिन मेरे यूलिसिस को इथाका से बहुत दूर मरना पड़ा होगा, वह अपने लौटने के मार्ग से कट गया होगा।
तब प्रिय नर्स यूरीक्लिया ने उत्तर दिया: “हे मेरी बच्ची, तेरे होठों से ये कैसे शब्द निकल रहे हैं? क्या तू कह रही है कि तेरा पति, जो अब तेरे चूल्हे पर खड़ा है, कभी वापस नहीं लौटेगा? हे विश्वास में मंदबुद्धि! परन्तु तू तो हमेशा से ऐसी ही थी। तो फिर, मैं एक निश्चित प्रमाण देती हूँ। मैंने स्वयं देखा, जब वह स्नान कर रहा था, उसके शरीर पर सूअर के सफेद दांत से बना निशान, और मैं तुझे बताना चाहती थी, परन्तु उसने मेरे मुँह पर हाथ रख दिया, और मुझे यह समाचार देने नहीं दिया, उसका यही अनुमान था।” अब मेरे पीछे आओ; मैं अपना प्राण कुर्बान करता हूँ। यदि मैं तुम्हें धोखा दूँ, तो मुझे निर्दयतापूर्वक मार डालो।
तब विवेकशील पेनेलोप ने फिर कहा: “प्रिय नर्स, यद्यपि तुम अनेक बातों में बुद्धिमान हो, फिर भी शाश्वत देवताओं की सलाहों को अनदेखा मत करो। फिर भी हम नीचे उतरेंगे, और अपने पुत्र से मिलेंगे, और मृतकों को देखेंगे, और उस प्रतिशोधक को देखेंगे जिसके हाथों वे मारे गए।”
वह बोली और शाही मंडप से नीचे उतरी, अनिश्चित थी कि उसे अलग खड़े रहकर अपने स्वामी से प्रश्न करना चाहिए या उसके पास जल्दी से जाकर उसके हाथों को अपने हाथों में थामकर उसके माथे को चूमना चाहिए। लेकिन तराशे हुए पत्थर की दहलीज पार करके, अंदर प्रवेश करते ही वह यूलिसिस के ठीक सामने, आग की पूरी रोशनी में, दूसरी दीवार के सहारे बैठ गई। यूलिसिस एक ऊंचे स्तंभ के पास अपनी आँखें नीचे झुकाए बैठा था, और अपनी उच्च कुल की पत्नी के बोलने का इंतजार कर रहा था जब वह उसे देख लेगी। वह बहुत देर तक चुपचाप बैठी रही, क्योंकि विस्मय ने उसकी इंद्रियों को वश में कर लिया था। कभी-कभी उसकी आँखों में देखते हुए, उसे वहाँ अपना पति दिखाई देता था, और फिर कभी-कभी, उन गंदे कपड़ों में लिपटा हुआ, वह उसे पहचान नहीं पाती थी। तब टेलीमाकस बोला और उसे इस प्रकार डांटा:—
“माँ, निर्दयी माँ! तुम्हारा हृदय कितना कठोर है; भला तुम कैसे उदासीन रह सकती हो? मेरे पिता के पास जाकर उनसे बात करने और उनसे प्रश्न पूछने से तुम कैसे बच सकती हो? कोई और पत्नी अपने पति से इतनी दूरी सहन नहीं कर सकती, जो बीस वर्षों की अनुपस्थिति में लंबे कष्टों के बाद अभी-अभी अपने वतन और माँ के पास लौटा है। माँ! तुम्हारा हृदय पत्थर से भी कठोर है।”

और इस प्रकार ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया: “प्रिय बालक, मेरी इंद्रियाँ आश्चर्य से अभिभूत हैं, और मैं उससे प्रश्न नहीं कर सकती, न ही उससे बात कर सकती हूँ, न ही उसकी ओर अपनी दृष्टि टिका सकती हूँ। लेकिन यदि वह वास्तव में यूलिसिस है, और वह लौट आया है, तो हम शीघ्र ही एक-दूसरे को पहचान लेंगे; कुछ संकेत हैं जो हम दोनों को ज्ञात हैं, केवल उसे और मुझे ही।”
उसने अपनी बात समाप्त की, और अत्यंत धीरज रखने वाले प्रमुख यूलिसिस ने उसकी बातों पर मुस्कुराते हुए तुरंत टेलीमाकस से जोशीले शब्दों में कहा: “हे टेलीमाकस, अपनी माता को मुझे परखने दो; वह मुझे शीघ्र ही बेहतर जान जाएगी। मेरा रूप मैला है, और मेरे अंग फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटे हैं, इसलिए वह मेरे बारे में तुच्छ समझती है, और स्वेच्छा से यह विश्वास नहीं कर सकती कि मैं वही हूँ। परन्तु अब हम विचार करें कि सबसे बुद्धिमानी से क्या किया जा सकता है। जो मनुष्य जाति में से किसी एक को मार डालता है, जिसके मृत्यु का बदला लेने वाले अल्प ही हों, वह अपने सगे-संबंधियों और अपनी जन्मभूमि से भाग जाता है; परन्तु हमने राज्य के योद्धाओं को मार डाला है, जो सर्वोत्कृष्ट थे। इथाका के युवा।
इसलिए, मैं तुमसे विनती करता हूँ, सोचो कि क्या किया जाना चाहिए।
तब विचलित टेलीमाकस ने उत्तर दिया: “हे प्रिय पिता, इस बात पर ध्यान दें; क्योंकि लोग कहते हैं कि समस्त मानवजाति में आप ही सर्वोत्कृष्ट परामर्श देते थे। इस मामले में कोई भी मनुष्य आपके समर्थ नहीं था। हम प्रसन्न हृदय से आपका अनुसरण करते हैं; और मुझे विश्वास है कि हम अपनी शक्ति के अनुसार किसी भी कार्य में दृढ़ रहेंगे।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“तो मैं तुम्हें वह बताता हूँ जो मुझे सबसे बुद्धिमान लगता है।
पहले स्नान करो, और फिर वस्त्र धारण करो
महल की दासियों को नए वस्त्र चुनने का आदेश दो; उस देवतुल्य कवि को, जो मधुर स्वर वाला वीणा बजाता है, नेता बनने दो, और एक ऐसी धुन बजाने दो जो उत्सवपूर्ण नृत्य को प्रेरित करे,
ताकि बाहर से सुनने वाले सभी लोग कहें—
चाहे राहगीर हों या आस-पास रहने वाले—
‘यह एक शादी है।’ अन्यथा पूरे देश में
हमारे द्वारा किए गए नरसंहार की अफवाह फैल जाएगी

हमारे वन क्षेत्र में पहुँचने से पहले ही कई लोग शादी के प्रस्ताव लेकर आ चुके होंगे, और वहाँ हम ओलंपियन जूपिटर के मार्गदर्शन में परामर्श करेंगे।
उसने बात की; उन्होंने ध्यान से सुना और आज्ञा मानी। उन्होंने स्नान किया, और फिर अपने वस्त्र पहने। दासियों ने सज-धज कर खुद को सजाया; देवतुल्य कवि ने घुमावदार वीणा उठाई, और मधुर संगीत और सुंदर नृत्य के प्रेम में डूब गया। विशाल भवन पुरुषों और सुडौल महिलाओं के उल्लासपूर्ण कदमों से गूंज उठा, और बाहर खड़े एक व्यक्ति को कहते सुना गया:—
“निस्संदेह, किसी ने लंबे समय से प्रतीक्षित रानी को अंततः अपनी दुल्हन बना लिया है; वह एक निकम्मी स्त्री है, जो अपने यौवन के पति के लिए उसके सुंदर महल को उसके दोबारा आने तक नहीं रख सकी।”
ऐसे शब्द कहे गए, लेकिन उन्हें कहने वालों को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि क्या हुआ था। इसी बीच, महल की संरक्षिका यूरीनोमे, उदार यूलिसिस को स्नानघर ले गई, उसके अपने घर में उसके अंगों पर तेल लगाया, और उस पर एक भव्य लबादा और कुर्ता डाल दिया। पल्लास ने नायक के सिर पर शोभा और वैभव बिखेरा; उसने उसे और भी लंबा और राजसी बना दिया, उसके बालों को जलकुंभी के फूलों की तरह लहराते हुए नीचे की ओर बहने दिया, मानो कोई कुशल कारीगर, जिसे पल्लास और मिनर्वा ने सिखाया हो, चांदी के ढेर के चारों ओर सोने की किनारी लपेटता हो, एक शानदार कृति; इसी प्रकार देवी ने उसके चेहरे और रूप पर कृपा बरसाई। फिर स्नानघर से वह अमर लोगों में से एक की तरह बाहर निकला, उस आसन पर बैठा जहाँ से वह उठा था, ठीक पेनेलोप के सामने, और रानी को इस प्रकार संबोधित किया:—
“हे देवी, ओलंपियन ऊंचाइयों के निवासियों ने तुम्हें एक अभेद्य हृदय दिया है जो अन्य सभी स्त्रियों से परे है। मुझे यकीन है कि कोई अन्य पत्नी अपने पति से इतनी दूरी सहन नहीं कर सकती, जो लंबे कष्टों के बाद, बीसवें वर्ष की अनुपस्थिति में, अपनी जन्मभूमि और उसके पास लौटा है। आओ, दाई, एक पलंग तैयार करो, जहाँ मैं अकेले लेट सकूँ; उसका हृदय लोहे का है।”
इस पर ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया:
“नहीं, महाराज, यह अहंकार या उपेक्षा के कारण नहीं है,
न ही अत्यधिक आश्चर्य के कारण, कि मैं आपके प्रति ऐसा व्यवहार कर रही हूँ। मुझे आप अच्छी तरह याद हैं

जैसे आप उस दिन थे जब आपका उत्तम जहाज
आपको इथाका से लेकर आया था। हे देवी यूरिक्लेया, आप स्वयं को प्रेरित करें,
और सावधानीपूर्वक उस कक्ष के बाहर एक पलंग तैयार करें, जिसे उन्होंने अपने हाथों से बनाया था
; उस विशाल पलंग को बाहर ले जाएं,
और उस पर उनके रात्रि विश्राम के लिए ऊनी चादरें और लबादे बिछाएं।” उसने अपने पति को परखने के लिए कुछ कहा; लेकिन, नाराज़ होकर, यूलिसिस ने अपनी गुणी रानी को इस प्रकार उत्तर दिया:
“हे स्त्री, तूने अप्रिय शब्द कहे हैं। मेरे पलंग को किसने हटाया है? यह कार्य अनुभवी हाथों के लिए भी कठिन होगा, जब तक कि कोई देवता इसे स्थानांतरित करने न आया हो। कोई भी जीवित मनुष्य, यहाँ तक कि अपनी युवावस्था में भी, इसे आसानी से नहीं हिला सकता था, क्योंकि उस जटिल रचना में एक रहस्य था; इसे मैंने स्वयं आकार दिया था, किसी और ने नहीं। मेरे प्रांगण में, घनी पत्तियों वाली शाखाओं वाला एक जैतून का वृक्ष उगा था, एक लंबा और फलता-फूलता वृक्ष; उसका विशाल तना एक स्तंभ के समान था। उसके चारों ओर मैंने सीमेंटेड पत्थरों से एक कक्ष बनाया। दीवारें बन चुकी थीं; फिर मैंने छत बनाई और उस पर अच्छी तरह से चिपकाए हुए दरवाजे लगाए। इसके बाद मैंने पत्तियों से भरी डालियों को काटा और जड़ के ऊपर से तना काटकर औजारों से ठूंठ को अच्छी तरह से चिकना किया और उससे पलंग का खंभा बनाया। मैंने लकड़ी में छेद किए, उस पर फ्रेम रखा और नक्काशी की, और चांदी, सोना और हाथी दांत से जड़ाई की। मैंने उस पर बैंगनी रंग से रंगे बैल की खाल की पट्टियाँ लगाईं। अब, हे पत्नी, मुझे नहीं पता
कि मेरा बिस्तर वैसा ही है जैसा तब था,
या फिर जड़ से किसी ने जैतून के तने को काटकर उसे उसके स्थान से हटा दिया है।
उसने बोलना शुरू किया, और उसके घुटने कांपने लगे और उसका हृदय पिघल गया जब उसने अपने स्वामी को उन सभी संकेतों का इतनी सच्चाई से वर्णन करते सुना; और वह रो पड़ी, और उठी, और उसके पास दौड़ी, और अपनी बाहों को उसके गले में डाल दिया, और उसके माथे को चूमा, और कहा:—

“यूलिसिस, मुझ पर क्रोधित दृष्टि मत रखो, हे प्रभु, जो अन्य बातों में सभी मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान हो। देवताओं ने हमारा भाग्य कठिन बना दिया है, कहीं ऐसा न हो कि हम अपनी जवानी सुखपूर्वक गुज़ार लें और इस प्रकार वृद्धावस्था में पहुँच जाएँ। प्रार्थना है, क्रोधित मत हो, और इस बात का बुरा मत मानो कि मैंने तुम्हें देखते ही गले नहीं लगाया, क्योंकि मेरा हृदय सदा भयभीत रहा है कि कहीं इस द्वीप पर आने वाला कोई व्यक्ति मुझे शब्दों से बहका न ले; और छल करने वालों की तो कोई गिनती ही नहीं है। बृहस्पति की पुत्री, अर्गिव हेलेन।” अगर उसे पता होता कि आने वाले वर्षों में युद्धप्रिय यूनानी उसे उसके अपने देश वापस ले आएंगे, तो वह कभी किसी अजनबी की विनती नहीं सुनती और उससे प्रेम नहीं करती। यह एक देवता था जिसने उसे उस घृणित कार्य के लिए उकसाया। उसके मन में कभी उस बड़ी विपत्ति का ख्याल नहीं आया जो बाद में आई और जिसने हम पर इतना दुख लाया। लेकिन अब, चूंकि तुमने स्पष्ट और सच्चे संकेतों से हमारे बिस्तर के बारे में बताया है, जिसे किसी भी इंसान ने कभी नहीं देखा, सिवाय मेरे और तुम्हारे, और केवल एक दासी, एक्टोरिस—जिसके साथ मेरा मेरे पिता ने मुझे तब दिया जब मैं तुम्हारे इस महल में आया, और जिसने हमारे एकांत कक्ष का द्वार रखा— तुमने मेरा मन पूरी तरह से विश्वास में जीत लिया, हालाँकि इसे जीतना कठिन था। उसने कहा, और वह आँसुओं से भर उठा; वह रोया
जैसे अपनी बाहों में उसने अपनी प्रिय
और वफादार पत्नी को थामे रखा हो। जैसे वह ज़मीन का स्वागत करती है
उन लोगों के लिए जो गहरे समुद्र में तैरते हैं, जिनकी मजबूत नाव को नेपच्यून ने लहरों के बीच तोड़ दिया है,
लहरों और झोंकों से टकराती हुई, और कुछ ही
हैं जो पुराने समुद्र से
किनारे तक पहुँचते हैं, उनके अंग खारे पानी से लथपथ होते हैं,
ये खुशी-खुशी समुद्र तट पर चढ़ते हैं, और सुरक्षित रहते हैं—
उसका पति उसकी आँखों में इतना ही स्वागत योग्य था। न ही उसकी सुंदर सफेद भुजाएँ उसकी गर्दन छोड़तीं, और गुलाबी उंगलियों वाली सुबह उन्हें रोते हुए पाती, लेकिन नीली आँखों वाली पल्लास ने योजना बनाई थी कि ऐसा न हो; वह रात भर रुकी रही, जब रात ढलने वाली थी, और सुनहरी सुबह को गहरे सागर में देर तक थामे रखा, और उसे अपने उन घोड़ों को जो मनुष्यों के लिए प्रकाश लाते हैं

— लैम्पास और फाएथॉन, तेज घोड़े जो सुबह को उसके मार्ग पर ले जाते हैं। तब भविष्यवक्ता यूलिसिस ने अपनी रानी से कहा:—
“हे पत्नी, अभी तक हमने अपने सभी परिश्रमों का अंत नहीं किया है। एक कार्य शेष है जिसे मुझे अभी पूरा करना है, परिश्रमपूर्ण और असीम कठिनाइयों से भरा हुआ; क्योंकि टायरेसियस की आत्मा ने यही भविष्यवाणी की थी, उस दिन जब मैं प्लूटो के निवास पर गया था, भविष्यवक्ता से अपने साथियों और स्वयं की वापसी के बारे में पूछने के लिए। परन्तु अब, हे प्रिय पत्नी, चलो अपने पलंग की तलाश करें, ताकि आराम से लेटकर हम सुखद नींद से तरोताजा हो सकें।”
तब ऋषि पेनेलोप ने बारी-बारी से कहा: “जब भी तुम चाहो, तुम्हारा पलंग तैयार कर दिया जाएगा, क्योंकि देवता तुम्हें तुम्हारे प्यारे घर और तुम्हारी जन्मभूमि वापस लाने की कृपा करेंगे। परन्तु अब जब तुमने इसके बारे में कहा है और कोई देवता तुम्हें प्रेरित कर रहा है, तो बताओ कि यह नया कार्य क्या है। मुझे इसके बारे में बाद में पता चलेगा, निस्संदेह, और अभी पता चल जाए तो कोई बुराई नहीं है।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “प्रिय पत्नी, तुम क्यों पूछ रही हो? मुझे इतना क्यों परेशान कर रही हो? मैं तुम्हें सच-सच बताऊँगा, और तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा, चाहे तुम खुशी से न सुनो, और न ही बताओ। टायरेसियस ने मुझे एक के बाद एक शहर से गुज़रने को कहा, जब तक कि मुझे एक ऐसी जाति न मिल गई जो समुद्र को नहीं जानती, न ही नमक के साथ खाना खाती है, जिसने कभी लाल रंग के धनुष वाली नाव या सुंदर चप्पू नहीं देखे, जो जहाजों के पंख होते हैं। और उसने यह स्पष्ट संकेत दिया, और मैं इसे तुमसे नहीं छिपाऊँगा।” जब कोई दूसरा यात्री जिससे मैं मिलूँ, कहे कि मैं अपने मजबूत कंधे पर सूप लिए बैठा हूँ, तो वह मुझसे कहे कि मैं चप्पू को सीधा ज़मीन में गाड़ दूँ, और सम्राट नेपच्यून को एक मेढ़ा, एक बैल, और एक मजबूत सूअर अर्पित करूँ, और फिर घर लौटकर, विशाल आकाश में निवास करने वाले सभी देवताओं को बारी-बारी से बलि चढ़ाऊँ। अंत में, दूर सागर से, मृत्यु मुझ पर आ गिरेगी, ऐसी मृत्यु जो शांतिपूर्वक मुझे एक शांत वृद्धावस्था में ले जाएगी। लोग समृद्ध और संतुष्ट होंगे। पैगंबर ने कहा, यह सब पूरा होगा।
और फिर ऋषि पेनेलोप ने उत्तर दिया:
“यदि इस प्रकार अमर लोग तुम्हारे बाद के युग को

अधिक सुखमय बनाते हैं, तो आशा है कि तुम आने वाले वर्षों में बुराई से
बच जाओगे।”
वे आपस में बातें कर रहे थे। इसी बीच यूरिनोमे, नर्स के साथ गई, और जलती हुई मशालों की रोशनी में उसने मुलायम, नए कपड़ों से पलंग सजाया; और जब उनके व्यस्त हाथों ने पलंग को भरकर ऊंचा कर दिया, तो वृद्ध महिला अपने कमरे में आराम करने चली गई, जबकि यूरिनोमे, जो शाही मंडप की रखवाली करती थी, ने एक मशाल उठाई और उन दोनों को वहाँ ले गई, और जब वे दोनों कमरे में पहुँच गए, तो वह चली गई। उन्होंने प्राचीन पलंग पर आनंदपूर्वक अपना स्थान ग्रहण किया। राजकुमार, चरवाहा और सूअर चराने वाला रुक गए और नाचने लगे। उन्होंने दासियों को भी रुकने का आदेश दिया और रात के अंधेरे में डूबे महल के कमरों में विश्राम करने चले गए। फिर सुखद बातचीत का समय आया, जिसमें स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री ने अपने घर में उन लोगों द्वारा सहे गए अन्याय के बारे में बताया जो उससे प्रेम करने आए थे—एक लालची टोली—जिन्होंने भेड़ों और भेड़ों का बड़े पैमाने पर वध किया और कई शराब के पीपों को खाली कर दिया। तब कुलीन वंश के यूलिसिस ने बताया कि उसके शौर्य ने अन्य पुरुषों पर क्या विपत्तियाँ लाईं; उसने क्या परिश्रम और पीड़ा सहन की; उसने उसे सब कुछ बताया, और वह प्रसन्न होकर उसकी बात सुनती रही, और उसकी कहानी समाप्त होने तक उसकी पलकों पर नींद नहीं आई।
और सबसे पहले उसने उसे बताया कि कैसे उसने सिकोनिआ के लोगों पर विजय प्राप्त की; कैसे वह वहाँ से कमल पर पलने वाली जाति के समृद्ध खेतों तक पहुँचा; साइक्लोप्स ने क्या किया, और कैसे उसने साइक्लोप्स से अपने बहादुर साथियों की मृत्यु का बदला लिया, जिन्हें उस दुष्ट ने बेरहमी से मार डाला और खा लिया था। और कैसे वह एयोलस के पास आया, और वहाँ उसका मैत्रीपूर्ण स्वागत हुआ, और एयोलस ने उसे उसकी यात्रा पर भेजा; फिर भी अपने वतन पहुँचना उसकी नियति में नहीं था। एक भीषण आंधी ने उसके बेड़े को घेर लिया, और उसे गहरे समुद्री सागर में बहा ले गई, वह विलाप करता हुआ बह निकला। और वह टेलीपिलस में कैसे उतरा, लेस्ट्रिगोनियनों के बीच, जिन्होंने उसके जहाजों और युद्धप्रिय साथियों को नष्ट कर दिया, वह अकेला अपने काले जहाज में बच निकला। फिर उसने बताया कि कैसे सर्सी, उसके छल और अनेक कलाओं के बारे में, और कैसे वह अपने अच्छे जहाज में प्लूटो के भयानक राज्य में गया, थेब्स के टायरेसियस की आत्मा से परामर्श करने के लिए, और उसने अपने सभी खोए हुए

साथियों और अपनी माँ को देखा—जिसने उसे जन्म दिया और बचपन में उसका पालन-पोषण किया। और कैसे उसने बाद में सायरन की आवाज़ें सुनीं, और कैसे वह भटकती चट्टानों, भयानक चैरिबडिस और स्काइला की चट्टानों पर पहुँचा—जिनसे कोई भी मनुष्य कभी सुरक्षित रूप से नहीं गुजरा था; कैसे उसके साथियों ने भोजन के लिए सूर्य के बैलों का वध किया; कैसे बृहस्पति, गर्जन के देवता, ने स्वर्ग से अग्नि के वज्रपात से उसकी तीव्र नौका पर प्रहार किया; और कैसे उसका वीर दल, सभी नष्ट हो गए, केवल वह अकेला ही जीवित बच निकला। और कैसे वह ओगिगिया के द्वीप पर पहुँचा, उसने बताया, और अप्सरा कैलिप्सो से मिला, जिसने चाहा कि वह उसका पति बने, और लंबे समय तक उसे अपनी गुफा में रोककर रखा और भोजन कराया, और वादा किया कि वह कभी नहीं मरेगा, और न ही आने वाले दिनों में बुढ़ापे के क्षय को जानेगा; फिर भी उसने उसके हृदय के उद्देश्य को नहीं विचलित किया। और फिर वह अनेक कठिनाइयों से गुज़रते हुए फ़ेएशियनों के पास पहुँचा, और उन्होंने उसका स्वागत किया और उसे देवता के समान आदर दिया। और उसे एक नाव में बिठाकर उसके जन्मस्थान पर पीतल और सोने के प्रचुर उपहारों और वस्त्रों के साथ भेजा गया। जैसे ही उसने ये अंतिम शब्द कहे, नींद ने उसे धीरे से अपनी गिरफ्त में ले लिया; उसके सभी अंग शिथिल होकर विश्राम करने लगे, और उसकी सारी चिंताएँ शांत हो गईं।
नीली आँखों वाली पल्लास के मन में अभी भी नई योजनाएँ थीं; और जब उसने देखा कि यूलिसिस अपने उस परिचित पलंग में आराम और नींद से तरोताज़ा हो गया है, तो उसने भोर की पुत्री, सुबह को बुलाया, अपने स्वर्ण रथ में सागर से उदय होने के लिए, और मनुष्यों पर अपना प्रकाश डालने के लिए। यूलिसिस अपने कोमल पलंग से उठा, और अपनी पत्नी को इस प्रकार आदेश दिया:
“हे पत्नी! हमने बहुत दुख सहा है
पहले ही—मेरी लंबी
दुर्भाग्यपूर्ण अनुपस्थिति पर रोते हुए—मैंने वर्षों तक
बृहस्पति और अन्य सभी देवताओं की कसम खाकर
इस प्रिय भूमि पर लौटने से रोका, यद्यपि
मैं घर के लिए तड़पता रहा। अब जब इस पलंग पर
हम उस स्थान पर आसीन हैं जिसकी हमने इतनी बेसब्री से कामना की थी,
महल में मेरी सारी संपत्ति की जिम्मेदारी तुम ले लो
। उन झुंडों और भेड़ों के लिए जिन्हें उन अत्याचारी दावेदारों ने खा लिया

है
मैं लूट के रूप में कई अन्य को जब्त कर लूंगा;
शेष यूनानी मेरे लिए लाएंगे, जब तक कि मेरे अस्तबल भर न जाएं। फिर से भर गए हैं। मैं अपने खेत की ओर जल्दी जाती हूँ, जो पेड़ों से घिरा है, ताकि अपने पिता, मेरे प्यारे पिता, जो लगातार मेरे लिए दुखी रहते हैं, का अभिवादन कर सकूँ। तुम बुद्धिमान हो, इसलिए मैं तुम्हें यह आदेश देती हूँ; उगते सूरज के साथ यह अफवाह जल्दी ही फैल जाएगी कि मैंने महल में सभी दूल्हों को मार डाला है। अब तुम और तुम्हारी दासियाँ ऊपर वाले कमरे में जाओ, और बैठो, बाहर मत देखो, और कुछ भी मत माँगो।
इस प्रकार सरदार ने कहा, और अपने कंधों पर अपना शानदार कवच टिका लिया। फिर उसने अपने पुत्र, चरवाहे और सूअर चराने वाले को बुलाया और उन्हें अपने हथियार उठाने का आदेश दिया। उन्होंने आज्ञा का पालन किया, और पीतल के कवच से लैस होकर उन्होंने द्वार खोल दिए। जैसे ही वे सब बाहर निकले, यूलिसिस ने आगे-आगे चलना शुरू कर दिया। सुबह की पहली किरण पृथ्वी पर पड़ चुकी थी, लेकिन पल्लास ने उन्हें अंधेरे में ढककर शहर से होते हुए तेजी से आगे बढ़ाया।

पुस्तक XXIV
निष्कर्ष
मरकरी द्वारा हेड्स में ले जाए गए सभी दावेदारों की आत्माएं - हेड्स में एगामेम्नन और अकिलीज़ - दावेदारों की आत्माओं से उनकी मुलाकात और एम्फिमेडन का वृत्तांत - इथाका के बगीचे में यूलिसिस और उनके पिता की मुलाकात और आपसी पहचान - एंटिनोअस के पिता यूपेइथेस के नेतृत्व में इथाकावासियों का विद्रोह - विद्रोह को दबा दिया गया, यूपेइथेस को लेर्टेस ने मार डाला और यूलिसिस और उनकी प्रजा के बीच स्थायी शांति स्थापित हुई। साइलेनियन हेमीज़ ने मारे गए प्रेमियों की आत्माओं को बुलाया। उनके हाथ में सुंदर सुनहरी छड़ी थी, जिससे वे इच्छा अनुसार मनुष्यों की आँखें बंद कर देते थे या उन्हें नींद से जगा देते थे। इसी छड़ी से उन्होंने प्रेतों के समूह का मार्गदर्शन किया; वे चीखते हुए उनके पीछे-पीछे चले। जैसे जब चमगादड़ों का झुंड,
एक भयानक गुफा में गहराई में, इधर-उधर उड़ता है
और चीखता है, जैसे अगर कोई उस जगह से गिर गया हो
जहाँ, एक दूसरे और चट्टान से चिपके हुए,
वे आराम कर रहे थे, तो भूतों का वह झुंड बाहर निकला
तीखी और विलापपूर्ण चीखों के साथ। उनके आगे दयालु हेमीज़ उन उजाड़ रास्तों से गुज़रे, और वे समुद्र की धारा को पार कर गए, और ल्यूकैडिया की चट्टान, सूर्य के द्वार, और स्वप्नलोक के लोगों को पार करते हुए, जब तक कि वे एस्फोडेल के खेतों तक नहीं पहुँच गए, जहाँ आत्माएँ निवास करती हैं, मरने वालों के निराकार रूप।
और वहाँ उन्हें पेलेउस के पुत्र, उसके मित्र पैट्रोक्लस, निर्दोष सरदार एंटिलोकस और एजैक्स की आत्मा मिली, जो कद और रूप में पेलेउस के महान पुत्र को छोड़कर सभी यूनानियों से श्रेष्ठ था। ये सभी अकिलीज़ के चारों ओर एकत्रित थे। फिर एट्रेस के पुत्र एगामेम्नन का भूत आया; वह शोक में डूबा हुआ प्रतीत हुआ, और उसके चारों ओर अन्य लोग खड़े थे, जिन्होंने एगिस्थस के महल में अपने भाग्य का सामना किया और मर गए। पेलेउस के पुत्र ने यह बात सुनी और एगामेम्नन से इस प्रकार कहा:—

“अत्रिय, हमने सोचा था कि वज्र के स्वामी बृहस्पति ने तुम्हें तुम्हारे समस्त वर्षों में अन्य सभी पुरुषों से अधिक कृपा दी है—तुमने ट्रॉय के मैदान पर इतने सारे और इतने वीर पुरुषों पर शासन किया, जहाँ हम यूनानियों ने इतने कष्ट सहे। फिर भी बहुत शीघ्र ही मृत्यु का क्रूर भाग्य, जिससे कोई भी स्त्री-पुत्र नहीं बच सकता, तुम पर आ पड़ा। हे, यदि तुम्हारे शासन के गौरवशाली काल में ही, जब तुम ट्रॉय के दूर राज्य में थे, वह भाग्य तुम्हें आ गिरा होता, तो एकत्रित यूनानी क्या सोचते? मैंने तेरे लिए एक मकबरा बनवाया था! तू अपने पुत्र के लिए गौरवशाली विरासत छोड़ना चाहता था; अब तूने अत्यंत दुखद मृत्यु पाई है।
और फिर एगामेम्नन की आत्मा ने कहा:
“पेलियस के भाग्यशाली पुत्र, देवतुल्य सरदार अकिलीज़, जो आर्गोस से दूर इलियम के मैदान में शहीद हुए, जबकि तुम्हारे चारों ओर ट्रॉय और ग्रीस के कई वीर पुत्र गिर पड़े, जिन्होंने तुम्हारे लिए लड़ाई लड़ी, और तुम धूल के बवंडर के बीच अपने विशालकाय शरीर में लेटे हुए थे, घुड़सवारी को हमेशा के लिए भूल चुके थे। उस पूरे दिन हम लड़ते रहे, और तब तक नहीं रुके जब तक कि बृहस्पति ने हमें अलग करने के लिए एक तूफान नहीं भेजा। जब हम तुम्हें वहाँ से ले गए और लाए हमने तुझे शवयात्रा में एक अर्थी पर लिटाया, तेरे सुडौल अंगों पर गर्म जल डाला और तेल से अभिषेक किया। तेरे चारों ओर अचेयन लोग गर्म आँसुओं में डूबे खड़े थे और अपने बाल काट रहे थे। जब तेरी माता ने यह समाचार सुना, तो सागर की गहराई से वह अपनी अमर अप्सराओं के साथ उठी। शोक से उनकी विलाप की ध्वनि लहरों पर गूंजी। यूनानी भय से कांप उठे और अपने विशाल जहाजों में शरण लेने के लिए दौड़ पड़े, यदि प्राचीन ज्ञान में निपुण और ज्ञात नेस्टर ने उनकी मदद की होती। क्योंकि परामर्श हमेशा सुरक्षित होते हैं, इसलिए उन्होंने अपनी जल्दबाजी को नहीं रोका और इस प्रकार अपने विवेकपूर्ण विचार को प्रकट किया:
“ ‘रुको, अर्गिवेस, ग्रीस के युवकों; भागने का विचार मत करो!
यह उसकी माँ है; वह समुद्र से आ रही है
अपने मृत पुत्र के पास, और अपनी अमर अप्सराओं को ला रही है।’
“उसने बात की; उसके शब्दों ने वीर यूनानियों को भागने से रोक दिया। और अब तेरे चारों ओर आकर खड़ी हो गईं, गहरे सागर के प्राचीन देवता की पुत्रियाँ, घोर विलाप करती हुई। तेरे शव पर उन्होंने अमृतमय वस्त्र डाले। नौ देवियों

ने मधुर स्वरों में तेरे लिए विलाप किया, एक दूसरे को उत्तर देते हुए। तब तूने आर्गिव सेना में से किसी को भी नम आँखों से नहीं देखा होगा, देवियों के गीत ने उन्हें इतना भावुक कर दिया था। सत्रह दिन? और रातों तक हमने तेरा शोक मनाया—अमर और नश्वर दोनों ने। अठारहवें दिन हमने श्रद्धांजलि अर्पित की।” तेरा शरीर अग्नि में डाला गया, और चिता पर कई मोटी भेड़ों और कई बैलों को मारा गया, जिनके सींग टेढ़े थे। देवताओं के वस्त्रों में, आग ने तुझे अभिषेक तेलों और शहद के बीच भस्म कर दिया। हमारी सेना के कई वीर कवच और रथों में, या पैदल, तेरी अंतिम संस्कार की चिता के चारों ओर खेलों में लड़े, और शोरगुल बहुत था। और जब अंत में वल्कन की आग ने तेरे शरीर को भस्म कर दिया, तो हमने सुबह तेरी सफेद हड्डियों को इकट्ठा किया, और अकिलीज़ ने उन पर शुद्ध शराब और सुगंधित तेल डाले। तेरी माँ एक फूलदान लाई। उसने कहा, बाकस द्वारा दिए गए सोने से बने इस मकबरे में प्रसिद्ध वल्कन की कृति है, और अब इसमें, हे पेलेउस के प्रख्यात पुत्र, तेरी श्वेत हड्डियाँ पड़ी हैं, और उनमें मृत पैट्रोक्लस मेनोएटिएड्स की हड्डियाँ भी मिली हुई हैं। हमने तेरे मित्र एंटिलोकस की राख अलग से रखी है, जिसे तूने मारे गए पैट्रोक्लस के बाद सबसे अधिक सम्मान दिया था। इन सबके ऊपर, युद्धप्रिय यूनानियों की पवित्र सेना ने विशाल हेलेस्पोंट के एक शिखर पर एक भव्य मकबरा बनाया है। दूर गहरे समुद्र में दिखाई देता है,
उन लोगों द्वारा जो अब पैदा हुए हैं, या आने वाले वर्षों में पैदा होंगे। तुम्हारी माँ ने पहले
देवताओं से प्रार्थना की, और अचेयन सरदारों के लिए सर्कस में महान खेलों का आयोजन किया।
मैंने अक्सर वीरों के अंतिम संस्कार देखे हैं, जब उनके सरदार की मृत्यु हो जाने पर, युवक खेलों के लिए तैयार होते थे, और पुरस्कार जीतने के लिए संघर्ष करते थे; लेकिन मुझे सबसे अधिक वे पुरस्कार पसंद आए जो चांदी के पैरों वाली थेतिस ने तुम्हारे अंतिम संस्कार के उपलक्ष्य में दिए थे, जिसे सभी प्यार करते थे। अमर। इसलिए हे अकिलीज़, मृत्यु से तूने अपनी प्रसिद्धि नहीं खोई है, और मनुष्यों के बीच तेरा गौरव सदा महान रहेगा; परन्तु इलियम पर युद्ध समाप्त करने का मुझे क्या लाभ हुआ, क्योंकि बृहस्पति ने मुझे लौटते ही नष्ट होने का श्राप दिया, एगिस्थस और मेरी दोषी पत्नी द्वारा मारा जाना?

वे आपस में बातें कर रहे थे। तभी दूत आर्गस-क्वेलर (दूसरों को मारने वाला) पास आया, जो यूलिसिस द्वारा मारे गए प्रेमियों की आत्माओं को लेकर आया था। दोनों सरदार यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित होकर उनकी ओर बढ़े। एट्रेस के पुत्र एगामेम्नन की आत्मा, प्रसिद्ध एम्फिमेडन को भली-भांति जानती थी, जिसका जन्म मेलेंथियस से हुआ था, और जिसने एक बार इथाका में अपने घर में उसका स्वागत किया था; और एट्रेस के पुत्र ने सबसे पहले उससे कहा: “एम्फिमेडन, किस दुर्भाग्यपूर्ण विपत्ति ने तुम सबको, जो चुने हुए पुरुषों की तरह प्रतीत होते हो और सभी एक ही आयु के हैं, पृथ्वी के नीचे इन उजाड़ आवासों में ला खड़ा किया है? पूरे शहर में, तुमसे अधिक श्रेष्ठ पुरुष मिलना वास्तव में कठिन है। क्या नेपच्यून ने तुम्हें समुद्र में भयंकर हवाओं और विशाल लहरों से तुम्हारे जहाजों में डुबो दिया है, या सशस्त्र पुरुषों ने तुम्हें ज़मीन पर मार गिराया है, अपने बैल और भेड़ें ले जाते हुए, या तुम्हारी पत्नियों और शहर की रक्षा के लिए लड़ते हुए? मुझे बताओ, क्योंकि मैं दावा करता हूँ कि मैं कभी तुम्हारा अतिथि था। क्या तुम्हें याद है कि मैं तुम्हारे महल में ठहरा था? जब मैं देवतुल्य मेनेलास के साथ आया, और यूलिसिस से विनती की कि वह अपने वीर बेड़े को हमारे बेड़े में मिला ले, और हम ट्रॉय के लिए रवाना हों। विशाल समुद्र को पार करने में हमें पूरा एक महीना लग गया, और दीवारों वाले शहरों को नष्ट करने वाले यूलिसिस को अपना सहयोगी बनाना हमारे लिए बहुत कठिन कार्य साबित हुआ।
मृत एम्फिमेडन की आत्मा ने उत्तर दिया:
“एट्राइड्स एगामेम्नन, दूर-दूर तक प्रसिद्ध,
और मनुष्यों के राजा, मुझे वह सब अच्छी तरह याद है
जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो; मैं अब वर्णन करूँगा,
और सचमुच, कि कैसे हमारा दुखद अंत हुआ।
हमने लंबे समय से अनुपस्थित सरदार
यूलिसिस की पत्नी को रिझाने की कोशिश की; उसने न तो अस्वीकार किया और न ही हमारे प्रस्ताव को स्वीकार किया, भले ही वह कितना भी घृणित क्यों न हो, लेकिन, हमारे विनाश की योजना बनाते हुए, उसने यह धूर्त चाल चली। उसने अपने कमरों में करघे पर नाजुक धागों का एक जाल बिछाया,
जो लंबाई और चौड़ाई में पर्याप्त था, और इस प्रकार उसने कहा हम सभी से: ‘युवा राजकुमारों, जो मुझसे प्रेम करने आए हैं—क्योंकि यूलिसिस अब नहीं

रहे, मेरे महान पति—कृपा करके मुझे विवाह के लिए विवश न करें, जब तक मैं करघे पर बुनाई पूरी न कर लूँ—ताकि मेरे धागे व्यर्थ न बुने जाएँ—वीर सरदार लेर्टेस के लिए अंतिम संस्कार का वस्त्र, जब उनका मृत्यु का समय आएगा, मृत्यु की लंबी नींद के साथ; अन्यथा कोई अचियन स्त्री मुझे दोष दे सकती है, यदि मैं उसे बिना कफ़न के छोड़ दूँ, जिसने जीवन में इतना धनवान था।’ ये उसके शब्द थे, और उन्होंने आसानी से सबका दिल जीत लिया। हमारे उदार मन पर। इस प्रकार वह उस विशाल जाल को बुनती रही, और हर रात मशाल की रोशनी में उसे खोलती रही। पूरे तीन साल तक उसने ऐसा ही किया, और इस छल से यूनानी युवकों को धोखा दिया; लेकिन जब चौथा साल शुरू हुआ, तो एक सर्वज्ञानी स्त्री ने रहस्य उजागर किया, और हमने स्वयं उसे उस विशाल जाल को खोलते हुए देखा। इसके बाद, विवश होकर, और अनिच्छा से, उसने उसे पूरा किया। और जब अंत में उसने अपना बुना हुआ वस्त्र दिखाया, तो वह विशाल जाल... वह सूर्य की तरह चमक उठी थी
या चंद्रमा की तरह, किसी शत्रु देवता ने यूलिसिस को उसके अपने खेतों के एक दूरदराज के कोने में, उसके सूअर चराने वाले की झोपड़ी में वापस लाया।
और वहाँ उसका बेटा भी अपने काले जहाज में आया, जो पाइलोस के रेतीले तट से लौट रहा था। फिर दोनों ने, जब उन्होंने सूटरों को मारने की योजना बनाई, तो महान शहर की दीवारों के भीतर आए; पहले टेलीमाकस,
और उसके बाद यूलिसिस, अपने मार्गदर्शक सूअर चराने वाले के साथ। वह गंदे कपड़ों में लिपटा हुआ था। और वह एक दयनीय, बहुत बूढ़े भिखारी जैसा लग रहा था, लाठी के सहारे। फटे-पुराने कपड़ों के उस वेश में, अचानक प्रकट होने पर, उसे कोई नहीं पहचान पाया, यहाँ तक कि हम सब में सबसे बूढ़ा भी नहीं। हमने उसे कठोर शब्द कहे और मार-पीट की। उसने कुछ देर धैर्य से, अपने ही महल में मार और अपमान सहा। अंततः बृहस्पति से प्रेरित होकर, वह और उसका पुत्र टेलीमाकस महल से चमकते हथियार ले गए, और उन्हें एक दूर के कमरे में रख दिया, और सभी दरवाजे बंद कर दिए। फिर, अपने पति की चालाकी से प्रेरित होकर, रानी ने
उसने हम सभी बदनसीब दूल्हों के सामने तीरंदाजी का खेल रखा, जिसमें धनुष और पुराने लोहे के छल्ले थे। यह हमारे लिए मृत्यु का द्वार था।
हममें से कोई भी उस मजबूत धनुष को झुका नहीं सका,
किसी में भी इतनी ताकत नहीं थी। लेकिन जैसे ही वह धनुष हमसे

यूलिसिस के हाथों में गया, हमने धनुष ले जाने वाले को जोर से डांटा और उसे मना किया, लेकिन व्यर्थ।
केवल टेलीमाकस ने कठोर आदेश के साथ उसे धनुष सौंपने का आदेश दिया। जब बहुत सहनशील सरदार यूलिसिस ने धनुष को अपने हाथों में लिया, तो उसने आसानी से डोरी खींची और तीर चला दिया। सभी छल्लों को भेदता हुआ एक तीर। वह उछला और दहलीज पर खड़ा हो गया; उसके पैरों पर उसने पंखों वाले तीर बरसाए, उसके चारों ओर एक भयानक दृष्टि डाली और राजा एंटिनोउस को मार डाला। फिर उसने अपने सामने खड़े लोगों पर घातक तीर चलाए; वे एक साथ गिर पड़े और मर गए। हमने देखा कि कोई देवता उनके साथ था, जब वे हम पर ज़ोरदार हमला करने के लिए दौड़े और महल में हमारा पीछा करते हुए हमें चारों ओर मार डाला। मरते हुए लोगों की कराहें भयानक थीं, खोपड़ियाँ फट गईं और फर्श हिलने लगा। रक्त से लथपथ। हे अगामेमन, यही वह नियति थी जिससे हम नष्ट हुए। अब हमारे शव महल में उपेक्षित पड़े हैं; क्योंकि अभी तक हमारे रिश्तेदार, जो अपने घरों में रह रहे हैं, ने यह समाचार नहीं सुना है, और न ही वे हमारे घावों को काले रक्त से साफ करने आए हैं, और न ही हमें आंसुओं के साथ अर्थी पर लिटाने आए हैं— मृतकों को दिए जाने वाले ऐसे सम्मान।
इसके जवाब में एगामेम्नन की आत्मा बोली:
“लार्टेस के पुत्र, भाग्यशाली और बुद्धिमान, यूलिसिस! तूने असाधारण शक्ति और वीरता के बल पर अपनी पत्नी को पुनः प्राप्त कर लिया है।
और तेरी निष्कलंक रानी, इकारियस की पुत्री, नेक हृदय वाली है, जो कुंवारी रहते हुए भी, उस व्यक्ति को याद रखती है जिसे उसने अपना वचन दिया था। उसके महान शौर्य की प्रसिद्धि कभी नष्ट नहीं होगी, और देवता स्वयं पृथ्वी पर रहने वालों के लिए, ऋषि पेनेलोप की प्रशंसा में मधुर गीत रचेंगे।
वह ऐसी नहीं थी जो उसने धोखे से अपने यौवन के पति की हत्या कर दी—वह टिंडारस के घराने की थी। मानवजाति में उसका नाम एक घृणित गीत का विषय बन जाएगा; और इससे महिलाओं पर, यहाँ तक कि निष्ठावान और नेक महिलाओं पर भी, भारी बदनामी हुई है।
वे आपस में बातें कर रहे थे, वहीं खड़े होकर
प्लूटो के राज्य में, गुंबदनुमा पृथ्वी के नीचे।
इसी बीच यूलिसिस, शहर से जल्दी से आते हुए,
लेर्टेस के सुंदर खेतों में आया, जिन्हें वह

“हे वृद्ध पुरुष! इस सुंदर बाग की देखभाल करने में कौशल की कोई कमी नहीं है, जिसकी देखभाल से यह हमेशा हरा-भरा रहता है; अंजीर, अंगूर, नाशपाती, जैतून या किनारों पर उगने वाले किसी भी पौधे की वृद्धि ऐसी नहीं है जो आपके स्नेहपूर्ण हाथ से अछूती रही हो। फिर भी, मैं कहना चाहता हूँ, और तुम नाराज़ मत होना, तुम्हारी देखभाल ठीक से नहीं की जाती, क्योंकि तुम उम्र के बोझ तले दबे हुए हो, गंदे और साधारण वस्त्रों में हो। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारे आलस्य के कारण तुम्हारा स्वामी तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार करता हो; और न ही तुम्हारे चेहरे या हावभाव में कोई दासता दिखाई देती है।” या कद-काठी; तुम तो राजा जैसे लगते हो; तुम स्नान और भोज का आनंद लेने वाले और आराम से लेटने वाले प्रतीत होते हो—क्योंकि यह तुम्हारे जैसे बूढ़े लोगों को शोभा देता है। अब सच-सच बताओ, तुम्हारा स्वामी कौन है? यह बाग किसका है जिसकी तुम देखभाल करते हो? और इससे भी बढ़कर, बताओ, क्योंकि मैं बहुत कुछ जानना चाहता हूँ, अगर मैं इथाका आया हूँ, जैसा कि मुझे अभी-अभी एक ऐसे व्यक्ति ने बताया जो आते समय मुझसे मिला—एक ऐसा व्यक्ति जो बहुत बुद्धिमान नहीं था, जो मुझे वह बताने के लिए नहीं रुका जो मैं जानना चाहता था, और न ही सुनना चाहता था। जब मैंने उससे पूछा कि क्या मेरा कोई अतिथि स्वस्थ है या मर चुका है और प्लूटो के लोक में चला गया है, तो मेरे प्रश्न उठे। मुझे उसके बारे में बोलने दीजिए, और कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिए; मैंने एक बार अपने गृह देश में एक ऐसे व्यक्ति को अपने घर में ठहराया, जो मेरे घर आया था, और उससे अधिक स्वागत योग्य कोई अजनबी नहीं था। उसने कहा कि वह जन्म से इथाका का था, लेर्टेस का पुत्र और आर्सेसियस का पोता था। मैंने उसे अपने घर में ठहराया और आतिथ्य सत्कार किया, और अपने घर की भरपूर दावत दी, और उसे दिया ऐसे उपहार जो एक मेज़बान के लिए उपयुक्त हों—
गढ़े हुए सोने के सात टैलेंट, एक चांदी का प्याला
जो पूरी तरह से फूलों से सजा हो, बारह एकल लबादे,
बारह चटाई, बारह बेहद खूबसूरत चादरें,
और बारह कुर्ते, और स्वयं द्वारा चुनी गई,
बारह सुंदर युवतियाँ, जो गृहस्थी के कामों में निपुण हों।
फिर उसके पिता ने आँसू बहाते हुए उत्तर दिया: “हे अजनबी, तू सचमुच उस देश में है जिसके बारे में तू पूछ रहा है, परन्तु दुष्ट और अधर्मी लोग अब उस पर अधिकार रखते हैं। तूने अपने उदार उपहार व्यर्थ ही दिए हैं; यदि तूने

यूलिसिस को इथाका में जीवित पाया होता, तो वह तुझे उपहारों और उदारतापूर्वक स्वागत करता, जैसा कि उस व्यक्ति का अधिकार है जो कभी हमारा मेज़बान रहा है। फिर भी कह, और सचमुच कह, कितने वर्ष बीत गए जब तूने मेरे पुत्र को, यदि वह था, अपने अभागे को आश्रय दिया था? वह अतिथि, जिसे घर से दूर, उसके सभी मित्रों, गहरे समुद्र के जीवों, आकाश के दुष्ट पक्षियों और शिकारी जानवरों ने पहले ही खा लिया है। किसी माँ ने उसकी मृत्यु पर शोक नहीं मनाया और न ही उसे कफ़न में लपेटा, न ही मैंने, उसके पिता ने; और न ही पवित्र पेनेलोप, जिसने उसे दहेज दिया था, ने अपने प्रिय व्यक्ति के शव पर शोक मनाया, उसकी अर्थी पर, आँखों में आँसू भरकर, जैसा कि उचित था—मृत्यु के प्रति उचित सम्मान। अब, आगे, सच-सच बताओ, क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ, तुम्हारा नाम क्या है, और तुम कहाँ से आए हो? तुम किस जनजाति के हो, तुम्हारा शहर कहाँ है, और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? वह अच्छा जहाज कहाँ है जो लंगर डाले खड़ा है और तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को यहाँ लाया है? या तुम किसी और के जहाज से उतरे हो, जिसने तुम्हें किनारे पर उतारा और द्वीप छोड़ दिया?
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“मैं सब कुछ सच-सच बताऊँगा। मैं एलीबास से आया हूँ; वहाँ मेरा एक आलीशान घर है, अफीदास मेरे पिता हैं, जो शाही पॉलीपेमोन के पुत्र हैं, और मेरा नाम एपेरिटस है। किसी देवता ने सिसानियाई तट से मेरा मार्ग बदल दिया है, और मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध यहाँ ले आया है। मेरी नाव वहाँ मैदान के पास खड़ी है, शहर से बहुत दूर। यह पाँचवाँ वर्ष है जब से तुम्हारे यूलिसिस ने मुझे छोड़कर मेरी जन्मभूमि को अपने देश के लिए छोड़ दिया, हे दुर्भाग्यशाली!” फिर भी, उसके रवाना होते ही दाईं ओर पक्षियों के झुंड दिखाई दिए, जो शुभ संकेत थे, और मैंने उसे प्रसन्नतापूर्वक विदा किया, और वह प्रसन्नतापूर्वक चला गया। हमें आशा थी कि हम एक-दूसरे के अतिथि बन सकेंगे और शाही उपहारों का आदान-प्रदान कर सकेंगे।
उसने बात की, और लेर्टेस पर दुःख का एक घना बादल छा गया। उसने दोनों हाथों से पीली धूल को पकड़ा, और अपने सफेद सिर पर उसे दर्द भरी कराहों के साथ झाड़ दिया। यूलिसिस ने महसूस किया कि उसका हृदय पिघल गया; अपने प्रिय पिता को देखते ही उसकी नाक से गर्म साँसें बहने लगीं, और वह उछल पड़ा और उन्हें चूमकर अपनी बाहों में भर लिया, और कहा:—

“नहीं, मैं ही हूँ, मेरे पिता; मैं स्वयं वही हूँ जिसके बारे में तुम पूछ रहे हो। मैं बीसवें वर्ष में अपने देश लौटा हूँ। परन्तु शांत हो जाओ, आँसू न बहाओ, और शोक न करो, और मैं तुम्हें संक्षेप में बता दूँ, मैंने अपने महल में सभी दावेदारों को मार डाला है, और इस प्रकार उनके दुस्साहस और अपराधों का बदला लिया है।”
और फिर लेर्टेस ने दोबारा कहा:
“यदि अब तुम मेरे खोए हुए पुत्र यूलिसिस हो, तो
कोई स्पष्ट संकेत दो, जिससे मैं विश्वास कर सकूँ।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“पहले तो अपनी आँखों से उस निशान को देखो
जो कभी जंगली सूअर के सफेद दांत ने परनासस पर लगाया था, जब मैंने तुम्हारी आज्ञा से,
और अपनी दयालु माता की आज्ञा से, वहाँ की यात्रा की थी, उन उपहारों को प्राप्त करने के लिए जो उनके पिता, राजा ऑटोलिकस ने
एक बार इथाका आने पर वादा किया था।
और मेरी बात ध्यान से सुनो; मुझे उन वृक्षों के नाम बताने दो
जो तुमने अपने अच्छी तरह से जोते हुए बगीचे में मुझे दिए थे; मैंने उन सभी को तुमसे माँगा था,
जब मैं तेरे साथ बगीचे की पगडंडियों पर चला, एक छोटा लड़का। हम पेड़ों के बीच गए, और तूने उनके नाम रखे। तेरह नाशपाती के पेड़, और दस सेब तूने मुझे दिए, और चालीस अंजीर के पेड़; और तूने मुझे पचास पंक्तियों की अंगूर की बेलें देने का वादा किया, प्रत्येक पंक्ति अंगूर की भट्टी को सींचने के लिए पर्याप्त होगी। वहाँ हर स्वाद के अंगूर हैं, जब बृहस्पति के घंटे उन्हें ऊपर से पकने के लिए पोषित करेंगे।
वह बोला; बूढ़े आदमी का हृदय और घुटने कांप उठे, क्योंकि उसने महसूस किया कि यूलिसिस द्वारा दिए गए सभी संकेत कितने सत्य थे। उसने अपने प्रिय पुत्र को बाहों में भर लिया। बलवान सरदार, यूलिसिस ने उसे बेहोशी की हालत में अपने सीने से लगा लिया। लेकिन जब बूढ़े आदमी की शक्ति वापस लौटी और उसके मन में शांति छा गई, तो वह फिर बोला:
“हे पिता बृहस्पति, निश्चय ही देवता ओलंपियन शिखर पर निवास करते हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि अभिमानी दावेदारों को उनके अपराधों के लिए दंडित

किया जा रहा है। फिर भी मुझे बहुत भय है कि कहीं सभी इथाकवासी यहाँ न आ जाएँ और संदेश भेजकर सभी सेफालोनियन राज्यों को हमारे विरुद्ध भड़का न दें।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया: “हिम्मत रखो; ऐसे किसी भी विचार को अपने मन को विचलित न करने दो; चलो जल्दी से घर चलते हैं। टेलीमाकस वहीं है, जिसके साथ मैंने चरवाहे और सूअर चराने वाले को भेजा था, और उनसे कहा था कि वे हमारी शाम का भोजन शीघ्रता से तैयार करें।”
इस प्रकार दोनों बातें करते हुए निवास की ओर चल पड़े और विशाल कमरों में प्रवेश करते ही उन्हें टेलीमाकस मिला, और उसके बगल में चरवाहा और सूअरों का रखवाला भोज के लिए भरपूर मांस बाँट रहे थे, और गाढ़ी शराब मिला रहे थे। फिर सिसिली की स्त्री स्नानघर में आई और उदार हृदय वाले लेर्टेस की सेवा की, और तेल से उसका अभिषेक किया, और उसे एक शानदार लबादा ओढ़ा दिया। पल्लास ने राजा के अंगों को और अधिक सुडौल बना दिया। देखने में वह और भी लंबा और भव्य लग रहा था। जैसे ही वह स्नानघर से निकला, उसके बेटे ने आश्चर्य से भरी आँखों से देखा कि लेर्टेस किसी देवता की तरह लग रहा था, और इस प्रकार यूलिसिस ने उससे मधुर शब्दों में कहा:
“हे पिता, शाश्वत देवताओं में से किसी ने निश्चय ही तेरे स्वरूप और दृष्टि पर यह समस्त कृपा और महिमा उंडेल दी है।”
ऋषि लेर्टेस ने उत्तर दिया: “हे पिता बृहस्पति, हे पल्लास और अपोलो! काश मैं आज भी वैसा ही होता जैसा उस समय था जब मैंने एपिरस के समुद्र तट के किनारे स्थित शक्तिशाली नेरिकस के गढ़ पर विजय प्राप्त की थी, और अपने सेफालेनियों का नेतृत्व कर रहा था! उस समय जैसी शक्ति से, युद्ध के लिए तैयार होकर, मैं कल महल में उन सभी दावेदारों से मिलता और लड़ता, और महल में कई लोगों को मार गिराता, और तुम्हारी आत्मा अत्यंत प्रसन्न होती।” तो वे आपस में बातें करते रहे। जब वे सब अपना काम समाप्त करके भोजन तैयार देखकर एक-एक करके सिंहासनों और कुर्सियों पर बैठ गए, और हर किसी ने अपना हाथ बढ़ाकर भोज में हिस्सा लिया। तभी एक वृद्ध व्यक्ति, डोलियस, अपने पुत्रों के साथ पास आया, जो परिश्रम से थके हुए आए थे, क्योंकि सिसिली की वह महिला, जिसने उनका पालन-पोषण किया था, उन्हें बुलाने गई थी। जब वे भोजन के लिए पहुँचे, तो उन्होंने यूलिसिस को देखा और जान लिया कि वह कौन है, और

आश्चर्यचकित होकर हॉल में रुक गए। तुरंत ही यूलिसिस ने उनसे मैत्रीपूर्ण शब्दों में कहा:—
“बुजुर्ग, मेज पर बैठिए; आपमें से कोई भी
अचंभित न हो। जान लीजिए कि हम,
यद्यपि इस भोज के लिए हमारी भूख तीव्र है,
आपके लौटने की प्रतीक्षा में लंबे समय से लगे हुए हैं।”
उसने कहा, और डोलियस बाहें फैलाकर उछल पड़ा और यूलिसिस का हाथ पकड़कर उसकी कलाई चूम ली; और फिर उसने जोशीले शब्दों में कहा:—
“प्रिय स्वामी! चूंकि आप हमारे पास लौट आए हैं,
जो आपका चेहरा फिर से देखने के लिए तरस रहे थे और फिर भी उम्मीद नहीं कर रहे थे—क्योंकि किसी दैवीय शक्ति ने आपको यहां लाया है—प्रणाम! आपकी खुशी महान हो, और देवता आपको सभी आशीर्वाद प्रदान करें! लेकिन बताइए, क्योंकि मैं जानना चाहूँगा, कि क्या ऋषि पेनेलोप को आपके लौटने की खबर मिली है, या हमें इसे किसी दूत के माध्यम से भेजना होगा।”
बुद्धिमान यूलिसिस ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“मेरी वृद्ध मित्र, वह पहले से ही सब कुछ जानती है।
तुम यह चिंता अपने ऊपर क्यों लेना चाहते हो?”
उसने बात की, और डोलियस एक पॉलिश किए हुए आसन पर बैठ गया, लेकिन महान यूलिसिस के चारों ओर उसके बेटे आ गए और प्यार भरे शब्दों से उसका स्वागत किया, और उसका हाथ थाम लिया, और फिर उन्होंने अपने पिता के पास अपनी जगह ले ली। इस प्रकार वे लेर्टेस की छत के नीचे बैठ गए और भोज किया।
इसी बीच शहर में यह अफवाह तेजी से फैल गई कि सभी दूल्हों की खूनी मौत हो गई है। लोगों ने यह खबर सुनते ही रोते-बिलखते महल के सामने आ गए, इधर-उधर घूमते हुए। हर कोई अपने मृत साथी को लेकर आया और हर किसी को अंतिम संस्कार की रस्में अदा कीं, सिवाय उनके जो दूर शहरों से आए थे; उन्हें मछुआरों की तेज चलने वाली नावों में बिठाया गया, ताकि वे उन्हें घर ले जा सकें। और फिर वे सब मिलकर बाजार में शोक मनाते हुए आ गए। जब सभा पूरी भर गई, तब यूपेइथेस उठे और उन्हें संबोधित किया। उनके हृदय में ऐसा दुःख था, जिसे कभी शांत नहीं किया जा सकता था, क्योंकि उनके पुत्र एंटिनोस की मृत्यु हो गई थी, जो यूलिसिस के सामने सबसे पहले गिर पड़ा था। पिता रोते हुए उठे और सभा को इस प्रकार संबोधित किया:

“सचमुच, मेरे मित्रों, इस व्यक्ति ने हम अचाइयों के लिए महान कार्य किए हैं। उसने अनेक वीर पुरुषों को अपने जहाजों में एकत्रित किया और उन्हें अपने साथ ले गया, और अपने वीर जहाजों और अपने सैनिकों को खो दिया। और अब लौटकर उसने सेफाल्नियाई वंश के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को मृत्युदंड दे दिया है। तो आओ, इससे पहले कि वह पाइलोस या पवित्र एलिस में, जहाँ एपियाई शासन करते हैं, सुरक्षित शरण पा ले, उसका पीछा करो; अन्यथा अनंत कलंक हमारा भाग होगा, और आने वाले वर्षों में जीवित रहने वाले लोग हमारी बदनामी के बारे में सुनेंगे। यदि हम इन रक्तदंडियों से बदला नहीं लेते हैं, तो हमारे बेटों और भाइयों की हत्या, जीवन मुझे मीठा नहीं लगेगा, और मैं तुरंत, खुशी- खुशी, मृतकों के बीच चला जाऊंगा। उठो, और उनके भागने से पहले ही उन पर टूट पड़ो।
वह रोते हुए बोला; और उसे सुनकर यूनानी दया से द्रवित हो गए। अब दूत मेदोन और पवित्र कवि प्रकट हुए, जैसे वे रात की नींद से जागकर यूलिसिस के महल से निकले हों। वे भीड़ के बीच खड़े हो गए, जो सभी आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे। तब बुद्धिमान मेदोन बोला:—
“इथाका के लोगो, ध्यान से सुनो और जान लो कि यूलिसिस ने यह सब देवताओं की अनुमति के बिना नहीं किया है। मैंने स्वयं देखा है कि एक अमर देवता उसके साथ था, जो हर बात में मेंटर के समान था। अब देवता यूलिसिस के सामने खड़े होकर उसे युद्ध के लिए बल प्रदान कर रहे थे, और फिर उन्होंने पराजित हुए प्रेमियों के समूह को हॉल से खदेड़ दिया; वे ढेर हो गए।”
उसने बोलना शुरू किया और सुनने वाले सभी भय से पीले पड़ गए। फिर वृद्ध वीर, हैलिथर्सेस, मास्टोर का पुत्र, आगे आया; केवल वही जानता था कि क्या बीत चुका है और क्या होने वाला है, और बुद्धिमानी से निर्णय लेते हुए उसने सभा से कहा:
“अब मेरी बात सुनो, हे इथाका के लोगो। यह सब तुम्हारे अपने ही गलत कामों के कारण हुआ है। जब लोगों के चरवाहे, मेंटर ने बात की, तो तुमने मेरी बात नहीं सुनी और न ही मेरी आज्ञा मानी। तुमने अपने बेटों के पागलपन भरे कामों पर कोई लगाम नहीं लगाई और न ही उस घिनौने दुस्साहस को रोका जिसने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की पत्नी की संपत्ति को बर्बाद करने और उसका अपमान करने का साहस किया, जिसके बारे में उन्हें लगा था कि वह कभी वापस नहीं

लौटेगी। अब मेरी सलाह मानो; हम अपने सिर पर बुराई लाने के लिए आगे न बढ़ें।”
उसने बोलना शुरू किया; लेकिन आधी से ज़्यादा सभा चिल्लाते हुए बाहर भाग गई; बाकी लोग अपनी जगह पर डटे रहे। भविष्यवक्ता का भाषण किसी को भी पसंद नहीं आया था। यूपेइथेस ने उन्हें बहकाया था। वे हथियार लेकर दौड़े, और जब उन्होंने चमकीले पीतल के वस्त्र पहन लिए, तो वे विशाल शहर के सामने घनी पंक्तियों में इकट्ठा हो गए। उनके आगे यूपेइथेस था, जो पागलों की तरह खुद को अपने मारे गए बेटे का बदला लेने वाला मानता था। फिर भी उस मुठभेड़ से वह कभी वापस नहीं लौट सका; उसका भाग्य वहीं उसका पीछा कर रहा था।
तब पलास ने शनि के देवता बृहस्पति को संबोधित करते हुए कहा: “हे हमारे पिता, शनि के पुत्र, राजाओं के राजा, कृपया मुझे अपने हृदय का वह उद्देश्य बताइए जो अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। क्या क्रूर युद्ध और घातक लड़ाइयाँ होंगी, या आप यह आदेश देंगे कि ये अब से सौहार्दपूर्वक निवास करें?”
और बादलों को विवश करने वाले बृहस्पति ने इस प्रकार उत्तर दिया:
“मेरे बच्चे, मुझसे क्यों पूछते हो? क्या यह तुम्हारा कोई प्रिय उद्देश्य नहीं था कि घर लौटकर यूलिसिस उन सभी दावेदारों से भरपूर बदला ले? तो फिर, जैसा तुम चाहो वैसा करो।
फिर भी, मैं यही सलाह देता हूँ, क्योंकि यह सबसे उपयुक्त है।
अब जब महान यूलिसिस ने अपने अन्याय का बदला ले लिया है, तो शपथों के साथ एक निष्ठापूर्ण संधि की जाए, और यूलिसिस सदा के लिए शासन करे;
और हम जीवितों को उनके मारे गए पुत्रों और भाइयों को भुला देंगे, और सभी मित्रता में निवास करेंगे। वे अब तक यहीं निवास करते रहे हैं,
और यहाँ समृद्धि और शांति होगी।"
उसने कहा, और पहले की तरह ही उत्सुक होकर, उसके शब्दों से प्रोत्साहित होकर, देवी ओलंपियन पर्वत की चोटियों से नीचे कूद पड़ी। अब जब सबने भरपेट भोजन कर लिया, तब धीरज रखने वाले मुखिया, यूलिसिस ने कहा: “तुममें से कोई एक जाओ और देखो कि वे आस-पास हैं या नहीं।”
उसने बात की; डोलियस का एक पुत्र उसकी बात सुनकर आगे बढ़ा और दहलीज पर आकर रुक गया। उसने उन सबको पास ही देखा और तुरंत ही उसने जोश भरे शब्दों में यूलिसिस से कहा: “वे हम पर हमला करने वाले हैं; हमें तुरंत हथियार उठा लेने चाहिए।”

उसने कहा; वे उठे और तुरंत हथियार उठा लिए। चार यूलिसिस और उसके मित्र थे, और छह डोलियस के पुत्र थे। फिर बूढ़े लेर्टेस, और डोलियस ने बाकी लोगों के साथ कवच पहन लिया, भले ही उनके बाल सफेद हो गए थे, क्योंकि अब उनकी सहायता की आवश्यकता थी। जब उन सभी ने चमकदार पीतल के कवच पहन लिए, तो उन्होंने द्वार खोल दिए और यूलिसिस के नेतृत्व में बाहर निकल पड़े।
अब सर्वशक्तिमान ज़्यूस की पुत्री पल्लास उनके पास आई। उसने मेंटर का रूप और स्वर धारण कर लिया था। अत्यंत धीरज रखने वाले सरदार यूलिसिस ने उसे देखा और प्रसन्न होकर अपने प्रिय पुत्र टेलीमाकस से कहा:—
“अब हे टेलीमाकस, जब तू उस युद्ध में भाग ले जो मनुष्यों के शौर्य की परीक्षा लेता है, तो ध्यान रखना कि तू अपने पूर्वजों पर कलंक न लगाए—एक ऐसी जाति जो समस्त पृथ्वी पर अपने वीर साहस के लिए प्रसिद्ध है।”
और इस प्रकार विवेकशील टेलीमाकस ने उत्तर दिया:
“नहीं, यदि आप चाहें, मेरे पिता, तो आप देखेंगे
कि मैं किसी भी वीरता की कमी से,
जैसा कि आपने कहा है, आपके वंश पर कलंक नहीं लगाऊंगा।”
लार्टेस ने उनकी बातें सुनीं और प्रसन्न होकर बोला:
“हे धन्य देवताओं, आज का दिन मेरे लिए कितना अद्भुत है! मैं अपने पुत्र और पोते को युद्ध के मैदान में प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखकर कितना आनंदित हूँ।”
फिर नीली आंखों वाली पल्लास, लेर्टेस के पास आकर बोली: “आर्सेसियास के पुत्र, जो मेरे सभी मित्रों में सबसे प्रिय हो, बृहस्पति की नीली आंखों वाली पुत्री और बृहस्पति से प्रार्थना करो, और अपना लंबा भाला लहराओ और उसे आगे बढ़ाओ।”
तब पल्लास ने कहा, और उसके शरीर में अदम्य शक्ति भर दी। बूढ़े सरदार ने सर्वशक्तिमान ज़्यूस की पुत्री से प्रार्थना की, और अपना लंबा भाला लहराकर आगे बढ़ाया। भाला यूपेइथेस के हेलमेट के गाल पर लगा। पीतल भाले को रोक नहीं पाया, ब्लेड आर-पार हो गया, और यूपेइथेस भारी भरकम तरीके से धरती पर गिर पड़ा, गिरते समय उसका कवच चारों ओर बिखर गया। तब यूलिसिस और उसका वीर पुत्र आगे बढ़े, अपने दल के सबसे आगे, और उन्होंने दोधारी तलवारों और भाले से अपने शत्रुओं पर प्रहार किया, और उन्हें इस कदर मार गिराते कि वे

फिर कभी उठ न पाते, यदि एजिस धारण करने वाले देवता की पुत्री पल्लास ने शक्तिशाली स्वर में सभी योद्धाओं को युद्ध रोकने का आदेश न दिया होता:— “इथाका के लोगो, ठहरो; घातक युद्ध से अपने हाथ रोको। अलग हो जाओ, और खून मत बहाओ।”
पल्लास ने कहा, और वे भय से पीले पड़ गए, और डर से कांपने लगे; जैसे ही उन्होंने उसके शब्द सुने, उन्होंने अपने सारे हथियार धरती पर गिरा दिए। वे जान बचाने के लिए शहर की ओर भागे, जबकि अत्यंत सहनशील सरदार यूलिसिस ने अपनी आवाज बुलंद की और उनके पीछे चिल्लाया, और उन पर ऐसे झपटा जैसे कोई चील हवा में उड़ती है। तब शनि के पुत्र ने आग का एक गोला भेजा; वह उसकी नीली आंखों वाली बेटी के चरणों में गिरा, और इस प्रकार देवी ने यूलिसिस को पुकारा:—
“लाएर्टेस के पुत्र, कुलीन और बुद्धिमान, यूलिसिस, अपना हाथ रोको; घातक युद्ध के क्रोध को नियंत्रित करो, कहीं ऐसा न हो कि वज्र के स्वामी, शनि के पुत्र, तुम पर क्रोधित हो जाएँ।”
उसने कहा, और उसने खुशी-खुशी आज्ञा मानी; और फिर
एजिस धारण करने वाले जूपिटर की संतान पल्लास ने,
मेंटर के रूप में और मेंटर की वाणी में,
शत्रुओं के बीच शांति की वाचा की प्रतिज्ञा की।

यह पुस्तक www.aliceandbooks.com से डाउनलोड की गई है। आप हमारी वेबसाइट पर सार्वजनिक डोमेन की कई और पुस्तकें पा सकते हैं।

विषयसूची
1. शीर्षक पेज
2. प्रस्तावना
3. ओडिसी
1. पुस्तक I: पलास का टेलीमाकस से मिलना
2. भाग II: टेलीमाकस का इथिका से प्रस्थान
3. तीसरा भाग: टेलीमाकस और नेस्टर के बीच साक्षात्कार
4. पुस्तक IV: टेलीमाकस और मेनेलाउस का सम्मेलन
5. खंड V: कैलिप्सो से यूलिसिस का प्रस्थान
6. छठा भाग: नौसिका द्वारा यूलिसिस की खोज
7. पुस्तक VII: अलसिनोस द्वारा यूलिसिस का स्वागत
8. पुस्तक VIII: यूलिसिस के सम्मान में मनाए जाने वाले उत्सव
9. पुस्तक 9: सिकॉनियन, लोटस-ईटर्स और साइक्लोप्स
10. पुस्तक X: एओलस, लेस्ट्रिगोनियन और सर्क
11. ग्यारहवाँ भाग: यूलिसिस की मृतकों की भूमि की यात्रा
12. पुस्तक XII: द सायरन, स्काइला, और चैरीबडीस
13. तेरहवाँ भाग: यूलिसिस का इथाका आगमन
14. पुस्तक 14: यूलिसिस और यूमेअस की मुलाकात
15. पंद्रहवाँ भाग: टेलीमाकस की वापसी
16. पुस्तक सोलह: यूलिसिस द्वारा टेलीमाकस को स्वयं की खोज
17. अध्याय सत्रह: यूलिसिस की अपने महल में वापसी
18. पुस्तक 18 वीं: यूलिसिस और आइरिस का युद्ध
19. उन्नीसवीं पुस्तक: यूरीक्लिया द्वारा यूलिसिस की पहचान
20. पुस्तक XX: द लास्ट बैंक्वेट ऑफ द सूटर्स
21. अध्याय XXI: यूलिसिस के धनुष का झुकना
22. भाग XXII: सूईयों की मृत्यु
23. अध्याय XXIII: वध के बाद यूलिसिस और पेनेलोप
24. पुस्तक XXIV: निष्कर्ष

□□□ □□ □□□□□

1. □□□□□□ □□□
2. □□□□□□□□□□
3. □□□□□
4. □□□□□□□□